भारत-भ्रमणके तृतीय खण्डका सूचीपत्र

॥ इति भारत-भ्रमण तृतीय खण्डका सूचीपत्र ॥

तृतीय खण्ड.

पहला अध्याय।

(सूबे बिहारमें) आरा, दानापुर, पटना और बांकीपुर।

आरा।

शम्भुचरन सिर नाइकै, 'साधुचरनपरसाद'।
तृतिय खण्ड 'भारत-भ्रमन' बरनत हैं अविवाद ॥

मेरी तीसरी यात्रा सन् १८९२ ई० के अकतूबर (संवत् १९४९ के कार्त्तिक) में मेरी जन्मभूमि चरजपुरासे प्रारम्भ हुई।

चरजपुरासे १२ मील दक्षिण 'ईष्टइण्डियनरेलवे' का विहिया स्टेशन है। मैं बिहियामें रेलगाड़ीमे सवार हो, उससे १४ मील पूर्व आराके स्टेशन पर उतरा। बिहार प्रदेशके पटना विभागमें शाहावाद जिलेका सदरस्थान और जिलेका प्रधान कसवा (२५ अंश, ३३ कला, ४६ विकला उत्तर अक्षाश और ८४ अंश, ४२ कला, २२ विकला पूर्व देशान्तरमें) रेलवे स्टेशनसे एक मील उत्तर और गंगासे ६ मील दक्षिण आरा एक छोटा शहर है। स्टेशनसे पश्चिमोत्तर एक सराय है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय आरामें ४६९०५ मनुष्य थे, अर्थात् २३४२६ पुरुष और २३४७९ स्त्रियां। इनमें ३३२५३ हिन्दू, १३०८६ मुसलमान, ४०६ जैन, ५६ कृस्तान और ४ बौद्ध थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २२ वां और बङ्गालमें १४ वां शहर है।

शहर रौनकदार है। इसका चौक भी अच्छा है। मकान ईंटो और मट्टीके बने हैं। शहरके उत्तर दीवानी और पश्चिम एक तालावके समीप मैदानमें कलक्टरी और फौजदारी सुन्दर कचहरियाँ बनी हुई है कलक्टरीसे पश्चिम दीवारसे घेरा हुआ मुसलमानोका बहुत बड़ा मौलाबाग, जिसमें एक उत्तम ताजिया रक्खी हुई है, और पूर्व गवर्नमेण्ट स्कूल है। स्कूलसे पूर्व शहरके मध्यमें डील साहबका बडा तालाब दीवानी कचहरीसे उत्तर गांगी नदी पर काठका पुल और शहरके भीतर जेलखाना और अस्पताल है। जजकी कोठीके पास वह दो मञ्जिला मकान है, जिसमें सन् १८५७ के बलवेके समय कई एक यूरोपियनोंने थोडे सिक्ख सिपाहियोंके साथ बडी बहादुरीसे आत्मरक्षाकी थी। जजकी कोठीसे १ मील दूर एक सुन्दर छोटा गिर्जा है। बाबू बाजारके एक मन्दिरमें बुढवा महादेवनामक मोटे शिवलिङ्ग हैं वहाँ सावन मासमें प्रति सोमवारकी रात्रिमें रोशनी, नाच, शिवका शृङ्गार और पूजन होता है। बहुत दर्शक लोग आते हैं। इसके अतिरिक्त आरेमे कई एक छोटे देव-मन्दिर और जैन मन्दिर हैं। शहरसे एक मीलसे अधिक पूर्व सोनकी नहर है जो डेहरी-घाटसे निकल कर साठ मील पर आरासे पूर्वोत्तर गंगा नदीमें मिली है।

शाहाबाद जिला—यह पटना विभागके दक्षिण पश्चिमका जिलाहै इसके उत्तर पश्चिमो-त्तर प्रदेशके गाजीपुर और बलिया जिले और विहारमें सारन जिला पश्चिम पश्चिमोत्तर देशमें मिर्जापुर-बनारस और गाजीपुर जिले दक्खिन लोहरदङ्गा जिला और पूर्व पटना जिलाहै। जिलेके उत्तरीय सीमापर गङ्गा और सरयू, पश्चिमी सीमापर कर्मनाशा और पूर्वी सीमापर सोन नदी बहती है। जिलेके पूर्वोत्तर कोनेके पास सोन नदी और चौसाके निकट कर्मनाशा नदी गङ्गामें मिलगई है। जिलेका क्षेत्रफल ४३६५ वर्गमील और सदर स्थान आरा है।

शाहाबाद जिला स्वभाविक रीतिसे दो विभागोंमें बटा है। उत्तरीय भागमे, जो जिलेके क्षेत्रफलका तीन चौथाई है, उपजाऊ भूमिमे खेती होती है और आम, महुआ इत्यादि फलदार वृक्ष बहुत हैं। और दक्षिणीय भागमे विन्ध्य पहाडका सिलसिला, जिनमेंसे इस जिलेमें आठ सौ वर्गमील है, फैला है। प्लेटूकी साधारण उँचाई समुद्रके जलसे १५०० फीट है। वनोंमे लाही बहुत होती है। सोनके किनारोंपर और जहाँ तहाँ मैदानोमे कंकड निकाले जाते हैं। कायमूर पहाडियोंके पत्थरसे इमारते, चक्कियां चाक, ऊख पेरनेके कोल्हू, इत्यादि चीज बनती हैं और पहाडियोंमें स्लेट आदि कई प्रकारके पत्थर मिलते हैं। जिलेके दक्खिनी पहाडी भागमें बाघ, तेंदुये, भालु, सूअर और अनेक प्रकारके हिरनें आदि बनैले जीव रहते हैं और उत्तरीय भागमें कई एक नहरें फैली हुई हैं। और जिलेमें बहुतसी छोटी २ नदियाँ बहती हैं। सहसरामके पास सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्रके पुत्र रोहिताश्वके नामसे रोहितासगढ़ नामक पुराना किला है। इसकी वर्तमान इमारतको बङ्गालके सूबेदार राजा मानसिंहने सन् १६४४ ई० में बनवाया था। लगभग ४ मील पूर्वसे पश्चिम तक और ५ मील उत्तरसे दक्खिन तक गढकी निशानियां देखनेमें आती हैं। इस जिलेके ब्रह्मपुर, बक्सर, जखनी, घुसरिया, सिनहा, गड़हनी, कस्तरदोनवार, धमार, मसाढ़ और गुप्तेश्वरमे समय समयपर मेले होते हे।

जिलेमे सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय २०४३१२२ और सन् १८८१ ई० में १९६४९०९ मनुष्य थे, अर्थात् १८१७८८१ हिन्दू, १४६७३२ मुसलमान, २७६ कृस्तान

और २० दूसरे। जातियोंके खानेमें २१३३०८ ब्राह्मण, २०७१९५ राजपूत, १५२८४६ कोइरी, ११९०१० चमार, ९०१५५ दुसाध, ६८४२७ कान्दु, ६६३४१ कुर्मी, ६२८१२ कहार, ५९०७५ भुँईहार, ४७८३६ तेली, ४६९९४ कायस्थ, ३४५६८ बनिआँ थे; शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके कसबे आरामें ४६९०५, सहसराममे २२७१३, डुमरांवमे १८३८४, बक्सरमे १५५०६, जगदीशपुरमे १२४७५, और भभुआमे १०२१६, और भोजपुर, नासरीगंज और भगेनमे १०००० से कम मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १८५७ ई० के बलवेके समय ता० २४ जुलाईको लगभग २००० सिपाही बागी होकर दानापुरसे आराको चले। उन्होने जगदीशपुरके बाबू कुवरसिंहके आधीन लगभग ८००० हथियारबन्द गाँववालोके साथ ता० २७ जुलाईको आराके जेल-खानेके सम्पूर्ण कैदियोंको छोड दिया, खजानेको लूट लिया और सरकारी फौजपर आक्रमण किया। बहुतसे युरोपियन लडके और स्त्रियां पहलेही बाहर भेज दी गई थीं, केवल १२ अङ्ग-रेज और ३ चार दूसरे कृस्तान कसबेमें थे। पटनेके कमिश्नरने ५० सिक्खोको सहायताके लिये आरेम भेज दिया था। उसके पश्चात् जो २३० यूरोपियन दानापुरसे चले, वे रास्तेमें प्रायः सब मारे गये। आराके यूरोपियन और सिपाहियोंने ईष्टइन्डियन रेलवे कम्पनीके दो मकानोको, जिनमेका २० गज लम्बा दो मंजिला मकान प्रधान था, तुरतही किलाबन्दीकर उसमें सब सामान रख लिया। जब यूरोपियन और सिक्ख लोग दो मंजिले मकानमे चले गये, तब बागी लोग कसबेमे लूट पाट करनेके पीछे मिस्टर बोलीकी छोटी गढ़ीको चले, किन्तु एक सरकारी तोपकी बाढ़ दगनेपर वे छितर बितर हो गये। इसके पश्चात् बलबाइ-योंने एक सप्ताह तक कई एक प्रकारसे कई बार उनपर आक्रमण किया, किन्तु उनके पास तोप नहीं थी, इसलिये ये लोग उनको मार न सके। अगस्तके आरम्भमे दानापुरसे भेजे हुए २६० पैदल ६० गोलन्दाज और ४ तोपोके साथ आराके पास पहुँचे। ता० २ अगस्तको तोपकी सनसनाहट दूरसे सुनकर बागी लोग जहाँ तहाँ भागने लगे। सूर्य्यास्तके पहलेही सब लोग भाग गये। ता० ३ अगस्तको सरकारी पलटन घेरे हुए लोगोसे आमिली। बाबू कुँवरसिंहका वृत्तान्त भारत-भ्रमणके पहले खण्डमें डुमराव और आजमगढ़के वृत्तान्तमें लिखा है।

दानापुर।

आरासे पूर्व ८ मील कोइलवरका पुल और २४ मील दानापुरका रेलवे स्टेशन है।

कोइलवरमे सोन नदीपर जो नर्मदाके निकासके पास अमरकण्टक पर्वतसे निकलकर ४६४ मील दक्खिनसे उत्तरको बहनेके उपरान्त कोइलवरसे कई मील उत्तर हल्दी छपराके निकट गंगामें मिली है, ४७२६ फीट लम्बा रेलवेका पुल है। उसमे १५० फीट लम्बे २८ दरवाजे हैं। पुलके पाये ३२ फीट पानीके नीचे और भूमिमें और ३५ फीट पानीसे ऊपर हैं। पुलके नीचेकी तहमें आदमी और गाडी चलती हैं और ऊपर रेलवेकी दोहरी लाइन है। यह पुल सन् १८६२ ई० में ४३३३३३४ रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ।

कोइलवरके पुलसे १६ मील पूर्व दानापुरका वड़ा रेलवे स्टेशन है । स्टेशन पर गाढी देरतक ठहरती है । रेलवेसे उत्तर विहारके पटने जिलेमें फौजी छावनीका स्थान गंगाके दाहिने आर्थत् दक्षिण दानापुर एक कसवा है । जिसको दीनापुर भी कहते है ।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय दानापुर कसवे और इसकी छावनीमें ४४४१९ मनुष्य थे; अर्थात् २१८९३ पुरुष २२५२६ स्त्रिया । इनमें ३२२८३ हिन्दू, १०६२४ मुसलमान, १४९१ क्रस्तान, १७ यहूदी और ४ जैन थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ९१ वां और वंगालमे १७ वाँ शहर है ।

रेलवे स्टेशनसे ३½ मील दूर पटना विभागकी फौजी छावनी फैली हुई है । उसमें एक बैटेलियन अर्थात् पलटन पैदल गोरोकी और एक रेजीमेंट वंगाल पैदलकी रहती है । सन् १८८३ ई० मे ३ यूरोपियन और एक देशी पैदल शाही आरटिलरीके २ बैटरियोंके साथ था । एक ६ मीलकी सडक दानापुरसे वांकीपुरकी सिविल कचहरियों तक गई है उसके किनारोंपर लगातार छोटे बडे मकान वने हैं । वास्तवमे गंगा आर रेलवेके बीचमें दानापुर, बांकीपुर और पटना लगातार एकही पतला शहर है ।

सन् १८५७ की जुलाईमे ३ रेजीमेंट, जो दानापुरमें थी, वागी होकर आराको चली गई; पीछे दानापुरसे यूरोपियन सेना आराकी रक्षाके लिये भेजी गई ।

पटना और बांकीपुर ।

दानापुरके रेलवे स्टेजनसे पूर्व ६ मील वाकीपुरका रेलवे जंक्शन और १२ मील पटना शहरका रेलवे स्टेशन है । विहार प्रदेशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान (२५ अंश, ३७ कला, १५ बिकला, उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, १२ कला, ३१ विकला, पूर्व देशान्तरमे) गंगाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर पूर्व जाफरखाँके वागसे पश्चिम वाकीपुरकी शहरतली तक ९ मीलकी लम्बाई और औसतमे दो मीलकी चौडाईमें पटना शहर फैला हुआ है । पुरानी किलाबन्दी, जो शहरको घेरती थी अव नहीं है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पटने और वाकीपुरमे १६५१९२ मनुष्य थे अर्थात् ८३००८ पुरुष और ८३१८४ स्त्रियां । इनमे १२४५०६ हिन्दू, ४००७७ मुसलमान, ५४१ क्रस्तान, ५९ जैन और ९ बौद्ध थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १५ वां, वंगालमे दूसरा और विहारमें पहला शहर है ।

शहरके मकान ईटे ओर मट्टीसे वने हुए है । एक चौडी सडक पूर्वसे पटनेके पश्चिम दरवाजे होकर वांकीपुर होती हुई पश्चिम दानापुर गई है । दूसरे रास्ते तंग और टेढ़े हैं । चौकसे ५ मील पश्चिम वाकीपुरकी सिविलियन कचहरी तक चोडी सडकपर ट्रामगाडी चलती है । दीघा, वांकीपुर और पटनेके वीचमें पटना नहर है, जो सन् १८७७ में खुली । प्रधान सडकोंपर रातमे लालटैनकी रोशनी होती है । एक धर्मशाला पटनेके रेलवे स्टेशनसे थोडा पश्चिम और दूसरी चौकके निकट है । पटने शहरमें गोपीनाथ, वडी पटनदेवी छोटी पटनदेवी और हरिमन्दिर ये ४ मन्दिर प्रधान है । गुलजारवागमे अफीमके गोदाम और रोमनकाथेलिक चर्चके सामने एक कवरगाह है, जिसमें मीरक़ासिम द्वारा मारे हुए लोग

दफन किये गये थे। उसके ऊपर पत्थर और ईंटसे बना हुआ एक स्तम्भ खडा है। दूसरा यूरोपियन कबरगाह शहरके पश्चिम है। पश्चिमकी शहरतलीमे शाहअरजानीका जो सन् १०३२ हिजरी (सन् १६२२ ई०) में मरा था, बडा दरगाह है। वहां प्रति वर्ष एक बडा मेला होता है। मेला ३ दिनों तक रहता है । उसमे लगभग ५००० मनुष्य आते हैं। दरगाहके पासके करवलेमें मुहर्रमके दिन बहुतसे लोग एकत्र होते है और सम्पूर्ण शहरके ताजिये दफन किये जाते है। करवलेके पास एक साधुका बनवाया हुआ एक तालाव है। पटनेकी मसजिदोंमें शेरशाहकी मसजिद सबसे पुरानी है। पीरबहोरकी दरगाहभी मुसलमानोकी पूजाका स्थान है, जिसको बने हुए २५० वर्ष हुए। शहरके आस पास गुलाब चुलानेके लिये गुलावके बहुतेरे बाग लगे हुए हैं।

बांकीपुरसे हिन्दुस्तानमें सबसे बड़ी अफयूनकी कोठी है, वहां बिहारके १२ जिलोंसे अफयून आता है। पटना कालिज ईंटोसे बनी हुई बहुत सुन्दर इमारत है, इसको किसी वाशिन्देने अपने रहनेके लिये बनवाया था। गवर्नमेन्टने इसको खरीदकर कचहरी बनाई। सन् १८५७ ई० में कचहरी दूसरी बनी । सन् १८६२ में इसमें कालिज स्थापित हुआ । इनके अतिरिक्त बांकीपुरमे सिविल कचहरियां, मेडिकल कालिज, नारमल स्कूल, विहार नेशनल कालिज, खैराती अस्पताल, पवलिक लाइब्रेरी, इत्यादि दर्शनीय वस्तु है। सिविल कचहरी और अफीमकी कोठीके बीचमें प्रतिवर्ष सावन मासमे प्रति सोमवारको सोमवारी मेला होताहै, जिसमें बहुत सी चीजे विक्रीके लिये आती हैं और महादेवके मन्दिरमें बडा उत्सव होता है।

पटनेमे कारोवारके प्रधान स्थान मारुगञ्ज, मन्सूरगञ्ज, किला महल्ला, मिरचाइगञ्जके साथ चौक, महराजगञ्ज; सादिकपुर, अलावक्सपुर, गुलजारबाग और कर्नैलगञ्ज हैं। पटना शहर जिलेमे प्रधान तिजारती बाजार और नीलकी तिजारतका प्रसिद्ध स्थान है। तेलके बीज, नमक, सज्जी, चीनी, गुड, गेहूँ, रहर, चना, चावल, इत्यादि वस्तु दूसरे शहरोसे पटनेमे आती हैं और कई प्रकारकी चीज शहरसे दूसरे शहरोमें जाती है। मारुगञ्ज सबसे अधिक आमदनीकी जगह है । कर्नैलगञ्जमे बहुत सी तिजारती चीजे बङ्गाल और विहारके जिलोसे नावपर आती हैं। सादिकपुर और महराजगञ्जमे तेलके बीजका बाजार है। मिरचाईगञ्जसे सटा हुआ चौक है, जिसमें मारवाडियोंकी कपडे आदिकी दुकाने देखनेमें आती हैं। चौकसे पूर्व किलेके महल्लेमे रूई, बांस और लकडीकी तिजारत होती है। सन् १८८३–८४ में बांकीपुर और दानापुरके साथ पटनेकी सौदागरीकी आमदनीकी कीमत ३८९२१८४० रुपये और रफतनीकी कीमत ६६०३५७९० रुपये थी।

गुरुगोविन्दसिंहका मन्दिर—यह मन्दिर चौकके पास एक गलीके बगलमे हरिमन्दिर करके प्रसिद्ध है। मन्दिरके फाटकके दालानमें मार्बुलके ४ जोडे खम्भे लगे हुए है। बडे आँगनमें एक उत्तम बरामदा बना है उसमें पूर्व और पश्चिम दालान और बाहर चारोओर सुन्दर ओसारे बने हैं। पूर्वके दालानमें गुरु गोविन्दसिंहकी २ जोडी चरणपादुका और पश्चिम वालेमें सुन्दर सिंहासन पर ग्रन्थ साहब अर्थात् नानकशाही लोगोंकी धर्म्म पुस्तक रक्खी हुई हैं। पुस्तकोंको दुशाले ओढाये जाते हैं और चंवर डुलाये जाते हैं। मन्दिरसे उत्तर बहुत ऊँचा निशान है। पूस सुदी सप्तमी गुरु गोविन्दसिंहका जन्म दिन है, उस दिन वहाँ बडा उत्सव होता है। फूलबङ्गला बनता है और बड़ी रोशनीकी जाती है। हरिमन्दिरके महन्त

कोइलवरके पुलसे १६ मील पूर्व दानापुरका बड़ा रेलवे स्टेशन है । स्टेशन पर गाड़ी देरतक ठहरती है । रेलवेसे उत्तर विहारके पटने जिलेमें फौजी छावनीका स्थान गंगाके दाहिने आर्थत् दक्षिण दानापुर एक कसवा है । जिसको दीनापुर भी कहते हैं ।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय दानापुर कसवे और इसकी छावनीमें ४४४१९ मनुष्य थे; अर्थात् २१८९३ पुरुष २२५२६ स्त्रियां । इनमें ३२२८३ हिन्दू, १०६२४ मुसलमान, १४९१ कृस्तान, १७ यहूदी और ४ जैन थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ९१ वां और वंगालमे १७ वाँ शहर है ।

रेलवे स्टेशनसे ३½ मील दूर पटना विभागकी फौजी छावनी फैली हुई है । उसमें एक बैटेलियन अर्थात् पलटन पैदल गोरोकी और एक रेजीमेंट वंगाल पैदलकी रहती है । सन् १८८३ ई० मे ३ यूरोपियन और एक देशी पैदल शाही आरटिलरीके २ बैटरियोंके साथ था । एक ६ मीलकी सड़क दानापुरसे बांकीपुरकी सिविल कचहरियों तक गई है उसके किनारोंपर लगातार छोटे बड़े मकान वने हैं । वास्तवमे गंगा आर रेलवेके वीचमें दानापुर, बांकीपुर और पटना लगातार एकही पतला शहर है ।

सन् १८५७ की जुलाईमे ३ रेजीमेंट, जो दानापुरमें थी, वागी होकर आराको चली गई; पीछे दानापुरसे यूरोपियन सेना आराकी रक्षाके लिये भेजी गई ।

पटना और बांकीपुर ।

दानापुरके रेलवे स्टेजनसे पूर्व ६ मील बांकीपुरका रेलवे जंक्शन और १२ मील पटना शहरका रेलवे स्टेशन है । विहार प्रदेशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान (२५ अंश, ३७ कला, १५ विकला, उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, १२ कला, ३१ विकला, पूर्व देशान्तरमे) गंगाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर पूर्व जाफरखाँके वागसे पश्चिम बाकीपुरकी शहरतली तक ९ मीलकी लम्बाई और औसतमे दो मीलकी चौडाईमे पटना शहर फैला हुआ है । पुरानी किलाबन्दी, जो शहरको घेरती थी अव नहीं है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पटने और बाकीपुरमे १६५१९२ मनुष्य थे अर्थात् ८२००८ पुरुष और ८३१८४ स्त्रियां । इनमे १२४५०६ हिन्दू, ४००७७ मुसलमान, ५४१ कृस्तान, ५९ जैन और ९ वौद्ध थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १५ वा, वंगालमे दूसरा और विहारमें पहला शहर है ।

शहरके मकान ईटे और मट्टीसे वने हुए हैं । एक चौडी सडक पूर्वसे पटनेके पश्चिम दरवाजे होकर वाकीपुर होती हुई पश्चिम दानापुर गई है । दूसरे रास्ते तंग और टेढ़े हैं । चौकसे ५ मील पश्चिम वाकीपुरकी सिविलियन कचहरी तक चोडी सडकपर ट्रामगाडी चलती है । दीघा, वाकीपुर और पटनेके वीचमें पटना नहर है, जो सन् १८७७ में खुली । प्रधान सडकोंपर रातमे लालटेनकी रोशनी होती है । एक धर्मशाला पटनेके रेलवे स्टेशनसे थोडा पश्चिम और दूसरी चौकके निकट है । पटने शहरमें गोपीनाथ, वडी पटनदेवी छोटी पटनदेवी और हरिमन्दिर ये ४ मन्दिर प्रधान है । गुलजारबागमे अफीमके गोदाम और रोमनकाथेलिक चर्चके सामने एक कवरगाह है, जिसमें मीरकासिम द्वारा मारे हुए लोग

दफन किये गये थे। उसके ऊपर पत्थर और ईंटसे बना हुआ एक स्तम्भ खडा है। दूसरा यूरोपियन कवरगाह शहरके पश्चिम है। पश्चिमकी शहरतलीमें शाहअरजानीका जो सन् १०३२ हिजरी (सन् १६२२ ई०) में मरा था, बडा दरगाह है। वहां प्रति वर्ष एक बडा मेला होता है। मेला ३ दिनों तक रहता है। इसमें लगभग ५००० मनुष्य आते हैं। दरगाहके पासके करवलेमें मुहर्रमके दिन बहुतसे लोग एकत्र होते हैं और सम्पूर्ण शहरके ताजिये दफन किये जाते हैं। करवलेके पास एक साधुका बनवाया हुआ एक तालाव है। पटनेकी मसजिदोंमें शेरशाहकी मसजिद सबसे पुरानी है। पीरबहोरकी दरगाहभी मुसलमानोंकी पूजाका स्थान है, जिसको बने हुए २५० वर्ष हुए। शहरके आस पास गुलाब फुलानेके लिये गुलाबके बहुतेरे वाग लगे हुए हैं।

वांकीपुरमें हिन्दुस्तानमें सबसे बड़ी अफयूनकी कोठी है, वहां विहारके १२ जिलोंसे अफयून आता है। पटना कालिज ईंटोंसे बनी हुई बहुत सुन्दर इमारत है, इसको किसी वाशिन्देने अपने रहनेके लिये बनवाया था। गवर्नमेन्टने इसको खरीदकर कचहरी बनाई। सन् १८५७ ई० मे कचहरी दूसरी बनी। सन् १८६२ में इसमें कालिज स्थापित हुआ। इनके अतिरिक्त वांकीपुरमे सिविल कचहरियां, मेडिकल कालिज, नारमल स्कूल, विहार नेशनल कालिज, खैराती अस्पताल, पवलिक लाइब्रेरी, इत्यादि दर्शनीय वस्तु है। सिविल कचहरी और अफीमकी कोठीके बीचमें प्रतिवर्ष सावन मासमे प्रति सोमवारको सोमवारी मेला होताहै, जिसमें बहुत सी चीजे विक्रीके लिये आती हैं और महादेवके मन्दिरमे बडा उत्सव होता है।

पटनेमे कारोवारके प्रधान स्थान मारूगञ्ज, मन्सूरगञ्ज, किला महल्ला, मिरचाइगञ्जके साथ चौक, महराजगञ्ज, सादिकपुर, अलावक्सपुर, गुलजारवाग और कर्नैलगञ्ज हैं। पटना शहर जिलेमें प्रधान तिजारती बाजार और नीलकी तिजारतका प्रसिद्ध स्थान है। तेलके वीज, नमक, सज्जी, चीनी, गुड, गेहूँ, रहर, चना, चावल, इत्यादि वस्तु दूसरे शहरोंसे पटनेमे आती हैं और कई प्रकारकी चीज शहरसे दूसरे शहरोंमें जाती है। मारूगञ्ज सबसे अधिक आमदनीकी जगह है। कर्नैलगञ्जमे वहुत सी तिजारती चीजे वङ्गाल और विहारके जिलोंसे नावपर आती हैं। सादिकपुर और महराजगञ्जमे तेलके बीजका बाजार है। मिरचाईगञ्जसे सटा हुआ चौक है, जिसमें मारवाड़ियोंकी कपडे आदिकी दुकाने देखनेमें आती हैं। चौकसे पूर्व किलेके महल्लेमे रूई, बांस और लकड़ीकी तिजारत होती है। सन् १८८३–८४ मे वांकीपुर और दानापुरके साथ पटनेकी सौदागरीकी आमदनीकी कीमत ३८९२१८४० रुपये और रफतनीकी कीमत ६६०३५७९० रुपये थी।

गुरुगोविन्दसिंहका मन्दिर—यह मन्दिर चौकके पास एक गलीके वगलमे हरिमन्दिर करके प्रसिद्ध है। मन्दिरके फाटकके दालानमें मार्बुलके ४ जोडे खम्भे लगे हुए हैं। वडे आँगनमें एक उत्तम वरामदा बना है उसमें पूर्व और पश्चिम दालान और वाहर चारोओर सुन्दर ओसारे बने हैं। पूर्वके दालानमें गुरु गोविन्दसिंहकी २ जोड़ी चरणपादुका और पश्चिम वालेमें सुन्दर सिंहासन पर ग्रन्थ साहव अर्थात् नानकशाही लोगोंकी धर्म्म पुस्तक रक्खी हुई हैं। पुस्तकोंको दुशाले ओढाये जाते हैं और चंवर डुलाये जाते हैं। मन्दिरसे उत्तर बहुत ऊँचा निशान है। पूस सुदी सप्तमी गुरु गोविन्दसिंहका जन्म दिन है, उस दिन वहाँ बडा उत्सव होता है। फूलवङ्गला बनता है और बड़ी रोशनीकी जाती है। हरिमन्दिरके महन्त

बाबासुमेरसिंहजी हैं जो ब्रजभाषाके अच्छे कवि हैं । उसी स्थानपर सिक्खोंके नवगुरु तेग बहादुरकी पत्नी गुजरीदेवीके गर्भसे संवत् १७२३ (सन् १६६६ ई०) में पूस सुदी सप्तमी को गुरु गोविन्दसिंहका जन्म हुआ था । उन्होने अपने मतवालोंको सिंहकी पदवी दी और एक दूसरा ग्रन्थ बनाया, जो दसवें गुरुका ग्रन्थ कहलाता है । और आज्ञा दी कि हमारे पश्चात् अब कोई दूसरा गुरु नहीं होगा, सब लोग अबसे ग्रन्थ साहबको गुरु समझेंगे जो किसीको कुछ पूछना होगा, वे उसीमें देख लेवेंगे । गुरु गोविन्दसिंहके जीवनका बड़ा भाग युद्धमे बीता, उन्होने संवत् १७६५ कार्त्तिक सुदी पंचमी (सन् १७०८ ई०) को हैदराबादके राजके नदेडमे मुसलमानोंसे लडकर सग्राममें अपने प्राणका विसर्जन किया, वहाँ गुरु गोविन्दसिंहकी संगति बनी हुई है ।

पटनदेवी—हरि मन्दिरसे दक्षिण ओर एक गलीके बगलमें छोटी पटनदेवीका मन्दिर है । ऑगनके पूर्व और पश्चिम दोहरी और उत्तर तथा दक्षिण एकहरी दालान और चारों कोनोपर चार कोठरियां हैं । पूर्वके दालानमें १२ खम्भे लगे हुए आसनमें महाकाली महालक्ष्मी और महासरस्वतीकी तीन मूर्त्तियां स्थित हैं ।

चौकसे ३ मील पश्चिम महाराजगञ्जमें बड़ी पटनदेवीका मन्दिर है । लोग कहते हैं कि पार्वतीके पटके गिरनेसे वहां पाटनदेवी हुई और इस शहरका नाम पटना पडा ।

गोलघर—बांकीपुरके रेलवे स्टेशनसे १½ मील उत्तर ऊँचे गुम्बजकी शकलकी ईटोंसे बनी हुई गोलघर नामक इमारत, जो सन् १७८४ ई० में अकालके समय गल्ले रखनेके लिये बनी थी, देखने लायक है । इसकी दीवार १२ फीट मोटी, गोलाई नेवके पास ४२६ फीट; ऊंचाई मध्यमें ९० फीट और भीतरका व्यास १०९ फीट है । चारोंओर चार दरवाजे और सिरेपर १०८ फाट गोलाकार चबूतरा है । ऊपर चढ़नेके लिये बाहरसे दो सीढ़ियां, जिनके बगलमें रुकावटके लिये दीवार बनी है, बनी हुई हैं । लोग कहते हैं कि नैपालके सर जंगबहादुर छोटे घोडेपर चढ़कर बाहरकी सीढ़ियोंसे इसके सिरेपर चढ़ गये थे । गोल घरमें १३७००० टन गल्ला अंट सकता है ।

पटना जिला—इसका क्षेत्रफल २०७९ वर्गमील है । इसके उत्तर गङ्गा नदी, बाद सारन मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा जिले पूर्व मुंगेर जिला, दक्षिण गया जिला और पश्चिम सोन नदी, जो शाहाबाद जिलेसे इसको अलग करती है, बहती है । जिलेके दक्षिण भागमें पहाडियां हैं । जिलेमें जङ्गल नहीं है । जिलेके दक्षिण पूर्वके भागमे लगभग १००० फीट ऊँची राजगृहकी पहाडिया और अनेक गर्म झरने है ।

पटना जिलेमें गङ्गा और सोन प्रधान नदी हैं । पुनपुन नदीसे छोटी २ नहर निकली हैं । पुनपुन नदी नौबतपुर तक पूर्वोत्तरको बहकर, वहाँसे पूर्व झुककर फतहाके पास गङ्गामें मिलगई है । उसकी लम्बाई इस जिलेमें ५४ मील है । बिहारकी पहाडीमे मकान बनाने योग्य पत्थरकी खान है ।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १७७०२२४ और सन् १८८१ ई० में १७५६८५६ मनुष्य थे, अर्थात् १५४१०६१ हिन्दू, ३१३१४१ मुसलमान, २५८८ क्रस्तान, २२ जैन, १६ ब्रह्मो, १४ यहूदी, १ पारसी और १३ दूसरे । जातियोंके खानेमें २१७८४५ अहीर, १९४२२२ कुर्मी १२१३८१ भूमिहार, ९९९७६ दुसाध, ८६७३८

कोइरी, ८५८२४ कहार, ६४३३२ राजपूत, ५६६८७ चमार, ५२८८० तेली, ४७०४१ ब्राह्मण थे, और शेषमें दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पटना जिलेके पटने शहरमें १६५१९२, विहारमें ४७७२३, दानापुरमें ४४४१९, वाढ़में १२२६३, और खगौल, मुकामा, फतुहा, महम्मदपुर, वैकुण्ठपुर और रसूलपुरमे १०००० से कम मनुष्य थे।

सूबे विहार—वङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरके आधीन विहार, वंगाल, उडीसा और छोटा नागपुर ये चार सूबे हैं। इनमेंसे सूबे विहारका प्रधान शहर पटना है। सूबे विहारके उत्तर स्वाधीन नेपाल राज्य, पूर्व सूबे वगाल; दक्षिण छोटा नागपुरके जिले और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश है। सूबे विहारमे पटना और भागलपुर दो विभाग है,–पटना विभागमें पटना, गया, शाहावाद, सारन, चम्पारन, मुजफ्फरपुर, और दरभगा ये ७ जिले और भागलपुर विभागमें भागलपुर, मालदह, पुर्निया, मुंगेर और संथाल परगना ये ५ जिले हैं।

यह देश साधारण तरहमे चिपटा है। मुगेर जिले और देशके दक्षिण-पूर्वमें जहाँ राज-महल और संथाल सिलसिले हें, पहाडियां हैं। इस सूवेमें सवसे ऊँची पहाड़ी जिसकी ऊँचाई केवल १६२० फीट है, गया जिलेमें स्थित है। सूवेके मध्य होकर गङ्गा नदी वहती है, जिससे इस सूवेके प्राय· वरावर दो भाग हो गये है। उत्तरसे सरयू, गंडक, कोसी और महानन्दा और दक्षिणसे सोन नदी आकर गङ्गामें मिली है। इस सूवेमें कई एक नहर खेतोको पटाते है और नील और अफीम वहुत होती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सूबे विहारका क्षेत्रफल ४४१३९ वर्ग मील था। इसमें ७७४०७ कसवे और गाँव, ३५२०८९६ मकान और २३१२७१०४ मनुष्य थे। अर्थात् ११३८५८३६ पुरुष और ११७४१२६८ स्त्रियां। इनमे १९१६९३२७ हिन्दू, ३३१२६९७ मुसलमान ६३३८६६ आदि निवासी इत्यादि, १०९५४ कृस्तान, १३२ वौद्ध, ५४ सिक्ख, ५० यहूदी और २४ जैन। जातियोंके खानेमें २६४२९५७ ग्वाला, ११६६५९३ राजपूत, ११२४३६१ कोइरी १०७३६४३ ब्राह्मण, १०५२५६४ दुसाध, ९८५०९८ भूमिहार, ८८२११३ चमार, ७९०५२३ कुर्मी, ६३२०२९ तेली, ५३१४२३ कान्दू, ५३१९०४ धानुक, ४६८३०५ कहार, ४१९५२१ तान्ती और तंतवा, ३९३५३७ वनिया, ३९२६२२ मलाह, ३५८०६८ कायस्थ, ३४०७१७ नाई, ३८३७४० कुम्भार, २५२९१४ लोहार, शेपमें दूसरी जातियाँ थीं। आदि निवासियोमें ५५९,६२० सन्थाल, ११९९५ कोल थे। बिहार भारतवर्षमें सबसे घनी आवादीका देश है। इसमें सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय प्रति वर्गमीलमें औसत ५२४ मनुष्य थे।

प्राचीन कालमें मगधके राजाओके आधीन सूबे विहार था, जो उस समय भारतवर्षमें प्रवल राजा थे। सन् ईस्वीकी चौथी सदीके पहिलेसे पाँचवीं सदीके पीछे तक उनका राज्य था। तेरहवीं सदीके आरम्भमे विहार देश मुसलमानोंके आधीन होकर बगालके नव्वाबके अधिकारमें हुआ। सन् १७६५ में ईष्टइन्डियन कम्पनीने दीवानीके साथ सूबे विहारको पाया। सूबे विहारके शहर और कसवे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	शहर और कसबे	जिला	जन-संख्या.
१	पटना बाँकीपुर	पटना	१६५१९२
२	गया	गया	८०३८३
३	दरभङ्गा	दरभङ्गा	७३५६१
४	भागलपुर	भागलपुर	५९१०६
५	छपरा	सारन	५७३५२
६	मुङ्गेर	मुङ्गेर	५७०७७
७	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९२
८	विहार	पटना	४७७२३
९	आरा	शाहाबाद	४६९०५
१०	दानापुर	पटना	४४४१९
११	बेतिया	चंपारन	२२७८०
१२	सहसराम	शाहाबाद	२२७१३
१३	हाजीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
१४	डुमराव	शाहाबाद	१८३८४
१५	जमालपुर	मुङ्गेर	१८०८९
१६	सीवान	सारन	१७७०९
१७	मधुवनी	दरभङ्गा	१७५४४
१८	बक्सर	शाहाबाद	१५५०६
१९	पुर्निया	पुर्निया	१४५५५
२०	इङ्गलिशबाजार	मालदह	१३८१८
२१	रिविलगंज	सारन	१३४७३
२२	मोतीहारी	चम्पारन	१३१०८
२३	लालगज	मुजफ्फरपुर	१२४९३
२४	जगदीशपुर	शाहाबाद	१२४७५
२५	बाढ़	पटना	१२३६३
२६	टिकारी	गया	११५६२
२७	साहिवगंज	सन्थालपरगना	११२९२
२८	रोसरा	दरभङ्गा	१०८८७
२९	भभुआ	शाहाबाद	१०२१६

इतिहास—पुराणके लेखानुसार शिशुनागवंशके राजा अजातशत्रुके पोते उदयाश्वने पाटली पुत्र (पटना) को, जिसको कुसुमपुर भी (पुष्पपुर) कहते थे, बसाया। (भारत-भ्रमण इसी खण्डके तीसरे अध्यायकी प्राचीन कथामें देखो) अजातशत्रु बौद्धमत नियत करने वाले गौतमबुद्धके समयमें था। गौतमबुद्धका देहान्त सन् ई० के ५४३ वर्ष पहले हुआ था। चन्द्रगुप्तने मगध या विहारके नन्द खान्दानको, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र

थी, विनाश करके सन् ई० से ३१६ वर्ष पहले एक राज्य नियत कर २४ वर्ष तक गंगाके मैदानमें राज्य किया। उसी समय चीनके मेगेस्थनीजने शहरको देखा था। उसने लिखा था कि सिन्ध नदीसे १०००० इसटाडिया (११४९ मील) दूर गंगा और एरानोवो (सोन) के सङ्गमके निकट खाईसे घेरा हुआ ६४ फाटकोंसे सुशोभित हिन्दुस्तानकी राजधानी पालीवोथरा (पटना) है। उसके कथनानुसार शहरका घेरा २४ मीलका होता है। चीनके दूसरे यात्री हुएत्सङ्गने सन् ६३७ ई० मे इस शहरको देखकर लिखा है कि पुराना शहर, जो कुसुमपुर कहलाता है, उजड पुजड गया है, किन्तु नया शहर पाटलीपुत्र ११$\frac{3}{3}$ मीलके घेरेमें है।

मुसलमानोंके राज्यके आरम्भमे इस देशका सूबेदार विहार शहरमे रहता था। अकबरने पटनेको अपने अधिकारमे किया औरङ्गजेबने अपने पुत्र आजमको पटनेका सूबेदार बनाया। तबसे पटनेका अजीमाबाद नाम पडा। सन १७६३ ई० मे मुर्शिदाबादके नव्वाब मीर कासिमकी सेनाने लगभग २०० अङ्गरेज और २००० सिपाहियोंको पटनेके पास मारडाला। उनकी यादगारमे एक स्तभ बना हुआ है। सन् १८५७ की जुलाई में दानापुरमें ७ वीं, ८ वीं और ४० वीं देशी पैदलके सिपाही बागी हो गये। वे लोग जब नावों पर सवार होकर चले, तब अङ्गरेजोंने स्टीमरके गोलोंसे उनको मारा, जिससे बहुतेरे मरे और बहुतेरे डूब गये, किन्तु आधेसे अधिक बागी सोन पार होकर शाहाबाद जिलमे चले गये।

बांकीपुर जंक्शनसे 'ईष्ट इण्डियन रेलवे' की लाइन ४ तरफ गई है। तीसरे दरजेका महसूल फी मील २$\frac{1}{2}$ पाई है।

(१) बांकीपुरसे पश्चिम कुछ दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन—

६ दानापुर।
२२ कोइलवर-पुल।
३० आरा।
४४ विहिया।
५३ रघुनाथपुर।
६३ डुमराव।
७३ बक्सर।
९५ दिलदारनगर जंक्शन।
१३१ मुगलसराय जंक्शन।

दिलदारनगर जंक्शनसे उत्तर थोडा पश्चिम १२ मील गाजीपुरके इस पार तारीघाट, मुगलसरायसे पश्चिम २० मील चुनार ४० मील मिरजापुर, ४५ मील विन्ध्याचल, ९१ मील नयनी जंक्शन और ९५ मील इलाहाबाद और पश्चिमोत्तर 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' के पास ७ मील बनारस, ४६ मील जौनपुर, १२६ मील अयोध्या, १३० मील फैजाबाद जंक्शन १९२ मील बाराबंकी जंक्शन और २०९ मील लखनऊ जंक्शन है।

(२) बांकीपुरसे उत्तर, थोडा पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन—

६ दीघाघाट।

दीघाघाटसे गंगाके बायें किनारे पर पलेजाघाट तक बोट जाती आती है। पलेजाघाटसे पश्चिम 'बंगाल नार्थवेष्ट रेलवे' पर २९ मील छपरा, ६७ मील सिवान

और १४१ मील गोरखर जंक्शन और पलेजासे पूर्वोत्तर ६ मील सोनपुर और ७० मील मुजफ्फर-पुर जंक्शन है।

(३) बांकीपुरसे दक्षिण गया ब्रेंच—

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन।

८ पुनपुन।

२८ जहानावाद।

५७ गया।

(४) बांकीपुरसे पूर्व—

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन—

६ पटना शहर।

२८ वखतियारपुर।

३९ वाढ़।

५६ मोकामा जंक्शन।

७६ लक्षीसराय जंक्शन।

लक्षीसरायसे कार्ड लाइन पर ६१ मील वैद्यनाथ जंक्शन, १३० मील आसनसोल जंक्शन, १४१ मील रानीगञ्ज और १८७ मील खाना जंक्शन और लुप लाइन होकर २५ मील जमालपुर जंक्शन ५८ मील भागलपुर, १०४ मील साहेवगञ्ज और २४८ मील खाना जंक्शन है। खाना जंक्श-नसे दक्षिण ८ मील बर्दवान और ७५ मील कलकत्तेके इस पार हवडा है।

दूसरा अध्याय।

(सूबे विहारमें) गया, बोध गया, टिकारी और विराट नगर।

गया।

वाँकीपुरसे ८ मील दक्षिण पुनपुन गाँवका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ½ मील उत्तर पुनपुन नदी वहती है जहाँ गयाके यात्री वालूकी एक वेदी वनाकर पिण्डदान करके गया जाते हैं।

पुनपुन स्टेशनसे ४९ मील और वाँकीपुर जक्शनसे ५७ मील दक्षिण (२४ अश ४८ कला ४४ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ३ कला १६ विकला पूर्व देशान्तरमे) विहार प्रदेशके पटना विभागमें जिलेका सदर स्थान और प्रधान कसवा गया नामक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय गयामें जो साहवगंजके साथ एक म्युनिसि-पलिटी वनी है, ८०३८३ मनुष्य थे अर्थात् ४०८९३ पुरुष और ३९४९० स्त्रिया। इनमें ६३०४६ हिन्दू, १७१४७ मुसलमान, १०५ कृस्तान और ८५ जैन थे। मनुष्य सख्याके अनु-सार यह भारतवर्षमें ३६ वाँ, वङ्गाल में ५ वॉ और विहारमें दूसरा शहर है।

गया २ हिस्सोंमें विभक्त है, अर्थात् साहवगंज और पुरानी गया। दोनो फल्गु नदीके वायें अर्थात् पश्चिम किनारेपर हैं। साहवगजमें रेलवे स्टेशन, यूरोपियन और देशी लोगोकी कोठियां और स्टेशनसे करीव १ मील दक्षिण-पूर्व सिविल कचहरियाँ हैं। साहवगंज तिजा-रती जगह है, वहाँकी सडक चौडी और मकान दो मंजिल तीन मञ्जिले वने हैं। उसमे जेल-खाना, अस्पताल, गिर्जा, पव्लिक लाइब्रेरी, तैरनेका हम्माम, और घोडदौडकी सड़क है। गयामें काले और सफेद पत्थरके प्याले पथलौटी आदि वस्तु वहुत सुन्दर वनती हैं।

रेलवे स्टेशनसे १½ मील पूर्वोत्तर पुरानी गयाक उत्तरका फाटक और २ मील फल्गूके बाये विष्णुपदका मन्दिर है। पुरानी गयाका खास शहर, जिसमें गयावालोंके मकान हैं, फल्गू नदीके पश्चिम किनारेपर उत्तरसे दक्षिण ½ मील लम्बा और पूर्वसे पश्चिम ¾ मील चौडा है। उसके चारो दिशाओंमें ४ फाटक हैं। मकान पुराने ढाचेके चौमंजिले पञ्च मंजिले तक वने हैं। उत्तरके फाटकसे दक्षिणके फाटक तक गच कीहुई एक सडक है। ऊँची नीची भूमिपर शहर वसा है। जगह जगह पथरीली जमीन है। फल्गूके किनारेपर ब्रह्मनी घाट, गायत्री घाट, वकुआ घाट, सोमर घाट, जिह्वालोल, गदाधर घाट आदि है।

पश्चिम फाटकसे वाहर एक सडक उत्तरसे दक्षिण गई है जिसके पश्चिम वगलपर पश्चिम फाटकसे कुछ दक्षिण रामसागर महल्लेमें करीव १८५ गज लम्बा और इससे आधेसे अधिक चौडा रामसागर नामक तालाव है। जिससे दक्षिण चान्दचौरा वाजार है।

गयासे पूर्व फल्गूके दहिने किनारेपर नगकूट पहाडी, दक्षिण—पश्चिम भस्मकूट (जिसको लोग मुरली पहाड़ी कहते हैं इसके शिरपर एक मन्दिर देख पडता है) और ब्रह्मयोनिकी पहाडी, उत्तर साहबगजके वाद रामशिला पहाडी और पश्चिमोत्तर प्रेतशिला पहाडी देख पडती है।

गया श्राद्धके लिये भारतवर्षमे प्रधान है। वहाँ प्रतिदिन श्राद्ध करनेके लिये यात्री पहुँचते हैं, किन्तु आश्विन मासका कृष्णपक्ष गया श्राद्धका सर्व प्रधान है। उस समय भारत-वर्षके प्रत्येक विभागोंके लाखो यात्री गयामे आते हैं। और धनी लोग गयावाल पण्डोंको वहुत दक्षिणा देते है। गयाके पण्डोंमे वडेवडे धनी हैं। आश्विनके वाद पौष और चैत्रके कृष्ण-पक्षमे भी वहुत यात्री गयामे पिण्डदान करते हैं।

श्राद्धके स्थान और विधि—(१) पूर्णिमाके दिन फल्गु नदीमें एक वेदीपर खीरका श्राद्ध, तर्पण और पण्डाकी चरण पूजा होती है। फल्गू नदी गयाके पूर्व वहती हुई दक्षिणसे उत्तरको गई है। फल्गूका विशेष माहात्म्य नगकूट और भस्मकूटसे उत्तर और उत्तर-मानससे दक्षिण है। नगकूटसे दक्षिण फल्गुका नाम महाना है। गयासे ३ मील दक्षिण नीलांजन नदी दहिनेसे आकर महाना नदीसे मिली है। संगमसे करीव १ मील दक्षिण सरस्वतीके मन्दिरतक इस नदीका नाम सरस्वती है। मधुश्रवा नामक एक छोटी नदी दक्षिण-पश्चिमसे आकर गयाके दक्षिण महाना (फल्गू) नदीमें मिली है, जिसकी धारा वरसातके वाद फल्गूसे अलग होकर गदाधरके मन्दिरके नीचे वहती है। वर्षाकालके अतिरिक्त दूसरी ऋतुओमें फल्गू नदीमें पानी नहीं रहता, परन्तु वालू खोदनेपर साफ पानी मिल जाता है। नदीमें पानी रहने परभी लोग वालू हटाकर स्वच्छ पानी लेजाते हैं विष्णुपदके पूर्व फल्गूके दहिने किनारेपर नगकूट पहाडी, वाँये किनारेपर भस्मकूट पहाडी और विष्णुपदसे लगभग १ मील उत्तर उत्तरमानस नामक सरोवर है।

(२) कृष्ण प्रतिपदाके दिन ५ वेदीपर पिंडदान करना होता है, रामशिला, रामकुण्ड, प्रेतशिला, ब्रह्मकुण्ड और कागवलि। रामशिला और रामकुण्ड—विष्णुपदके मन्दिरसे करीब २ मील साहवगञ्जके पासही उत्तर फल्गूके पश्चिम किनारेपर रामशिला पहाडी है, जिसके पूर्व वगलके नीचे दीवारसे घेरा हुआ ब्रह्मकुण्डसे वहुत वडा रामकुण्ड नामक तालाव है। यात्री गण प्रेतशिलासे लौटनेपर इसके किनारे एक वेदीका पिंडदान करते हैं और पीछे

रामशिलाक ऊपर पिंडदान होता है। तालावके दक्षिण एक शिवमन्दिर और पश्चिम राम-शिलाके वगलपर २० सीढ़ीके ऊपर टेकारीकी रानीका वनवाया हुआ एक सुन्दर विशाल मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण, जानकी और हनूमान आदि देवता स्थित हैं। मन्दिरके दक्षिण एक धर्मशाला है। ३४० सीढी लांघनेपर रामशिलाके शिरपर आदमी पहुंचता है। उसके मध्यमें पत्थरके ढोकोसे बना हुआ एक शिवमन्दिर है, जिसके जगमोहनमें एक चरणचिह्न वना है। मन्दिरके दक्षिण एक ओसारे और उत्तर एक मन्दिरमें ३ पुरानी बौद्धमूर्त्तियां देखनेमें आती हैं, जिनमेंसे एक स्त्री और दो चतुर्भुज पुरुप हैं। लोग कहते हैं कि पहले रामशिलाका नाम प्रेतशिला था, जव रामचन्द्र यहां आये, तवसे इसका नाम रामशिला हुआ है।

प्रेतशिला और ब्रह्मकुण्ड–रामशिलासे ४ मील पश्चिम प्रेतशिला एक पहाडी है। पत्थरके टुकडोंकी पक्की सडक बनी है। सवारीके लिये एक्के और वग्गी और पहाडियोंपर चढनेके लिये खटोली मिलती है। प्रेतशिलाके पासही उत्तर २४ गज लम्वा और इतनाही चौड़ा ब्रह्मकुण्ड नामक तालाव है। झरनेका पानी कुण्डमे गिरता है। चारो वगलोंपर पानी तक पक्की सीडियां बनी हैं। कुण्डके पास एक मन्दिर और दो तीन पण्डेके ओसारे हैं, जिनके उत्तर झरनेके पानीकी वावली है, जिसका जल ब्रह्मकुण्डमें गिरताहै। ब्रह्मकुण्डमें स्नान तर्पण करनेके उपरांत वहां पिण्डदान करके प्रेतशिलापर जाना होता है। ब्रह्मकुण्डसे ३६० सीढ़ियोंके ऊपर चढ़नेपर यात्री प्रेतशिलाके सिरपर पहुँचते हैं, जहां एक आंगनके तीन वगलोंपर ओसारे और पूर्व वगलपर आगेकी तरफ एक मण्डप है। मण्डप और पश्चिमके ओसारेमे कई पुरानी बौद्ध मूर्त्तियां हैं। वहां पिण्डदान करना होता है। कहते हैं कि पूर्व समयमें प्रेतशिलाका नाम प्रेत पर्वत था, जव रामचन्द्रके आनेपर प्रेतशिलाका नाम रामशिला हुआ। तव प्रेतपर्वतको प्रेतशिला लोग कहने लगे।

कागवलि—रामशिलासे करीव २०० गज दक्षिण सडकके पश्चिम वगलपर घेरी हुई जमीनके भीतर एक वट वृक्ष है। वहां एक वेदीके केवल तीन पिण्ड दिये जाते हैं। काग-वलि, यमवलि और श्वानवलि। इस दिन प्रेतिया ब्राह्मण (१) रुपया लेताहै और यात्रियोंको दूसरे दिनोंसे अधिक परिश्रम होता है।

(३) कृष्णपक्षकी द्वितीयाको उत्तर मानस, उदीची, कनखल, दक्षिण मानस और जिह्वालोल इन ५ वेदियोंपर पिण्डदान होता है। इनको पञ्चतीर्थी कहते हैं।

उत्तर मानस—विष्णुपदसे करीव १ मील उत्तर सिविल कचहरियोंसे २०० गज पूर्व उत्तर मानसनामक महल्लेमें रामशिला वाली सडकके पूर्व वगलपर करीव ५० गज लम्वा और इतनाही चौडा उत्तर मानस नामका तालाव है। उसके चारो वगलोंपर नीचेतक पक्की सीढियां हैं। तालावके पूर्व और दक्षिण चहार दीवारी, पश्चिम धर्मशाला और उत्तर एक शिखरदार मन्दिर है, जिसमे उत्तरार्क नामक सूर्य्य और शीतला आदि देवोंकी मूर्तियां स्थित हैं। मन्दिरके आगे पूर्व लम्वा जगमोहन है, जिससे मन्दिरमें अँधेरा रहता है। मन्दिरसे उत्तर पीपलकी जडके पास पितामहेश्वर महादेवका वहुत छोटा मन्दिर है। तालावके पश्चिमोत्तर कोनेके पास सडकके पश्चिम मौनेश्वर महादे-वका मन्दिर है। इसमे भी लम्वा जगमोहन होनेके कारण अँधेरा रहता है। दक्षिणकी

दीवारमें पार्वतीजी, पश्चिमकी दीवारमें सूर्य्य नारायण और गणेशजी और लक्ष्मीजीकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित है। लोग कहते है कि ब्रह्मा उत्तर मानसमें श्राद्ध करके इसी स्थानसे मौनव्रत धारणकर सूर्य्यकुण्ड तक गये, इसी लिये सम्पूर्ण यात्री उत्तर मानसमें पिण्डदान करनेके पश्चात् मौन होकर सूर्य्यकुण्डपर जाते है ।

उदीची, कनखल और दक्षिण मानस विष्णुपदके मन्दिरसे करीब १७५ गज उत्तर ९५ गज लम्बा और ६० गज चौडा दीवारसे घेरा हुआ सूर्य्यकुण्ड तालाब है। बगलोपर पत्थरकी पुरानी सीढियाँ लगी है। कुण्डके उत्तरका हिस्सा उदीची, मध्य हिस्सा कनखल, और दक्षिण हिस्सा दक्षिण मानस तीर्थ कहा जाता है। तीनो स्थानो पर तीन वेदीके २ पिण्डदान होते है सूर्य्यकुण्डके पश्चिम गुम्बजदार अन्धेरे मन्दिरमे पुराने ढंगकी सूर्य्य-नारायणकी चतुर्भुज मूर्ति खडी है जिसको दक्षिणार्क कहते हैं। जगमोहन पुराने ढाचेका आगेकी तरफ लम्बा है।

जिह्वालोल—सूर्य्यकुण्डसे करीब ८० गज दक्षिण फल्गूके किनारेपर जिह्वालोल तीर्थ है, वहाँ मैदानमें एक पीपलका वृक्ष और एक ओसारा है, जहां पिण्डदान होता है।

गदाधरजी—विष्णुपदसे ३० गज पूर्वोत्तर फल्गूके किनारेपर पूर्व मुखका शिखर-दार गदाधरजीका मन्दिर है। अन्दरमे गदाधरजीकी चतुर्भुज मूर्ति चबूतरे पर खडी है। मन्दिरके आगे तेहरा जगमोहन है । पूर्ववाले जगमोहनमें करीब एक गज ऊँची दोनों भुजाओंको नीचे लटकाये हुए एक मूर्ति खडी है, जिसको लोग रामचन्द्र कहते हैं। इसके दहिने हाथके नीचे एक पुरुषकी और बायें हाथके नीचे एक स्त्रीकी छोटी मूर्ति और इसके बायें दूसरी जगह तीन मुखवाली एक चतुर्भुज मूर्ति है। पंचतीर्थीके पिण्डदान होजानेके पीछे पञ्चामृतसे गदाधरजीको स्नान कराया जाता है। मन्दिरके पूर्व गदाधर घाट पर पत्थरकी २९ सीढ़ियाँ बनी है गदाधरजीके मन्दिरसे उत्तर शिखरदार मन्दिरमे करीब ३ हाथ ऊँची गयाश्री देवीकी अष्टभुजी मूर्ति खडी है।

(४) कृष्ण तृतीयाके दिन तीन वेदी पर पिण्डदान होता है,—मतङ्गवापी, धर्मा-रण्य और बोधगया। गयासे ६ मील दक्षिण बोधगया तक पक्की सडक है. परन्तु सरस्वती मतंगवापी और धर्मारण्य होकर जानेवाले यात्रियोंको ७ मीलका रास्ता पडता है । गयासे करीब ३ मील जाने पर पक्की सडक छूटजाती है। वहाँसे पैदल अथवा खटोलीपर एक मीलसे अधिक पूर्व दक्षिण जाने पर सरस्वती नदी मिलती है। फल्गूके दोनो तरफ बालूका मैदान है। सरस्वती नदीमें स्नान और तर्पण होता है। किनारे पर लगभग ४ गज ऊचा सरस्वतीका मन्दिर है। जिसमे यात्री सरस्वतीका दर्शन करते है। मन्दिरके भीतर और बाहर कई बौद्धमूर्तियाँ देखनेमें आती हैं। मन्दिरके उत्तर एक चबूतरे पर एक जोड़ा चरण चिह्न और १६ शिवलिङ्ग हैं जिनमेंसे दो में चारोंओर एक एक मूर्तियाँ बनी है । ऐसे लिङ्ग बोधगयाके मन्दिरके पास बहुत देख पडते हैं । पहले सरस्वतीके मन्दिरके चारों तरफ मकान थे, अब तक भी एक तरफ खडा है ।

मतंगवापी—सरस्वतीसे १ मीलसे अधिक दक्षिण मतंगवापी नामकी छोटी बावली है। कुछ दूर चौडी राह और कुछ दूर पगडण्डी मिलती है। वापीके उत्तर बगलमे सीढ़ियां और पश्चिमोत्तर दीवारके भीतर ४ मन्दिर खडे है, जिनमेंसे दो मामूली कदके नए शिव

मन्दिर और दो छोटे पुराने मन्दिर हैं। जिनमेंसे एकमें मतंगेश्वर शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित हैं। वहां कई बौद्धमूर्तियाँ देखनेमें आती हैं। वहाँ वापीके किनारे पर पिण्डदान होता है।

धर्मारण्य—मतंगवापीसे ¾ मील पूर्व दक्षिण धर्मारण्य स्थानकी एक छोटी बारहदरीमें यूप कूप नामक एक कूँआ है, वहाँ पिण्डदान करके पिण्डोको इसी कूपमें लोग डाल देते हैं। मेलेके समयमें पानीके ऊपरतक पिण्ड होजाते हैं। बारहदरीके दक्षिण-पूर्व एक छोटा मन्दिर है, जिसके भीतरकी मूर्त्तिको लोग धर्मराज अर्थात् युधिष्ठिर कहते हैं। मन्दिरके दक्षिण 'रहट कूप' नामक कूँआ है। कोई कोई पुत्रकामनाके लिये वहां पिण्डदान करता है, और नारियल फूल कूपमें डालकर पूजा करता है। कूपके दक्षिण छोटा मन्दिर है, जिसके भीतरकी मूर्त्तिको लोग भीम कहते हैं। धर्मारण्यमें कई बौद्ध मूर्त्ति देख पडती हैं। मतङ्ग-वापीसे वहाँतक पगडंडी राह है।

बोधगया—धर्मारण्यसे १ मीलसे अधिक पश्चिम बोधगयाका प्रसिद्ध मन्दिर है। फल्गू नदी लांघनेके समय दोनो तरफ बालू मिलती है। मन्दिरके उत्तर एक चबूतरे पर पीपलका पुराना वृक्ष है, जिसके पास पिंडदान होता है। प्रेतशिलाकी यात्राके सिवाय दूसरे दिनोंकी यात्रासे इस दिन यात्रीको अधिक परिश्रम होता है (बोधगयाका वृत्तान्त अन्यत्र देखो)

(५) कृष्ण चतुर्थीके दिन दो वेदीपर पिण्डदान होता है,—ब्रह्म सरोवर और काग बलि—गयाके दक्षिण फाटकसे लगभग ३५० गज और वैतरनी तालावसे ६५ गज दक्षिण सडकके पश्चिम किनारेपर १२५ गज लम्बा और ९ गज चौडा ब्रह्म सरोवर एक तालाब है। पूर्व और उत्तर बगलोंपर सीढियाँ बनी हैं। तालाबके जलमें दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास पूर्व तरफ झुकी हुई पत्थरकी गदा खडी है। ब्रह्म सरोवरमें स्नान तर्पण और पिण्डदान करके उसकी परिक्रमा करनी होती है। तालाबके पश्चिमोत्तर कोनेसे २० गज उत्तर वट वृक्षके पास कागबलि, यमबलि और श्वानबलि तीन पिण्ड दिये जाते हैं। वृक्षके चबूतरेके पूर्वोत्तर कोनेके पास एक छोटी बारहदरीमें एक चौकोना कुण्ड है, जिसमें तीनो पिण्ड डाल दिये जाते है सरोवरके पश्चिमोत्तर कोनेसे ४८ गज पश्चिम एक छोटे मन्दिरके भीतरकी दीवारमें पत्थर खोदकर तारक ब्रह्म बनाये गये हैं, जिनका दर्शन करना होता है ब्रह्म सरोवरसे करीब १३० गज पश्चिम एक चबूतरेके मध्यमें एक ऊँची वेदीपर केलेकी छोटी झाडीके बीच एक गजसे कम ऊँचा आम्रका वृक्ष है, जिसको यात्री लोग पानीसे सींचते है। पुराना वृक्ष गिर गया है।

(६) कृष्णपक्षकी पंचमीको तीन वेदीपर खीरका पिण्डदान होता है—सोलह वेदी-वाले मण्डपमें रुद्रपद और ब्रह्मपदके पास और विष्णुपदके मन्दिरमें विष्णुपदके निकट विष्णु-पदके वर्तमान मन्दिर और सोलह वेदीके मण्डपको इन्दौरकी महारानी अहिल्या बाईने बनवाया, जिसका राज्य सन् १७६५ से सन् १७९५ ई० तक था।

विष्णुपदका मन्दिर—गया शहरके दक्षिण-पूर्व फल्गू नदीके पास गयाके सब मन्दिरोंमें प्रधान और सबोंसे उत्तम विष्णुपदका विशाल मन्दिर पूर्व मुखसे खडा है। मन्दिर काले पत्थरसे बना हुआ भीतरसे आठ पहला है। कलस, ध्वजा और ध्वजाके स्तम्भपर सोनेका मुलम्मा हुआ है। किवाड़ोंमें चादीके पत्तर लगे हैं। मन्दिरके मध्यमें विष्णुका एक चरणचिह्न शिलापर

खड़ा है। उसके हौदेके चारों तरफ चाँदीका पत्तर लगा है। दीवारके ताकोंमें कई एक देवमूर्त्तियाँ स्थित है। मन्दिरके आगे १८ गज लम्बा और १७ गज चौडा ४२ खूब सूरत खम्भे लगे हुए काले पत्थरका बना हुआ गुम्बजदार उत्तम जगमोहन है। बीचका हिस्सा छोड़कर इसके चारों बगल दो मञ्जिले है। गुम्बजके ऊपर सोनहुला कलश लगा है। नीचे बड़ा घण्टा लटकता है। जगमोहनमें मन्दिरके दोनो बगलोंपर २ छोटी कोठरी हैं। दक्षिण-वालीमे मन्दिरका खजाना और उत्तरवालीमें कनकेश्वर, शिवलिङ्ग स्थित है। शिवके आगे मार्बुलका नन्दी है। जगमोहनके आगे ४ स्तम्भोसे बना हुआ छोटे मण्डपमे बडा घण्टा लटकता है, जिसके पास एक छोटी कोठरीमें काले पत्थरसे बनी हुई गरुडकी मूर्ति है।

सोलह वेदी नामक मण्डप—जगमोहनके पूर्व-दक्षिणके कोनेके पास कोनेके पूर्व और दक्षिण ३७ चौकोने स्तम्भ लगे हुए काले पत्थरसे बने हुए सोलह वेदियोंका मण्डप है। वेदि-योंके पास या उनके पासके खम्भेपर वेदियोंके नाम लिखे हुए हैं।

(७, ८ और ९) कृष्णपक्षकी ६ से ८तक तीन दिनमें सोलह वेदीके मण्डपमें १४ स्थानों-पर और उनके पासके छोटे मण्डपमें दो स्थानोंपर कुल १६ वेदीके पिण्डदान होते है (१) कार्त्तिक पद (२) दक्षिणाग्नि (३) गार्हपत्याग्नि (४) आहवनीयाग्नि (५) सातत्याग्नि (६) आवसथ्याग्नि (७) सूर्य्यपद (८) चन्द्रपद (९) गणेशपद (१०) दधीचपद (११) कण्वपद (१२) मतङ्गपद (१३) क्रौंचपद (१४) इन्द्रपद (१५) अगस्त्यपद और (१६) कश्यपपद। अष्टमीके दिन सोलहवेदीके मण्डपमें एक स्थानपर दूधसे गजकर्ण तर्पण होता है। नियत दिनपर बहुत भीड होती है। बहुत लोग मण्डपमें किसी स्थानपर या उसके आस पासके मैदान और ओसारोंमें वेदियोंके स्थान मानकर पिण्डदान करते हैं।

विष्णुपदके मन्दिरसे ३ गज दक्षिण गयाके पण्डा बिहारीलाल मेहरवारका बनवाया हुआ जगन्नाथजीका मन्दिर है। मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम और उत्तर दालान और धर्मशाला बनी हैं। वहाँ जगह जगह बहुत पुरानी बौद्ध मूर्त्तियाँ हैं, जिनको बहुत लोग हिन्दूके देवता जानते है। मन्दिरसे उत्तर एक छोटे मन्दिरमें नारायणके बायें लक्ष्मी और दहिने अहिल्या बाईकी मूर्त्तियाँ हैं। तीनों प्रतिमा मार्बुलकी बनी हुई हैं।

(१० कृष्णपक्षकी ९ को २ वेदियोंपर पिण्डदान होता है,—रामगयामे और सीता-कुण्डपर, पिछले स्थानपर माता, पितामही और प्रपितामहीको केवल तीनहीं बालूके पिण्ड दिये जाते है। और वहाँ सौभाग्य दानकी विधि है।

सीताकुण्ड और रामगया—विष्णुपदके मन्दिरके सामने पूर्व फल्गू नदीके दूसरे पार अर्थात् पूर्व किनारेको सीताकुण्ड कहते हैं। नगकूट पहाडकी नेवके पास चार पांच सीढ़ीके ऊपर एक छोटे मन्दिरमें जानकीजी, दशरथजीको पिण्डदान देती हैं। पिण्डलेनेके लिये दशरथजीका हाथ निकला है। मन्दिरसे पश्चिम इससे लगा हुआ एक दूसरा मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण और जानकीकी मूर्त्ति सुशोभित हैं। मन्दिरके दाक्षिण नायकजी गयावालका बनवाया हुआ शिव मन्दिर है। मन्दिरके ताकमे सूकर भगवान्‌की मूर्त्ति स्थित है। सीताजीके मन्दिरसे करीब २५ गज पूर्व एक छोटे मन्दिरमें कोई देवता हैं, जिसके पूर्वके मन्दिरमे मार्बुलकी ३ मूर्त्ति हैं। मध्यमें नृसिंहजी, उनके दहिने महावीरजी और बायें सूर्य्य। इस मन्दिरसे पूर्व राम, लक्ष्मण और जानकी हैं। इन मन्दिरोंके सामने रास्तेके उत्तर

एक आङ्गनके चारों तरफ कई छोटे मन्दिर और कमरे हैं। एकमें काष्ठमय जगन्नाथ वलभद्र और सुभद्रा; दूसरेमें मार्बुलके महावीरजी और तीसरेमें धातुविग्रह राम, लक्ष्मण, जानकी, राधा कृष्ण आदि हैं। राम मन्दिरके ईशान कोनपर रास्तेके सामने शिलामें खोदा हुआ एक शिवलिङ्ग है, जिसको रामनाथमहादेव कहते है महादेवके पास फल्गूके जलके पास तक२४सीढी बनी हैं। सीढ़ियोंके सिरेके पास करीव १२ गज लम्बा और ८ गज चौडा आंगन है, जिसके ३ बगलोंपर दीवार और पश्चिम बगल ओसारा है ओसारेमें राम जानकीकी पुरानी मूर्त्तियोंके आगे भूमिपर शिला निकली हुई है, जो भरताश्रमकी वेदी कही जाती है। उसी स्थानपर रामगयाका पिण्ड दान होता है। आंगनमें मतङ्ग ऋषिका वडा चरण चिह्न बनाया गया है। वहाँ भी बौद्ध मूर्त्तियोंके समान बहुत मूर्त्तियाँ देख पड़ती हैं। पर्वतके सिरपर गयावालके बनवाये हुए एक छोटे मन्दिरमें छोटे स्तम्भके समान महावीरजी हैं।

(११) कृष्णपक्षकी दशमीके दिन गयाशिरमें और गयाकूपमें पास दो वेदीका पिण्ड दान होता है;—

गयाशिर—विष्णुपदके मन्दिरसे लगभग ५० गज दक्षिण गयाशिर नामक स्थान है, वहाँ दक्षिण मुखके ओसारेके आगे थोडी भूमि है। ओसारेमें एक छोटा चौकोना कुण्ड है, जिसमें बहुतेरे लोग पिण्डदानके पीछे पिण्डोंको डाल देते हैं। ओसारेके पश्चिमकी दीवारमें एक स्त्री और माला लिये हुए एक पुरुषकी मूर्त्ति बनी है।

गयाकूप—विष्णु पदके मान्दिरसे करीब १०० गज दक्षिण-पश्चिम और गयाशिरसे पश्चिम करीव १८ गज लम्बे और १० गज चौडे एक आँगनमें गया कूप है। आँगनके तीन बगलो पर दीवार और पश्चिम तरफ ओसारा है। कूपके पश्चिम पीपलका मोटा वृक्ष है। कोई कोई यात्री अकाल-मृत्युसे मरे हुए प्रेतोंको एक नारियल पर आवाहन करके इस कूपमें छोड देते हैं नारियल छोडनेवालेको १$\frac{3}{4}$ रुपया वहाँ देना पडता है यात्री लोग पिण्डदान होनेके पीछे पिण्डोंको गयाकूपके पाटनपर डाल देते है।

(१२) कृष्णपक्षकी ११ को ३ वेदियोंपर पिण्डदान होता है—मुण्डपृष्ठा, आदिगया और धौतपद। उस दिन खोवे या गुड तिल अथवा सिंगहाडेके आटे आदि फलाहारी वस्तुओंके पिण्ड बनाए जाते हैं। कोई कोई आटेका भी पिण्डदान करता है।

मुण्डपृष्ठा—गयाकूपसे करीव ५० गज पश्चिम ऊँची भूमिपर एक आगनमे पूर्व मुखकी छोटी कोठरी है। उसमे १२ भुजावाली मुण्डपृष्ठा देवीकी मूर्ति स्थित है। मन्दिरके पास चारों तरफ आंगनमें पिण्डदान होताहै।

आदिगया—मुण्डपृष्ठासे दाक्षिण-पश्चिम आदिगया है वहाँ शिलापर पिण्डदान होता है। उससे पश्चिम एक आंगन है, जिससे पाश्चिम ५ सीढ़ी नीचे उतरनेपर दूसरा आँगन मिलता है। उससे पश्चिम ३ सीढी नीचे उतरने पर एक छोटी कोठरीमें प्रवेश करना होता है, जिसमें शिला काटकर ५ वेडौल मूर्त्ति बनी है, जिनमे आदि गदाधर प्रधान है।

धौतपद—आदिगयासे दक्षिण-पश्चिम और गयाके दक्षिण फाटकसे दक्षिण-पूर्व एक ओसारेमें करीव ३$\frac{1}{2}$ हाथ लम्बी और एक हाथ चौडी उजली शिला भूमि पर निकली हुई है वहीं पिण्डदानकी वेदी है। भीड होनेपर इसके आसपास लोग पिण्डदान करते हैं।

(१३) कृष्णपक्षकी १२ के दिन ३ वेदियोंपर पिण्डदान होता है,—भीमगया, गोप्रचार और गदालोल ।

भीमगया—वैतरनीके पश्चिमोत्तरके कोनेसे करीव ८० गज पश्चिम भीमगया है। वहाँ एक घेरेके भीतर भी शिलापर पिण्डदान करना होता है। घेरेमें दक्षिण मुखके ओसारेमें ३ हाथ गडहा भीमके अँगूठेका चिह्न है। दक्षिण तरफकी कोठरीमें भीमसेनकी मूर्त्ति है। भीमगयासे लगभग ११५ गज पश्चिम दक्षिण भस्मकूट नामक ऊँची भूमिपर करीव ४६ सीढ़ियोंके ऊपर पुराने ढाचेके जनार्दन भगवान्का शिखरदार मन्दिर है, जिसके आगे पूर्व तरफ एकही द्वारवाला जगमोहन वना है । जगमोहनके भीतर ऊँचे १६ स्तम्भ लगे है। मन्दिरके भीतर भगवानकी चतुर्भुज मूर्त्ति खड़ी है उसके दोनो हाथोंके नीचे एक एक छोटी मूर्त्ति है। जगमोहनके आगे करीव २ गज ऊँचे ३ शिवमन्दिर वने हुए है। जनार्दनके मन्दिरसे थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम पुराने ढाचका मङ्गलादेवीका छोटा मन्दिर है जिसमें मङ्गलेश्वर शिवलिङ्ग और एकहीमें ५ लिङ्गस्वरूप मङ्गलादेवी है। वहाँ कई वौद्ध मूर्त्तियाँ देखनेमें आती है और ओसारानुमा एक धर्मशाला वनी है ।

गोप्रचार—मङ्गलादेवीके मन्दिरसे दक्षिण नीचेकी ओर २२ सीढ़ियाँ गई है, उसके दहिने वगलपर गोप्रचार स्थान है। वहाँ एक आँगनके ३ तरफ दीवार और उत्तर ओर दालानके आगे ओसारा है, जिसमें भूमि पर शिला निकली हुई है । शिलापर गौओके छोटे वडे-खुरोंके वहुत चिह्न है लोग कहते है कि इस स्थानपर ब्रह्माने गोदान किया था, इस शिलापर और इसके आसपास पिण्डदान होता है।

गदालोल—अक्षयवटसे दक्षिण गदालोल नामक कच्चा तालाव है, जिसमे सव जगह पानी नही रहता। इसके उत्तर किनारे पर ओसारानुमा दो छोटी धर्मशाला है। दक्षिण-पश्चिम हिस्सेके जलमे छोटे पतले स्मेके समान गदा खडी है। यात्री लोग धर्मशालाओंमे पिण्डदान करके गदाका दर्शन करते हैं ।

(१४) कृष्ण पक्षकी १३ को फल्गूमे स्नान करके दूधका तर्पण और सन्ध्या समय ४५ वेदियोंके ४५ दीपदान फल्गूके किनारे या कुछ किनारे पर और कुछ विष्णुपद आदि प्रख्यात मन्दिरोंके पास लोग करते है।

(१५) कृष्ण पक्षकी १४ को वैतरनीमें तर्पण होता है। वहाँ गोदानकी विधि है गयाके दक्षिण फाटकसे १३० गज दक्षिण और ब्रह्म सरोवरसे ६५ गज उत्तर सडकके पश्चिम किनारे पर १३० गज लम्वा और इससे आधा चौड़ा वैतरनी नामक तालाव है। पश्चिम और पूर्व वगलोपर जगह जगह सीढियाँ वनी है।

(१६ वें दिन) अमावास्याके दिन अक्षयवटके पास पिण्डदान होता है और पण्डे लोग अपने अपने यात्रियोंको सुफल देते है। वहाँ शय्यादानकी विधि है।

अक्षयवट—ब्रह्म सरोवरसे करीव २५० गज पश्चिम मङ्गला देवीसे २०० गज दक्षिण पश्चिम और गदालोलसे उत्तर सडकके उत्तर वगलपर अक्षयवट नामक वटवृक्ष है। १८ सीढियोंको लाँघनेपर ३० गज लम्वे और २८ गज चौडे पत्थरके फरसपर अक्षयवट मिलता है जिसके उत्तर पुरानी चालका पूर्व मुख वटेश्वर शिवका मन्दिर है। उसके आगेकी दीवार में नागरी अक्षरका पुराना लेख है। अक्षयवटके पूर्वोत्तर एक दूसरा वटवृक्ष है। फरशके

पश्चिमोत्तर कोनेके पास दक्षिण मुखकी एक खूबसूरत दालान और पूर्व बगलपर एक आँगनके चारोंओर दालान हैं, जिनकी छत फर्शके बराबर है। पूर्वकी छतपर एक बैठक उत्तरवाली पर खूबसूरत दालान बनी है। फर्शसे पश्चिम उससे लगा हुआ ३० गज लम्बा और १६ गज चौडा दो हिस्सेमें दूसरा फरश है। उनमेंसे उत्तरवाले हिस्सेके उत्तर तरफ अक्षयवट वालेफरसकी दालानसे लगी हुई उसीके समान सुन्दर दालान और दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास एक छोटी बैठक है। अक्षयवटसे पश्चिम रुक्मिणी तालाब और उत्तर वृद्धप्रपितामहेश्वर-का मन्दिर है। मन्दिर पुरानी चालका है। शिवलिङ्ग अर्घके साथ करीब १ गज ऊँचा है। लिङ्गके पूर्व बगलपर एक मुख बना हुआ है।

गयाके पिण्डदानकी विधि–पूर्णिमासे अमावास्यातक १६ दिनोंमे ४५ वेदियोंके पिंड-दान समाप्त हो जाते हैं,जो सीताकुण्डकी नवीन वेदीके साथ ४६ वीं होती है। नियत दिनोंके सिवाय दूसरे दिनभी यात्री वेदियोंपर पिण्डदान करते हैं। बहुतेरे लोग दोहीचार दिनोंमें सम्पूर्ण वेदियोंपर पिण्डदान करदेते है। कुछ लोग मुख्य मुख्य वेदियोंपर पिण्डदान करके चले जाते हैं। आश्विन आदि श्राद्धके मुख्य महीनोंमें प्रतिदिन बहुतेरे यात्री आते हैं। कृष्णपक्षकी पंचमीसे बहुतेरे लोग सुफल कराके जाने लगते हैं। प्रत्येक वेदीपर १ पिता, २ पितामह, ३ प्रपितामह, ४ माता, ५ प्रमाता, ६ वृद्धप्रमाता, ७ मातामह, ८ प्रमातामह, ९ वृद्धप्रमातामह १० मातामही, ११ प्रमातामही और १२ वृद्धप्रमातामहीके नामसे १२ पिण्ड दिये जाते है। जिसका नाम नहीं मालूम रहता, उसके लिये 'यथानाम' कहना होता है। इसके पीछे पिता कुल, माता-कुल, श्वसुर-कुल, गुरुकुल, आदि लोगोंको और नोकरको भी पिण्ड दिये जाते हैं। (१७वें दिन) शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाके दिन गायत्री घाटपर दही अक्षतका पिण्डदान होकर गयाश्राद्धका काम समाप्त होता है। विष्णुपदके मन्दिरसे करीब ½ मील उत्तर फल्गू नदीमें गायत्री घाट है। नीचेसे ऊपरतक उसमें ६७सीढ़ी लगी है ११ सीढियोंके ऊपर गायत्री देवीका छोटा मन्दिर है। मन्दिरके आगेकी दीवारपर लेख है,जिससे जान पडता है कि संवत् १८५६ के भादों सुदी १५ को दौलतराव माधवजी सेन्धियाके पोते सेठ खुशहालचन्दकी स्त्री गयामें श्राद्धकरनेको आई, तब उसने गायत्री घाट और इस मन्दिरको बनवाया। गायत्रीके मन्दिरसे उत्तर एक गयावालका बनवाया हुआ राधाकृष्णका मन्दिर है, उससे उत्तर एक छोटे हातेमें लक्ष्मीनारायणका मन्दिर और गायत्री घाटसे उत्तर ब्रह्माणी घाटपर फल्गवीश्वर शिवका मन्दिर है। दक्षिण तरफ एक दूसरे मन्दिरमें सूर्यनारायणकी चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है. जिसको लोग गयादित्य कहते हैं।

संकटा देवी और प्रपितामहेश्वर–विष्णुपदके मन्दिरसे करीब ३३० गज दक्षिण लखनपुरामें पूर्व मुखके ओसारेके पीछे २ कोठरी हैं। दक्षिणकी कोठरीमें भैरव और सिहके सहित संकटा देवीकी चतुर्भुज मूर्त्ति और उत्तरवाली कोठरीमें प्रपितामहेश्वर शिवलिङ्ग हैं। देवीके पास बहुतेरी बौद्ध मूर्त्तियोंके समान पुरानी मूर्त्तियां और शिवलिङ्गके पास बहुतेरे नए शिवलिङ्ग हैं।

अनेक देवमन्दिर—गयासे पश्चिम गृद्धकूट पहाडीके पश्चिम छोटे मन्दिरोंमे गृद्धेश्वर महादेव, ऋणमोचन महादेव और पापमोचन महादेव हैं। पापमोचनसे दक्षिण गोदावरी-नामक छोटा तालाब है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिरमें गणेशजीकी मूर्त्ति स्थित है।

ब्रह्मयोनि—अक्षयवटसे २०० गज पश्चिम-दक्षिण जानेपर सडक छूटकर पगडण्डी मिलती है, जिससे ¾ मील पश्चिम-दक्षिण जानेपर पहाडीपर चढनेके लिये सीढी मिलती है। उससे उत्तर पहाडीकी जडके पास छोटे मन्दिरमें गौपर सवार पञ्चमुखवाली सावित्री देवीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके आगे सावित्रीकुण्ड नामक छोटा पोखरा है। १६२ सीढी लांघने पर खुला हुआ कमरा मिलता है। ३६० सीढियोंके ऊपर एक टोंकेके नीचे रुद्रयोनि, ४०० सीढियोंके ऊपर विष्णुकुण्डनामक वावली, जिसमें जानेको पतली सीढियाँ है और ४५० सीढियोंके ऊपर एक चौक है। चौकके मध्यमें ऊंचे चबूतरेपर एक शिवलिङ्ग और पश्चिम पत्थरके ढोकोंके नीचे ब्रह्मयोनि है, जिससे होकर कोई कोई यात्री निकलते हैं। गवालियरके महाराज जयाजी रावने इन सीढियोंको बनवाया, जिनके ऊपर उनका नाम है। चौकसे ११ सीढियोंके ऊपर दोहरा ओसारा मिलता है जिसके पीछेके मन्दिरके ताकोंमें ४ पुरानी बौद्ध मूर्त्तियाँ है। एकके आगे गौपर सवार पञ्चमुखी सावित्रीकी मूर्त्ति है। ओसारेमें २ चरण चिह्न है, जिनके पास महाराज जयाजी रावका नाम खोदा हुआ है वहां मेलेके समय कोई पुजारी स्त्री या पुरुष रहता है। यात्री बहुत कम जाते हैं।

गया जिला—गया जिलेका क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला; पूर्व मुङ्गेर जिला, दक्खिन और दक्षिण-पूर्व लोहरदग्गा जिला और पश्चिम सोन नदी, बाद शाहाबाद जिला है। गयाकी दक्षिणी सीमाकी पहाडियाँ विन्ध्यका एक भागहै इनमें जङ्गल लगे है और बनैले जन्तु रहते हैं। देश साधारण प्रकारसे समतल है, किन्तु स्थान २ मे पहाडियाँ देख पडती है। ऊंची पहाडियाँ जङ्गल और घासमे छिपी हुई है और दूसरी पथरीली और पौधोंसे रहित हैं। सबसे अधिक ऊंची गया कसबेसे १२ मील दक्षिण-पूर्व माहर पहाडी है। उसकी ऊंचाई समुद्रके जलसे १६२० फीट है। गया जिलेका पूर्वी भाग अधिक उपजाऊ और उत्तर-पश्चिमका कम उपजाऊ है। शेष भागमें पहाडी और जङ्गल, जिसमें बहुत जङ्गली जानवर हैं, देखनेमे आते है। दक्षिणी पहाडियोंमे बाघ और बहुतेरे भागोंमें तेंदुये और भालू रहते हैं। बहुतेरी नदियाँ दक्षिणकी पहाडियोंसे निकलकर जिलेमें दक्षिणसे उत्तर बहती हैं। पुनपुन नदी जिलेके दक्षिणी सीमासे निकलकर पर्वोत्तर गङ्गाकी ओर बहती है। दो पहाडी धाराओंके मेलसे फल्गू नदी बनी है। सूखी ऋतुओंमें फल्गू नदी सूख जाती है जिलेमें कई एक नहर निकली है।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय २१४१०६५ और सन् १८८१ मे २१३४६८२ मनुष्य थे, अर्थात् १८९१४८४ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान और २००५७ क्रस्तान इत्यादि। जातियोंके खानेमे ३०९८७१ ग्वाला, १५२६४६ भूमिहार, ११४४०२ राजपूत, १०८२४९ दुसाध, १४४६७५ कोईरी, ११६९६१ कहार, ८९७५० ब्राह्मण, ८३४६९ भुइआ ७८५५२ चमार, ५७३७० तली, ४९३०४ बनिआ, ४३९६५ कायस्थ, ४३६११ कुर्मी, ४३७७३ रजवाड और शेषमें पासी, हजाम, बढई इत्यादि थे। जिलेमें लगभग ३०० घर गयावाल ब्राह्मण हैं। सन् १८९१ ई० मे गया जिलेके कसबे गयामे ८०३८३, टिकारीमें ११५३२, और दाउदनगर, शेरघाटी, जहानाबाद और हसुआमे १०००० से कम मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अत्रिस्मृति—(५५ से ५८ वे श्लोक तक) बहुत पुत्रोंमेंसे एक भी यदि गयाको जाय अथवा नीले बैलसे वृषोत्सर्ग करे तो उसको अश्वमेध यज्ञका फल

पश्चिमोत्तर कोनेके पास दक्षिण मुखकी एक खूबसूरत दालान और पूर्व बगलपर एक आँगनके चारोंओर दालान हैं, जिनकी छत फर्शके बराबर है। पूर्वकी छतपर एक बैठक उत्तरवाली पर खूबसूरत दालान बनी है। फर्शसे पश्चिम उससे लगा हुआ ३० गज लम्बा और १६ गज चौडा दो हिस्सेमें दूसरा फरश है। उनमेंसे उत्तरवाले हिस्सेके उत्तर तरफ अक्षयवट वालेफरसकी दालानसे लगी हुई उसीके समान सुन्दर दालान और दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास एक छोटी बैठक है। अक्षयवटसे पश्चिम रुक्मिणी तालाब और उत्तर वृद्धप्रपितामहेश्वर-का मन्दिर है। मन्दिर पुरानी चालका है। शिवलिङ्ग अर्घेके साथ करीब १ गज ऊँचा है। लिङ्गके पूर्व बगलपर एक मुख बना हुआ है।

गयाके पिण्डदानकी विधि—पूर्णिमासे अमावास्यातक १६ दिनोंमें ४५ वेदियोंके पिंडदान समाप्त हो जाते हैं, जो सीताकुण्डकी नवीन वेदीके साथ ४६ वीं होती है। नियत दिनोंके सिवाय दूसरे दिनभी यात्री वेदियोंपर पिण्डदान करते हैं। बहुतेरे लोग दोहीचार दिनोंमें सम्पूर्ण वेदियोंपर पिण्डदान करदेते है। कुछ लोग मुख्य मुख्य वेदियोंपर पिण्डदान करके चले जाते हैं। आश्विन आदि श्राद्धके मुख्य महीनोंमें प्रतिदिन बहुतेरे यात्री आते हैं। कृष्णपक्षकी पंचमीसे बहुतेरे लोग सुफल कराके जाने लगते हैं। प्रत्येक वेदीपर १ पिता, २ पितामह, ३ प्रपितामह, ४ माता, ५ प्रमाता, ६ वृद्धप्रमाता, ७ मातामह, ८ प्रमातामह, ९ वृद्धप्रमातामह १० मातामही, ११ प्रमातामही और १२ वृद्धप्रमातामहीके नामसे १२ पिण्ड दिये जाते है। जिसका नाम नही मालूम रहता, उसके लिये 'यथानाम' कहना होता है। इसके पीछे पिता कुल, माता-कुल, श्वसुर-कुल, गुरुकुल, आदि लोगोंको और नोकरको भी पिण्ड दिये जाते हैं। (१७वें दिन) शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाके दिन गायत्री घाटपर दही अक्षतका पिण्डदान होकर गयाश्राद्धका काम समाप्त होता है। विष्णुपदके मन्दिरसे करीब ½ मील उत्तर फल्गू नदीमें गायत्री घाट है। नीचेसे ऊपरतक उसमें ६८ सीढ़ी लगी है ११ सीढियोंके ऊपर गायत्री देवीका छोटा मन्दिर है। मन्दिरके आगेकी दीवारपर लेख है, जिससे जान पडता है कि सवत् १८५६ के भादों सुदी १५ को दौलतराव माधवजी सेन्धियाके पोते सेठ खुशहालचन्दकी स्त्री गयामें श्राद्धकरनेको आई, तब उसने गायत्री घाट और इस मन्दिरको बनवाया। गायत्रीके मन्दिरसे उत्तर एक गयावालका बनवाया हुआ राधाकृष्णका मन्दिर है, उससे उत्तर एक छोटे हातेमें लक्ष्मीनारायणका मन्दिर और गायत्री घाटसे उत्तर ब्रह्माणी घाटपर फल्गवीश्वर शिवका मन्दिर है। दक्षिण तरफ एक दूसरे मन्दिरमें सूर्यनारायणकी चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग गयादित्य कहते हैं।

संकटा देवी और प्रपितामहेश्वर—विष्णुपदके मन्दिरसे करीब ३३० गज दक्षिण लखनपुरामें पूर्व मुखके ओसारेके पीछे २ कोठरी हैं। दक्षिणकी कोठरीमें भैरव और सिंहके सहित संकटा देवीकी चतुर्भुज मूर्त्ति और उत्तरवाली कोठरीमें प्रपितामहेश्वर शिवलिङ्ग हैं। देवीके पास बहुतेरी बौद्ध मूर्त्तियोंके समान पुरानी मूर्त्तियां और शिवलिङ्गके पास बहुतेरे नए शिवलिङ्ग हैं।

अनेक देवमन्दिर—गयासे पश्चिम गृद्धकूट पहाडीके पश्चिम छोटे मन्दिरोंमें गृद्धेश्वर महादेव, ऋणमोचन महादेव और पापमोचन महादेव हैं। पापमोचनसे दक्षिण गोदावरी-नामक छोटा तालाब है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिरमें गणेशजीकी मूर्त्ति स्थित है।

ब्रह्मयोनि—अक्षयवटसे ३०० गज पश्चिम-दक्षिण जानेपर सडक छूटकर पगडण्डी मिलती है, जिससे ½ मील पश्चिम-दक्षिण जानेपर पहाड़ीपर चढ़नेके लिये सीढ़ी मिलती है। उससे उत्तर पहाडकी जड़के पास छोटे मन्दिरमें गौपर सवार पञ्चमुखवाली सावित्री देवीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके आगे सावित्रीकुण्ड नामक छोटा पोखरा है। १६३ सीढ़ी लांघने पर खुला हुआ कमरा मिलता है। २६० सीढियोंके ऊपर एक टोकेके नीचे रुद्रयोनि, ४०० सीढ़ियोंके ऊपर विष्णुकुण्डनामक बावली, जिसमें जानेको पतली सीढियॉ है और ४५० सीढियोंके ऊपर एक चौक है। चौकके मध्यमें ऊंचे चबूतरेपर एक शिवलिङ्ग और पश्चिम पत्थरके ढोकोंके नीचे ब्रह्मयोनि है, जिससे होकर कोई कोई यात्री निकलते हैं। गवालियरके महाराज जयाजी रावने इन सीढ़ियोंको बनवाया, जिनके ऊपर गचका काम है। चौकसे ११ सीढियोंके ऊपर दोहरा ओसारा मिलता है जिसके पीछेके मन्दिरके ताकोंमें ४ पुरानी बौद्ध मूर्त्तियॉ है। एकके आगे गौपर सवार पञ्चमुखी सावित्रीकी मूर्त्ति है। ओसारेमें २ चरण चिह्न है, जिनके पास महाराज जयाजी रावका नाम खोदा हुआ है वहॉ मेलेके समय कोई पुजारी स्त्री या पुरुष रहता है। यात्री बहुत कम जाते हैं।

गया जिला—गया जिलेका क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला; पूर्व मुङ्गेर जिला, दक्खिन और दक्षिण-पूर्व लोहरदग्गा जिला और पश्चिम सोन नदी, बाद शाहाबाद जिला है। गयाकी दक्षिणी सीमाकी पहाड़ियाँ विन्ध्यका एक भागहै इनमें जङ्गल लगे है और बनैले जन्तु रहते हैं। देश साधारण प्रकारसे समतल है, किन्तु स्थान २ में पहाड़ियॉ देख पडती है। ऊँची पहाडियॉ जङ्गल और घाससे छिपी हुई है और दूसरी पथरीली और पौधोंसे रहित हैं। सबसे अधिक ऊँची गया कसबेसे १२ मील दक्षिण-पूर्व माहर पहाडी है। उसकी ऊँचाई समुद्रके जलसे १६२० फीट है। गया जिलेका पूर्वी भाग अधिक उपजाऊ और उत्तर-पश्चिमका कम उपजाऊ है। शेष भागमें पहाडी और जङ्गल, जिसमें बहुत जङ्गली जानवर हैं, देखनेमे आते है। दक्षिणी पहाडियोंमे बाघ और बहुतेरे भागोंमें तेंदुये और भालू रहते हैं। बहुतेरी नदियॉ दक्षिणकी पहाडियोसे निकलकर जिलेमें दक्षिणसे उत्तर बहती है। पुनपुन नदी जिलेके दक्षिणी सीमासे निकलकर पूर्वोत्तर गङ्गाकी ओर बहती है। दो पहाडी धाराओंके मेलसे फल्गू नदी बनी है। गर्मी ऋतुओंमें फल्गू नदी सूख जाती है जिलेमें कई एक नहर निकली हैं।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय २१४१०६५ और सन् १८८१ मे २१३४६८२ मनुष्य थे, अर्थात् १८९१४८९ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान और २८०५७ क्रस्तान इत्यादि। जातियोंके खानेमे ३०९८७१ ग्वाला, १५२६४६ भूमिहार, ११४४०२ राजपूत, १०८२२९ दुसाध, १४४६७५ कोइरी, ११६९६१ कहार, ८९७५० ब्राह्मण, ८३४६९ मुहआ ७८५५२ चमार, ५७३७० तेली ४९३०४ बनिआ, ४३९६५ कायस्थ, ४२६७१ कुर्मी, ४३७७३ रजवाड और शेषमें पासी, हजाम बढई इत्यादि थे। जिलेमें लगभग ३०० घर गयावाल ब्राह्मण हैं। सन् १८९१ ई० मे गया जिलेके कसबे गयामें ८०३८३, टिकारीमें ११५३२ और दाऊदनगर, शेरघाटी, जहानाबाद और हसुआमें १०००० से कम मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अत्रिस्मृति—(५५ से ५८ वे श्लोक तक) बहुत पुत्रोंमेंसे एक भी यदि गयामें जाय अथवा नीले बैलसे वृषोत्सर्ग करे तो उसको अश्वमेध यज्ञका फल

पश्चिमोत्तर कोनेके पास दक्षिण मुखकी एक खूबसूरत दालान और पूर्व बगलपर एक आँगनके चारोंओर दालान हैं, जिनकी छत फर्शके बराबर है। पूर्वकी छतपर एक बैठक उत्तरवाली पर खूबसूरत दालान बनी है। फर्शसे पश्चिम उससे लगा हुआ ३० गज लम्बा और १६ गज चौडा दो हिस्सेमें दूसरा फरश है। उनमेंसे उत्तरवाले हिस्सेके उत्तर तरफ अक्षयवट वालेफरसकी दालानसे लगी हुई उसीके समान सुन्दर दालान और दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास एक छोटी बैठक है। अक्षयवटसे पश्चिम रुक्मिणी तालाब और उत्तर वृद्धप्रपितामहेश्वर-का मन्दिर है। मन्दिर पुरानी चालका है। शिवलिङ्ग अर्घेके साथ करीब १ गज ऊँचा है। लिङ्गके पूर्व बगलपर एक मुख बना हुआ है।

गयाके पिण्डदानकी विधि—पूर्णिमासे अमावास्यातक १६ दिनोंमें ४५ वेदियोंके पिंड-दान समाप्त हो जाते है,जो सीताकुण्डकी नवीन वेदीके साथ ४६वीं होती है। नियत दिनोंके सिवाय दूसरे दिनभी यात्री वेदियोंपर पिण्डदान करते हैं। बहुतेरे लोग दोहीचार दिनोंमें सम्पूर्ण वेदियोंपर पिण्डदान करदेते है। कुछ लोग मुख्य मुख्य वेदियोंपर पिण्डदान करके चले जाते हैं। आश्विन आदि श्राद्धके मुख्य महीनोंमें प्रतिदिन बहुतेरे यात्री आते हैं। कृष्णपक्षकी पंचमीसे बहुतेरे लोग सुफल कराके जाने लगते हैं। प्रत्येक वेदीपर १ पिता, २ पितामह, ३ प्रपितामह, ४ माता, ५ प्रमाता, ६ वृद्धप्रमाता, ७ मातामह, ८ प्रमातामह, ९ वृद्धप्रमातामह १० मातामही, ११ प्रमातामही और १२ वृद्धप्रमातामहीके नामसे १२ पिण्ड दिये जाते हैं। जिसका नाम नहीं मालूम रहता, उसके लिये 'यथानाम' कहना होता है। इसके पीछे पिता कुल, माता-कुल, श्वसुर-कुल, गुरुकुल, आदि लोगोंको और नोकरको भी पिण्ड दिये जाते हैं। (१७वें दिन) शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाके दिन गायत्री घाटपर दही अक्षतका पिण्डदान होकर गयाश्राद्धका काम समाप्त होता है। विष्णुपदके मन्दिरसे करीब ¾ मील उत्तर फल्गू नदीमें गायत्री घाट है। नीचेसे ऊपरतक उसमें६८सीढी लगी है ११ सीढियोंके ऊपर गायत्री देवीका छोटा मन्दिर है। मन्दिरके आगेकी दीवारपर लेख है,जिससे जान पडता है कि संवत् १८५६ के भादों सुदी १५ को दौलतराव माधवजी सेन्धियाके पोते सेठ खुशहालचन्दकी स्त्री गयामें श्राद्धकरनेको आई, तब उसने गायत्री घाट और इस मन्दिरको बनवाया। गायत्रीके मन्दिरसे उत्तर एक गयावालका बनवाया हुआ राधाकृष्णका मन्दिर है, उससे उत्तर एक छोटे हातेमें लक्ष्मीनारायणका मन्दिर और गायत्री घाटसे उत्तर ब्रह्माणी घाटपर फल्गूश्वर शिवका मन्दिर है। दक्षिण तरफ एक दूसरे मन्दिरमें सूर्यनारायणकी चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग गयादित्य कहते हैं।

संकटा देवी और प्रपितामहेश्वर—विष्णुपदके मन्दिरसे करीब ३३० गज दक्षिण लखनपुरामें पूर्व मुखके ओसारेके पीछे २ कोठरी हैं। दक्षिणकी कोठरीमें भैरव और सिंहके सहित संकटा देवीकी चतुर्भुज मूर्त्ति और उत्तरवाली कोठरीमें प्रपितामहेश्वर शिवलिङ्ग हैं। देवीके पास बहुतेरी बौद्ध मूर्तियोंके समान पुरानी मूर्त्तियां और शिवलिङ्गके पास बहुतेरे नए शिवलिङ्ग हैं।

अनेक देवमन्दिर—गयासे पश्चिम गृद्धकूट पहाडीके पश्चिम छोटे मन्दिरोंमें गृद्धेश्वर महादेव, ऋणमोचन महादेव और पापमोचन महादेव हैं। पापमोचनसे दक्षिण गोदावरी-नामक छोटा तालाब है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिरमें गणेशजीकी मूर्त्ति स्थित है।

ब्रह्मयोनि—अक्षयवटसे ३०० गज पश्चिम-दक्षिण जानेपर सडक छूटकर पगडण्डी मिलती है, जिससे ¾ मील पश्चिम-दक्षिण जानेपर पहाडीपर चढ़नेके लिये सीढ़ी मिलती है। उससे उत्तर पहाडीकी जडके पास छोटे मन्दिरमें गौपर सवार पञ्चमुखवाली सावित्री देवीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके आगे सावित्रीकुण्ड नामक छोटा पोखरा है। १६३ सीढ़ी लांघने पर खुला हुआ कमरा मिलता है। २६० सीढ़ियोंके ऊपर एक टोकेके नीचे रुद्रयोनि, ४०० सीढ़ियोंके ऊपर विष्णुकुण्डनामक बावली, जिसमें जानेको पतली सीढियाँ है और ४५० सीढियोंके ऊपर एक चौक है। चौकके मध्यमें ऊंचे चबूतरेपर एक शिवलिङ्ग और पश्चिम पत्थरके ढोकोंके नीचे ब्रह्मयोनि है, जिससे होकर कोई कोई यात्री निकलते हैं। गवालियरके महाराज जयाजी रावने इन सीढियोंको बनवाया, जिनके ऊपर रचका काम है। चौकसे ११ सीढियोंके ऊपर दोहरा ओसारा मिलता है जिसके पीछेके मन्दिरके ताकोंमें ४ पुरानी बौद्ध मूर्त्तियाँ है। एकके आगे गौपर सवार पञ्चमुखी सावित्रीकी मूर्त्ति है। ओसारेमें २ चरण चिह्न है, जिनके पास महाराज जयाजी रावका नाम खोदा हुआ है वहाँ मेलेके समय कोई पुजारी स्त्री या पुरुष रहता है। यात्री बहुत कम जाते हैं।

गया जिला—गया जिलेका क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला; पूर्व मुङ्गेर जिला, दक्खिन और दक्षिण-पूर्व लोहरदग्गा जिला और पश्चिम सोन नदी, बाद शाहाबाद जिला है। गयाकी दक्षिणी सीमाकी पहाडियाँ विन्ध्यका एक भागहै उनमें जङ्गल लगे है और बनैले जन्तु रहते हैं। देश साधारण प्रकारसे समतल है, किन्तु स्थान २ मे पहाडियाँ देख पडती है। ऊंची पहाडियाँ जङ्गल और घाससे छिपी हुई है और दूसरी पथरीली और पौधोंसे रहित हैं। सबसे अधिक ऊँची गया कसबेसे १२ मील दक्षिण-पूर्व माहर पहाडी है। उसकी ऊँचाई समुद्रके जलसे १६२० फीट है। गया जिलेका पूर्वी भाग अधिक उपजाऊ और उत्तर-पश्चिमका कम उपजाऊ है। शेष भागमें पहाडी और जङ्गल, जिसमें बहुत जङ्गली जानवर हैं, देखनेमें आते है। दक्षिणी पहाडियोंमे बाघ और बहुतेरे भागोंमे तेंदुये और भालू रहते हैं। बहुतेरी नदियाँ दक्षिणकी पहाडियोंसे निकलकर जिलेमें दक्षिणसे उत्तर बहती हैं। पुनपुन नदी जिलेके दक्षिणी सीमासे निकलकर पूर्वोत्तर गङ्गाकी ओर बहती है। दो पहाडी धाराओंके मेलसे फल्गू नदी बनी है। गर्मी ऋतुओंमें फल्गु नदी सूख जाती है जिलेमें कई एक नहर निकली है।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय २१४१०६५ और सन् १८८१ मे २१२४६८२ मनुष्य थे, अर्थात् १८९१४८४ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान और २८०५७ कृस्तान इत्यादि। जातियोंके खानेमे ३०९८७१ ग्वाला, १५२६४६ भूमिहार, ११४४०२ राजपूत, १०८२२९ दुसाध, १४४६७५ कोइरी, ११६९६१ कहार, ८९५५० ब्राह्मण, ८३४६९ भुइंआ ७८५५२ चमार, ५७३७० तेली ४९३०४ बनिआ, ४३९६५ कायस्थ, ४३०७१ कुर्मी ४३७७३ गजवाड और शेषमें पासी, हजाम, बढई इत्यादि थे। जिलेमें लगभग ३०० घर गयावाल ब्राह्मण हैं। सन- १८९१ ई० में गया जिलेके कसबे गयामे ८०३८३ टिकारीमें ११५३२. और दाउदनगर, शेरघाटी, जहानाबाद और हसुआमे १०००० से कम मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अत्रिस्मृति—(५५ से ५८ वे श्लोक तक) बहुत पुत्रोंमेंसे एक भी यदि गयामें जाय अथवा नीले बैलसे वृषोत्सर्ग करे तो उसको अश्वमेध यज्ञका फल

होता है। नरकोसे डरते हुए पितर यह इच्छा करते हैं कि जो पुत्र गयाको जायगा वह हमारा रक्षक होगा। मनुष्य फल्गु तीर्थमे स्नान और गदाधर देवके दर्शन करके और गयासुरके शिरपर चरण रखकर ब्रह्महत्यासे भी छूट जाता है। जो मनुष्य महा नदीमे स्नान करके पितर और देवताओका तर्पण करता है वह अक्षय लोकोंको प्राप्त होता है और अपने कुलका उद्धार करता है। (३५६ से ३६० श्लो०) श्राद्धके समय बडे यत्नसे ब्राह्मणकी परीक्षा करनी उचित है। कन्या राशि पर जब सूर्य्य आते है तब पितर अपने उत्तम पुत्रके समीप गमन करते हैं फिर वृश्चिककी संक्राति होनेपर जब पिण्ड नहीं पाते हैं, तब निराश हो शाप देकर अपने भवनको चले जाते हैं।

कात्यायन स्मृति—(२९ वाँ खण्ड) कोई २ विद्वान पिण्डदानको ही प्रधान कहते है क्योंकि गया आदि तीर्थोंमें पिण्डही दिया जाता है इत्यादि।

बृहस्पति स्मृति—(२० वाँ श्लोक) नरकके भयसे डरते हुए पितर यह कहते हैं कि जो पुत्र गयामे जायगा वही हमारी रक्षा करनेवाला होगा।

शंखस्मृति—(१४ वाँ अध्याय) गयामें जाकर जो कुछ पितरोंके निमित्त दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। गयाके तीरका दान अनन्त फल देता है।

लिखितस्मृति— (१० वें से १३ वे श्लोक तक) जो पुत्र गयाको जाय वा अश्वमेध यज्ञ करे अथवा नील वैलका उत्सर्ग करे वही सुपुत्र है गयामें जिसके नामसे पिण्डदान किया जाता है वह यदि नरकमे हो तो स्वर्गमें जाता है और स्वर्गमे होय तो मुक्त होता है।

याज्ञवल्क्यस्मृति (श्राद्ध प्रकरण) गया तीर्थमे और भादों वदी त्रयोदशी विशेष करके मघायुक्त त्रयोदशीमें पिण्ड देनेसे निस्सन्देह अनन्त काल पितरोंकी तृप्ति रहती है। वसु, रुद्र, अदितिसुत और पितर ये श्राद्धके देवता हैं, ये श्राद्धसे तृप्त होकर मनुष्योंके पितरोको तृप्त करते हैं, जब पितर तृप्त होते हैं तो मनुष्योंको आयु, पुत्र, धन, विद्या, स्वर्ग. मोक्षसुख और राज्य देते हैं।

महाभारत—(वनपर्व–८४ वाँ अध्याय) गयामें जानेसे अश्वमेधका फल और कुलका उद्धार होता है। वहाँ तीन लोकोंमे विख्यात अक्षयवट है। (८७ वाँ अध्याय) चाहे अश्वमेध करे, चाहे काले रंगका साँड़ छोडे, चाहे गयाको जाय, तीनो कर्मोंका यही फल है कि १० अगली और १० पिछली पीढ़ियोंका उद्धार हो जाता है, गयामे महानदी और गयागिरनामक तीर्थ है। उसी जगह ब्राह्मण लोग अक्षयवट बतलाते हैं और उसी जगह पवित्र जलवाली फल्गू नामक महानदी है।

(९५ वाँ अध्याय) पाण्डव लोग गयामें पहुँचे, जहाँ धर्मज्ञ राजा गयने पर्वतक संस्कार किया है। उसी जगह उसने अपने नामसे गयाशिर नामक तीर्थ स्थापन किया है। उसी जगह उत्तम घाटवाली फल्गु नामक महानदी है। जहाँ पवित्र शिखरवाला दिव्य पर्वत है, उसी जगह ब्रह्मसरनामक उत्तम तीर्थ है, जहाँसे अगस्त्य मुनि सूर्य्यके पास गये थे। उसके पासही सब नदियोंका एक सोता है। वहाँ महादेव सदा वास करते है और अक्षयवट वृक्ष है, जिसका फल अक्षय होता है। वहाँ यज्ञ करनेसे अक्षय पुण्य लाभ होता है। उसी तीर्थ मे राजा अमूर्त्तरयसके पुत्र राजा गयने तालावके तटपर बड़े बड़े अनेक यज्ञ किये है। (द्रोण पर्व ६४ वाँ अध्याय) यज्ञ कर्मके प्रभावसे राजा गय जगतमे

विख्यात हुए थे। उनका कीर्तिस्वरूप अक्षयवट और ब्रह्मसरोवर तीनों लोकोंमे विख्यात होकर जगतमें स्थित है। (शल्य पर्व ३८ वाँ अध्याय) जब राजा गय गयानामक स्थानमें यज्ञ कर रहे थे और अनेक व्रतधारी ब्राह्मणोंने सरस्वतीका ध्यान किया तब त्रिशालानामक सरस्वती गयामें पहुँची। वह शीघ्र वहनेवाली नदी हिमाचलके शिखरसे चली थी।

(अनुशासन पर्व-२५ वाँ अध्याय), गयाके अन्तर्गत अश्मपृष्ठमें स्नान करनेसे पहली ब्रह्महत्या, निरविन्द पर्वतपर दूसरी ब्रह्महत्या और क्रौंचपदीमें स्नान करनेसे तीसरी ब्रह्महत्या छूट जाती है। (८८ वाँ अध्याय) बहुत पुत्रोंके लिये कामना करनी योग्य है क्योंकि उसमेसे एक पुत्र भी तो गया धाममें जायगा जहाँ परलोक विख्यात अक्षयवट है।

वाल्मीकिरामायण-(अयोध्याकाण्ड-१०७ वाँ सर्ग) गयनामक एक यशस्वी पुरुषने जो गया प्रदेशमें यज्ञ करता था, पितर लोगोंके पास यह वाक्य कहा कि पुत्रोंमेंसे कोई एक भी यदि गयाको जायगा तो पितरोंका उद्धार होगा।

लिङ्गपुराण—(६५ वाँ अध्याय) सूर्यके पुत्र मनुका सुद्युम्न नामक पुत्र था, जो स्त्री रहनेके समय इला कहलाता था। सुद्युम्नके ३ पुत्र हुए, उत्कल, गय और विनताश्व। उनमें से गयके नामसे गया बसी।

वामनपुराण-(७६ वाँ अध्याय जहाँ गय राजाने १०० बार अश्वमेध यज्ञ और सैकडो हजारोबार मनुष्यमेध यज्ञ किया है और मुरारि भगवान् गदाधर नामसे प्रसिद्ध हो रहे हैं वही गया तीर्थ है। (९० वाँ अध्याय) वामनजी बोले कि गयामें गोपतिदेव, ईश्वर, त्रैलोक्यनाथ, वरद और गदापाणि मेरा रूप है।

वाराहपुराण—(१८३) वाँ अध्याय) पितर कहने लगे कि गया श्राद्धकर अक्षयवटके नीचे पिण्डदान करो।

मत्स्यपुराण—(२२ वाँ अध्याय) गया नामसे प्रसिद्ध पितृतीर्थ सब तीर्थोंमें उत्तमहै।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड-७६ वां अध्याय) जो मनुष्य गयाके विष्णुपदमें पिण्डदान और विष्णुकी पूजा करता है, वह पितृगण और अपनेको उद्धार करदेता है।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड-११ वा अध्याय) गयामें विष्णुपदनामक पितरोंका सर्वोपरि तीर्थ है, जहां आश्विनमासके कृष्ण पक्षमे पिण्ड वा जलदानकरनेसे प्रेतयोनिमें प्राप्त भी पिता पितामहादि तुरन्त ब्रह्मलोकको चले जाते हैं। पुन पुना नदीके तीरपर गया तीर्थ है। श्राद्धके विषयमें गयाके समान कोई भी तीर्थ नहीं है। (स्वर्ग खण्ड-२० वाँ अध्याय) आषाढ़ी पूर्णिमाके पीछे जो पांचवां पक्ष होता है (आश्विनका कृष्णपक्ष) उसमें श्राद्ध करे, चाहे कन्याके सूर्य्य हो अथवा न हों। कन्याके सूर्य्य होनेपर जो प्रथमके १६ दिन होते है वे श्रेष्ट यज्ञोंके समान हैं। महापुण्य काम्य श्राद्ध करनेका कन्याके सूर्य्यहीमें मुख्य काल होता है। यदि किसी कारणसे कन्याके सूर्य्यमें श्राद्ध न कर सके तो तुलाके सूर्य्यमें कृष्ण पक्षके १६ दिनमें करे, क्योंकि जब कन्या तुला दोनो राशियोंके सूर्य्यमें कृष्ण पक्षके १६ दिनोंमें श्राद्ध नहीं हो तो वृश्चिकके सूर्य्य हो जानेसे पितर निराश होकर चले जाते हैं।

देवी भागवत (९ वाँ स्कन्ध ४४ वाँ अध्याय) सृष्टिके आदिमें ब्रह्माजीने ७ पितृगणों को उत्पन्न करके श्राद्ध तर्पण उनका आहार बना दिया ।

सौरपुराण–(६७ वाँ अध्याय) परमगुप्त गया तीर्थमें भगवान् महादेवके चरणचिह्न प्रतिष्ठित है । वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है । मनुष्य महानदीमें स्नान करके रुद्रपदके स्पर्श करनेसे अपने पितरोंके सहित शिवलोकमें निवास करते हैं ।

कूर्मपुराण–(उपरिभाग ३४ वाँ अध्याय) परमगुप्त गया तीर्थमें श्राद्धादि कर्म करनेसे पितर लोगोंका पृथ्वीमें पुनरागमन नहीं होता है । गयामें ब्रह्माजीने जगतके हितके लिये तीर्थशिलापर चरण अंकित किया है । पितरगण लड़कोंके उत्पन्न होनेपर प्रसन्न होकर कहते हैं कि हमारे वंशमें हम सबको तारन करने वालेने जन्म लिया यह किसी समयमें गया जाकर हम लोगोंको परमपद देगा । कोई पुत्र गयामें जाकर पिण्डदानादि कर्मकरे तो पितरगणोंका स्वर्गवास होता है ।

अग्निपुराण—(११५ वाँ अध्याय) पूर्वकालमें देवगण गयासुरकी तपस्यासे त्रसित होकर विष्णुभगवान्‌की शरणमें गये और उनसे बोले कि हे प्रभो ! तुम हमलोगोंकी गयासुरसे रक्षा करो । विष्णुने दैत्यके पास जाकर उससे कहा कि वरदान माँगो । गयासुर बोला कि हे भगवान् मै सम्पूर्ण तीर्थोंसे पवित्र हो जाऊँ । यह वरदान देकर जब विष्णु चले गये तब स्वर्ग और भूमिमें सम्पूर्ण देवता और ब्राह्मण दैत्यके अधिक तेज होनेसे निस्तेज होगये । देवताओंने विष्णुसे निवेदन किया कि हे प्रभो सम्पूर्ण देवता ब्राह्मण और तीर्थ शून्य प्राय होगये हैं तुम इसका उचित उपाय करो । ब्रह्माने विष्णुके आदेशानुसार देवताओंके साथ गया-सुरके पास जाकर उससे कहा कि मै अतिथि हूँ तुम यज्ञ करनेके लिये अपना पवित्र शरीर मुझको देदो । ऐसा सुन असुर भूमिपर लेट गया और बोला कि हे भगवान्, आप हमारे शरीरसे यज्ञ कीजिये । ब्रह्माने असुरके सिरपर यज्ञ किया; किन्तु पूर्णाहुति देनेके समय वह चलायमान हो गया । तब विष्णुकी आज्ञानुसार धर्मराजने देवमयी शिलाको गयासुरके ऊपर रक्खा और शिलाके ऊपर विष्णुकी गदाधर मूर्त्ति स्थापित की और सम्पूर्ण देवताओंके सहित आप भी उसपर निवास करने लगे ।

धर्मणी शिला धर्म्मराजकी पुत्री थी, उसका विवाह ब्रह्माके पुत्र महर्षि मरीचिसे हुआ मरीचिने उससे रमण करनेके उपरान्त श्रमातुर होकर उससे कहा कि मै शयन करताहूँ तुम मेरा चरण दबाओ । मुनिके शयन करनेपर शिला उनके चरण दबाने लगी । उसी समय ब्रह्माजी वहाँ आगये शिला विचार करने लगी कि ब्रह्माका पूजन करूँ कि स्वामीका चरण दबाऊँ ? अन्तमें वह ब्रह्माजीको अपने स्वामीका पिता जानकर चरण दबाना छोड़ पुष्पादिकसे ब्रह्माका पूजन करने लगी । मरीचिने अपने स्त्रीको ब्रह्माकी पूजामें निरत देखकर उसको शाप दिया कि तुम शिला अर्थात् पत्थर हो जावो । शिलाने कहा मैंने तुम्हारी सेवा छोड़कर तुम्हारे पिताकी सेवा कीहै, तुमने मुझ निरपराधिनीको शाप दिया है इसलिये तुमको भी शिवजी शाप देवेंगे । इसके पश्चात शिलाने सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या की । विष्णु आदि देवता वरदान देनेके लिये उसके पास आये शिलाने ऐसा वरदान माँगा कि मेरा शाप निवृत्त हो जावे । देवताओंने कहा कि मरीचिका शाप व्यर्थ नहीं होगा; किन्तु सम्पूर्ण देवताओंके चरणोंका चिह्न तुम्हारे ऊपर रहेगा । शिला बोली कि तुम लोग सर्वदा हमारे ऊपर निवास करो ।

विष्णु आदि देवता उसको वरदान देकर स्वर्गको चले गये। वही शिला गयासुरके ऊपर रक्खी गई। उसपर भी जब असुर चलायमान होने लगा, तब देवताओंने विष्णुका आराधन किया। विष्णुने जब अपनी गदाधर मूर्त्तिको शिलापर स्थापित किया, तब असुर स्थिर हो गया। पूर्व समयमे विष्णुने गदनामक एक असुरको मारा, विश्वकर्माने उसकी अस्थिसे एक गदा बनाई और विष्णुने उस गदाको स्वीकार किया इस कारण उनका नाम गदाधर पडा वही मूर्त्ति गदाधरी कहलाती है। असुरके स्थिर होनेपर। ब्रह्माने अपना यज्ञ समाप्त किया और ब्राह्मणोंको बहुत दक्षिणा दी। देवताओंने गयासुरको वरदान दिया कि, तुम्हारा शरीर विष्णुतीर्थ, शिवतीर्थ और ब्रह्मतीर्थ होगा और वह सम्पूर्ण तीर्थोंसे प्रसिद्ध और पितर गणोंको मोक्ष देनेवाला होगा। ऐसा कह देवतागण उसी स्थानपर स्थित हो गये।

गयामें संक्रान्तिके दिन श्राद्ध कर्म करनेका महाफल है। मनुष्य प्रतिपदामें श्राद्ध करनेसे धनी होता है, द्वितीयामे करनेसे रूपवती भार्य्या मिलती है, चतुर्थीमें करनेसे धर्म्म और वाँछित फल लाभ होता है; पञ्चमीमे श्राद्ध करनेसे पुत्र प्राप्त होता है; षष्ठीका श्राद्ध श्रेष्ठ है, सप्तमीमे श्राद्ध करनेसे गृहस्थको लाभ होता है, अष्टमीमें श्राद्ध करनेसे अर्थ लाभ होता है, नवमीमे श्राद्ध करनेसे एक खुरवाले पशुओंके व्यापारमे लाभ होता है; दशमीमें श्राद्ध करनेसे गौ गणोंकी वृद्धि होतीहै, एकादशीमे श्राद्ध करनेसे कुटुम्बगणोंका कल्याण होता है; द्वादशीमे श्राद्धकरनेसे धन धान्यकी वृद्धि होती है, त्रयोदशी और चतुर्दशीमें श्राद्ध करनेसे ज्ञाति जन आनन्दित होते है, और अमावस्यामे श्राद्ध करनेसे सम्पूर्ण मनोरथ प्राप्त होता है। युगादि तिथिमे अर्थात् माघकी पूर्णिमा, भाद्र कृष्ण त्रयोदशी, वैशाख शुक्ल तृतीया और कार्त्तिक शुक्ल नवमी, कार्त्तिककी द्वादशी, माघ और भाद्रपदकी तृतीया, फाल्गुनकी अमावस्या, पौषकी एकादशी आषाढकी द्वादशी, माघकी सप्तमी, श्रावणके कृष्णपक्षकी अष्टमी, आषाढ, कार्त्तिक, फाल्गुन और ज्येष्ठकी पूर्णिमाको श्राद्ध करनेसे अक्षय फल प्राप्त होता है।

गरुडपुराण—(पूर्व खण्ड ८२ वाँ अध्याय) पूर्व कालमे सम्पूर्ण प्राणियोंको क्लेशदेनेवाले गयनामक असुरने उग्र तपस्या की। उसके तपसे पीडित होकर देवता लोग विष्णुकी शरणमे गये। उसके उपरान्त किसी दिन गयासुरने शिवकी पूजाके निमित्त समुद्रसे कमलका पुष्प लाकर कीकट देशमे शयन किया। विष्णुने गदासे उसको मारा। इस कारणसे वह गदाधर नामसे गयामें निवास करते है और उसके पुण्यमय शरीरपर लिङ्गरूपी पितामह, जनार्दन, शिव प्रपितामह रहने लगे। उसके पश्चात् विष्णुने कहा कि यह स्थान पुण्यक्षेत्र होगा। यहाँ श्राद्ध पिण्ड दान स्नानादि कर्म करनेसे स्वर्गमें निवास होगा। उसके उपरान्त ब्रह्माने गयाको उत्तम तीर्थ जानकर वहाँ यज्ञ किया और यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणोंको बहुत सा धन और पाँचकोसका गयाक्षेत्र दिया और रसवती महानदी और तड़ागोंको वहाँ रचा। उसने कहा कि ब्रह्मज्ञान गयामे श्राद्ध, गौ ग्रहमें मृत्यु और कुरुक्षेत्रमें निवास ये चार मनुष्योंके मुक्ति लाभके प्रधान स्थान हैं। गयामें श्राद्ध करनेसे ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी-गमन और पापियोंके संसर्गके पापका विनाश हो जाता है।

(८३ वाँ अध्याय) कीकट देशमें गयापुरी और राजगृह वन पुण्य स्थान है। गयाके चारोंओर अढाई कोस मुण्डपृष्ठ और पाँच कोसमे गयाक्षेत्र और एक कोसमें गयाशिर है। फल्गु तीर्थमे पिण्डदान देनेसे पितरगणोंकी उत्तम गति होती है। मनुष्य गयामे जानेसे पितृ-

ऋणसे मुक्त हो जाते हैं और पितृरूपी जनार्दनके दर्शन करनेसे पितृऋण, ऋषिऋण और देवऋणसे छूट जाते हैं। गयामें रथमार्ग कालेश्वर और केदारके दर्शन करनेसे मनुष्य पितृ-ऋणसे उद्धार पाता है और उस स्थानपर ब्रह्माके दर्शन करनेसे उसका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है। प्रपितामहको देखनेसे अक्षय पद मिलता है और गदाधर पुरुषोत्तमको भक्ति पूर्वक नमस्कार करनेसे पुनर्जन्म नही होता। मौनादित्य और कनकार्कके दर्शन करनेसे पितृ-ऋणसे उद्धार होता है और उस जगह ब्रह्माके पूजन करनेसे ब्रह्मपद लाभ होता है। जो मनुष्य उस स्थानमें प्रातःकाल गायत्रीका दर्शन करके प्रयत्नसे संध्या करता है वह सम्पूर्ण वेद पढ़नेका फल पाता है। मध्याह्नमें सावित्रीके दर्शन करनेसे यज्ञ करनेका फल प्राप्त होता है और संध्या कालमे सरस्वतीके दर्शनसे सम्पूर्ण दानका फल मिलता है। पर्वतस्थित शिवजीके और धर्मारण्यमें धर्मके दर्शन करनेसे पितरगणोंसे उद्धार होता है। गृद्धेश्वरके दर्शन करनेसे बन्धनसे मुक्ति होती है प्रभासमे प्रभासेश्वरके दर्शन करनेसे उत्तम गति मिलती है। कोटीश्वर और अश्वमेध यज्ञके स्थानके दर्शन करनेसे मनुष्य तीनों ऋणोंसे छूट जाता है और स्वर्ग द्वारेश्वरके दर्शन करनेसे भवबन्धनसे छूटता है। मनुष्य रामेश्वर और गदालोलके दर्शन करनेसे स्वर्ग पाते है और ब्रह्मेश्वरके दर्शनसे ब्रह्महत्यासे छुटकारा पाते हैं। मुण्डपृष्ठमें महा-चण्डीके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण कामना प्राप्त होती है। फल्ग्वीश, फल्गुचण्डी, मङ्गला गौरी, गोमक, गोपति, अङ्गारेश, सिद्धेश, गया और मार्कण्डेश्वर इनके दर्शन करनेसे मनुष्य पितृऋण से उद्धार पाता है। फल्गु तीर्थमे स्नान करके गदाधरके दर्शन करनेसे मनुष्य सम्पूर्ण प्रकारके पुण्य प्राप्त करता है और उसके २१ पुश्त ब्रह्मलोकमे जाते है। पृथ्वीमें गया और गयामें गयाशिर श्रेष्ठ है। कनकादिक नदी जो नाभितीर्थ कही जाती है और ब्रह्मसर तीर्थमे स्नान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। कूपमें पिण्डदान देनेसे पितृगणोसे उद्धार होता है। अक्षयवटमें श्राद्ध करनेवाले मनुष्य पितृगणोंको ब्रह्मलोकमें भेजते हैं। हंसतीर्थमें स्नान करनेवाला मनुष्य सम्पूर्ण पापोसे छूट जाता है। कोटितीर्थ, गदालोल, वैतरणी और गोमक इनतीर्थोंमें श्राद्ध करनेसे २१ पुश्त ब्रह्मलोकमें प्राप्त होते हैं ब्रह्मतीर्थ, रामतीर्थ, रामह्रद, आग्नेय, और सोम-तीर्थमें स्नान करनेवाले पितृकुलको ब्रह्मलोक प्राप्त कराते है। उत्तर मानसमे श्राद्ध करने वाले मनुष्यका पुनर्जन्म नहीं होता। स्वर्गद्वारमें श्राद्ध करनसे पितरोंको ब्रह्मलोक मिलता है। भस्मकूटमें तर्पण करने वाला मनुष्य पितृगणको तारता है। गृद्धेश्वरमे श्राद्ध करनेसे पितृ-ऋणसे उद्धार होता है। धेनुकारण्यमे श्राद्ध करनेसे पितृगण ब्रह्मलोकमे जाते है। गायत्री सावित्री और सरस्वती इन तीर्थोंमे स्नान, संध्या और तर्पण करनेसे १०१ पुश्तको ब्रह्म-लोक मिलता है। जो मनुष्य पितरोंको स्मरण करते हुए ब्रह्मयोनिमे प्रवेश करके उससे बाहर निकलते है, वे पितर और देवताओंको तृप्त करके पुनर्जन्म सकटमे नहीं पडते काक-जम्बामे तर्पण करनेसे पितरगणोकी अक्षय तृप्ति होती है। धर्मारण्य और मतङ्गवापीमें श्राद्ध करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है। धर्मयूप और कूपमे श्राद्ध करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है। धर्मयूप और कूपमें श्राद्ध करनेवाले मनुष्यका पितृऋणसे उद्धार हो जाता है। रामतीर्थमें स्नान करके प्रभासमें श्राद्ध करनेसे पितृगण प्रेतत्व छोड़कर मुक्ति पाते हैं। स्वपृष्ठमें श्राद्ध करनेवाला २१ पुश्तोंको तारता है। मुण्डपृष्ठादिमें श्राद्ध करनेसे पितृगण ब्रह्मलोकमें जाते हैं गयाके पञ्चक्रोशके किसी स्थानमें पिण्डदान देनेवाला मनुष्य

अक्षय फलको प्राप्त करता है और पितरोंको ब्रह्मलोकमें भेजता है। गयामें धर्मपृष्ठ, ब्रह्मसर, गयाशिर और अक्षयवटमे जो कुछ पितरोंको दिया जाता है उसका अक्षयफल होता है। धर्मारण्य, धर्मपृष्ठ; धेनुकारण्य इनके दर्शन करनेसे भी २१ पुश्तका तरन होजाता है। गया नदीके पश्चिम भागमे ब्रह्मारण्य और पूर्वमें ब्रह्मसर है। नागाद्रीको भरताश्रम कहते है गयाशिरसे दक्षिण और महानदीसे पश्चिम चम्पकवन और चम्पकवनमें पाण्डुशिला है। उस स्थान पर और कौशिकी ह्रदमें तृतीयाको श्राद्ध करनेसे अक्षय फल मिलता है। वैतरनीसे उत्तर तृतीया नामक सरोवरके निकट क्रौंचपद है, उस स्थानमें श्राद्ध करनेसे पितरगण स्वर्गमें निवास करते है। क्रौंचपदसे उत्तर निश्चिराख्य जलाशय है उस स्थानपर एकबार पिण्डदान करनेसे मनुष्यको कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं रहता। जो मनुष्य महानदीके जल स्पर्श करके पितर और देवताओंके तर्पण करते है, उनको अक्षय लोक प्राप्त होता है। मुण्डपृष्ठ, अरविंद पर्वत और क्रौंचपदके दर्शन करनेसे भी सम्पूर्ण पाप छूट जाता है। माघ मास, चन्द्रग्रहण और सूर्य्यग्रहणमें गयाका पिण्डदान दुर्लभ है। महाह्रद कौशिकी, मूलक्षेत्र और गृध्रकूटके गुहेमें पिण्डदान देना अति उत्तम है। महेश्वरीधारमें स्नान करनेवाला मनुष्य सम्पूर्ण ऋणसे विमुक्त होजाता है विशाला नदीमे श्राद्ध करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है। सूर्य्यपदमें पिण्डदान देनेसे पतितोंका उद्धार होता है। वैतरनी नदी पितरगणोंको तारनेके लिये गयामे आई है। उसमे पिण्डदान करके गोदान करनेसे २१ पुश्तका उद्धार होजाता है। ब्रह्माके निर्माण किये हुए स्थानोंपर पिण्डदान करनेवाले मनुष्योंको गया बास होता है। राम तीर्थ और मतंगवापीमें स्नान करनेवाले मनुष्यको १०० गोदान करनेका फल मिलता है। वशिष्टजीके आश्रम पर स्नान करनेसे वाजपेय यज्ञका फल, महाकौशीमें निवास करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल, ब्रह्मसरसे निकली हुई कपिलामें स्नान और श्राद्ध करनेसे अग्निष्टोमका फल और कुमारधारामे श्राद्ध और कुमारको नमस्कार करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है। सोमकुण्डमे स्नान करनेसे सोमलोकमें निवास होता है संवर्तक सरमे पिण्डदान देनेसे वांछित फल प्राप्त होता है। प्रेतकुण्ड पर पिण्ड देनेसे मनुष्य पवित्र होता है।

(८४ वाँ अध्याय) मुण्डन और उपवास सम्पूर्ण तीर्थोंका नियम है; परन्तु कुरुक्षेत्र, विशाला, विरजा और गयामें इनकी आवश्यकता नहीं है। गयामें दिन और रात्रिमें सर्वदा श्राद्ध होता है। मुण्डपृष्टसे उत्तर कनखल तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य स्वर्गमे निवास करते है और वहाँ श्राद्ध करनेसे अक्षयफल प्राप्त होता है। प्रथम दिन फल्गु तीर्थसे स्नान और गदाधर और पितामहके दर्शन करनेसे मनुष्यके २१ पुश्तका उद्धार होता है। दूसरे दिन मतंगवापी और धर्मारण्यमे श्राद्ध करनेसे वाजपेय यज्ञका फल, ब्रह्म तीर्थमे पिण्डदान करनेसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञका फल होता है। कूप यूपमे श्राद्ध और तर्पण करनेवाले मनुष्यके पितृगणोंको अक्षयफल मिलता है। तृतीय दिन ब्रह्मसरमें स्नान और तर्पण करके कूप यूपमें पिण्डदान और ब्रह्माके कल्पित स्थानोंके सेवन करनेसे मनुष्यके पितृगण मुक्त होजाते है और यूपको प्रदक्षिण करनेसे वाजपेय यज्ञका फल होता है। चतुर्थ दिन फल्गु तीर्थमें स्नान, देवतादिकोंके तर्पण और गयाशीर्ष द्रुपदादि, पन्थाग्नि, सूर्य्य, इन्द्र, कार्त्तिकेय इन तीर्थोंमें श्राद्ध करनेसे अक्षय फल मिलता है। दशाश्वमेध तीर्थमें स्नान करके पितामहके

दर्शन और रुद्रपदका स्पर्श करनेसे पुनर्जन्म नहीं होता। गयाशिरमें पिण्डदान देनेसे तीन बार पृथ्वी दान करनेका फल लाभ होता है। मुण्डपृष्ठमें रुद्रपदके निकट अल्प भी तपस्या करनेसे महत फल मिलता है। पञ्चम दिन गदालोलमें स्नान और वटवृक्षके नीचे श्राद्ध करनेसे सम्पूर्ण कुलका उद्धार होता है। अक्षयवटके नीचे पिण्डदान देनेसे मनुष्यको अक्षयलोक प्राप्त होता है और १०० पुस्तका उद्धार हो जाता है।

वायुपुराण—(४३ वॉ अध्याय) गयासुरके तपके तेजसे देवता और ऋषिगण त्रसित हुए, तब ब्रह्माजीने याचना करके उसका शरीर माँग लिया और अत्यन्त पवित्र जानकर श्वेतवाराहकल्पमें उसके शिरपर यज्ञ किया। पूर्णाहुतिके समय जब दैत्य चलायमान हुआ, तब विष्णुकी आज्ञासे धर्मराजने उसके शिरपर शिला स्थापितकर दिया; उसपर भी जब असुर स्थिर नहीं हुआ, तब भगवान् गदाधर उसपर स्थित हुए। ब्रह्माने अपना यज्ञ समाप्त करके ब्राह्मणोंको बहुत दान दिया। श्वेतवाराहकल्पमें जब गयने ब्रह्मा करके निर्मित क्षेत्रमें यज्ञ किया, तबसे गयके नामसे वह क्षेत्र गया नामसे प्रसिद्ध हुआ। ब्रह्मज्ञान, गयाका श्राद्ध, गोगृहकी मृत्यु और कुरुक्षेत्रके निवाससे मनुष्योंकी अवश्य मुक्ति होती है। गयामें श्राद्ध करना सर्वदा विहित है। सिंह राशिमें बृहस्पतिके होनेपर सम्पूर्ण तीर्थ गौतम क्षेत्रमें निवास करते है, इसलिये सिंहस्थ बृहस्पतिमें तीर्थादिक कर्म करनेका निषेध है, परन्तु उस समयमें भी गयामें पिण्डदान करना विहित है। गया तीर्थ करनेवाले मनुष्यको अकाल मृत्यु होनेपरभी प्रेतयोनिमें निवास नहीं होता। गयाक्षेत्रमें मृत्यु होनेसे बिना ब्रह्मज्ञानके मनुष्यकी मुक्ति हो जाती है। २ ½ कोसतक गया, ५ कोस तक गयाक्षेत्र और १ कोस गया शिर है। इन्हींके मध्यमें सम्पूर्ण तीर्थ बास करते है। गयाशिरपर पिण्डदान करनेसे १०० कुलका उद्धार होता है। गयामे खीरसे, सत्तूसे, पिसानसे, चावलसे और फल मूलादिकसे भी पिण्डदान करना विहित है। मधु, घृत, तिल, से युक्त हविष्यान्नके पिण्डदान करनेसे पितृगणोंकी अक्षय तृप्ति होती है। वैतरणी नदीमें स्नान करके महा गोदान करनेसे सात पीढ़ीतकका उद्धार होता है। चैत्र, वैशाख, आश्विन, पौष और फाल्गुनमें गयाका पिण्डदान दुर्लभ है।

(४४ वॉ अध्याय) गयासुरने कई एक वर्षतक कोलाहल गिरिपर उग्र तपस्याकी, उस तपस्यासे देवतागण क्षोभित हुए। वे लोग ब्रह्मा और शिवको अपने साथ लेकर क्षीरशायी विष्णुके पास गये। विष्णु भगवान् सब देवताओंके सहित गयासुरके पास आए, उन्होंने असुरसे कहा कि तुम कैसे फलके लिये तपस्या करते हो जो इच्छा हो वह वर माँगो। गयासुरने कहा कि मैं सब देवताओ, ऋषियों, मन्त्र, यज्ञ और तीर्थादिकोंसे पवित्र हो जाऊँ। जब देवतागण उसको यह वरदान देकर चले गये, तब सम्पूर्ण तेज गयासुरमें निवास करनेके कारणसे त्रैलोक्य और यमपुरी तेजसे शून्य हो गई।

यमराजने इन्द्रादि देवताओंके सहित ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्मासे कहा कि हे पितामह! गयासुरकी पवित्रतासे हम लोगोंका अधिकार नष्ट हो गया। ब्रह्माने विष्णुके उपदेशानुसार देवताओंके साथ गयासुरके पास जाकर उससे कहा कि मैने सम्पूर्ण पृथ्वीपर चारोओर भ्रमण किया, परन्तु तुम्हारे शरीरके अतिरिक्त कोई स्थान पवित्र नहीं है. इसलिये यज्ञ करनेके लिये मैं तुम्हारा शरीर तुमसे याचना करता हूँ। गयासुर ब्रह्माका वचन स्वीकार करके

अति प्रसन्न हो कोलाहल गिरिके नैर्ऋत्य कोनपर उत्तर शिर और दक्षिण चरण करके लेट गया। ब्रह्माने श्वेतवाराहकल्पमें महर्षियोंके सहित गयासुरके शरीरपर यज्ञ किया अग्निशर्मा नामक ऋषीश्वरने अपने मुँहसे दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय, सत्य और आवसथ्य पञ्चाग्निका निर्माण किया। हवनके अन्तमे जब ब्रह्मा पूर्णाहुति देने लगे, तब गयासुर अपनी देहको संचालन करने लगा। ब्रह्माकी आज्ञासे यमराजने अपने गृहमे शिला लाकर गयासुरके शरीरपर रक्खा। जब असुर थिर नहीं हुआ, तब ब्रह्माकी प्रार्थनासे सब देवता उस दैत्यके शरीरपर स्थित हुए। उस परभी जब दैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्मा व्याकुल हो विष्णु भगवान्के पास गये। विष्णुने एक मूर्त्ति अपने शरीरसे निकालकर ब्रह्माको दी। ब्रह्माने विष्णुके आदेशानुसार उस मूर्त्तिको गयासुरके ऊपर स्थापित किया, उस पर भी जब दैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्माने विष्णुको पुकारा। विष्णु साक्षात् आकर उसके शरीरपर स्थित हुए। ब्रह्मा, पितामह, फल्ग्वीश, केदार, कनकेश्वर और ब्रह्मा इन पाँच, मूर्त्तियों करके विराजे। सूर्य्य, गयादित्य, उत्तरार्क और दक्षिणार्क इन तीन मूर्त्तियोंसे स्थित हुए। इनके अलावे गणेश, लक्ष्मी, सीता, गौरी, मंगला, गायत्री, सावित्री, सरस्वती, इन्द्र, बृहस्पति, पूषा, अष्टवसु, विश्वेदेवा, अश्विनी कुमार, इत्यादि देवता अपनी २ शक्तियोंके साथ असुरके शरीरपर विद्यमान हुए। तब असुर बोला कि हे आर्यगण! इतने छल करनेकी आवश्यकता नहीं थी, हम केवल विष्णुके वचनसे निश्चल हो जाते। गदाधर आदिक देवताओके प्रसन्न होनेपर गयासुरने ऐसा वरदान माँगा कि, जब तक आप लोग मेरे ऊपर निवास करें, हमारे नामसे यह तीर्थ विख्यात हो, पंचकोस गयाक्षेत्र और एक कोस गयाशिर कहा जावे, इसीके भीतर सम्पूर्ण तीर्थोंका निवास हो, यहाँ स्नानादिक करके पिण्डदान करनेसे १०० कुलका तारन हो जावे, पिण्डदानादिक करने वालेको ब्रह्मलोक मिले, इस जगह वास करनेसे ब्रह्म हत्यादिक पापोंका नाश हो जावे और नैमिष, पुष्कर, गङ्गा, प्रयाग, अविमुक्त, इत्यादि तीर्थ आकर यहाँ निवास करें। विष्णु आदि देवताओंने गयासुरको एवमस्तु कहा। गयासुर प्रसन्न चित्तसे स्थिर हो गया। ब्रह्माने यज्ञकी पूर्णाहुति दी और ब्राह्मणोंको बहुत सा दान दिया।

(४५ वाँ अध्याय) सनत्कुमारजी नारदसे शिलाकी उत्पत्तिकी कथा कहने लगे कि धर्मकी विश्वरूपा नामक पत्नीसे धर्मव्रता नामक कन्या उत्पन्न हुई। धर्मराजने अपनी पुत्रीका विवाह ब्रह्माके पुत्र महर्षि मरीचिसे कर दिया। मरीचिके १०० पुत्र उत्पन्न हुए। एक समय महर्षि सो गये और धर्मव्रता उनकी आज्ञानुसार उनके पावोंको दबाने लगी। उसी समय ब्रह्माजी आ पहुँचे। धर्मव्रताने विचार किया कि ये हमारे पतिके पिता है, इसलिये पतिकी सेवा छोडकर इनका सत्कार करना उचित है। ऐसा विचार वह फलादिकसे ब्रह्माका सत्कार करने लगी। इसके पश्चात् मरीचिने उठकर धर्मव्रताको शाप दिया कि तू पत्थल हो जा। धर्मव्रता बोली कि हे महर्षि! तुमने वृथा मुझे शाप दिया है, इसलिये तुमको भी शिवजी शाप देंगे। धर्मव्रता और मरीचि दोनो वनमें जाकर घोर तपस्या करनेलगे। विष्णुने देवताओंके साथ धर्मव्रताके समीप जाकर उससे कहा कि वरदान माँगो। धर्मव्रता बोली कि स्वामीके शापसे निवृत्त हो जाऊँ। देवताओंने कहा कि मरीचिका शाप हमसे निवृत्त नहीं होगा, तुम दूसरा वरदान माँगो। तब धर्मव्रताने कहा कि मैं अति पवित्र शिला होऊँ उसपर सम्पूर्ण देवता,

सर्व तीर्थ और सम्पूर्ण पवित्र वस्तु आकर निवास करे। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इत्यादि देवताओंके चरण चिह्न हमारेपर विद्यमान रहें। जो मनुष्य हमारे ऊपर तर्पण और श्राद्धादि कर्म करें उनको ब्रह्मलोककी प्राप्ति होय। गदाधरकी मूर्त्ति हमारे ऊपर स्थित रहे, फल्गु नदीमें वाराणसी, प्रयाग, पुरुषोत्तम, गङ्गासागर, इत्यादि नित्य विद्यमान रहे, चारों प्रकारके जीव शिलापर प्राण छोडनेसे विष्णुपदको पावे और श्राद्धादिक कर्म करनेवाला मनुष्य सहस्र कुलके सहित विष्णुलोकमे निवास करें। देवतागण बोले कि धर्मव्रता जो तुमने वर माँगा वह सव सत्य होगा। जव गयासुरके शिरपर तुम्हारा वास होगा, तव हम सव चरण चिह्न होकर तुम्हारे ऊपर वास करेंगे। ऐसा वरदान देकर देवगण अन्तर्द्धान हो गये।

(४६ वॉ अध्याय) जव धर्मव्रता शिलारूपिणी हुई, तव उसके स्पर्श करनेसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निवासियोंको वैकुण्ठ मिलने लगा। तीनों लोक और यमपुरी शून्य होगई। यमराजने ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्मासे कहा कि महाराज हमारी पुरी शून्य होगई। आप अपना अधिकार मुझसे ले लीजिये। ब्रह्माने कहा कि तुम शिलाको लाकर अपने गृहमें रखो। जव यमराज शिलाको अपने घर लाया, तव सव लोग यमपुरीमे आने लगे। उसके पश्चात् यमराजने ब्रह्माके यज्ञके समय उस शिलाको अपने गृहसे लाकर गयासुरके शरीरपर रखदिया। देवताओने कोई २ मूर्त्ति रूपसे, कोई २ पद रूपसे और कोई २ शिलारूपसे उसपर निवास किया। गयामे रामचन्द्रने स्नान किया था, इस कारण उस स्थानका नाम रामतीर्थ पड़ा, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यको विष्णुपद प्राप्त होता है। और वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरगणोंकी मुक्ति होती है। रामचन्द्रके वनवास होनेपर भरतजीने गयामे आकर शिलापर पितरगणोंको पिण्डदान दिया और राम लक्ष्मण सीताको वहाँ स्थापन किया। वह भरतका स्थान अत्यन्त पवित्र है। उस स्थानमें मतंगपदका दर्शन होता है। भरताश्रममे चतुर्युगके स्वरूप, सूर्य्यकी मूर्त्ति, वामनजी और ब्रह्मा है। इनके दर्शन करनेसे मनुष्य पितरगणोंके साथ विष्णुपदको प्राप्त करते है। शिलाके वामहस्तपर उद्यन्तक गिरि है। उसपर पिण्डदान करनेसे पितरगणोंको ब्रह्मलोक मिलता है। उद्यन्तक गिरि पर अगस्त्यजीने उग्र तपस्या की थी। उस गिरि पर मध्याह्नमें सावित्रीके पूजन करनेसे मनुष्य धनाढ्य और वेदपारग ब्राह्मण होता है। जो मनुष्य ब्रह्मयोनिमे प्रवेश करके वाहर निकलता है, उसकी मुक्ति हो जाती है। सोमकुण्डमे स्नान करनेसे पितरगणोंको सोमलोक मिलता है। स्वर्गद्वारेश्वरको नमस्कार करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है। व्योमगङ्गामे पिण्डदान करनेसे पितरगणोका स्वर्गमें निवास होता है। शिलाके दक्षिण हस्तपर भस्मकूट गिरि है, जहाँ धर्मराज और कुम्भजजी शोभित हैं और दक्षिण पर्वतपर वटेश्वर और प्रपितामह है। मतंगपद पर पिण्डदान करनेसे पितरोंको स्वर्ग मिलता है। मतंगकुण्डसे आगे रुक्मिणीकुण्ड और उससे पश्चिम कपिला नदी है। भस्मकूट पर जनार्दनके हाथमे पिण्डदान देनेसे मनुष्यको विष्णुलोक मिलता है। शिलाके दक्षिणपादपर प्रेतकूट पर्वत है, वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरोंका प्रेतत्व छूट जाता है। कीकट देशमे गया, वडी पवित्र भूमि है, वहाँ राजगृह च्यवनजीका आश्रम और पुनपुना नदी है। इन स्थानोमे श्राद्ध करनेसे पितरोंको ब्रह्मलोक मिलता है। शिलाके दक्षिण पादपर धर्मराजने गृद्धकूट पर्वत स्थापित किया, उसपर पूर्व समयमें महर्षियोंने गृद्धरूप धारण करके तप किया था। उस गिरि पर गृद्धेश्वरको

नमस्कार करनेसे और उस स्थानकी गुहाके समीप पिण्डदान दनस मनुष्यको शिवलोक मिलता है। वहाँके गृद्धकूटवटको नमस्कार करनेसे कामना सिद्ध होती है, और महेश्वरी धारापर पिण्डदान देनेसे पितर लोगोंको स्वर्ग मिलता है। शिलाके उदरमें आदिपाल गिरि पर श्राद्ध करनेसे पितर लोग ब्रह्मलोकमे जाते है । शिलाके वामहस्त पर उद्यन्तक गिरि है; जिसको अगस्त्यजी ले आये थे, वहाँ ही अगस्त्यका कुण्ड है। शिलाके दक्षिणं हस्तपर भस्मकूट गिरि पर धर्मराज और अगस्त्यजी रहते है। वहाँ अगस्त्येश्वर और ब्रह्माका दर्शन करनेसे ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है । और लोपामुद्राके साथ अगस्त्यजीके पूजन करनेसे पितर लोग ब्रह्मलोकमे जाते है। सीताद्रिके दक्षिण गिरि पर, वट, वटेश्वर और प्रपितामह रहते है; उससे दक्षिण रुक्मिणीकुण्ड और पश्चिम कपिला नदी है, उस नदीमें सोमवती अमावस्याको स्नान और पिण्डदान करनेसे पितृगणोकी मोक्ष होती है। उस स्थानमे अग्निधारा है। उद्यन्तक गिरिके पीछे सारस्वत कुण्ड है । क्रौञ्चपदपर पिण्डदान देनेसे पितरोको स्वर्ग मिलता है।

(४७ वाँ अध्याय) सनत्कुमार महर्षि नारदसे विष्णुके गदाधर नाम पड़नेकी कथा कहने लगे कि ब्रह्माने गदनामक असुरसे जिसने उग्र तपस्या करके वर लाभ किया था, गदा वनानेके लिये उसका शरीर माँग लिया। विश्वकर्माने ब्रह्माकी आज्ञासे उसके अस्थिसे गदा वनाई, वह गदा स्वर्गमे रक्खी गई। ब्रह्माके पुत्र हेती नामक असुरने ब्रह्मासे वरदान पाकर इन्द्रादिक देवताओंको जीत लिया, तब देवगण विष्णुकी शरणमे गये। विष्णुने गदासुरके अस्थिसे निर्मित गदाको देवताओंसे लेकर उससे असुरका विनाश किया और गयासुरके शिरपर गदाको धोवा, तभीसे उस कुण्डका नाम गदालोल हुआ और विष्णुका गदाधर नाम पडा जिसको देवताओंने गयासुरकी देहपर स्थापित किया । मुण्डपृष्ठगिरि, गृद्धकूट, प्रेतकूट, अरविंदक, पचलोक, सप्तलोक, वैकुण्ठ, लोहदण्डक, क्रौञ्चपद, अक्षयवट, फल्गुतीर्थ मधुश्रवा, दधिकुल्या, मधुकुल्या, देविका, वैतरणी इन स्थानोंपर आदि गदाधर प्रगट होकर निवास करते है और विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, काश्यपपद, पंचाग्नि, इन्द्रपद, अगस्त्यपद, सूर्य्यपद, कार्त्तिकेयपद, क्रौञ्चपद, मातङ्गपद इन मुख्य स्थानोपर विष्णुभगवान, व्यक्त और अव्यक्तरूपसे विद्यमान हैं गायत्री, सावित्री, सरस्वती, गयादित्य उत्तरार्क, दक्षिणार्क, नैमिप, श्वेतार्क, गणनाथ, अष्टवसु, एकादश, रुद्र, सप्तर्षि, सोमनाथ, सिद्धेश, कपर्दीश नारायण महालक्ष्मी, ब्रह्मा, पुरुषोत्तम, मार्कण्डेय, अंगिरेश, पितामह, जनार्दन, मङ्गला पुडरीकाक्ष इन स्थानोंपर भी गदाधर भगवान् रहते हैं । गदाधर भगवान्के समीप श्राद्धादिक कर्म करनेसे पितरोंको मोक्ष होती है। आदि गदाधरकी स्तुति और पूजा करनेसे मनुष्यको पृथ्वीमे कोई वस्तु दुर्लभ नहीं रहती।

(४८ वाँ अध्याय) मनुष्यको उचित है कि यात्राके समय अपने गृहमे श्राद्ध करके गुप्त होकर ग्राम प्रदक्षिणा करे, उसके उपरान्त प्रतिग्रहसे निवृत्त होकर यात्रा करे। गयाके समीप महानदीमे स्नानकर देवताओंका तर्पण करके पितरोंका श्राद्ध करे।

(४९ अध्याय) उत्तर मानसमें स्नान करके श्राद्धादिक कर्म करनेसे पितरोंकी मुक्ति होती है. और सूर्य्यको नमस्कार करनेसे पितृगणोंको सूर्य्यलोक प्राप्त होता है। दक्षिण मानसके उदीची तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको स्वर्ग मिलता है, और उस स्थानके कनखल

सर्व तीर्थ और सम्पूर्ण पवित्र वस्तु आकर निवास करे। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इत्यादि देवताओंके चरण चिह्न हमारेपर विद्यमान रहें। जो मनुष्य हमारे ऊपर तर्पण और श्राद्धादि कर्म करें उनको ब्रह्मलोककी प्राप्ति होय। गदाधरकी मूर्त्ति हमारे ऊपर स्थित रहे, फल्गु नदीमें वाराणसी, प्रयाग, पुरुषोत्तम, गङ्गासागर, इत्यादि नित्य विद्यमान रहें, चारों प्रकारके जीव शिलापर प्राण छोडनेसे विष्णुपदको पावें और श्राद्धादिक कर्म करनेवाला मनुष्य सहस्र कुलके सहित विष्णुलोकमें निवास करें। देवतागण बोले कि धर्मव्रता जो तुमने वर माँगा वह सब सत्य होगा। जब गयासुरके शिरपर तुम्हारा वास होगा, तब हम सब चरण चिह्न होकर तुम्हारे ऊपर वास करेंगे। ऐसा वरदान देकर देवगण अन्तर्द्धान हो गये।

(४६ वाँ अध्याय) जब धर्मव्रता शिलारूपिणी हुई, तब उसके स्पर्श करनेसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निवासियोंको वैकुण्ठ मिलने लगा। तीनों लोक और यमपुरी शून्य होगई। यमराजने ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्मासे कहा कि महाराज हमारी पुरी शून्य होगई। आप अपना अधिकार मुझसे ले लीजिये। ब्रह्माने कहा कि तुम शिलाको लाकर अपने गृहमें रखो। जब यमराज शिलाको अपने घर लाया, तब सब लोग यमपुरीमें आने लगे। उसके पश्चात् यमराजने ब्रह्माके यज्ञके समय उस शिलाको अपने गृहसे लाकर गयासुरके शरीरपर रखदिया। देवताओंने कोई २ मूर्त्ति रूपसे, कोई २ पद रूपसे और कोई २ शिलारूपसे उसपर निवास किया। गयामें रामचन्द्रने स्नान किया था, इस कारण उस स्थानका नाम रामतीर्थ पड़ा, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यको विष्णुपद प्राप्त होता है। और वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरगणोंकी मुक्ति होती है। रामचन्द्रके वनवास होनेपर भरतजीने गयामें आकर शिलापर पितरगणोंको पिण्डदान दिया और राम लक्ष्मण सीताको वहाँ स्थापन किया। वह भरतका स्थान अत्यन्त पवित्र है। उस स्थानमें मतंगपदका दर्शन होता है। भरताश्रममें चतुर्युगके स्वरूप, सूर्य्यकी मूर्त्ति, वामनजी और ब्रह्मा हैं। इनके दर्शन करनेसे मनुष्य पितरगणोंके साथ विष्णुपदको प्राप्त करते हैं। शिलाके वामहस्तपर उद्यन्तक गिरि है। उसपर पिण्डदान करनेसे पितरगणोंको ब्रह्मलोक मिलता है। उद्यन्तक गिरि पर अगस्त्यजीने उग्र तपस्या की थी। उस गिरि पर मध्याह्नमें सावित्रीके पूजन करनेसे मनुष्य धनाढ्य और वेदपारग ब्राह्मण होता है। जो मनुष्य ब्रह्मयोनिमें प्रवेश करके बाहर निकलता है, उसकी मुक्ति हो जाती है। सोमकुण्डमें स्नान करनेसे पितरगणोंको सोमलोक मिलता है। स्वर्गद्वारेश्वरको नमस्कार करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है। व्योमगङ्गामें पिण्डदान करनेसे पितरगणोंका स्वर्गमें निवास होता है। शिलाके दक्षिण हस्तपर भस्मकूट गिरि है, जहाँ धर्मराज और कुम्भजजी शोभित हैं और दक्षिण पर्वतपर वटेश्वर और प्रपितामह हैं। मतंगपद पर पिण्डदान करनेसे पितरोंको स्वर्ग मिलता है। मतंगकुण्डसे आगे रुक्मिणीकुण्ड और उससे पश्चिम कपिला नदी है। भस्मकूट पर जनार्दनके हाथमें पिण्डदान देनेसे मनुष्यको विष्णुलोक मिलता है। शिलाके दक्षिणपादपर प्रेतकूट पर्वत है, वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरोंका प्रेतत्व छूट जाता है। कीकट देशमें गया, बडी पवित्र भूमि है, वहाँ राजगृह च्यवनजीका आश्रम और पुनपुना नदी है। इन स्थानोंमें श्राद्ध करनेसे पितरोंको ब्रह्मलोक मिलता है। शिलाके दक्षिण पादपर धर्मराजने गृद्धकूट पर्वत स्थापित किया, उसपर पूर्व समयमें महर्षियोंने गृद्धरूप धारण करके तप किया था। उस गिरि पर गृद्धेश्वरको

नमस्कार करनेसे और उस स्थानकी गुहाके समीप पिण्डदान देनेसे मनुष्यको शिवलोक मिलता है। वहाँके गृद्धकूटवटको नमस्कार करनेसे कामना सिद्ध होती है, और महेश्वरी धारापर पिण्डदान देनेसे पितर लोगोंको स्वर्ग मिलता है। शिलाके उदरमें आदिपाल गिरि पर श्राद्ध करनेसे पितर लोग ब्रह्मलोकमे जाते हैं। शिलाके वामहस्त पर उद्यन्तक गिरि है, जिसको अगस्त्यजी ले आये थे, वहाँ ही अगस्त्यका कुण्ड है। शिलाके दक्षिण हस्तपर भस्मकूट गिरि पर धर्मराज और अगस्त्यजी रहते है। वहाँ अगस्त्येश्वर और ब्रह्माका दर्शन करनेसे ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है। और लोपामुद्राके साथ अगस्त्यजीके पूजन करनेसे पितर लोग ब्रह्मलोकमे जाते है। सीताद्रिके दक्षिण गिरि पर वट, वटेश्वर और प्रपितामह रहते है; उससे दक्षिण रुक्मिणीकुण्ड और पश्चिम कपिला नदी है, उस नदीमें सोमवती अमावस्याको स्नान और पिण्डदान करनेसे पितृगणोकी मोक्ष होती है। उस स्थानमे अग्निधारा है। उद्यन्तक गिरिके पीछे सारस्वत कुण्ड है। क्रौञ्चपदपर पिण्डदान देनेसे पितरोंको स्वर्ग मिलता है।

(४७ वॉ अध्याय) सनत्कुमार महर्षि नारदसे विष्णुके गदाधर नाम पड़नेकी कथा कहने लगे कि ब्रह्माने गदनामक असुरसे जिसने उग्र तपस्या करके वर लाभ किया था, गदा बनानेके लिये उसका शरीर माँग लिया। विश्वकर्माने ब्रह्माकी आज्ञासे उसके अस्थिसे गदा बनाई; वह गदा स्वर्गमे रक्खी गई। ब्रह्माके पुत्र हेती नामक असुरने ब्रह्मासे वरदान पाकर इन्द्रादिक देवताओंको जीत लिया, तब देवगण विष्णुकी शरणमे गये। विष्णुने गदासुरके अस्थिसे निर्मित गदाको देवताओंसे लेकर उससे असुरका विनाश किया और गयासुरके शिरपर गदाको धोवा, तभीसे उस कुण्डका नाम गदालोल हुआ और विष्णुका गदाधर नाम पडा जिसको देवताओंने गयासुरकी देहपर स्थापित किया। मुण्डपृष्ठगिरि, गृद्धकूट, प्रेतकूट, अरविंदक, पंचलोक, सप्तलोक, वैकुण्ठ, लोहदण्डक, क्रौञ्चपद, अक्षयवट, फल्गुतीर्थ मधुश्रवा, दधिकुल्या, मधुकुल्या, देविका, वैतरणी इन स्थानोंपर आदि गदाधर प्रगट होकर निवास करते है और विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, काश्यपपद, पंचाग्नि, इन्द्रपद, अगस्त्यपद, सूर्य्यपद, कार्त्तिकेयपद, क्रौञ्चपद, मातङ्गपद इन मुख्य स्थानोंपर विष्णुभगवान, व्यक्त और अव्यक्तरूपसे विद्यमान है गायत्री, सावित्री, सरस्वती, गयादित्य उत्तरार्क, दक्षिणार्क, नैमिप, श्वेतार्क. गणनाथ, अष्टवसु, एकादश, रुद्र, सप्तर्षि, सोमनाथ, सिद्धेश, कपर्दीश नारायण. महालक्ष्मी, ब्रह्मा, पुरुषोत्तम, मार्कण्डेय, अंगिरेश, पितामह, जनार्दन, मङ्गला पुण्डरीकाक्ष इन स्थानोंपर भी गदाधर भगवान् रहते हैं। गदाधर भगवान्‌के समीप श्राद्धादिक कर्म करनेसे पितरोंको मोक्ष होती है। आदि गदाधरकी स्तुति और पूजा करनेसे मनुष्यको पृथ्वीमे कोई वस्तु दुर्लभ नही रहती।

(४८ वॉ अध्याय) मनुष्यको उचित है कि यात्राके समय अपने गृहमे श्राद्ध करके शुभ होकर ग्राम प्रदक्षिणा करे, उसके उपरान्त प्रतिग्रहसे निवृत्त होकर यात्रा करे। गयाके समीप महानदीमें स्नानकर देवताओंका तर्पण करके पितरोंका श्राद्ध करे।

(४९ अध्याय) उत्तर मानसमें स्नान करके श्राद्धादिक कर्म करनेसे पितरोंकी मुक्ति होती है और सूर्य्यको नमस्कार करनेसे पितृगणोंको सूर्य्यलोक प्राप्त होता है। दक्षिण मानसके उदीची तीर्थमे स्नान करनेसे मनुष्यको स्वर्ग मिलता है, और उस स्थानके कनखल

-तीर्थमें स्नान करनेसे सुवर्णके समान शरीरकी चमक हो जाती है और श्राद्धादिक कर्म करनेसे ब्रह्महत्या आदि पाप विनाश होता है। फल्गुतीर्थमें स्नान करनेसे अश्वमेधादिक यज्ञके फलसे अधिक लाभ होता है। जो मनुष्य गयामें जाकर गदाधर भगवान्‌का दर्शन नहीं करता है, उसके श्राद्ध करनेका फल निष्फल हो जाता है।

गयाके यात्रीको उचित है कि प्रथम दिन फल्गु तीर्थमें स्नान तर्पण और श्राद्धादि कर्म करके ब्रह्मा, गदाधर और शिवजीको नमस्कार करे, दूसरे दिन धर्मारण्यके मतंगवापीमें स्नान तर्पणादि कर्म करके मतंगेशको नमस्कार करे। ब्रह्मतीर्थपर श्राद्ध करे। कूपमें पिण्ड-दानादिक कर्म करनेसे सम्पूर्ण पितरोंकी तृप्ति होती है। पितरोंको तारनेके लिये धर्म, धर्मेश्वर और महाबोधी अर्थात् पीपलके वृक्षको नमस्कार और महाबोधीकी स्तुति करनी चाहिये। तीसरे दिन ब्रह्मसरमें स्नान और श्राद्धादिक कर्म; ब्रह्माके निर्माण किये हुए यूपकी प्रदक्षिणा, ब्रह्मसरमें उत्पन्न आम्र वृक्षोंको सींचना, यमबलिदान; श्वान बलिदान और काक बलिदान देना उचित है। चौथे दिन फल्गु तीर्थमें स्नान, गयाशिरपर श्राद्ध और पादपर सपिण्ड श्राद्ध करना उचित है। नगकूट जनार्दन ब्रह्मकूपसे लेकर उत्तर मानस और पितामहेश्वर तक गयाशिर कहा जाता है पितामहसे लेकर उत्तर मानस पर्यन्त फल्गु तीर्थ है। क्रौंचपदसे फल्गु तीर्थ तक गयासुरका मुख है, इसलिये उस स्थानपर पिण्डदान करनेसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है। मुण्डपृष्ठसे गिरिके नीचे तक फल्गु तीर्थमें आदि गदाधरका स्थान है, उस स्थानमें पिण्डदान और गदाधरके दर्शन और पूजन करनेसे सहस्र कुलको विष्णुपद प्राप्त होता है। शिवजीको नमस्कार करके उनके स्थानपर श्राद्ध करनेमें सौ कुलको रुद्रपद मिलता है। ब्रह्माको नमस्कार करके वहाँ पिण्डदान करनेसे १०० कुलको ब्रह्मलोक मिलता है। कश्यपके स्थानपर पिण्डदान करनेसे ब्रह्मपद, दक्षिणाग्नि पदपर पिण्डदान करनेमें वाजपेय यज्ञका फल, गार्हपत्यपदपर श्राद्ध करनेसे राजसूय यज्ञका फल आहवनीयपदपर श्राद्ध करनेसे अश्वमेधका फल, सत्यपदपर श्राद्ध करनेसे ज्योतिष्टोम यज्ञका फल, आवसथ्यके स्थानपर श्राद्ध करनेसे पितृगणोंको सोमलोक, इन्द्रपदपर श्राद्ध करनेसे इन्द्रलोक, अगस्त्यपद पर श्राद्ध करनेमें पितृगणोंको ब्रह्मलोक, क्रौंचपद और मातंगपदपर श्राद्ध करनेसे ब्रह्मलोक, सूर्य्यपदमें श्राद्ध करनेसे सूर्य्यलोक, कार्त्तिकपदमें श्राद्ध करनेसे शिवलोक, गणेशपदमें श्राद्ध करनेसे रुद्रलोक, गजकर्णमें तर्पण करनेसे पितृगणोंको स्वर्ग मिलता है। सम्पूर्ण स्थानोंमें विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद और काश्यपपद श्रेष्ठ हैं। किसी समयमें श्रीरामचन्द्रने गयामें आकर रुद्रपदपर पिण्डदान दिया। राजा दशरथने स्वर्गसे आकर पिण्डदान ग्रहण किया। मुण्डपृष्ठ पर्वत देवताओंके पदसे सर्वत्र चिह्नित है वहाँ पिण्डदान करनेसे पितृगणोंकी मोक्ष होती है। गदालोल तीर्थमें स्नान करनेसे पितरोंकी मुक्ति हो जाती है। अक्षयवटके नीचे अन्नसे श्राद्ध करनेमें पितरोंकी मोक्ष होती है।

(५० अध्याय) राजा गयने गयामें यज्ञ किया और बहुत अन्न द्रव्य दान दिया विष्णु आदि देवता प्रसन्न होकर राजा गयसे बोले कि तुम मनोवाञ्छित वर माँगो। राजा गयने कहा कि यह पुरी हमारे नामसे विख्यात होजाय। देवताओंने वरदान दिया कि ऐसाही होगा।

बोधगया।
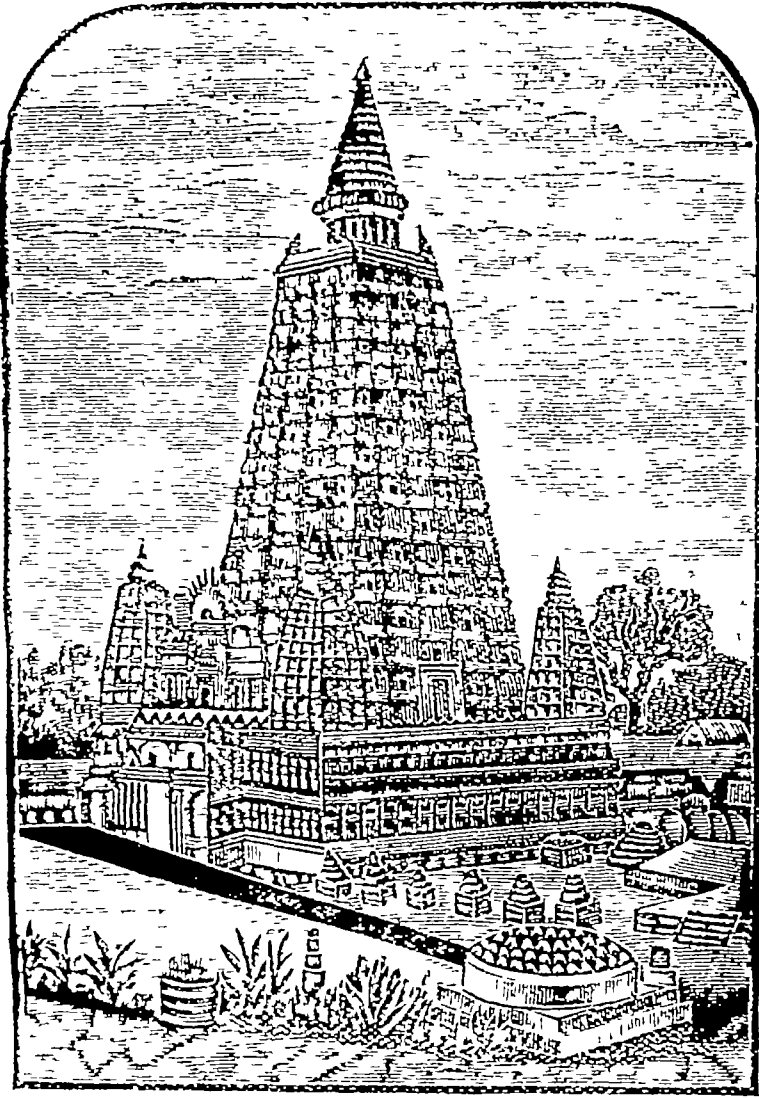
बुद्ध गयाका मन्दिर

गयाके विष्णुपदके मन्दिरसे६ मील दक्षिण, विहारके गया जिलेमें फल्गू नदीके बाँये अर्थात् पश्चिम किनारे पर फल्गू और मोहन नदीके सङ्गमसे ऊपर बोधगया एक गाँव है। गयासे बोधगया तक पक्की सडक गई है। बोधगया बौद्ध लोगोंके लिये संसारमें सबसे अधिक पवित्र स्थान है। हजारों यात्री बोधगयामें आते है और पवित्र पीपलके वृक्षके नीचे और बुद्धदेवके विख्यात पुराने मन्दिरमें पूजा चढ़ाते है। वहाँ ८० फीट लम्बी, ७८ फीट चौडी और २० फीट ऊँची छतके ऊपर ४७ फीट लम्बी और इतनीही चौडी बुद्धके मन्दिरकी नीव है। नीचेके सतहसे मन्दिरकी ऊँचाई १७० फीट है। उसके पूर्व बगलपर दो मञ्जिला जगमोहन और ३ बगलोंपर लगभग १६फीट चौड़ी छत है। मन्दिर अत्यन्त पक्के हुए ईटोंसे बना है। ईटोंपर नक्काशी काम है। केवल दरवाजेका चौकठ और फर्श पत्थरका बना है। मन्दिरके शिखरके चारों बगलो पर नीचेसे ऊपरतक सर्वत्र छोटे बड़े ताक हैं,

जिनमेंसे बहुतोंमे बौद्धमूर्त्तियाँ बनी हुई है । मन्दिर पुराना होनेपर भी इसकी बनावट उत्तम है। सब बातोंको ख्याल करनेपर ठीक जान पड़ता है कि यह मन्दिर बहुत दिन ठहरा है। कोई कोई कहते है कि इस मन्दिरको मगध देशके बौद्ध राजा अशोकने बनवाया जिसका राज्य सन् ईस्वीके २६४ वर्ष पहलेसे २२३ वर्ष पहले तक था। पीछे उसकी कई बार मरम्मत हुई । सन् १८७६ ई० मे ब्रह्माके राजाने मन्दिरकी मरम्मतके लिये ३ अफसरोंको बोधगयामें भेजा, जिन्होंने मन्दिरके चारो तरफ बहुत ज़मीन साफ की। उस समय बङ्गाल गवर्नमेण्टको डर हुआ कि मन्दिरकी नीव-पोली होजानेसे शायद मन्दिरको नुकसानी पहुँचे, इस लिये सन् १८७७ ई०में डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र वहाँ भेजे गये। उस समय मन्दिरका हिस्सा हीन दशामें था, जो पीछे सुधारा गया।

मन्दिरके द्वारके ऊपर अङ्गरेजीमे शिला लेख है, जिसमे लिखा है कि जहाँ राजा शाक्यसिंह बुद्ध हुए उस पवित्र स्थान पर महाबुद्धका पुराना मन्दिर है । इसको सन् १८८० ईस्वी में बङ्गालके लेफ्टिनेन्ट गवर्नरने अङ्गरेजी सरकारके खर्चसे सुधरवाया।

उस मन्दिरमें पूर्व तरफ मुख करके बुद्धकी विशाल मूर्त्ति बैठी है, जिसका बायाँ हाथ ढोढ़ीके पास और दहिना हाथ नीचेकी ओर गिरा हुआ है। मूर्त्ति पर सोनेका मुलम्मा है। जगमोहनमे केवल पूर्व बगल पर एक द्वार है, इसके आगे ४ खम्भे लगे हुए एक छोटा ऊचा दालान है, जिसके भीतर उत्तर और दक्षिणकी दीवारोमें दहिना हाथ उठाये हुए और बायाँ हाथ नीचे गिराये हुए एक एक बौद्धमूर्त्ति है । अब दोनोके अङ्ग भङ्ग होगये है।

दो मञ्जिले पर भी इस मन्दिरकी परिक्रमा हैं, जिसके चारो कोनोपर एक एक शिरपरदार छोटा मन्दिर बना हुआ है। उनमेंसे पूर्व-दक्षिण और पूर्वोत्तरवाले मन्दिरोमे होकर ऊपरकी परिक्रमा पर सीढी गई है। २१ सीढियोंके ऊपर पूर्व-दक्षिणवाले मन्दिरमे लग भग ५ फीट ऊँची और पूर्वोत्तरवालेमे करीब ५½ फीट ऊँची बौद्धमूर्त्ति है, जिनके पाससे ११ सीढ़ी और चढनेपर आदमी छतके ऊपर पहुँचते है । और वहाँसे बड़े मन्दिरके चारों तरफ घूम सकते हैं। पश्चिम-दक्षिणवाले छोटे मन्दिरमे करीब ५ फीट ऊँची दो भुजावाली बौद्धमूर्त्ति और पश्चिमोत्तरके छोटे मन्दिरमें भी इतनीही बडी-बौद्धमूर्त्ति है,जिसके दोनो बगलोंपर मनुष्य, हाथी आदिकी छोटी छोटी कई मूर्त्तियाँ बनाई हुई है । ऊपरके मन्दिरमें नीचेके बुद्धदेवके ठीक ऊपर करीब ४ फीट ऊँची बौद्धमूर्त्ति पूर्वमुखसे खडी है, जिसके बॉये हाथकी केहुनी और दहिना हाथ नीचेको लटके हुए है और दोनो बगलोपर नीचेसे ऊपर चार चार छोटी मूर्त्तियाँ है। जगमोहनके प्रत्येक ओर एक द्वार है, दिखलानेवाला ऊपरकी सम्पूर्ण बौद्धमूर्त्तियोंको भैरव, काली, लक्ष्मी आदि देवता कहता है।

मन्दिरके पीछे भूमिपर इसकी दीवारमें लगा हुआ बौद्ध सिंहासन नामक पत्थरका चबूतरा है, जिसपर बैठकर बुद्ध सिद्ध हुए थे। चबूतरेसे दो तीन गज पश्चिम पीपलका वृक्ष है। मन्दिरके उत्तर कई बडे चबूतरोंपर बहुत लिङ्गाकार बौद्धमूर्त्तियाँ रक्खी है, जिनसे उत्तरवाले पीपलके वृक्षके नीचे गयाके यात्री पिण्डदान करते हैं। मन्दिरके दक्षिणके

मैदानमें बहुत बौद्धमूर्त्ति रक्खी हुई है, जो भूमि खोदनेपर मिली थी। मन्दिरके आगे दक्षिण बगलपर उत्तर मुखकी कई कोठरी है, जिनमेंसे पश्चिम वालीमें गयाके दूसरे महन्त बाबा महादेव नाथका चौरा है। उसके पूर्वका कमरा खाली है, जिसके पूर्वकी कोठरीमें बोधगयाके पहले महन्त बाबा चेतननाथका चौरा हैं। उनके ३ चेले थे; महादेवनाथ, विभूतनाथ और घमंडनाथ। उनमेंसे महादेवनाथ बोधगयामें रहते थे। लोग कहते हैं कि उनकी ग्यारहवी गद्दीपर बोधगयाके वर्तमान महन्त हैं। विभूतनाथ फल्गुके उस पार और घमंडनाथ सरस्वतीके पास घमण्डी बागमें रहते थे। पिछले दोनोके चेलेभी सिलसिलेसे चले आते है। चेतननाथके चौरेके पूर्वकी कोठरीमें बहुत मूर्त्तिया और कोठरीके पूर्वकी अन्तवाली कोठरीमें एक बौद्धमूर्त्ति है। कोठरीके आगे एक नादके ऊपर १¾ हाथ लम्बा बुद्धका चरणचिह्न देख पडता है। बौद्ध तवाहियाँ, जिसके उत्तर भागमें मन्दिर है, १५०० फीट लम्बी और १००० फीट चौड़ी भूमिपर फैली हुई है। कदाचित् राजा अशोक और उसके उत्तराधिकारियोंके रहनेकी यह जगह थी।

बुद्धमन्दिरके हातेके पूर्वोत्तरके कोनेके पास तारादेवीका शिखरदार पुराना मन्दिर हीन दशामे खडा है। हातेके पूर्व एक घेरेके भीतर ५ शिखरदार बडे मन्दिरोंमें बोधगयाके महन्तोंकी समाधि है। हातेके उत्तर मूर्त्ति गोदाममे बहुत बौद्धमूर्त्तियॉ रक्खी हुई है। मूर्त्ति गोदामके उत्तर जगन्नाथका दो मञ्जिला पुराना मन्दिर है, जिससे लगे हुए उत्तर अहिल्या बाईके बनवाये हुए दो मञ्जिले मन्दिरमें राम, लक्ष्मण, जानकी हनुमान, आदिकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। दोनों मन्दिरोंकी मूर्त्तियाँ दो मञ्जिलेपर स्थापित है। इनके उत्तर एक ॲधियारे मन्दिरमें लोकनाथ और ऋणमोचन शिवलिङ्ग हैं। दो कोठरियोको लॉघकर मन्दिरमें आदमी पहुँचते है। जगन्नाथजीके मन्दिरके पासही पूर्व दो शिखरदार मन्दिर हैं, जिनमेंसे एकमें नागेश्वर और दूसरेमें खगेश्वर शिवका दर्शन होता है।

बुद्धके मन्दिरके करीब ५० गज पूर्व छोटा बाजार और लगभग १०० गज पूर्वोत्तर बोधगयाके महन्तका तीन मञ्जिला मकान और फुलवाडी आदि सामान देखनेमें आते है। महन्त बडे धनी हैं, इनको यात्रियोकी दी हुई भूमिसे करीब ८०००० रुपये सालाना आमदनी होती हैं। नैपाल, अराकान, ब्रह्मा, शिलोन, जापान, चीन, इत्यादि देशोसे बौद्ध यात्री आकर बहुत पूजा चढ़ाते है।

गया कसबेसे लगभग १६ मील उत्तर फल्गू नदीके पास ७ पुरानी बौद्ध गुफा है। उनमेंसे सबसे बडी गुफा, चन्द्रगुप्तके पोते राजा अशोकके राज्यके समय सन् ईस्वीसे २५२ वर्ष पहिलेकी बनी हुई ४६ फीट लम्बी और २० फीट चौडी है। उनमेंसे जो सबसे पीछेकी बनी हुई है, उसको ईसासे २१४ वर्ष पहले अशोकके पोतेने बनवाया था। भारतवर्षमें राजा अशोकने पहले पहल गुफाओंको बनवाया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत (शान्तिपर्व–३४२वॉ अध्याय) अदितिने इस उद्देश्यसे देवताओंके निमित्त अन्न पाक किया था कि वे लोग इस अन्नको खाकर असुरोको मारेंगे। बुद्धने व्रत समाप्त होनेपर अदितिके निकट जाकर भिक्षा मॉगी। देवतालोग पहले इस अन्नको भोजन करेंगे, इसी निमित्त उसने बुद्धको भिक्षा नहीं दी, तब बुद्धस्वरूप भगवान्ने रुष्ट होकर अदितिको शाप दिया कि तुम्हारे उदरमें पीडा होगी।

मत्स्यपुराण—(४७ वाँ अध्याय) विष्णु भगवान्‌ने देवताओंके हितके लिये शुक्रकी माताका शिर काट डाला। यह देख शुक्रने विष्णुको शाप दिया कि तुम इस संसारमें ७ वार मनुष्यका शरीर धारण करोगे। (दश अवतारमें मत्स्य, कूर्म और वाराह ये ३ मनुष्यसे वाहर है।) तभीसे मनुष्योंके हितके लिये विष्णु वार वार जन्म लेते हैं। उनमें धर्मकी स्थिति और असुरोंके नाश करनेके लिये तप करके कमल सदृश नेत्रवाले और देवताके समान रूपवाले बुद्धका अवतार हुआ।

पद्मपुराण—(पाताल खण्ड—६८ वाँ अध्याय) ज्येष्ठ शुक्ल २ को बुद्ध भगवान्‌ने जन्म लिया।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड–९ वाँ अध्याय) बुद्ध अवतार हरिके अंशसे है।

श्रीमद्भागवत—(पहला स्कन्ध–३ राँ अध्याय) कलियुगकी प्रवृत्ति देख असुरोंको मोह देनेके लिये बुद्धने जन्म लिया।

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध–७३ वाँ अध्याय) श्रावण शुक्ल १२ को कलशके ऊपर सुवर्णकी बुद्ध भगवान्‌की प्रतिमा स्थापन करके पूजन करे और पश्चात् कलश ब्राह्मणको देदेवे। यह व्रत शुद्धोदनने किया, जिससे बुद्ध भगवान् उसके पुत्र बने और शुद्धोदन बहुत काल राज्य सुख भोगकर परम गतिको प्राप्त हुआ।

वाराहपुराण—(प्रथम अध्याय) भगवान्‌ने बुद्ध अवतार धारणकर वेदके विरुद्ध धर्म भाषण करक लोकको मोहित किया था।

शिवपुराण—(५ वाँ खण्ड–१५ वाँ अध्याय) पृथ्वी म्लेच्छोंसे परिपूर्ण हो गई, तब भगवान्‌ने वौद्धरूप होकर उनसे वेदोंको छीन लिया और वेदोंकी निन्दा करके दैत्योंकी बुद्धि भ्रष्ट करदी।

अग्निपुराण—(१६ वाँ अध्याय) पूर्व कालके देवासुर-संग्राममें दैत्योंने देवताओंको परास्त किया, तब देवतागण विष्णुकी शरणमें गये। विष्णु देवताओंके हितके लिये शुद्धोदनके बुद्धनामक पुत्र हुए। उनकी मायासे दैत्यगण वौद्ध होकर धर्म और वेदसे वर्जित हो गये। उसके पश्चात् भगवान्‌ने अर्हित होकर वहुत लोगोंको अर्हित-मतावलम्बी बना दिया, जिससे वे लोग वेद धर्मसे वर्जित हो गये।

इतिहास—पश्चिमोत्तर प्रदेशके गोरखपुर जिलेकी उत्तरीय सीमाके वाहर नैपालकी तराईमे कपिलवस्तु नगर था उसमें शाक्यजातिका राजा शुद्धोदन रहता था। सन् ईस्वीसे ६२३ वर्ष पहले गौतमनामक उसका पुत्र जन्मा, जो पीछे अति बुद्धिमान होनेके कारण बुद्ध नामसे विख्यात हो गया। गौतमका विवाह एक राजपुत्रीसे हुआ, जिससे १ पुत्र जन्मा। ३० वर्षकी अवस्थामें गौतमने घरसे चुपचाप निकलकर जङ्गलमे रहना आरम्भ किया। उसने वहुत दिनों तक २ ब्राह्मणोंसे पटनेके जिलेमें शिक्षा पाई कि सिवाय शरीरके दुःख देनेके आत्माके चैन देनेका दूसरा उपाय नहीं है। इसलिये उन्होंने ६ वर्ष तक ५ चेलोंके साथ गयाके तङ्ग और अन्धेरे जङ्गलमें कठिन तपसे अपने शरीरको गला डाला जहाँ उन्होंने वहुत दिनों तक तप किया था, उस स्थानपर बुद्ध गयाका मन्दिर है।

पीछे बुद्धका विचार ऐसा हुआ कि आदमियोंको अच्छी चालकी शिक्षा दें। तब उन्होंने तपस्या छोड़ दी और बनारसके सारनाथके पास साधारण शिक्षा देनी आरम्भकी।

उनकी शिक्षा सबके लिये थी। सर्व साधारण लोगोंने उनका मत स्वीकार किया। ३महीनेके भीतर ६० आदमी उनके चेले हुए। सालके ८ महीने तो बुद्ध शिक्षा देते फिरते थे और वाकी ४ महीने वरसातमें किसी खास जगहमें बैठकर शिक्षा देते थे। छोटे बड़े सब लोग बुद्धके मतमें शामिल हुए। बुद्ध विहार, अवध और पश्चिमोत्तरके आस पासके जिलोंमें अपनी शिक्षाको फैलाकर घूमते हुए अपने घर आये। बूढ़े राजाने उनकी शिक्षा आदरके साथ सुनी। उनका लडका उनके मतमें आया। ३० वर्षकी अवस्थामें बुद्धने अपने गृहको छोड़ा और ३६ वर्षकी उमरमें शिक्षा देनी आरम्भकी। उसके पश्चात् ४४ वर्ष शिक्षा देनेके उपरान्त सन् ई० से ५४३ वर्ष पहले ८० वर्षकी अवस्थामें बुद्धका देहान्त हुआ।

बुद्ध इस वातकी शिक्षा देतेथे कि हर एक आदमी मोक्ष पा सकता है; परन्तु मोक्ष किसी देवताके प्रसन्न करनेसे नहीं, किन्तु अपने कर्मोंसे मिल सकता है आदमीके वर्तमान, भूत और भविष्य जिन्दगीके हालात केवल उन्हींके कर्मके फल हैं।
जो आदमी बोता है, वही काटेगा। दुःख और सुख जो इस जन्ममें होता है, उनको पहले जन्मके कर्मका फल जानना चाहिये और वर्तमान जन्मके कर्मसे दूसरे जन्ममें दुःख सुख भोगना होगा। जब कोई जीवधारी मरता है, तो वह फिर अपने कर्मके अनुसार वड़े या छोटे शरीरको पाता है। बुद्धका यह मत है कि प्रत्येक अच्छे आदमीको इस वातका उद्योग करना चाहिये कि किसी प्रकारसे जन्म मरणके दुःखसे मोक्ष होकर छुटकारा पावे। बुद्धके मतका धार्मिक आदमी इस संसारमें पवित्र ध्यानके मरतबेको पानेका उद्योग करता है। और दूसरे जन्ममे नित्य की सुस्थिरताकी आशा रखता है। यज्ञोंके वदलेमें बुद्धने ३ बड़े धर्म वतलाये, अर्थात् अपनेको वशमें रखना दूसरों पर दया करना और सब जीवधारियोंके प्राणकी रक्षा करना।

सन् ई० के लगभग २५७ वर्ष पहले चन्द्रगुप्तका पोता मगध या विहार का राजा अशोक, जो सन् ईस्वीके २६९ वर्ष पहले राजसिंहासनपर बैठा था, बौद्धमतका माननेवाला निहायत सरगर्म था। लोग कहते हैं कि वह ६४००० बौद्ध मतके पुजारियोंकी परवरिश करता था। उसने वहुतसे तपस्थान कायम किये इसी लिये उसका मुल्क अवतक विहार प्रदेश कहलाता है।

कनिष्क पश्चिमोत्तर प्रदेशके सिदियाका राजा था, उसके राज्यके समय सन् ४० ई० में बौद्ध मतका अन्तिम और चौथा वडा जलसा हुआ। उसने दूसरी वार पवित्र पुस्तकोंको सुधारा। उसके समयका तरजुमा उत्तरी मजमूयेके नामसे तिब्वत तातार और चीनके बौद्धोंके लिये दीनी किताव हुआ। उसके समय बौद्ध मतकी शिक्षा सम्पूर्ण एशियाके मुल्कोंमें दी गई। सन् ई० से २२४ वर्ष पहले अशोकका बेटा पवित्र पुस्तकोंका दक्खिनी मजमूआ, जो उसके बापने इकट्ठा कर दिया था, लंकाको ले गया। वहाँसे वह ब्रह्मा और पश्चिमी द्वीप समूहमे पहुँचा। बौद्ध मतका उत्तरी मजमूआ सन् ६५ ई० में चीनका राजधर्म होगया। अवतक तिब्वतसे लेकर जापान तक उत्तरके बौद्ध लोग उसको मानते हैं।

यद्यपि बौद्ध मत कई शतकों तक शाही मजहव था, परन्तु ब्राह्मणोंका मजहव नावूद नहीं हुआ, वह पीछे धीरे धीरे बढ़ गया। शंकराचार्य्यने इसमें अधिक सहायताकी। सन्

ईस्वीकी नवीं सदीमे इस मजहबके लोग हिन्दसे जबरदस्ती निकाल दिये गये। परन्तु परदेशमें उसको इतनी कामयाबी हासिल हुई कि जन्मभूमिमे हासिल होनी कभी सम्भव न थी। करीब आधी दुनियाँके निवासियोंके लिये उसने एक नया धर्म और विद्या बना दी और बाकी आधेके विश्वासको भी किसी कदर बदल दिया। दुनियाँके निवासियोंमें ५० करोड आदमी अर्थात् फी सदी चालीश मनुष्य बुद्धकी शिक्षाको मानते है। समय समय पर उसके विजयका झण्डा अफगानिस्तान नेपाल, पूर्वी तुर्किस्तान, तिब्बत, मॅगोलिया मंचूरिया, चीन, जापान द्वीप समूह, स्याम, ब्रह्मा, सिंहलद्वीप, लंका और हिन्दमें खडा हुआ था। उसके मठ और मन्दिर रूसकी सल्तनतके वर्तमान हदसे लेकर पासिफिक समुद्र टापू तक लगातार देखनेमें आते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भारतवर्षमे (जिसमे ब्रह्मा भी है) ७१३१३६१ बौद्ध थे।

टेकारी

गयासे लगभग १५ मील पश्चिम कुछ उत्तर गया जिलेमें टेकारी एक म्युनिसिपल कसबा है। जिसमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ११५३२ मनुष्य थे, अर्थात् ८८९३ हिन्दू और २६३९ मुसलमान। कसबेमें टेकारीके राजाका गढ बना हुआ है। वहांके मृतराजाको सन् १८७३ ई० में महाराजका पद मिलता था। राजा भूमिहार ब्राह्मण हैं। राजा सुन्दरसिंहके पोते राजा मित्रजीतसिहके दो पुत्र थे, हितनारायणसिह और मोदनारायणसिंह। छोटे भाईने बडे भाईसे जमीदारीमेंसे साढे सात आना हिस्सा ले लिया पीछे हितनारायणसिंहके वारिश उनके शालेके पुत्र रामकिशुनसिह और मोदनारायणसिहके वारिश उनके भतीजे रणबहादुरसिंह हुए।

तीसरा अध्याय।
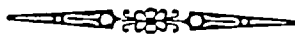
(सूबे बिहारमें) बिहार, राजगृह, बाढ और मोकामा जंक्शन।

बिहार।

पटनेके स्टेशनसे २२ मील पूर्व बख्तियारपुर रेलवे स्टेशन है, जिससे १८ मील दक्षिण (२५ अंश ११ कला २८ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ३३ कला ५० विकला पूर्व देशान्तरमे) पटने जिलेमें बिहार एक पुराना शहर है, जिसके नामसे यह प्रदेश सूबे बिहार कहलाता है। बख्तियारपुरसे बिहार तक मेल कार्ट अर्थात् डाकगाडी चलती है, जो तीन घण्टेमें बिहार पहुँच जाती है। रास्तेमे ६ मील, ९½ मील और १४ मीलपर ३ जगह घोडे बदलते हैं। एक गाडीमें ६ मोसाफिर बैठते है। एक आदमीका महसूल १ रुपया लगता है। पक्की सडकपर मीलके पत्थर लगे हैं। बख्तियारपुरसे आगे ३ मीलपर धोवा नामक एक छोटी नदी और १५ मीलपर एक तालाब मिलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय बिहारमें ४७७२३ मनुष्य थे, अर्थात् २२९१७ पुरुष और २४८०६ स्त्रियाँ। इनमे ३२५०१ हिन्दू, १५१०६ मुसलमान, ११५ जैन, और १ क्रस्तान थे । मनुष्य–संख्याके अनुसार यह बङ्गालमें ११ वाँ और भारतवर्षमें ७९ वाँ शहर है।

बिहार पटने जिलेका सब डिवीजन है। वहाँ एक मुनसफ, दो डिपुटी मजिस्ट्रेट, एक स्कूल और एक अस्पताल है। शहरमें एक छोटी लम्बी पहाड़ी है, जिसके ढालू छोरपर नीचेसे ऊपर तक शहरका एक हिस्सा बसा है। बिहारके दक्षिण भागमे सदर सड़कके पास बेली साहबकी बनवाई हुई बेली सराय नामक उत्तम इमारत है। इसकी सब कोठरियाँ मुण्डेरेदार और मोरब्बा बनी है। प्रत्येकके चारों तरफ द्वार बने हैं। कोठरियोंके दो तरफ उत्तम बरण्डे और बड़ा आँगन हैं। इससे दक्षिण दूसरे किते्में इसी तरहकी दूसरी इमारत है। अङ्गरेजी कायदेके रहनेसे इस सरायमे हिन्दू मोसाफिर कम टिकते है, मै भी किरायेके मकानमे टिका था। शहर होकर राजगृहको सडक गई है। शहरके पास पञ्चानानामक छोटी नदी है। बिहारसे ४० मील पश्चिम-दक्षिण गया तीर्थ है। बिहारमें बड़ी तिजारत होती है। तिजारतकी खास चीजे युरोपियन कपड़ा, चावल, कई प्रकारके गल्ले, तम्बाकू आदि हैं। रेशमी और रुईके कपड़ेकी वहाँ दस्तकारी होती है। शाह मखदूमकी कबरके पास एक सालाना मेला होता है, जिसमें लगभग २०००० मुसलमान आते है। पुराने किलेकी तबाहियाँ लगभग ३०० एकड़में फैली हुई है। यह अनुमान किया जाता है कि ईस्वी सन् प्रारम्भ होनेके थोडेही पश्चात् यह मगधकी पुरानी बादशाहतकी राजधानी था।

राजगृह।

बिहारसे १४ मील दक्षिण, कुछ पश्चिम और बख्तियारपुरके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील दक्षिण पटने जिलेमें राजगृह है, जिसको बहुत लोग राजगिर भी कहते है। बिहारसे २ मील तक पक्की सडक, आगे कच्ची है। मेलेके समय बख्तियारपुर और बिहारमें एक्के, बैलगाड़ी और डोली सवारीके लिये बहुत मिलती हैं। बख्तियारपुरसे राजगृह तक जगह जगह बस्तियोंमे टिकान और मोदी है। सडकके किनारेपर मीलके पत्थर और वृक्ष लगे हैं।

बिहारसे २ मील आगे बालूके मैदानमें एक छोटी नदीकी धारा, ३½ मील आगे दीपनगरमें मोदियोंके कई एक मकान और ६½ मील आगे महुआ बाग है।

महुआबागसे करीब २ मील पश्चिम एक दूसरी सडक बडगाँवाँको गई है, जिसको वहाँके लोग रुक्मिणीके पिता राजा भीष्मककी राजधानी कुण्डिनपुर कहते है। परन्तु पुराणोंमें विदर्भ देशमें कुण्डिनपुर लिखा है। (श्रीमद्भागवत, दशमस्कन्ध, ५२ वाँ और ५३ वाँ अध्याय) विदर्भ देशके पालन करनेवाला राजा भीष्मक कुण्डिनपुरका राजा था) दक्षिणके हैदराबाद राज्यके बीदर कसबेको लोग विदर्भ देशमे कहते हैं। मगध देशमें जरासन्धकी राजधानी राजगृहसे बडगाँवा केवल ८ मीलपर है। बडगाँवाँ एक छोटी बस्ती है। बस्तीसे बाहर एक बौद्ध मन्दिर है, जहाँ किसी नियत समयमें बहुत बौद्ध यात्री जाते है। बौद्ध लोगोंके लिये नालन्द गाँव बहुत पवित्र है। बडगाँवाँमें पुराने नालन्दके चिह्न अबतक मिलते

हैं। वस्तीके भीतर सूर्यका एक छोटा मन्दिर; बाहर सूर्यकुण्डनामक एक कच्चा तालाव और बस्तीसे थोड़ीही दूरपर जगह जगह चार पांच टीले हैं।

विहारसे ९½ मील (महुआवागसे ३ मील) शिलावनामक एक बड़ी वस्ती, जिसकी खझुली सुस्वाद होती है, १२¾ मील पण्डितपुर, १३¾ मील नया राजगृह वस्ती और १४ मील मेलेकी जगह है, जहाँसे करीब १ मील आगे ब्रह्मकुण्डतक मलमासमें मेला लगता है। राजगृह सूबे विहारके पटने जिलेमें एक छोटी वस्ती और मगध देशकी पुरानी राजधानीका स्थान है, जो पूर्वकालमें जरासन्धकी राजधानी गिरिव्रज नामसे प्रसिद्ध था। चीनके रहनेवाले फाहियानने लगभग सन् ४०० ई० में और हुएंत्सॉगने सातवीं सदी में राजगृहको देखा था। हुएत्सॉगने लिखा है कि यहाँ गरम पानीके कई झरने हैं।

रागगृहमें सरस्वती नामक नदी दक्षिण-पश्चिमसे वैभार पर्वतके पूर्वोत्तर ब्रह्मकुण्डके पूर्व आई है और वहाँसे उत्तरकी ओर गई है। नदीकी धारा छोटी है। स्नानके प्रसिद्ध घाटोंपर केवल डुबकी देने योग्य पानी रहता है। ब्रह्मकुण्डके पास सरस्वतीको प्राची सरस्वती कुण्ड कहते हैं, जहाँ नदीके दोनों किनारोंपर पक्के घाट बने हैं। और यात्रीगण प्रथम स्नान करते हैं।

सरस्वतीकुण्डसे पश्चिम वैभार पर्वतके पूर्वोत्तर पाँवके पास मार्कण्डेय क्षेत्र है। सरस्वती कुण्डसे क्षेत्र तक पक्की सीढ़ियाँ वनी हैं। वहाँ नीचे लिखे हुए ७ कुण्ड हैं,–जिनमें ब्रह्मकुण्ड प्रधान है,–(१) मार्कण्डेयकुण्ड, (२) व्यासकुण्ड, (३) गङ्गायमुनाकुण्ड, (४) अनन्त-नारायणकुण्ड, (५) सप्तर्षिधारा, (६) काशीधारा और (७) ब्रह्मकुण्ड। यङ्गायमुना-कुण्डमें एक ठंढ़ा और दूसरा गरम झरना है। दूसरे सब कुण्डोके झरने गरम हैं। कई झरनोंके ऊपर आदमीके वैठने लायक नाले वने हैं, जिनमें वहाँके चढ़े हुए पैसे लेनेवाले आदमी वैठे रहते हैं। (अनन्तनारायणकुण्डका नाम राजगृह माहात्म्यमे नहीं है) इनमें सप्तर्षिधारा उत्तर और दक्षिणको लम्बी १ वावली है, जिसके पश्चिमकी दीवारमें ५ और दक्षिण २ झरने हैं, सातों जगह स्नान होता है। झरने निम्न लिखित सप्तर्षिके नामसे प्रसिद्ध हैं। अत्रि, भरद्वाज, कश्यप, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ और यमदग्नि। परन्तु राजगृह माहात्म्यमें यहाँ भरद्वाज, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि, दुर्वासा और पराशर तीर्थ लिखा है। वावलीके पश्चिमकी दीवारमें शिलालेख है, जिससे जान पड़ता है कि संवत् १९०४ में यहाँसे १० कोस पूर्व-दक्षिणके रहनेवाले एक आदमीने इसको वनवाया। बावलीके दक्षिण किनारेपर दोनाके कायस्थके वनवाये हुए एक छोटे मन्दिरमें सप्तर्षियोंकी ७ मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। उससे पूर्व और ब्रह्मकुण्डसे दक्षिण एक छोटा शिवमन्दिर और सप्तर्षिधाराके उत्तर किनारेपर एक शिवमन्दिर, एक कन्धैयाजीका मन्दिर और गयावाल पण्डेका बनवाया हुआ एक वड़ा पश्च मन्दिर है, जिसमें देवताओंकी स्थापना कभी नहीं हुई। सप्तर्षिधाराके पासही पूर्व ब्रह्मकुण्ड है। राजगृहके सब कुण्डोंसे इसका जल अधिक गरम रहता है कुण्डमें पानीके किनारेपर ब्रह्मा; लक्ष्मी और गणेशकी मूर्त्तियाँ हैं। ब्रह्मकुण्डसे पूर्व एक छोटे मन्दिरमें वराहजीकी मूर्त्ति है। और दक्षिण पहाडीके ढालपर सन्ध्यादेवीका छोटा मन्दिर है, जिसके पास केदारकुण्ड है, जिसमें पुत्रकामनाके लिये बहुत स्त्री स्नान करती हैं। पश्चिम एक छोटे मन्दिरमें विष्णुका चरणचिह्न देख पड़ता है।

सरस्वतीकुण्डसे २०० गज पूर्व नीचे लिखे हुए ५ कुण्ड हैं,-(१) सीताकुण्ड, इसके उत्तर हाटकेश्वर महादेवका छोटा पुराना मन्दिर है। लोग कहते हैं कि तीर्थ निर्माण हुआ, तभी का यह मन्दिर है। हाटकेश्वरसे उत्तर (२) सूर्य्य कुण्ड,-(३) चन्द्रकुण्ड, (४) गणेश कुण्ड और पाँचवाँ रामकुण्ड हैं। सब कुण्डोमे गरम झरनेका पानी गिरता है। रामकुण्डका एक झरना गरम और दूसरा ठण्ढ़ा है। रामकुण्डके पूर्व दीवारमें शिलालेख है। जिसमें इस कुण्डके बननेका संवत् और बनाने वालेका नाम लिखा है। राजगृहमाहात्म्यसें इस कुण्डका नाम नहीं है। सीताकुण्डसे पूर्व-दक्षिण विपुलाचल पर्वतकी जडमें ठण्डे जलका झरना है। सीताकुण्डसे पूर्व विपुलाचलको जड़के पास शृङ्गीकुण्ड है। एक ठण्ढे और दूसरे गरम झरनेका पानी उसमें गिरता है। उस जगह किसी समय मखदूम साहब एक मुसलमान फकीर रहे थे। वह कुण्ड मुसलमानोंके कबजेमें है। वेलोग इसको मखदूमकुण्ड कहते है।

सरस्वतीकुण्डसे आधे मीलसे अधिक उत्तर उसी सरस्वतीको लोग वैतरणी कहते हैं। नदीके दोनों किनारोपर पक्के घाट बने हैं। दहिने किनारेपर बहुत लोग पिण्डदान और गोदान करते हैं। वहाँ बहुत बछियोंको लेकर ग्वाले लोग खडे रहते हैं। एक आनेपर भी बछिया संकल्प कराकर वे लोग उसको लौटा लेते हैं। नदीके बाँये किनारेपर बहुत छोटे एक मन्दिरमें माधवजीकी एक मूर्त्ति है। वैतरणीसे करीब ४०० गज उत्तर उसी सरस्वतीको लोग शालग्रामकुण्ड कहते हैं। उसमें घाट बना है। यात्रीगण स्नान करते है। शालग्रामकुण्डसे पूर्व एक छोटे मन्दिरमें धर्मेश्वर महादेव और धर्मेश्वरसे पूर्व भरतकूप है। कई सीढ़ियोंसे भीतर जाकर उस कूपमें स्नान होता है। उसमें झरनेका पानी नहीं है। उसका जल साफ नही रहता। उस कूपका नाम राजगृहमाहात्म्यमें नहीं है।

बहुतेरे यात्री एकही दिनमें सरस्वतीके तीनों घाटोंपर अर्थात् सरस्वतीकुण्ड, वैतरणी और शालग्रामकुण्डमें और सम्पूर्ण झरनोंके जलसे और भरतकूपमें स्नान करते हैं। कोई कोई २ दो दिनमें स्नान कर्म समाप्त करता है। ब्रह्मकुण्ड और सप्तर्षि धाराकुण्डके अतिरिक्त सब कुण्डोंमें जानेको एकही रास्ता है। सीढ़ियोंपर मलमासमें स्नान करनेवालोंकी बड़ी भीड़ रहती है। पुरुष और स्त्री सभी भींगे हुए कपड़े पहने हुए एक जगहसे दूसरी जगह स्नान करते फिरते हैं। उस तीर्थमें स्नान करनेवालोंका आश्चर्य दृश्य देखनेमें आता है। ब्रह्मकुण्ड और सीताकुण्डके बीचमें बहुतेरे लोग एक स्थानसे दूसरे स्थानको दौड़ते हैं। कोई अपने लड़केको कन्धेपर या गोदीमें लेकर स्नान कराता फिरता है। किसी कुण्डका गरम पानी असह्य नहीं है। मोरी द्वारा कई कुण्ड मिले हुए हैं।

सरस्वतीकुण्डसे दक्षिण ओर सरस्वती नदीमें नदीके बाँये वानरीकुण्डनामक एक बहुत छोटा कुण्ड है, जिसका पानी लोग देहपर छिड़कते हैं। उस स्थानको वानरीतरण क्षेत्र कहते है। वानरीकुण्डसे कुछ दूर दक्षिण गोदावरीनामक एक छोटीधारा दक्षिणसे आकर सरस्वतीमें मिली है। संगमसे दक्षिण-पूर्व पहाड़ी टीलेपर ज्वाला देवीका छोटा मन्दिर है।

सरस्वती और गोदावरीके संगमसे पश्चिम सरस्वतीकुण्डसे १ मील दक्षिण-पश्चिम सरस्वती नदीके बाँये वैभार पर्वतके दक्षिण बगलमें ११ गज लम्बी और ५½ गज चौड़ी सोनभण्डार नामक प्रसिद्ध एक गुफा है। उसके भीतरकी छत दोनों तरफ ढालुवाँ हैं, जो

मध्यमे पृथ्वीसे ३३/४ गज ऊँची है। गुफाके पूर्व भागमे ४ मुखवाली १ बौद्धमूर्त्ति वैठी है। गुफाके द्वारपर टूटी हुई छोटी छोटी २ बौद्धमूर्त्तियॉ पडी है। गुफाके भीतर और द्वारके पास कई अक्षरोका घिसा हुआ लेख है। कोई कोई यात्री गुफाके द्वारके वाहर खडी दीवारमे अपना नाम लिख देते है। बौद्ध लोगोंके लिये सोनभण्डार वहुत पवित्र है। उसी स्थानपर सन् ई० के ५४४ वर्ष पहले बुद्धकी विद्यमानतामें उनके चेलोमेसे ५०० आदमियोंने इकट्ठे होकर धर्मसभाकी थी। वही बौद्धोका पहला जलसा कहलाता है।

राजगृहकी पहाडियां लगभग १००० फीट ऊची है, जिनमें शिलाजीत निकलता है। उनमें वैभार, विपुलाचल, जिसको महाभारतमें चैतक लिखा है, रत्नागिरि जिसका नाम महाभारतमें ऋषिगिरि लिखा है, उदयगिरि और सोनागिरि ये पांच पहाड़ियॉ प्रधान है। वैभार सरस्वतीकुण्डसे दक्षिण-पश्चिम है। उसके सिरेपर एक पुराने जर्जर मन्दिरमें सोमनाथ और सिद्धनाथ २ शिवलिङ्ग हैं। एक मील चढाईके पीछे मन्दिर मिलता है, जहॉ वहुत यात्री जाते हैं। उस मन्दिरके आस पास ६ जैनमन्दिर हैं, जिनमे मलमासके मेलेके समय यात्री लोग हिन्दूमन्दिर जानकर दर्शन करते है। मन्दिरके नौकर हिन्दू-मन्दिर कहकर पैसे चढ़वाते है। विपुलाचल सीताकुण्डसे पूर्व है, जिसपर ६ जैनमन्दिर हैं। उससे दक्षिणकी पहाडीपर गणेशजीका एक छोटा मन्दिर है। रत्नागिरि विपुलाचलके दक्षिण है, जिसपर २ जैनमन्दिर है। उदयागिरि रत्नगिरिके दक्षिण है, जिसपर १ जैनमन्दिर है और उसके पश्चिम नीचे नाटकश्वर महादेवका छोटा मन्दिर है और सोनागिरि उदयगिरिसे पश्चिम है, जिसपर १ जैनमन्दिर है। महाभारतमें लिखा है कि इन पॉच पहाडियोके मध्यमें राजा जरासन्धकी गिरिव्रजनामक राजधानी थी। वहुतेरे जैन लोग खटोलियोंमे और पैदल उन पहाड़ोंपर अपने तीर्थस्थानको जाते है। गयाजीके पर्वत तक पहाड़ियोंका तॉता लगा है। राजगृहसे गया तीर्थ ३२ मील पश्चिम है।

सरस्वती कुण्डसे करीव ६ मील पूर्व गिरियै वस्तीके पास वैकुण्ठ नामक नदी और वैकुण्ठ तीर्थ है, जिससे उत्तरकी ओर कण्ठेश्वरका मन्दिर है।

राजगृह एक समय मगध देश और जरासन्धकी राजधानी था, जो चारोंओर पहाड़ोसे और उत्तरकी ओर एक पुराने किलेके खण्डहरसे वेष्टित है। सरस्वतीकुण्डसे करीव ४ मील दक्षिण वाणगङ्गा पहाड़ी नदी है, जिसके पारकी चहार दीवारी जरासन्धका वान्ध कहलाती है। और वही एक वाहर जानेका रास्ता है। राजगृहके पुराने कसवेकी वाहरकी दीवारका चिह्न, जिसका घेरा ४ मीलसे अधिक है, अव तक देखनेमें आता है। वाणगङ्गासे उत्तर कई पुराने शिलालेख हैं, जो पढ़े नहीं जाते। रङ्गभूमि भी उसी जगह है। लोग कहते हैं कि भीमने जरासन्धको इसी जगह चीर डाला था। सरस्वती कुण्डसे करीव २ मील दक्षिण और वाणगङ्गासे २ मील उत्तर मणियारमठ (नागमणि) में अशोक महाराजका स्तूप ओर जैनलेख है। राजगृहमे बौद्धोने हिन्दुओंको निकालकर अपना अधिकार किया था, परन्तु हिन्दुओंने फिर उन्हे निकालकर अपने तीर्थ स्थापित कर लिये।

सरस्वती कुण्डसे १२ मील पश्चिम तपोवन और गिरिव्रजनामक दो स्थान है जिनको लोग जरासन्धका भजनागार और वैठक कहते हैं। तपोवनमें चारों भाई सनकादिकोंके

नामसे गरम झरनेके ४ कुण्ड है। पर्वत लॉघकर वहॉ जाना होता है। मेलेके दिनोमें दुकान रहती है।

राजगृहका मेला मलमासमें एक महीना रहता है, किन्तु शुक्लपक्षसे कृष्णपक्षमें अधिक यात्री जाते है। आसपासके जिलेके लोग उस तीर्थमें बहुत जाते हैं। बहुतेरे यात्री पहुँचनेके दिन या दूसरे दिन स्नान करके लौट जाते है। कुण्डोंमे स्नानकी भीड दिनभर रहती है। राजगृह और पण्डितपुरके ब्राह्मण राजगृहके पण्डे है, वे लोग यात्रियोंके टिकनेके लिये बहुत छप्पर लगाते है। ब्रह्मकुण्ड और सरस्वती कुण्डसे १ मीलपर बाजार बसता है। मेलेमें कोई पशु बिकनेको नहीं आता। नदी और झरनोके सिवाय वहॉ कई कूप है। मेलेके आस पासके जङ्गल मेलेसे भर जाते है। इन्तजामके लिये बिहारके एक हाकिम टिके रहते है। पहाडोपर और उनकी तराइयोमे छोटे वृक्ष और झाड़ोका जङ्गल है। खटोलीमे बैठाकर पहाड़ोंपर ले जानेवाले कुली मेलेमें मिलते है। मलमासके अतिरिक्त कार्त्तिकी पूर्णिमा, माघी अमावस्या और पूर्णिमा, वैशाखकी अमावास्या, सोमवारी अमावास्या, ग्रहण आदि पर्वोंमें भी आस पासके बहुत लोग स्नानके लिये राजगृहमे जाते है।

संक्षिप्त प्राचीनकथा—महाभारत–(शान्तिपर्व्व ५९ वॉ अध्याय) वेणुके पुत्र राजा पृथुके दो वन्दी थे सूत और मागध। प्रतापी पृथुने उनके ऊपर प्रसन्न होकर सूतको अनूप देश और मागधको मगध देश प्रदान किया।

(सभापर्व १३ वॉ अध्याय) राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णसे राजसूय यज्ञ करनेका प्रयोजन कह सुनाया। (१४ वॉ अध्याय) कृष्णचन्द्रने कहा कि हे महाराज! जरासन्ध सम्पूर्ण राजाओका सौभाग्य पाकर पृथ्वीनाथ बनकर अपने तेजसे सर्वोपरि हुआ है। आप उसके जीवित रहते हुए कदापि राजसूय यज्ञ पूरा नहीं कर सकेगे। (१५ वॉ अध्याय) उसने सैकडे पीछे ८६ भूपोंको कैद कर रक्खा है। सौमें केवल १४ राजा शेष बचे हैं। (१७ वॉ अध्याय) राजा युधिष्ठिरके पूछनेपर श्रीकृष्ण जरासन्धका जन्म वृत्तान्त कहने लगे कि मगध देशमें अति विक्रमभरे दूसरे इन्द्रके समान वृहद्रथ नामक एक राजा था। उसने काशीराजकी दो कन्यासे विवाह किया था। राजाकी यौवन दशा कट गई, पर एक भी पुत्र नही उपजा। तब उसने दोनो रानियोंके साथ एक तपस्वी चण्डकौशिक मुनिके पास जाकर उनको प्रसन्न किया और पुत्रके लिये प्रार्थना की। मुनि आमके वृक्षकी छाहमें बैठकर जब ध्यान करने लगे, तब उनकी गोदमें एक आम्र फल गिरा। मुनिवरने पुत्र लाभके लिये वह फल राजाको दिया। राजाने अपने घर आकर अपनी दोनों पत्नियोंको वह फल दे दिया। उन्होंने आपसमे बॉटकर उस फलको खाया। १० महीने पूरे होनेपर दोनो रानियोने दो खण्ड शरीर प्रसव किये तब उनकी आज्ञासे दो धात्रियोंने उन दो सुन्दर खण्डोको अन्तःपुरसे निकालकर एक चौराहे पर फेंक दिया। जरा नाम्नी एक राक्षसीने उन खण्डोको ले लिया और सहजहीमें दोनों खण्डोंको जोड दिया। दो आधी देहोंके एक दूसरेसे मिलते ही एक वीर कुमार बनगया। अनन्तर राक्षसी बच्चेको उठानेकी चेष्टा करने लगी पर वह उठा नहीं सकी। बालक गहरे शब्दसे रोने लगा। अनन्तर उस राक्षसीने मानवी शरीर धर उस कुमारको लेकर सब वृत्तान्त कहनेके उपरान्त राजाको दे दिया। (१८ वॉ अध्याय) जरा राक्षसीने बालकको संधित किया, अर्थात् जोड़ा इस कारणसे

राजा बृहद्रथने बालकका नाम जरासन्ध रक्खा । (१९ वाँ अध्याय) जरासन्धके बड़े होने पर राजा बृहद्रथ उसको मगधके राजसिंहासन पर बैठाकर अपनी दोनों रानियोंके साथ वनको पधारे और तपोवनमें बहुत दिनों तक तप करके स्वर्गको सिधारे। जरासन्धने अपने वीर्य्यके प्रभावसे सब नरनाथोंको अपने वशमें कर लिया।

(२० वाँ अध्याय) ऐसा कह श्रीकृष्ण बोले कि सम्पूर्ण सुरासुर भी खुला खुली लड़ाईमें जरासन्धको परास्त नहीं कर सकेंगे, इस लिये भुजयुद्धसे ही उसको जीतना उचित है। राजा युधिष्ठिरके सहमत होने पर श्रीकृष्णचन्द्र भीम और अर्जुनके सहित स्नातक ब्राह्मणोंके वस्त्र पहिरकर इन्द्रप्रस्थसे मगधनाथके धामकी ओर चले और गङ्गा और सोनके पार उतर कर मगधराजके छोरमें आ पहुँचे। अनन्तर उन्होंने गोरथनामक पर्वतसे उतर कर मगधनाथकी पुरी देखी। (२१ वाँ अध्याय) श्रीकृष्ण बोले कि हे अर्जुन! देखो मगधराजकी राजधानी कैसी सुन्दर शोभा पारही है। ऊँची ऊँची चोटी लिये हुए ठण्ढे वृक्षवाले एक दूसरेसे मिले हुए वैहार, वराह, वृषभ ऋषिगिरि और चैतक ये ५ पर्वत मानो एक गृह बनकर गिरिव्रज नगरीकी रखवारी कर रहे हैं। पूर्वकालमे अङ्ग वङ्गादिके राजागण यहाँके गौतमजीकी कुटीमें आकर प्रमुदित होते थे। देखो गौतमजीके आश्रमके निकट लोध्र और पीपलके वन कैसी सुन्दर शोभा दे रहे हैं। इसके पश्चात् श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन मगधपुरीकी ओर चले और द्वारके निकट न जाकर चैतक पर्वतकी चोटीको लाँघकर गिरिव्रज नगरमें जाघुसे। वे लोग ३ कक्षाओंको पीछे छोड़कर राजा जरासन्धके निकट जा पहुँचे। राजाने इनका बड़ा सत्कार किया। उस काल भीम और अर्जुन मौन साधे थे। श्रीकृष्ण जरासन्धसे बोले कि हे नरनाथ! यह दोनों नियम युक्त हैं। इस समय कुछ नहीं बोलेंगे, किन्तु आधीरात बीतने पर तुमसे वार्त्तालाप करेंगे। आधीरात बीतने पर राजा उन द्विजोंके पास आया और कृष्णादिकी निन्दा करके बोला कि स्नातक व्रतधारी ब्राह्मण माला आदि नहीं धारण करते, पर तुम फूल लगाये हो और तुम्हारी हथेलियोंमें धनुषके गुण चढ़ानेके चिह्न बने हैं, सो तुम कहो कौन हो। कृष्ण बोले कि महाराज तुम हमको स्नातक ब्राह्मण करकेही जानो। (२२ वाँ अध्याय) बहुत बातें करनेके पीछे कृष्णचन्द्रने कहा कि हमने तुमको मारनेके लिये ब्राह्मण वेष लिया है। मैं कृष्ण हूं और ये दोनों पाण्डुके पुत्र हैं। हम तुमको ललकारते हैं स्थिर होकर लड़ो। अथवा सब भूपोंको छोड दो। जरासन्ध बोला कि जो तुम युद्धकी बात कहते हो तो मैं व्यूह युक्त सेनाओंसे अथवा अकेले एकसे, दो से वा तीनोंसे एकही वार या अलग अलग, चाहे जैसे हो, लडनेमें सम्मत हूँ। (२३ वाँ अध्याय) कृष्णचन्द्रके पूछने पर तेजस्वी मगधनाथने भीमसे लड़नेको कहा, तब जरासन्ध और भीम शस्त्र लिये हुए अति प्रमुदित चित्तसे एक दूसरेसे भिड़ गये। भीम और जरासन्धकी लड़ाई होने लगी जो कार्त्तिक मासकी प्रथमा तिथिसे आरम्भ होकर त्रयोदशी तक निश दिन विना भोजन चली थी। चतुर्दशीकी रातको जरासन्धने थककर कुश्ती त्याग दी। (२४ वाँ अध्याय) भीमने जरासन्धको ऊँचे उठाकर १०० फेरा घुमानेके पश्चात् अपनी जंघासे उसकी पीठ नवाकर तोड डाली। अनन्तर कृष्णचन्द्रने राजाओंको कारागारसे छुड़ाया और जरासन्धके पुत्र सहदेवको राज्यतिलक दिया उसके पीछे भीम और अर्जुनके साथ वह इन्द्रप्रेस्थमें आये।

(यह कथा श्रीमद्भागवत दशमस्कन्धके ७२ वें अध्यायमें है। उसमें यह लिखा है कि कृष्णचन्द्रने जरासन्धसे द्वन्द युद्ध करनेको कहा, तब वह स्वीकार करके नगरसे वाहर निकलकर भीमसेनके साथ गदा युद्ध करने लगा। कृष्णके इसारा बताने पर भीमने जरासन्धके एक पाँवको अपने पाँवसे दाब दूसरे पाँवको भुजाओंसे पकड कर चीर डाला)

(वन पर्व—८४ वाँ अध्याय) पुलस्त्य बोले कि तीर्थ सेवी पुरुष राजगृह तीर्थको जाय। वहाँ तीर्थोंका स्पर्श करनेसे पुरुष आनन्दित होता है। वहाँ यक्षिणीको नैवेद्य लगाकर भोजन करनेसे यक्षिणीके प्रसादसे पुरुषकी ब्रह्महत्या छूट जाती है। मणिनाग तीर्थमें जानेसे हजार गोदानका फल होता है। जो पुरुष मणिनाग तीर्थकी उत्पन्न हुई वस्तुओंको खाता है, उसे सर्प काटनेका विष नहीं चढ़ता। वहाँ एक रात रहनेसे हजार गोदानका फल होता है। वहाँसे ब्रह्मर्षि गौतमके बनमें जाना उचित है। वहाँ अहल्याकुण्डमे स्नान करनेसे मोक्ष मिलती है।

विष्णुपुराण—(चौथा अंश २३ वाँ और २४ वाँ अध्याय) सोमवंशके पल्लवसे उत्पन्न मागध वंशमें जरासन्ध आदि प्रतापी राजा हुए। जिनके क्रमिक नाम ये हैं—(१) जरासन्ध, (२) सहदेव, (३) सोमापि, (४) श्रुतवान, (५) अयुतायु, (६) निर्मित्र, (७) सुक्षत्र, (८) बृहत्कर्मा, (९) सुश्रम, (१०) दृढ़सेन, (११) सुमति, (१२) सुबल, (१३) सुनीत, (१४) सत्याजित्, (१५) विश्वजित् और (१६ वाँ) रिपुञ्जय। इतने बृहद्रथवंशके मागध राजा कलियुगके १००० वर्ष बीतने तक होंगे।

रिपुञ्जयके मन्त्री शुनक रिपुञ्जयको मारकर अपने पुत्र प्रद्योतको राजासिंहासनपर बैठावेगा। प्रद्योत वंशी ५ राजा १३८ वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) प्रद्योत, (२) पालक, (३) विशाखयूप, (४) जनक और (५) नन्दिवर्द्धन।

शिशुनाग वंशके १० राजा ३६२ वर्ष राज्य करेंगे,—(१) शिशुनाग, (२) काकवर्ण, (३) क्षेमधर्मा, (४) क्षेत्रज्ञ, (५) विन्दुसार, (६) अजातशत्रु, (७) दर्भक, (८) उदयाश्व, (९) नन्दिवर्द्धन और (१० वाँ) महानन्द।

नन्द और उसके पुत्र गण १०० वर्षतक राज्य करेंगे। महानन्दकी शूद्री स्त्रीसे उत्पन्न नन्द नामक पुत्र पृथ्वीका एक राजा होगा। उसके सुमाली इत्यादि ८ पुत्र होंगे। चाणक्य नामक ब्राह्मण छलसे नवोंको मारकर चन्द्रगुप्तको राजसिंहासनपर बैठावेगा। १० मौर्यवंशी राजा १३० वर्ष तक राज्य करेंगे। (१) चन्द्रगुप्त, (२) विन्दुसार (३) अशोकवर्द्धन, (४) सुयशा, (५) दशरथ, (६) सङ्गत, (७) शालिशुक, (८) सोमशर्मा, (९) शतधन्वा और (१० वाँ) बृहद्रथ।

शुङ्गजातिके १० राजा ११० वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) पुष्पमित्र, (२) अग्निमित्र, (३) सुज्येष्ठ, (४) वसुमित्र, (५) आर्द्रक, (६) पुलिन्दक, (७) घोषवसु, (८) बज्रमित्र, (९) भागवत और (१० वाँ) देवमूर्त्ति।

वसुदेव नामक कण्व वंशी अपने स्वामी देवमूर्तिको मारकर राज्यसिंहासन पर बैठेगा। ३५ वर्ष तक उस वंशके ४ राजा राज्य करेंगे—(१) वसुदेव, (२) भूमिमित्र, (३) नारायण और (४ था) सुशर्मा।

क्षिप्रनामक अन्ध्रक वंशी अपने स्वामी सुशर्माको मारकर राजा होगा । उस वंशके ३० राजा ४५६ वर्ष तक राज्य करेंगे.—क्षिप्र, कृष्ण, श्रीशान्तकर्ण, पूर्णोत्सङ्ग, शाककर्णी, लम्बोदर, द्विविलक, मेघस्वाती, पटुमान, अरिष्टकर्मा, हालेय, पत्तलक, प्रविल्लसेन, सुनन्दन, शातकर्णी, चकोर, शातकर्णी, शिवस्वाति, गोमती, पुलिमान, शातकर्णी, शिवश्री, शिवस्कन्ध, यज्ञश्री, विजय, चन्द्रश्री, और पुलोमच । ये ४५६ वर्ष राज्य करेंगे ।

उसके पीछे ७९ राजा १३९९ वर्ष तक राज्य करेंगे, ७ आभीर, १० गर्दभिल, १६ शकवंशी, ८ यवन, १४ तुषार अर्थात् गोरा, १३ मुण्ड और ११ मौनेय । उसके पश्चात् पौर नामक ११ राजा ३०० वर्ष राज्य करेंगे इत्यादि । श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्धके प्रथम अध्यायमें भी यह वंशावली है ।)

भविष्यपुराणमें (१४ वाँ अध्याय)—कलियुगके राजाओंका वर्णन इस भाँति है,— कुरुवंशी, इक्ष्वाकुवंशके राजा और मागधवंशके राजा एक हजार वर्ष तक.

कलिमें राज्य करेंगे	१०००
प्रद्योतवंशी ५ राजा	१३८
शिशुनाग आदि १० राजा	३६०
शूद्रीके गर्भसे उत्पन्न नन्दराजा और उसके ८ पुत्र	१००
चन्द्रगुप्त आदि मौर्य्यवंशी १० राजा.	१३७
शुङ्ग जातिके १० राजा	११०
कण्ववंशी	३४५
इनके सेवक शूद्र आन्ध्रवंशी ३० राजा	४५६
आभीर ७ राजा	१००
गर्दभीनामक १० राजा	९८
कङ्क नामक १६ राजा	२००
उज्जैनका विक्रमादित्य	१३५
शालिवाहन	१००
८ यवन और १६ तुरुष्क	३५०
गुरुण्ड नामक १० राजा	११६
मौन नामक ११ राजा	३००
भूतनन्द आदि राजा	१०५
बहुखण्ड राज्य	४१२
गौरमुख नामक राजा	१८०
हजारों राजा	३५०
विजयके वंशमें	५५०
नागार्जुन वंश	१०००
बलि राजाके घरानेमें	११००

उसके पीछे शूद्र म्लेच्छ आदि राजा होंगे, सब जगत् म्लेच्छमय होजायगा ।

बाढ़ ।

बख्तियारपुरसे ११ मील (बांकीपुर जंक्शनसे ३९ मील) पूर्व बाढ़का रेलवे स्टेशन है। सूबे बिहारके पटना जिलेमें गङ्गाके दहिने किनारेपर बाढ़ एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाढ़में १२३६३ मनुष्य थे, अर्थात् ९३०५ हिन्दू, २९६५ मुसलमान, ५० जैन और ४३ कृस्तान।

गङ्गाके किनारेपर देवताओंके कई मन्दिर, जिनमें उमानाथ महादेवका मन्दिर प्रधान है, बने हुए हैं। कसबेमें देशी पैदावारकी तिजारत होती है।

मोकामा जंक्शन ।

मोकामा जंक्शनसे रेलवे लाईन ३ ओर गई है।

(१) मोकामा घाटसे उत्तरकी ओर बङ्गाल नर्थवेष्ट रेलवे,—

मील–प्रसिद्धष्टेशन।

२ मोकामाघाट।

३२ सेमरियाघाट (बोट द्वारा)

६० समस्तीपुर जंक्शन।

समस्तीपुरसे पश्चिमोत्तर ३२ मील मुजफ्फरपुर जंक्शन, ८१ मील मोतीहारी, ९४ मील मुगौली और १०८ मील बेतिया और समस्तीपुरसे २३ मील उत्तर दरभङ्गा।

मुजफ्फरपुर जंक्शनसे दक्षिण कुछ पश्चिम ३१ मील हाजीपुर और ३५ मील सोनपुर।

दरभंगा जंक्शनसे पश्चिमोत्तर१४ मील कमतौल, २६ मील जनकपुर रोड, ४२ मील सीतामढी और ६१ मील बैरगिनिया और दरभगासे पूर्वोत्तर १२ मील सकरी, ४३ मील निर्मली, ५३ मील भभटियाही, ६० मील राघवपुर ६७ मील प्रतापगञ्ज और ७५ मील कोशी नदीके दहिने कनवाघाट।

(२) मोकामासे पूर्व-दक्षिण इष्टइंडियन रेलवे,–

मील–प्रसिद्ध स्टेशन।

२० लक्षीसराय जंक्शन (आगेके स्टेशन लक्षीसरायमें देखो)।

(३) मोकामासे पश्चिम इष्टइंडियन रेलवे;–

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१७ बाढ़।

२८ बख्तियारपुर।

५० पटना शहर।

५६ बाँकीपुर जंक्शन।

(आगेका स्टेशन। पटना और बाँकीपुरमें देखो)।

चौथा अध्याय ।

(सूबे विहारमें) मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, बेतिया (स्वतंत्र) नैपाल और मुक्तिनाथ ।

मुजफ्फरपुर ।

मोकामा जंक्शनसे ६० मील उत्तर, कुछ पश्चिम, समस्तीपुर जंक्शन और समस्तीपुरसे ३३ मील पश्चिमोत्तर मुजफ्फरपुर रेलवेका जंक्शन है। सूबे विहारके पटने विभागके तिरहुतमें (२६ अंश ७ कला २३ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश २६ कला ५२

विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसवा, छोटी गण्डकी नदीके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर मुजफ्फरपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुजफ्फरपुर कसवेमें ४९१९२ मनुष्य थे, अर्थात् ३७१६५ पुरुष और २२०२७ स्त्रियां। इनमें ३५१९६ हिन्दू, १३६३८ मुसलमान, २४९ कृस्तान, ३ पारसी १ यहूदी, और १०५ दूसरे थे (मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमे ७७ वाँ, बंगालमें १० वाँ और विहारमें ७ वाँ शहर है।

कसवा साफ है, इसकी सड़कें जो खास करके पूर्वसे पश्चिम गई हैं, अच्छी वनी हुई हैं। वाजारमें एक सीतारामका और दूसरा शिवका वड़ा मन्दिर और कचहरीके निकट एक बड़ा तालाव है। इनके आलावे मुजफ्फरपुरमें सिविल कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, और कई एक स्कूल हैं और छोटी गण्डकी और रेलवे द्वारा वड़ी तिजारत होती है।

मुजफ्फरपुर कसवेस लगभग २० मील पूर्व, लखनदेई नदीके एक मील पश्चिम, अंबराई गाँवके निकट फागुन और वैशाखकी शिवरात्रिके समय भैरवनाथका मेला होता है और लगभग एक सप्ताह रहता है। मेले में बैल टट्टू और कपड़े वर्तन इत्यादि वस्तु विकती है। वहाँ भैरवनाथ महादेवका मन्दिर है।

मुजफ्फरपुर जिला—यह जिला तिरहुतके, जो सन् १८७५ में दरभंगा और मुजफ्फरपुर दो जिले बने थे, पश्चिमी भागमें हैं। इसके उत्तर नैपालका स्वाधीन राज्य, पूर्व दरभङ्गा जिला, दक्षिण गङ्गा, वाद पटना जिला और पश्चिम चम्पारन जिला और वड़ी गण्डकी नदी, जो सारन जिलेसे इसको अलग करती है। जिलेकी सवसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ९६ मील और सबसे अधिक चौडाई पूर्वसे पश्चिम तक ४८ मील और इसका क्षेत्रफल ३००३ वर्गमील है। छोटी गण्डकी नदी मुजफ्फरपुर कसवेके पास वहती है और वागमती, वडी गण्डकी, लखनदेई और वया जिलेकी प्रधान नदियाँ हैं। इस जिलेमें गाय वहुतायतसे पाली जाती हैं, उनके वच्चे दूर २ के देशोंमें खरीद होकर जाते हैं।

जिलेमे सन् १८९१ ई० की मनुष्य—गणनाके समय २६८९४९२ और सन् १८८१ में २५८२०६० मनुष्य थे; अर्थात् २२६५३८० हिन्दू, ३१६३०८ मुसलमान और ३७२ कृस्तान। जातियोंके खानेमें २९९१३७ अहीर, १८९८२७ दुसाध, १७१६३७ भूमिहार, १६७५९४ राजपूत, १४१५५१ कोइरी, १२२८३७ चमार, ११५११७ कुर्मी, ९६२०६ ब्राह्मण, ८९८६३ माला, ८२१५२ काँदू, ५२७७३ धानुक और शेपमें दूसरी जातियाँ थीं। १८९१ में इस जिलेके कसवे मुजफ्फरपुरमें ४९१९२, हाजीपुरमे २१४८७, लालगञ्जमें १२४९३ मनुष्य थे। जिलेमें महनर, सरसोंधा, सीतामढो, घटारो, वहिलवारा, कन्ता, शिवहर, मानिकचक, वसन्तपुर, धनौली, इत्यादि वडी वस्तियाँ हैं।

मोतीहारी।

मुजफ्फरपुरसे ४९ मील (समस्तीपुर जङ्क्शनसे ८१ मील) पश्चिमोत्तर मोतीहारीका रेलवे स्टेशन है। सूबे विहारके पटना विभागमे चम्पारन जिलेका सदर स्थान एक झीलके पूर्व किनारे पर मोतीहारी एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मोतीहारीमें १३१०८ मनुष्य थ, अर्थात ९६०८ हिन्दू, ३४६३ मुसलमान, ३५ कृस्तान और २ वौद्ध। मोतीहारीमें छोटा वाजार,

सिविल आफिस, जेलखाना, नीलकी कोठी, अफीमका आफिस, अस्पताल और स्कूल हैं। छपरेके जज दौरेके समय मोतीहारीमें जाकर कचहरी करते है।

अरेराज महादेव—मोतीहारीसे ४ या ५ मील पश्चिमोत्तर एक पोखरेके पास अरेराज गाँवमें महादेवका मन्दिर है। फाल्गुनकी शिवरात्रिको वहाँ मेला होता है और लगभग १ सप्ताह रहता है। किसान लोग धानकी बाल वहाँ चढ़ाते हैं। बालोंकी ढेर लगजाती है। बहुतेरे लोग शिवको पगड़ी चढ़ाते हैं, अर्थात् शिवके मन्दिरसे पार्वतीके मन्दिर तक पगड़ी लगा देते हैं। गाँवमें एक बहुत पुराना स्तम्भ है।

चम्पारन जिला—यह सूबे विहारके पश्चिमोत्तर कोनेमें पटना विभागका जिला ३५३१ वर्गमील क्षेत्रफलमे फैला है।, जिलेके उत्तर स्वाधीन नैपाल राज्य; मुजफ्फरपुर जिला, दक्षिण मुजफ्फरपुर और सारन जिला; और पश्चिम पश्चिमोत्तर देशमें गोरखपुर जिला और नैपाल राज्यका एक हिस्सा है। जिलेका सदर स्थान मोतीहारी और प्रधान कसबा बेतिया है। जिलेके उत्तरीय भागमें ऊँची नीची भूमि है। गण्डकी नदी जो यहाँ शालिग्रामी कहाती है, और इस जिलेके पश्चिमी सीमा पर दूर तक बहती है, नैपाल राज्यमें बहती हुई त्रिवणी घाटके निकट इस जिलेमें प्रवेश करती है। छोटी गण्डकी नदी जिसका नाम स्थान २ में भिन्न २ है, जिलेमें बहती है; जिसको बहुत स्थानोंमें सूखी ऋतुओंमें हलकर लोग पार होजाते हैं। बागमती नदी- जिलेकी पूर्वी सीमापर बहती है। जिलेके भीतर १५० वर्ग-मीलके क्षेत्रफलमें ४३ झीलोंका लम्बा जञ्जीर है। छोटी पहाड़ी नदियोंकी बालू धोकर कुछ सोना निकाला जाता है। लोग कहते हैं कि पहले बहुत सोना निकलता था। सम्पूर्ण जिलेमें भूमिके नीचे कङ्कडका एक तह है। जङ्गलोंमें सोवीता नामक घास, जिसके रस्से बनथे हैं, नरकट, जिसकी चटाई बनती है, मधु, मोम, लाही इत्यादि वस्तु होती हैं।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १८५४०३८ और सन् १८८१ में १७२१६०८ मनुष्य थे, अर्थात् १४७६९८५ हिन्दू, २४२६८७ मुसलमान और १९३६ क्रूस्तान। जातियोंके खानेमें १६९२७४ ग्वाला, ११२७८९ चमार, १०३८९३ कोइरी, ८८७३१ कुर्मी, ८१९६१ दुसाध, ८०७६४ राजपूत, ७६,२८४ ब्राह्मण, ६६५६२ काँदू, ५५४११ मलाह, ५३८४२ तेली, ४२८० भुंइहार, २८४११ कायस्थ, शेषमे दूसरी जातियाँ थी। सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय चम्पारन जिलेके कसवे वेतियामे २२७८० और मोतीहारोमें १३१०८ मनुष्य थे। जिलेमें मधुवनी और केसरिया छोटे कसवे है और बेतिया सीताकुण्ड, अरेराज और त्रिवेणी घाटमें सालाना मेला होता है।

इतिहास—चम्पारन जिलका कोई खास इतिहास नहीं है सन् १८६६ ई० में सारन जिलेके दो भाग करके चम्पारन जिला बनाया गया। अबतक सारनके सेशन जज नियत समय पर छपरेसे आकर मोतीहारी कचहरीमें करते हैं। जिलेके कई एक स्थानोंमें दिलचस्प पुरानी निशानियाँ हैं। सन् ई०से पहिले चम्पारन जिला मगधके राज्यका एक भाग था। अरराज गाँवमें एक बहुत पुराना स्तम्भ और केसरिया गाँवमें एक ईटेका बडा टीला, जिसके ऊपर ६२ फीट ऊँचा ६८ फीट व्यासके ईटेका बहुत पुराना स्तूप है, देखनेमें आता है।

सन् १८५७ के बलवेके समय जुलाईमे मुगौलीमे सवारोंकी १२ वी पल्टन अचानक बागी हो गई । सवारोंने अपने कमांडर और उसकी स्त्री और लड़कोको तथा छावनीके सम्पूर्ण यूरोपियनोंको मार डाला ।

बेतिया ।

मोतीहारीसे २७ मील और मुजफ्फरपुरसे ७६ मील पश्चिमोत्तर बेतियाका रेलवे स्टेशन है । विहारके चम्पारन जिलेमें सबसे बडा कसबा, प्रधान तिजारती जगह ओर सबडिवीजनका सदर स्थान हडहा नदीके पास बेतिया है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बेतियामे २३७८० मनुष्य थे, अर्थात् १४६६८ हिन्दू, ६८७८ मुसलमान और १२३४ क्रुस्तान ।

बेतियामें यहॉके महाराजका उत्तम महल बना हुआ है और एक रोमन कैथलिक चर्च, जो सन् १७४६ ई० में बना था, और खैराती अस्पताल है । प्रतिवर्ष दशहरेके समय बेतियामे कालीका बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग ३०००० मनुष्य आते है और घोडे, बैल, गाय, भैस, कपडा, बर्तन, मिठाई, किरानेकी चीजें आदि वस्तु बिकती है । मेला १५ दिन तक रहता है । महाराजके महलके पास कालीजीके मन्दिरमें कालीकी विचित्र प्रतिमा बनाकर रक्खी जाती है । अन्तमे उसको लोग नदीमें बहा देते हैं ।

इतिहास—सन् १६५९ ई० में राजा गजसिंहने बेतियाको बसाया । दिल्लीके बादशाह शाहजहॉने उनको राजाकी पदवी दी थी । सन् १८३० में लार्ड विलियम बेंटिगने उस समयके राजाको महाराजकी पदवी दी । बेतियाके महाराज सर हरेन्द्रकिशोरसिंह बहादुर के. सी. आई. ई. के पिता महाराज इन्द्रकिशोरसिंह बहादुर बडे दानी थे ।

रामनगर—बेतियासे २३ मील पश्चिमोत्तर चम्पारन जिलेमें रामनगर, जो केवल महाराजके रहनेसे प्रसिद्ध है, एक बस्ती है । वहॉके राजा क्षत्री है, जिनके पुरुषोको दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबने सन् १६७६ ई० में राजाकी पदवी दी थी, और अङ्गरेजी गवर्नमेन्टने सन् १८६० ई० में उस पदवीको दृढ़कर दिया । राज्यकी मालगुजारी खास करके रामनगरके जङ्गलोंसे आती है ।

नैपाल ।

मोतीहारी और बेतियाके बीचमें मोतीहारीसे १३ मील और मुजफ्फरपुरसे ६२ मील पश्चिमोत्तर सुगौलीमें रेलवेका स्टेशन है । यात्री लोग वहॉ रेलगाडीसे उतर कर नैपालके काठमांडूमें पशुपतिनाथके दर्शनके लिये जाते हैं । सुगौलीसे उत्तर पहाडी मार्गसे ९० मील काठमांडू है । सुगौलीसे भीमपदी तक ६६ मील जानेके लिये गाडी और पालकीकी सवारी मिलती है । प्रत्येक कहारका भाडा ३ रुपयेसे कम लगता है । भीमपदीसे उत्तर पहाडके ऊपर जानेके लिये छींका (कण्डी) और झूलाकी सवारी मिलती है । छींका बॉस या बेंतका एक टोकड़ा है, जिसको नैपाली लोग बोको कहते है । पहाडी कूली उसमे आदमीको बैठाकर पीठपर पीछे लटका लेते हैं और एक लाठी हाथमें लेकर उसीके सहारेसे चलते हैं ।

काठमांडूका मार्ग—सुगौलीके रेलवे स्टेशनसे १७ मील रकसौल, ३० मील सिमरा-वासा, ४० मील विचकी, ४६ मील चूडियाघाटी, ५२ मील हिटाई, ६६ मील भीमपदी, ६८ मील सीसागढी, ७१ मील ताम्राखानि, ७९ मील चिटङ्ग, ८१ मील थानकोट और ९० मील काठमांडू है। इन सब स्थानोंमें रहनेके लिये मकान और खाने पीनेका सब सामान मिलता है।

सुगौलीके स्टेशनसे हर्दिया कोठीकी राह होकर १७ मील उत्तर अङ्गरेजी और नैपाल राज्यकी सीमापर रकसौल है। सुगौलीसे रकसौल तक रेल वनानेकी तजवीज होती है। रकसौलसे आगे १३ मील सिमरा वासा है। सिमरा वासासे नैपाली तराईका जङ्गल आरंभ होता है और जङ्गलके वीचमे वालू और कंकडकी राहसे १० मीलपर विचकी नामक स्थानपर पहुँचना होताहै। विचकीसे ६ मील चूडियाघाटी तक पहाडी रास्ता है। चूडिया-घाटीसे हिटाई तक ६ मील नीचा ऊँचा कठिन रास्ता मिलता है। सम्पूर्ण मार्गके पासकी भूमि वॉस और वृक्षोके घने जङ्गलसे ढंकी हुई है। हिटाईसे आगे १४ मील भीमपदीतक तीव्रगामिनी नदीके किनारे मार्ग वहुत सुन्दर है। भीमपदी हिमालयके पॉवपर स्थित है। वहाँ वाजार और गोले है। वहॉतक वैल और टट्टू जाते है और हलकी गाडी भी जा सकती हे। उससे आगे केवल कूली वोझ लेजाते हैं। भीमपदीसे करीव २ मील सीसागढ़ी किलेतक कडीचढाई है, जहॉ नैपालके महाराजके अफसर रहते है। सीसागढीसे आगे ३ मील तांवाखानि तक पानीनी नामक नदीके किनारे मार्ग क्रमशः नीचाही होता चला गया है। ताम्राखानिसे आगे ८ मील चिटङ्गतक मार्ग वडा दुस्तर है। राह सर्वत्र ढालू है। इस रास्तेसे धीरे धीरे पॉव रखकर वडे भयसे चलना होता है। जगह जगह समतल भूमि हैं। जहाँ थक जानेसे आदमी विश्राम कर लेता है। चिटङ्गसे उलटी सीधी चक्रदार राहसे च[illegible] गढी पहुँचना होता है। वहॉसे फिर नीची भूमि मिलती है। ढालू मार्गसे २ मी उतर कर थानकोटसे यात्री पहुँचते हैं। थानकोटसे आगे ९ मील काठमांडू तक मार्ग सुन्दर और चौडा है।

काठमांडू—नैपालकी राजधानी काठमांडू (२७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश १२ कला पूर्व देशान्तरमें) हिमालय पहाडकी एक घाटीमे समुद्रके जलसे लगभग ४५०० फीट ऊपर विष्णुमती और वागमती नदीके संगमके निकट, विष्णुमतीके पूर्व किनारे पर एक सुन्दर शहर है। विष्णुमती नदीपर दो पुल वने है, जिनमेंसे एकपर होकर एक सडक शहरमे हथियार खाना और परेडकी भूमि तक और दूसरे पर होकर दूसरी सडक सीधी शम्भुनाथके मन्दिरको गई है। शहरके मकान जो खासकर ईटोंसे वने हुए, और खपडेसे छाये हुए है, २ मञ्जिलेसे ४ मञ्जिले तक वने हैं। उनमेंसे वहुतेरोमें काठका वहुत काम है और खिडकियॉ तथा वालाखाने वने है, जिनमें उत्तम नकाशीका काम है। काठमांडूमें कभी मनुष्य गणना नहीं हुई, किन्तु शहरमे ५००० मकान और ५०००० मनुष्य अनुमान किये गये है। शहरकी सडकें तङ्ग और मैली हैं। महाराजका महल, दरवार स्कूल और अस्पताल इत्यादि मकान देखने योग्य है। शहरकी सम्पूर्ण सड़क और गलियोंके वगलो मे देवमन्दिर देख पडते है। शहरके पूर्वोत्तर फाटकसे दक्षिण राजा प्रतापमाली और उसकी रानीका वनवाया हुआ रानीपोखरी नामक तालावके मध्यमे एक मन्दिर है। तालावके

पश्चिम किनारेपर एक लम्बा पुल वना है। परेडकी भूमिसे पश्चिम पूर्व समयके नैपाल राज्यके प्राइमिनिष्टर जनरल भीमसेन थापाका वनवाया हुआ एक पत्थरकी नेवपर २५० फीट ऊँचा सुन्दर स्तम्भ है। वागमतीके किनारेपर नैपालके प्राइमिनिष्टर सर जंगवहादुरके वनवाये हुए मन्दिरके पास एक ऊँचे स्थानपर सर जंगवहादुरकी प्रतिमा खडी है। काठमांडूसे लगभग १ मील दक्षिण वागमतीके उत्तर किनारेपर पुलके पास एक वड़ी इमारत है, जिसमें सर जंगबहादुर रहते थे। शहरसे १ मील उत्तर अङ्गरेजी रेजीडेन्टके रहनेकी कोठी है। शहरसे पूर्वोत्तर गत प्राइमिनिष्टर सर रणोदीपसिंहके रहनेका स्थान फैला हुआ है। काठमांडू और इसकी शहर तलियोंमें लगभग १२००० फौज और १५० तोपें रहती हैं और कई एक मेगजीन वने हैं। काठमांडूके पड़ोसमे भातगाँव, पाटन और थानकोट कसबे हैं। काठमांडूके निवासियोंमें नेवार जातिके आदमी अधिक है। इनमेंसे लगभग आधे वौद्धमतावलम्वी हैं।

काठमांडूसे २ मील दक्षिण, पूर्वको झुकता हुआ, वागमती नदीके पार ललितपट्टन कसवा और ८ मील पूर्व, अग्निकोनको झुकता हुआ भातगाँव कसवा है, जिसमे गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर और महाराजका एक महल वना है और ब्राह्मण वहुत वसते हैं। काठमांडूसे ४१ मील पश्चिम वायुकोनको झुकता हुआ गोरखा वस्ती है, जिसमें गोरखनाथका एक मन्दिर वना हुआ है।

महाराजका महल–शहरके मध्यमें पत्थरसे वना हुआ वहुत वड़ा महाराजका महल है। इसमें उत्तम प्रकारसे नकाशीका काम हुआ है। महलके उत्तर तालीजूका मन्दिर, दक्षिण वसन्तपुर और नया दरवार, पूर्व शाहीवाग और अस्तवल और पश्चिम महलका प्रधान अग्रभाग है। महलके आगे सुन्दर सड़क और वहुतेरे देवमन्दिर है, जिनमेंसे वहुतेरोंके शिखरमें एकहरी, दोहरी तथा तेहरी चौकूटी अर्थात् एक प्रकारकी छाजनी, जो मुलम्वेदार तांवेके पत्तर या पीतलके पत्तरोंसे छाई हुई हैं, वनी हैं। चकूटियोके चारों वगलोंकी ओरियानिओंमे वहुतेरी छोटी घटियां, जो हवेसे वजनी है लगी है। मन्दिर उत्तम नकाशी और रंगोंसे भूपित है। कई एक मन्दिरोंके द्वारके पास पत्थरके २ वडे सिंह वने हुए हैं और कई एकके आगे गरुडकी प्रतिमा है। महलसे कुछ दूरपर एक मन्दिरके निकट पत्थरके २ स्तंभोमे एक वहुत वडा घण्टा लटका है और एक मकानमे ८ फीट व्यासवाले २ वड़े नक्कारे रक्खे हुए हैं। महलके अग्र भागके आगे सडक है।

तालीजूका मन्दिर–राजमहलके पास उत्तर ओर ऊपर लिखे हुए मन्दिरोंके ढांचेका तालीजूका विशाल मन्दिर है। लोग कहते हैं कि सन् १५४९ मे राजा महेद्रमालीने इसको वनवाया। केवल राजपरिवारके लोग इसमें पूजा करते हैं।

मुछंदरनाथका मन्दिर–वागमती नदीके पास मुछंदरनाथका सुन्दर मन्दिर है। मुछंदरनाथ नैपालके प्रधान देवता हैं। लोग इनको नैपालका रक्षक समझते है। मेपकी संक्रांतिके दिन वड़ी धूमधामसे मुछंदरनाथकी रथयात्राका उत्सव होता है।

कथा ऐसी है एक समय नैपालमे १२ वर्ष अवर्षण हुआ। लगभग सन् ४३७ ई० में नरेंद्रदास नामक एक नैपाली राजा एक प्रसिद्ध वौद्ध संतको आसामसे नैपालमे लाया। संतके आनेपर वडी वर्षा हुई और अकाल जाता रहा। तव नरेंद्रदासने उस संतके स्मरणार्थ

उसके नामसे मुछंदरनाथका मन्दिर बनवाया और एक सालाना तिहवार नियत किया, जो अबतक होता है और सब तिवहारोसे बडा समझा जाता है।

पशुपतिनाथका मन्दिर—महाराजके महलसे १ कोस उत्तर एक चौगानके भीतर पशुपतिनाथका मन्दिर है, जिसके चारोंओर दरवाजे और दालान बने है। मन्दिरके मध्यमें प्रायः ३ हाथ ऊंची पाषाणमयी पञ्चमुखी पशुपतिजीकी मूर्त्ति है । मूर्त्तिके चारोओर लोहेका जंगला बना है । मन्दिरके एक तरफ दालानसे बाहर सोनहला मुलम्मेदार बहुत बडा नन्दी और एक तरफ दालानमे घण्टा है। मन्दिरके पूर्व तरफ विष्णुमती नदी बहती है, जिसमें यात्री लोग स्नान करते हैं। नदीपर बडा पुल है, जिससे होकर भातगांव जाना होता है। जो लोग गङ्गाजल लेजाते है, वे उसको पंडाओ द्वारा पशुपतिनाथपर चढाते है। मन्दिरके समीप बहुतेरी पक्की दो मंजिली धर्मशालाएँ बनी है, जिनमें यात्री लोग टिकते है।

फाल्गुनमे पशुपतिनाथके दर्शनका मेला होता है । कृष्णपक्षकी शिवरात्रिके दिन मन्दिरमे वडी भीड होती है। कभी कभी उसदिन नैपालके महाराज पशुपतिनाथके दर्शनके लिये आते हैं। दूसरे तीर्थोंके समान नैपालके पण्डे यात्रियोंसे कुछ हठ नहीं करते। वे थोड़ेहीमें प्रसन्न होजाते है। मन्दिरके आसपास कई मीलोंके बीचमें अनेक देव देवियोके मन्दिर है, जिनमें गुह्येश्वरी, वागीश्वरी और गणेशजी प्रसिद्ध है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—लिंगपुराण—(७ वां अध्याय) पिशाचसे देवता पर्य्यंत सब जीव पशु कहाते हैं, उन सबका स्वामी होनेसे शिवजीका नाम पशुपति पड़ा है।

दूसरा शिवपुराण(८ वां खण्ड—१५ वां अध्याय) नैपालमे पशुपतिनाथ शिवलिंग है, वे महिष भाग अर्थात् भैंसेके शरीरके एक भाग हैं।

(२७ वां अध्याय) जब राजा पाण्डुके लडके केदारमें गए, कि केदारेश्वरके दर्शन करके अपने पापोंसे छूटें, तब शिवजी भैंसेका रूप धरकर वहांसे भाग चले । उस समय उन्होंने अति प्रेमसे यह विनय किया कि हे प्रभो जो पाप हमको महाभारतके युद्धमें हुआ है, उसको तुम दूर करो और इसी स्थानपर स्थित होजाओ। तब शिवजी अपने पिछले धडसे उसी स्थानपर स्थित होगए और अगले धडसे नैपालमे जा विराजे । वह हरिहर रूपसे वहां सबको सुख देते हैं।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध-१३९ वां अध्याय) वाराहजी बोले कि नैपाल नामक स्थानमें जो पशुपति नामक शिवजी हैं उनके जटाजूटसे श्वेतगङ्गा नामक तीर्थ प्रकट हुआ, जिससे छोटी छोटी अनेक नदियां निकलकर गण्डकी, कृष्णा, आदि नदियोंमें मिलीं । और त्रिशूलगङ्गा नामक एक नदी निकली, जिसमें अनेक पवित्र नदियाँ आकर मिल गई। इन सब नदियोंका सङ्गम अति पवित्र है।

(२०९ वाँ अध्याय) शिवजीने देवताओंसे कहा कि हम हिमवान पर्वतके तटमें नैपाल नामक देशमें पृथ्वीको भेदन कर चारमुख धारण करके उत्पन्न होंगे, तब हमारा नाम शरीरेश होगा। वहाँ हम घोर नागह्रद नामक कुण्डके जलमें ३० हजार वर्ष तक निवास करेंगे। जब वृष्णि कुलमे उत्पन्न होकर श्रीकृष्णजी इन्द्रकी सम्मतिसे दैत्योंके वधके निमित्त निज चक्रसे पर्वतको तोडकर दानवोंका संहार करेंगे; तब वह देश म्लेच्छों करके सेवित होगा अर्थात् दानवोंके मारनेके अनन्तर वहाँ म्लेच्छ निवास करेंगे । तिसके कुछ काल बीतनेपर

सूर्य्यवंशके क्षत्रिय आकर उन म्लेच्छोका संहार कर उत्तम उत्तम कुलके ब्राह्मणोको वसा-वेंगे और चारों वर्णोंको स्थापन कर हमारे लिङ्गकी प्रतिष्ठा करेंगे। उस लिङ्गको पूजनेसे चारों वर्णोके मनुष्य सब भाँतिके सुखको प्राप्त करेंगे।

नैपालराज्य—तिव्वत और अङ्गरेजी राज्यके वीचमें हिमालयके दक्षिणी सिलसिलेपर नैपाल स्वाधीन राज्य है। इसके उत्तर तिव्वतकी सीमापर कुचक्रता; पश्चिम काली नदी, जिसको शारदा भी कहते हैं, वाद अङ्गरेजी राज्यके कमाऊॅ देश, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण अङ्गरेजी राज्यमे पीलीभीत, खीरी, वहराइच, गोंडा, वस्ती, गोरखपुर, चम्पारन, मुजफ्फ-रपुर, दरभङ्गा, भागलपुर और पुर्नियॉ जिले और पूर्व सिङ्गाथारोज और शिकमके पहाडी राज्य है। नैपालकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग ५०० मील और चौडाई उत्तरसे दक्षिणको ७० मीलसे १५० मील तक और इसका क्षेत्रफल अनुमानसे ५४००० वर्ग-मील है। राज्यकी अनुमानकी हुई मनुष्य-सख्या २०००००० और मालगुजारी १०००००००० रुपयेसे अधिक है। राजधानी और उसके आसपासके देशमें १७००० और राज्यमें १३००० फौज रहती है।

नैपाल राज्यका पहाडी सतह अत्यन्त ऊवड़ खावड़ अर्थात् नीचा ऊँचा है। इसकी ऊँची चोटियोंमेंसे एवरेस्ट पर्वत समुद्रके जलसे २९००० फीट ऊॅचा है। पृथ्वीके जितने पहाड देखनेमें आते है, उन सवोंसे यह ऊॅचा है। उत्तरीय सीमाकी सम्पूर्ण चोटियॉ सर्वदा रहनेवाली वर्फकी चोटियोंके बराबर या उनसे अधिक ऊॅची है। और राज्यकी दक्षिण सीमाका देश, जो तराइ कहलाता है और उसपर खेतीकी भूमि फैली है, नीचा और तर है। पहाड़ी घाटियॉ, जो वङ्गालके मैदानसे ३००० से ६००० फीट तक ऊपर है, वहुत तङ्ग है। काठमांडूकी घाटी समुद्रके जलसे लगभग ४००० फीट ऊॅची, पूर्वसे पश्चिमको लगभग २० मील लम्वी और उत्तरसे दक्षिणको प्राय: १५ मील चौडी है। ऊॅची जगहोंपर सर्दी अधिक रहती है।

जङ्गलोंमें जङ्गली जन्तु वहुत हैं। निचली और मध्यकी पहाड़ियोंमें अव तक हाथी रहते है। तराईमें गेंडा, वाघ और तेंदुए वहुत होते हैं। वनोंमें वेश कीमती लकडियां, जो दूसरे देशोंमें जाती हैं, वहुतायतसे हैं। पहाड़ियोंमें लोहा, तॉवा और गन्धककी वहुत खान है और मार्वुल आदि कई प्रकारके उत्तम पत्थर वहुत होते है, किन्तु गाडीके मार्ग नहीं होनेके कारण वे काममें नहीं लाये जाते। पहाडियोमे स्लेट वहुत है। नैपाल राज्यमें वनाई हुई सडक वहुत कम हैं, किन्तु सूखी ऋतुओंमें गाडी और वैल चलते है। नदियोमे नाव नहीं चलती है, किन्तु लोग उनमे लकडी वहाकर दूर दूर तक ले जाते है।

गल्ले, तेलके अनेक प्रकारके वीज, मवेसी, घी, लकडी चमडा मसाला इत्यादि नैपाल राज्यसे अन्य देशोंमें जाते हैं और ऊनी और रेशमी असवाव नमक, चीनी, रुई इत्यादि वस्तु दूसरे देशोंसे नैपालमे आती हैं। तेजपात और वडी इलायची वहुत उत्पन्न होती है। नैपालमें चॉदीका सिक्का मोहर कहलाता है और दो मोहरका मोहरी रुपया होता है। एक मोहरका दाम अङ्गरेजी रुपयेका ६ आना ८ पाई होता है। तांवेके पैसे ३ प्रकारके होते हैं,—(१) वुटवलिया, जिसको गोरखपुरी भी कहते है (२) लोहिया और (३) गोल-पैसा। ये तीनों पैसे उत्तरीय भारतके अङ्गरेजी राज्यमे चलते है।

नेपालके राज्यमे पहाडीके पादमूलके पास कालीगङ्गा नामक नदीके किनारे पर मकरकी संक्रान्तिके समय देवघाटका मेला होता है। मेला लगभग दो सप्ताह रहता है। उसमे कपडा, वर्तन, मसाले इत्यादि वस्तु विकती हे। नेपाल और अंगरेजी राज्यके वहुत लोग मेलेमे जाते है। नदीके दूसरे पार पहाडीपर देवनाथ महादेवका मन्दिर वना हुआ है। नदीमें पार उतारनेवाली नाव रहती हैं। व्यापारी लोग वेतियासे चार पांच दिनमे देवघाट पहुँचते है।

नैपालकी राजधानी काठमांडू है। गोरखा और ललितापट्टन भी अच्छे कसवे हैं। इस राज्यके मनुष्योके प्रधान भोजनकी वस्तु चावल है। बहुतेरे भागोमें वर्षमें २ फसिल होती हैं। पहाडियोंसे किसी किसी जगह हल और बेलगाडी देखनेमें आती है। वहांके लोग खेत वोनेका काम हाथसे करते है। भेड और वकरियोपर वोझ लादे जाते हैं। तराईमे अफीम, तेलहन और तम्बाकू वहुत उत्पन्न होते हैं।

इस राज्यमें तातारी और चीनी नसलकी वहुत जात है। देशी निवासीमें नेवारा वहुत वौद्ध मतवाले है। राजवंशके लोग, जिनकी संख्या कम है, गोरखा कहलाते है। उनकी भाषा हिन्दीके समान है। वे लोग छोटे कदके होते है; परन्तु वडे लड़ाके है। सरकार अङ्गरेज वहादुरकी फौजमे गोरखोंकी कई पल्टन है। राज्यके पूर्वी भागमें आदि निवासी कौम, पश्चिमी भागमे नागर, सुरङ्ग, नेवार, लेंबू, लेपचा, भूटिया, कासवार, थारू इत्यादि वहुत वसते है। राज्यके प्रधान निवासी गोरखाली है, उनमें ब्राह्मण तो पाण्डे और उपाध्याय और राजपूत कुंवर और थापा कहलाते हैं।

भारत गवर्नमेंटने सन् १८२९ ई० में सती होनेकी रीति उठा दी, पश्चात् क्रम क्रमसे भारतवर्षके देशी राज्योंसे भी यह चाल उठ गई, किन्तु स्वाधीन हिन्दू राज्य नैपालमे यह प्रथा अवभी प्रचलित है। जो स्त्री अपने पतिके मरनेपर सती होनेकी इच्छा प्रकट करती है, वह अपने पतिकी रथीके सङ्ग एक दूसरी रथीपर चढ़कर सिन्दूर अपने शरीरमे लगाकर अक्षत इत्यादि कई वस्तु छीटती हुई वहुत लोगोंके साथ श्मशानमें पहुँचता है। वहाँके लोग एकही चितापर मृतकके सङ्ग उस स्त्रीको सुलाकर जलाते हैं। जलनेके समय कई आदमी बाँससे उस स्त्रीको दवाये रहते है।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि काठमांड़ू शहरका नाम पहले मंजुपाटन था, क्योंकि उसको मंजुश्रीने वसाया। वौद्ध नेवारा लोग कहते हैं कि मंजुश्रीकी तलवारकी शकलमे यह शहर वसा हुआ है। लगभग सन् ७२३ई०में राजा गुनकमदेवने काठमाण्डूको नियत किया। इसका वर्तमान नाम एक पुराने काठके मकानसे काठमण्डी हुआ। काठमण्डीका अपभ्रंश काठमाण्डू है। इस देशमे मंदिर और मकानको लोग मण्डी कहते हैं।

नैपालका वर्तमान राजवंश गोरखा छत्री है। राजपूताने-मेवाड़के चित्तौडगढ़का सिसोदिया राजपूत समरसिंह, जिसका विवाह दिल्लीके राजा पृथ्वीराजकी वहनसे हुआ था सन् ११९३ ई०मे महम्मदगोरीकी लडाईमें अपने शाले पृथ्वीराजके साथ मारा गया। समरसिंहका वडा पुत्र कल्याण अपने पिताके साथ परलोकको सिधारा। दूसरा पुत्र कुम्भकर्ण वीदरको चला गया और तीसरा पुत्र कनाऊँमे जा वसा। ऐसा प्रसिद्ध है कि उसके वंशधर लोग पीछे पहाडी कन्याओंसे विवाह करने लगे और गोरखामे, जो नेपाल राजमे काठमाण्डूसे पश्चिमो-

त्तरकी ओर एक अच्छा कसबा है, जाकर रहने लगे। वहाँ वे लोग करीव दोसौ वरस तक रहे, उसके पश्चात् खास नैपालके साथ उनका सम्बन्ध हुआ। गोरखामे रहनेके कारणसे वे लोग गोरखा जाति कहे जाते है।

नैपालके प्राचीन कालका इतिहास ठीक तौरसे ज्ञात नहीं होता है; किन्तु ऐसा जान पड़ता है कि किसी एक राजाने बहुत काल तक राज्य न किया। इस राज्यको कोई दिल्लीके बादशाह या कोई दूसरे एशियाके विजय करने वाले अपने अधिकारमे कभी नहीं लाये। ऐसा कहा जाता है कि अवधके राजाओंमेसे एक राजा हरीसिंहने, जिसको मुसलमानोंने निकाल दिया था, सन् १३२३ ई० में इसको पूरी तौरसे जीता, किन्तु उसके पीछेका वृतान्त ज्ञात नहीं होता है कि कब कौन राजा हुआ। भातगाँवके सूर्यवंशी राजाओंमे; जिन्होंने नैपालमें राज्य किया था, रणजीतमल अन्तिम राजा था। उसने काठमाण्डूके विरुद्ध पृथ्वीनारायणसे मित्रताकी उस मित्रताका फल यह हुआ कि सन् १७६८ ईस्वीमे पृथ्वीनारायणने उसका राज्य ले लिया। गोरखा लोग सन् १७६९ मे राजाको पाटनमें जीत करके सम्पूर्ण घाटीके मालिक वन गये और काठमांडूमे आ वसे और धीरे धीरे नैपालकी पहाडियो और घाटियोको अपने अधिकारमे लाए। सन् १७७१ में पृथ्वीनारायण मर गये। सन् १७७५ में उनके पुत्र सिंहप्रताप अपने बच्चे पुत्र रणवहादुरशाहको छोडकर मर गये। लगभग सन् १७९२ ई० में भारतवर्षके गवर्नरजनरल लार्ड कर्नवालिसने नैपालियोंके साथ एक तिजारती सन्धिकी।

गोरखे लोग कभी पूर्वमें शिकमपर, कभी पश्चिम कमाऊँपर और कभी दक्षिण ओर गङ्गाके मैदानोंपर चढ़ाई करते थे। जब गङ्गाके मैदानमे अङ्गरेजी प्रजाको उनसे दुःख पहुँचा, तव अङ्गरेजी सरकारने नैपालपर चढ़ाई की। सन् १८१४ की पहली चढाईमे अङ्गरेजी सेना परास्त हुई, किन्तु उसी साल गरमीके मौसिममें जनरल अक्टरलोनीने सतलज नदीसे फौज उतारकर एक एक करके नैपालियोंके पहाडी किले जीत लिये। वह किले हिमालयकी रियासतोंमें पञ्जाब गवर्नमेन्टके आधीन अबतक विद्यमान हैं। दूसरे साल सन् १८१५ ई० में अक्टरलोनीने वड़ी तेजीके साथ पटनेसे काठमांड़की ऊपरी खाढ़ीपर चढाई करदी। जब अङ्गरेजी फौज राजधानीके निकट पहुँची, तव नेपालियोंने सुलह किया। तारीख २८ नवम्बर सन् १८१५ में सन्धि हुई। और ता० ४ मार्च सन् १८१६ में सुगौलीमे अहद-नामा पक्का हुआ। उसके अनुसार पूर्वमें शिकमके राजाकी भूमि, जो नैपालियोंने दवाली थी, उसको लौटा दी और पश्चिममें काली नदी नैपाल राज्यकी पश्चिम सरहद ठहरी। नैनीताल, मन्सूरी और शिमलाकी सेहत देनेवाली जगहें अङ्गरेजोके हाथ आई और काठमांडूमें एक रेजीडण्टका रहना करार पाया; परन्तु दूसरे देशी राज्योंके समान नैपालमें राज कार्य्यमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार रेजीडण्टको नहीं है। यह स्वाधीन हिन्दू राज्य है।

सन् १८१६ ई० में नैपालके महाराजाधिराज रणवहादुर शाह २१ वर्षको अवस्थामे परमधाममे गये। उनकी स्त्रियोंमेंसे १ स्त्री और रखेलिनियोंमेसे १ रखेलिनी ५ लौंडियों सहित उनके साथ सती हो गई। रणवहादुर शाहके पुत्र महाराजाधिराज राजेन्द्र विक्रमशाह उत्तराधिकारी हुए।

एक ऊँचे दरजेके आदमीका भतीजा सर जङ्गवहादुर हालके प्राइ मिनिष्टर थे, जो रानीके कहनेसे अपने चचाको मारकर फौजका कमाण्डर वने और नई मिनिष्टरी कायम

हुई। थोडेही दिन बाद नया प्रधानमन्त्री मारा गया और जंगवहादुर सन् १८४६ ई० में प्राइमिनिष्टर हुए। उसके पश्चात् जंगवहादुरको मारनेके लिये कपट प्रबन्ध हुआ, किन्तु जंगवहादुरने कपट प्रबन्ध करने वालेके साथियोंको मारडाला। रानी अपने दो पुत्रोंके साथ देशसे निकाली गई, राजाभी उनके साथ गये। राजाके वारिश महाराजाधिराज सुरेन्द्र-विक्रमशाह राजसिंहासनपर बैठाये गये कुछ दिनके बाद पहले राजा राजेन्द्राविक्रमशाह अपना राज्य पानेका उद्योग करने लगे, किन्तु जंगवहादुरने अपनी चतुरतासे उनका मनोरथ सफल होने नहीं दिया; राजा कैदी वनाये गये।

जंगवहादुर सर्वदा अङ्गरेजी सरकारके मित्र थे। सन् १८५७ के बलवेमें उन्होंने अङ्गरेजोको गोरखोकी फौजकी सहायता देकर अपनी मित्रताका सच्चा परिचय दिया था। जंगवहादुर सन् १८७७ ई० की तारीख २५ वीं फरवरीको मर गये, उनके साथ एक बड़ी रानी और २ छोटी रानियाँ सती हो गई।

जंगवहादुरके वाद उनका भाई रणोद्दीपसिंह प्राइमिनिष्टर हुआ। सन् १८८५ के नवम्बरमें सर जंगवहादुरके एक भतीजे वीरशमशेरजंगने रणोद्दीपसिंह और जंगवहादुरके एक लडके और एक पोतेको मारडाला और आप प्राइमिनिष्टर वन गया। नैपालके वर्तमान राजा हिज हाईनेस शमशेर जंगवहादुर युवा अवस्थाके हैं।

मुक्तिनाथ।

काठमांडूसे उत्तर गण्डकी नदीके वाँये किनारे मुक्तिनाथ एक तीर्थ है। दस बारह दिनमें काठमांडूसे लोग वहाँ पहुँचते है। मार्ग पहाड़ी है। वहाँ गण्डकी नदीमें, जिसको शालग्रामके निकलनेके कारण लोग शालग्रामी और नारायणी नदी भी कहते हैं, बूडी मारने योग्य जल नहीं है। नदीमें विविध भाँतिके सुन्दर असंख्य शालग्राम निकलते हैं। यात्रीगण वहाँसे अनेक शालग्राम अपने गृहको ले आते है। नदीके आसपास छोटे वड़े पन्द्रह वीस देवमन्दिर वने हुए है और ७ गर्म सोतोंसे पानी निकलकर नारायणी नदीमें गिरता है। उनमेंसे अग्निकुण्डका सोता एक मन्दिरके भीतर पहाडसे निकलता है। उसके पानी पर ज्वालामुखीकी गोरखडिब्बीके समान अग्निकी ज्वाला रहती है।

काठमाँडूसे ८ मञ्जिल उत्तर वर्फिस्तानमें नीलकण्ठ महादेव हैं, वहाँ भी गर्मपानीका कुण्ड देखनेमे आता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—देवीभागवत (९ वाँ स्कन्ध–१७ वें अध्यायसे २४ वे अध्याय तक) और ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृतिखण्डके १५ वे अध्यायसे २१वें अध्यायतक) लक्ष्मीजी शापके कारणसे धर्मध्वजकी पुत्री हुई तव उनका नाम तुलसी पडा। तुलसीका विवाह शंख-चूडसे हुआ। जव विष्णुने ब्राह्मण रूप धरकर शंखचूडका कवच माँग लिया और छलसे तुलसीसे रमण किया, तव शंखचूड शिवके हाथसे मारा गया। तुलसीने विष्णुको शाप दिया कि संसारमें पाषाण रूप होगे। विष्णुने कहा कि तुलसीकी देह भरतखण्डमें गण्डकी नामक नदी होगी। उसके पश्चात् तुलसी विष्णु लोकमें चली गई। उसका शरीर गण्डकी नदी और उसके केशोंका समूह तुलसी वृक्ष हुआ। विष्णु शालग्राम शिला हुए (यह कथा शिवपुराण पाँचवें खण्डके २८ वें और २९ वें अध्यायमें हैं)।

वाराहपुराण—(१३८ वाँ अध्याय) एक समय विष्णु भगवान् तप कर रहे थे, शिवजी वहाँ प्रकट होकर उनसे बोले कि हे भगवन्! तप करते समय तुम्हारे गण्डस्थान

अर्थात् कपोलसे स्वेद उत्पन्न हुआ है। इस स्वेदरूपी जलसे लोकमें गण्डकी नामक नदी प्रसिद्ध होगी और तुम उस नदीके गर्भमें सदा निवास करोगे। जो मनुष्य सम्पूर्ण कार्त्तिक मासमें इस नदीमें स्नान करेंगे; वे मुक्तिफल पावेंगे।

एक समय गण्डकी नदीके एक ग्राहने जलक्रीडा करते हुए एक हाथीका पैर पकड लिया, तब दोनों युद्ध करने लगे। उस समय वरुण देवताके निवेदनसे विष्णु भगवान्‌ने वहाँ आकर सुदर्शन चक्रसे ग्राहका मुख फाडकर गजको जलसे वाहर निकाला। उस समय चक्रके वेगसे गण्डकीकी शिला वहुतही चिह्नित होगई। उन चिह्नोंसे भावी वश वज्र-कीट नामक क्रिमि उत्पन्न हुए और गण्डकीमे चक्र उत्पन्न होते हैं। विष्णुने कहा कि भक्तकी रक्षाके निमित्त हमारी आज्ञासे सुदर्शनचक्रने गण्डकी नदीमें जहाँ जहाँ भ्रमण किया है, वहाँ सर्वत्र पाषाणोंमें सुदर्शनचक्रका चिह्न होगया है। इस लिये पाषाणोंका नाम गण्डकी चक्र होगा। वह स्थान चक्र तीर्थ कह लावेगा। मनुष्य वहाँ स्नान करनेसे अति तेजस्वी होकर सूर्य्यलोकमे निवास करेंगे। जिस दिनसे शालंकायनके शिष्य नन्दी आमुल्यायनको गोधन सहित मथुरासे लाये, उस दिनसे उस स्थानका नाम हरिहरक्षेत्र हुआ।

जिस शालग्राम क्षेत्रमें शिवजीने विष्णु भगवान्‌को वरदान दे निवास किया उस क्षेत्रमें स्नान करके पितरोंका तर्पण करनेसे पितरगणोको स्वर्ग मिलता है। शालग्राम क्षेत्र चारो दिशाओंमे वारह वारह योजन है। वहाँ विष्णु भगवान् शालग्राम रूपसे सर्वदा निवास करते हैं। (१३९ वाँ अध्याय) शालग्रामक्षेत्र हरिहरात्मक अर्थात् विष्णु और शिवका रूप है।

पद्मपुराण––(पातालखण्ड, ७९ वाँ अध्याय) गण्डकी नदीके एक छोरमें शालग्रामका महास्थल है। उसमेंसे जो पाषाण उत्पन्न होते है, वे शालग्राम कहाते है।

(उत्तरखण्ड, ७५ वाँ अध्याय) गण्डकी नदीमे शालग्राम शिला वहुत होती हैं। वह नदी उत्तरमे प्रकट हुई है, वहाँ नारायण सर्वदा स्थित रहते हैं। जो मनुष्य शंख और चक्रके चिह्न धारण करके वहाँ निवास करता है, वह मृत्युके पश्चात् चतुर्भुज रूप धारण करके विष्णुके लोकमें जाता है। वहाँ अनेक प्रकारकी वहुत मूर्त्तियाँ देख पडती है। चारो वर्णोंके मनुष्य गण्डकी नदीके जल स्पर्श करनेसे ब्रह्महत्यादि पापोंसे विमुक्त हो जाते है। उस क्षेत्रको विष्णु भगवान्‌ने रचा था। ब्राह्मण लोगोंको आषाढ़ मासमे उस स्थानपर जाकर शंख चक्रादि चिह्न धारण करना उचित है। जो ब्राह्मण अपने वाये हाथमे शंख और दहिने हाथमे चक्रादि चिह्न धारण करते है वे मुक्ति पाते हैं।

(१२० वाँ अध्याय) शालग्रामशिला स्नानका जल पोनेसे मनुष्यको गर्भवासका भय छूट जाता है और नित्यही शालग्रामके पूजन करनेसे जन्म मृत्युका भय नहीं रहता। शालग्राम अनेक प्रकारके होते हैं,-वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, नारायण, हरि, विष्णु, कपिल, नृसिंह, वाराह, मत्स्य, कूर्म, हयग्रीव, वैकुण्ठ, श्रीधरदेव, इत्यादि (इनके पहचानके आकार और चिह्न यहाँ लिखे हुए हैं)।

(१३१ वाँ अध्याय) ब्राह्मणको ५ क्षत्रियको ४ और वैश्यको ३ या १ शालग्रामको पूजना उचित है। शूद्र शालग्रामके दर्शन मात्रहीसे मुक्ति प्राप्त करते हैं। जो ब्राह्मण शंख चक्रादिस चिह्नित होकर शालग्राम शिलाका पूजन करता है, उस पूजनसे सब संसार पूजित होजाता है। और पितर कहते हैं कि हमारे कुलमें वैष्णव उत्पन्न हुआ, अब वह हमारे कुलको विष्णु लोकमें भेजेगा।

गरुडपुराण—(पूर्वार्द्ध—६६-वाँ अध्याय) चक्र करके अंकित शालग्रामशिलाके पूजन करनेसे विना चिह्नकी मूर्त्तिका पूजन करना उत्तम है। एक रेखावाले शालग्रामशिलाको सुदर्शन, २ रेखा वालेको लक्ष्मीनारायण, ३ रेखावालेको अच्युत, ४ रेखावालेको चतुर्भुज, ५ रेखावालेको वासुदेव, ६ रेखावालेको प्रद्युम्न, ७ रेखावालेको संकर्पण, ८ रेखावालेको पुरुपोत्तम, ९ रेखावालेको व्यूह, १० रेखावालेको दशात्मक, ११ रेखावालेको अनिरुद्ध और १२ रेखावालेको द्वादशात्मक कहते है। इससे अधिक रेखावाले शालग्रामको अनन्त कहना उचित है।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग-३४ वाँ अध्याय) शालग्राम तीर्थ विष्णुकी प्रीतिको वढ़ानेवाला है। उस स्थानपर मृत्यु होनेसे साक्षात् विष्णुका दर्शन होता है।

दूसरा शिवपुराण—(८ वाँ खण्ड १५ वाँ अध्याय) नैपालमे मुक्तनाथ शिवलिङ्ग हैं।

पांचवां अध्याय।

(सूबे बिहारमें) दरभंगा, गौतमकुण्ड, (नैपाल-राज्यमें) जनकपुर, (सूबेबिहारमें) सीतामढ़ी, सींगेश्वरनाथ और (नैपाल-राज्यमें) वाराहक्षेत्र।

दरभंगा।

काठमाण्डूसे ९० मील उत्तर पहाड़ी मार्गसे सुगौली, और सुगौलीसे दक्षिण-पूर्व रेलवे द्वारा ९४ मील समस्तीपुर जंक्शनको लौट आना चाहिये। समस्तीपुर जंक्शनसे २३ मील (और सोकामा जंक्शनसे ८३ मील) उत्तर दरभङ्गाका रेलवे स्टेशन है। सूवेविहारके पटना विभागमें तिरहुत देशके पूर्वी भागमें छोटी वागमती नदीके वायें, अर्थात् पूर्व किनारे पर जिलेका सदरस्थान और प्रधान कसवा दरभङ्गा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दरभङ्गा शहरमे ७३५६१ मनुष्य थे; अर्थात् ३८२६७ पुरुप और ३५२९४ स्त्रियां। इनमे ५३९८७ हिन्दू, १९१८१ मुसलमान, १३२ क्रस्तान और २६१ दूसरे थ। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्पमे ४५ वाँ वङ्गालमे ६ ठा और विह.र. ३ शहर है। वहुतेरोंका मत है कि दरभङ्गीखाँने दरभङ्गाको वसाया, इससे उसका यह नाम पड़ा। और वहुतेरे लोग कहते हैं कि द्वारवंग अर्थात् वङ्गालके दरवाजेका अपभ्रंश दरभङ्गा शब्द है।

दरभङ्गामे सिविल कचहरियाँ, अनेक स्कूल और अस्पताल, शिवसागर तालावके किनारेपर माधवेश्वर महादेवका मन्दिर, अनेक वडे वाजार, अस्पताल और महाराजके वागके वीचमे हालकी वनी हुई नई पेठिया और वहुतेरे सरोवर है। महाराजका पुराना महल और हालका वनाहुआ नया राजमहल, वाग, अश्वशाला, और जन्तुशाला देखने योग्य है। दरभङ्गामे तिजारत वहुत होती है। अनेक भातिके तेलके वीज घी और मकान वनानेकी लकडी यहांसे दूसरे स्थानोंमे भेजी जाती हैं और गल्ला, नमक, चूना लोहा इत्यादि वस्तु दूसरे शहरोंसे यहां आती है।

दरभंगासे रेलवे लाइन तीन ओर गई है–पश्चिमोत्तरकी लाइनपर २६ मीलपर जनकपुर रोड, ४२ मील सीतामढ़ी और ६१ मील बैरागिनिया; पूर्वकी लाइनपर १२ मील सकरी, ४३ मील निर्मली, ६७ मील प्रतापगञ्ज और ७५ मील कनवा घाट, और दक्षिण २३ मील समस्तीपुर जंक्शन और ८३ मील मोकामा जक्शन है।

दरभंगाके महाराज—सन् १७६२ ई० से दरभंगा शहर यहाँके महाराजकी राजधानी हुआ है। महाराजके पूर्व पुरुषे तिरहुतके राजाओंके पुरोहित थे मुसलमानोंने तिरहुतको जीत लिया और वहाँके राजा नष्ट हो गये तब उनके पुरोहित मैथिल ब्राह्मण महेश ठाकुरने दिल्लीमें जाकर बादशाह अकबरसे राज्य प्राप्त किया; किन्तु सन् १७०० ई० में महेश ठाकुरके वंशज राघवासिहके राज्यके समयमे राजाकी पदवी दृढ़ हुई। सन् १७७६ में माधवसिंह राज्यके उत्तराधिकारी हुए। सन् १८०८ में माधवसिंहके देहान्त होनेपर उनके पुत्र छत्तरसिंह दरभंगाके राज्य सिंहासनपर बैठे। इन्हींने महाराजकी पुस्तैनी पदवी प्राप्तकी थी। सन् १८३९ ई० में महाराज छत्तरसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र महाराज रुद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए। सन् १८५० में महाराज रुद्रसिंहके देहान्त होनेपर उनके पुत्र महाराज महेश्वरसिंह राजगद्दीपर बैठे। सन् १८६० ई० में महाराज महेश्वरसिंह अपने दो बच्चे पुत्र लक्ष्मीश्वरसिंह और रमेश्वरसिंहको छोडकर मृत्युको प्राप्त हुए। राज्य कोर्ट आफ वार्डसके अधिकारमें हुआ। सन् १८७९ में वर्तमान महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह बहादुर के०सी० आई० ई० राज्याधिकारी हुए, जिनकी अवस्था ३६ वर्षकी है।

महाराजकी जिमीदारी दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, पुर्निया और भागलपुर इन पांच जिलेमें फैली हुई, है, जिससे २४००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे लगभग ४००००० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेन्टको देना पडता है। महाराजकी ओरसे १५० मील लम्बी नई सडक बनाई गई है, नदियोंपर बहुतेरे पुल बनाये गये है और ७००००० रुपये सिचाईके काममे खर्च किये गये हैं।

दरभंगा जिला—यह पूर्व समयके तिरहुत जिलेका पूर्वी भाग है। सन् १७७५ ई० मे तिरहुत जिलेमें मुजफ्फरपुर और दरभगा दो जिले बनाये गये। इसके उत्तर स्वाधीन नैपाल राज्य, पूर्व भागलपुर जिला, दक्षिण गङ्गा नदी और मुँगेर जिला और पश्चिम मुजफ्फर पुर जिला है। यह जिला पश्चिम दक्षिणसे पूर्वोत्तर तक ९६ मील लम्बा ३६६५ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैलाहै। जिलेकी प्रधान नदियाँ बागमा, गण्डक, छोटी बागमती, कराई और कमला हैं। तिरहुतमें विवाहादि उत्सवोंमें चिउडा दहीका भोजन सब भोजनसे उत्तम समझा जाता है।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय दरभगा जिलेमे २७७००५३ और सन् १८८१ में २६३३४४७ मनुष्य थे, अर्थात् २३२३९८५ हिन्दू, ३०८९८५ मुसलमान, ३२५ कृस्तान और १५२ दूसरे, जो प्रायः सब कोल हैं। जातियोंके खानेमें ३४१११३ ग्वाला, १८९५३४ दुसाध, १७९२६३ ब्राह्मण, १३००७९ धानुक, १२९०२७ कोइरी, ११८५५६ भूमिहार, ११४८९१ मलाह, ९००८३ राजपूत, ८८६४१ चमार, ७९४४९ तेली, ६७०९८ कुर्मी, ६६७९२ मुसहर, ६१३१५ ततवा, ४५१२४ कायस्थ, शेष इनसे कम संख्याकी जातियां थीं। १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दरभंगा जिलेके कसबे दरभंगामे ७३५६१, मधुबनीमें १७५४४, रोसरामें १०८८० मनुष्य थे। इनके अलावे जिलेमें बिसुनपुरा, सुलतानपुर और माधवपुर छोटे कसबे हैं।

मैथिल वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ

द ध न प फ ब भ म य र ल ळ श ष स ह क्ष

त्त त्र का कि की कु कू के कै को कौ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

दरभंगा जिलेके मधुवनी कसवेसे चार पांच मील पश्चिम सौराठ वस्तीके पास सालमें मैथिल ब्राह्मणोंका एक मेला होताहै। वे लोग उसमे अपने लडका लड़कीके विवाहका लेन देन पक्का करते हैं। लडकी अपने पिताके घर रहेगी या ससुरके घर, वहुतेरोंमें इस वातका दस्तावेज लिखा जाता है। जो लडकी विवाह होजानेपर अपने पिताके घर रहती है, उसके पुत्र अपने नानाके धनमे भाग पाते हैं। वहुतेरे कुलीन ब्राह्मणोंमे एकके कई विवाह होते हैं। जो स्त्रियां अपने पिताके घर रहती है, उनके पति अपने ससुरके घर जाकर उनसे कुछ रुपया लेकर कई एक दिन वहाँ रहते हैं।

गौतमकुण्ड ।

दरभङ्गा जंक्शनसे १४ मील पश्चिमोत्तर सीतामढी ब्रैंच पर कमतौलका स्टेशन है, जिससे २ मील पश्चिमोत्तर छोटी नदीके पास एक छोटे मन्दिरमें अहिल्याकी मूर्त्ति है, जहाँ चैत्र नौमीको एक छोटा मेला होता है और स्टेशनसे करीव १० मील पश्चिमकी ओर विना वृक्षोंके धानके मैदानमें गौतमकुण्ड एक सरोवर है। उसके चारो वगलोंपर घाट वना है, तलमे गच किया हुआ है, पानीमें छोटे छोटे ५ कुण्ड है। और पासमे एक छोटी नदी है, जिसका जल गौतमकुण्डमे रहता है। गौतमकुण्डके पास पाकडका एक वृक्ष और एक कोठरीमें नृसिंहजीकी मूर्त्ति है। वस्ती उससे वहुत दूर है। कुण्डके पास एक साधु है।

गौतमकुण्डसे ३ मील पूर्व अहिल्याकुण्ड तीर्थ और वट वृक्षके नीचे अहल्याका चौरा है, जिसके पास दरभङ्गाके राजाका वनवाया हुआ रामलक्ष्मणका सुन्दर मन्दिर स्थित है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत–(वन पर्व—८४ वॉ अध्याय) गौतमके प्यारे वनमे जाकर अहिल्याकुण्डमे स्नान करनेसे मोक्ष मिलती है। गौतमके आश्रममे जानेसे पुरुप शोभाको प्राप्त करता है। वहाँ तीनो लोकोमे विख्यात एक तडाग है। उसमे स्नान करनेसे अश्वमेधका फल होता है। उससे आगे राजर्पि जनकका कुँआ है, जिसमे स्नान करनेसे विष्णुलोक प्राप्त होता है।

वाल्मीकिरामायण–(वालकाण्ड—४८ वॉ अध्याय) रामचन्द्रने मिथिलाके उपवनमे प्राचीन और निर्जन आश्रमको देख महर्पि विश्वामित्रसे पूँछा कि यह आश्रम किसका है। मुनि वोले कि, यह आश्रम गौतम मुनिका था; इसमे वह अपनी स्त्री अहल्याके साथ रहते थे। किसी समयमे इन्द्रने मुनि रहित आश्रमको देख गौतमका वेप धारणकर अहल्यासे कहा कि मैं तुम्हारे सङ्ग प्रसङ्ग करूँगा। अहिल्याने इन्द्रको पहचान करके भी उसका मनोरथ पूर्ण किया, पश्चात् मुनिके डरसे शीघ्रतासे ज्योंही वह कुटीसे निकला, त्योंही पर्णशालामे पैठते हुए ऋपि देख पड़े। गौतमने इन्द्रको मुनि वेशधारी और दुष्ट कर्म करनेवाला देखकर शाप दिया कि तू अण्डकोप रहित होजायगा। मुनिके ऐसे कहनेपर इन्द्रके दोनो अण्डकोप गिर पडे। फिर मुनिने अपनी स्त्रीको यह शाप दिया कि तू इसी स्थानमे अनेक सहस्र वर्प पर्यंत वास करेगी, तेरा भोजन केवल वायु होगा और तू किसी प्राणीको नहीं देख पडेगी, जव दशरथके पुत्र रामचन्द्र इस वनमें आवेंगे तव तू उनका सत्कार करके इस शापसे मुक्त हो अपने पूर्व शरीरको धारणकर मेरे पास आवेगी। ऐसा कह मुनि हिमाचलके शिखरपर जाकर तपस्या करने लगे। (४९ वॉ अध्याय) पितृगणोंने मेपका अण्डकोप काटकर इन्द्रको लगा दिया। रामचन्द्रने विश्वामित्रके ऐसे वचन सुन उनके सङ्ग उस

आश्रममे प्रवेश किया और उस तपस्विनीको, जिसको सुर असुर कोई नही देख सकते थे, देखा। उसी क्षण आहिल्याके पापका अन्त हुआ। तब इनको वह देख पड़ी। राम-और लक्ष्मणने हर्षसे उसके चरणोको ग्रहण किया। अहल्याने भी गौतमके वचनको स्मरण कर रामके चरणोंका स्पर्श किया और अतिथि सत्कारसे इनकी पूजाकी। इसके पश्चात् अहल्या शुद्ध होकर गौतम ऋषिसे जामिली। रामचन्द्र मिथिलाको चले।

जनकपुर।

दरभङ्गा जंक्शनसे २६ मील पश्चिमोत्तर जनकपुर रोडका, जिसको पुपुडी भी कहते हैं, रेलवे स्टेशन है स्टेशनसे २४ मील पूर्वोत्तर नैपाल राज्यके अन्तर्गत तिरहुतमें जनकपुर एक वडी वस्ती है। जनकपुर जानेका दूसरा मार्ग सकरीके रेलवे स्टेशनसे है। दरभङ्गासे १२ मील पूर्व कोसी लाइनपर सकरी रेलवेका स्टेशन है, उससे ३८ मील उत्तर जनकपुर है दोनों स्टेशनोपर सवारीके लिये वैलगाडी मिलती है।

जनकपुरमे साधारण लोगोके मकान टट्टी और छप्परसे वने हुए हैं। महन्तका मकान पक्का दो मञ्जिला है। उसके पासही दक्षिण एक विशाल मन्दिरमें भ्रातागणोंके सहित रामचन्द्रका दर्शन होता है। उसके पास एक कोठरीमें महावीरकी मूर्त्ति है। राममन्दिरसे पूर्व गङ्गासागर और धनुपसागर, जिनमे साधारण घाट बने हैं, दो तडाग तडागोके निकट शिवजी, जानकीजी, रामचन्द्र और जनकजीके एक २ मन्दिर बने है। शिव, जानकी, और रामचन्द्रके मन्दिरसे दक्षिण रामसागर और एक दूसरा तालाव है। महंतके मकानके पासवाले, राममन्दिरसे पश्चिम रतनसागर, दशरथतालाव, और अग्निकुण्ड है। जनकपुरके आस पास वहुतेरे कच्चे तडाग है। लोग कहते है कि यहॉ ७२ तड़ाग और ५२ कुटियॉ है। कुटियोंमे साधु लोग रहते है, उनके पास देवस्थान या देवमन्दिर वने हुए है।

चैत्र सुदी नवमीको जनकपुरका प्रधान मेला होता है। नैपाली और भोटिये और भारतवर्षके अन्य प्रदेशोके वहुतेरे यात्री मेलेमे आते है। माल खूब विकता है। अगहन सुदी पंचमीको सीतारामके व्याहका उत्सव होता है। हाथी घोडे आदि ठाटोंसे सज्जित होकर राममन्दिरसे वारात निकलती है और कई सौ गज पश्चिमोत्तर जानकीके मन्दिरको जाती है। वहॉं सवको भोजन मिलता है। उस समय भी वहुत यात्री आते है।

जनकपुरसे लगभग ६ मील दक्षिण-पूर्व एक तडागके पास विश्वामित्रका मन्दिर है। जनकपुरसे १४ मील दूर जङ्गलमे धनुपा वस्तीके पास एक सरोवरके निकट पत्थरका वडा धनुप पडा है। यात्री लोग वहॉ जाकर धनुपका दर्शन करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(आदिपर्व-११३ वॉ अध्याय) राजा पाण्डुने मिथिलामें जाकर विदेहनगरको परास्त किया। (सभापर्व-३० वॉ अध्याय) भीमने विदेहपति राजा जनकको अति अल्प युद्धमे जीत लिया।

वाल्मीकिरामायण—(वालकाण्ड—७१ वॉ सर्ग) जनकके वंशके राजा;—(१) राजा निमि (२) मिथि, (३) जनक, (४) उदावसु, (५) नन्दिवर्धन, (६) सुकेतु, (७) देवरात, (८) बृहद्रथ, (९) महावीर, (१०) सुधृति, (११) धृष्टकेतु, (१२) हर्यश्व, (१३) मरु, (१४) प्रातीन्धक, (१५) कीर्तिरथ, (१६) देवमीढ़, (१७) विबुध, (१८) महीध्रक, (१९) कीर्तिरात, (२०) महारोमा, (२१) स्वर्ण-

रोमा (२२) और ह्रस्वरोमा हुए। ह्रस्वरोमाके सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र कहे हैं। सीरध्वजकी पुत्री सीता है।

उत्तरकाण्ड—(१७ वाँ सर्ग) एक समय लंकापति रावणने हिमालयके वनमें वृहस्पतिके पुत्र कुशध्वजकी पुत्री वेदवतीको तप करती हुई देखा तब उसने विमानसे उतर कामातुर हो उसके माथेके केशोंपर हाथ लगाया। तब वेदवतीने हाथसे अपने केशोंको काटडाला और रावणको शाप दिया कि हे नीच! मैं तेरे वधके लिये फिर जन्म लेऊँगी। ऐसा कह वह अग्निमें प्रवेशकर गई और पीछे जनकराजके घरमें अयोनिजा सीता रूप उत्पन्न हुई।

(वालकाण्ड—५० वाँ सर्ग) विश्वामित्र राम और लक्ष्मणके सहित राजा जनककी यज्ञशालामें पहुँचे। राजाने विश्वामित्रका आगमन सुन सत्कारपूर्वक उनको टिकाया। (६६ वाँसर्ग) दूसरे दिन प्रातःकाल विश्वामित्रने राजा जनकसे कहा कि ये दोनों राजा दशरथके पुत्र आपका श्रेष्ठ धनुष देखना चाहते हैं (६७ वाँ सर्ग) राजा जनककी आज्ञासे ५ सहस्र मनुष्य उस धनुषकी संदूकको खींच लाये। विश्वामित्रकी आज्ञासे रामचन्द्रने सन्दूकके भीतरसे धनुष निकाल कर उसे वीचमें थांभा और लीलासे उठाकर प्रत्यञ्चासे पूर्णकर उसको दो खण्डकर डाला। उसके उपरान्त राजा जनकने अपने मन्त्रियोंको राजा दशरथको बुलानेके लिये अयोध्यामे भेजा। (६८ वाँ सर्ग) जनकके दूत तीन रात्रि मार्गमें टिककर चौथे दिन अयोध्यामें पहुँचे। उन्होने जनकपुरका सब वृत्तान्त राजा दशरथसे कह सुनाया। (६९ वाँ सर्ग) राजा दशरथ चतुरंगिणी सेना और ऋषियोके सङ्ग अयोध्यासे प्रस्थानकर चार दिनमें विदेह नगर पहुँचे। (७३ वाँ सर्ग) रामचन्द्रका विवाह सीतासे, लक्ष्मणका उर्मिलासे, भरतका माण्डवीसे, और शत्रुघ्नका श्रुतिकीर्तिसे हुआ। उस समय रामचन्द्रका वय १५ वर्षका और सीताजीका ६ वर्षका था। (७७ वाँ सर्ग) राजा दशरथ सम्पूर्ण सेना और पुत्रगणोके साथ जनकपुरसे प्रस्थान करके अयोध्या पहुँचे। (विशेष कथा भारत-भ्रमण दूसरे खण्डके तीसरे अध्यायमें देखो)

विष्णुपुराण—(चौथा अंश-पांचवाँ अध्याय) क्रमसे जनकपुरके राजाओंका नाम—(१) निमि, (२) विदेह, (३) उदावसु, (४) नन्दिवर्धन, (५) सुकेतु, (६) देवरात, (७) वृहद्रथ, (८) धृति, (९) विबुध, (१०) महाधृति, (११) कृतिरात, (१२) महारोमा, (१३) सुवर्णरोमा, (१४) ह्रस्वरोमा, (१५) सीरध्वज अर्थात् जानकीके पिता हुए, वह पुत्रप्राप्तिके लिये सोनेके हलसे यज्ञभूमिको जोतते थे, उसी समय हलके अग्रभागसे सीता कन्या उत्पन्न हुई। सीरध्वजके भाई कुशध्वज सांकाश्यनगरके राजा हुए। (१६) भानुमान्; (१७) शतद्युम्न, (१८) शुचि, (१९) उर्जवह, (२०) सत्यध्वज, (२१) कुणि, (२२) अञ्जन, (२३) ऋतुजित, (२४) अरिष्टनेमी, (२५) श्रुतायु, (२६) सुपार्श्व, (२७) सञ्जय, (२८) क्षेमारी, (२९) अनेना, (३०) मीनरथ, (३१) सत्यरथ, (३२) सत्यरथी, (३३) उपंगु, (३४) श्रुत, (३५) शाश्वत, (३६) सुधन्वा, (३७) सुभास, (३८) सुश्रुत, (३९) जय, (४०) विजय, (४१) ऋतु, (४२) सुनय, (४३) वीतहव्य, (४४) धृति, (४५) वहुलाश्व, (४६) और कृति, यहाँ तक विदेहवंश चला।

आदिब्रह्मपुराण—(१७ वाँ अध्याय) श्रीकृष्णने मिथिलापुरीके पास द्वारिकाके शतधन्वाको मारा, तब बलदेवजी मिथिलापुरीमें चले गये। वहाँके राजाने बलदेवजीको सन्मान पूर्वक रक्खा। जब बलदेवजी मिथिलापुरीमें रहते थे, तब हस्तिनापुरके राजा दुर्योधनने उनसे गदा विद्या सीखी थी।

सीतामढ़ी।

जनकपुर रोड अर्थात् पुपुड़ीके रेलवे स्टेशनसे १६ मील (दरभङ्गा जंक्शनसे ४२ मील) पश्चिमोत्तर सीतामढ़ीका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे १ मील पर लपनदेई नदीके पश्चिम किनारे पर सूबे बिहारके मुजफ्फरपुर जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान सीतामढ़ी एक छोटा कसबा और तीर्थ स्थान है सन्, १८८१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय सीतामढ़ीमें ६१२५ मनुष्य थे।

सीतामढ़ीमें मुन्सफी कचहरी बाजार, स्कूल और एक अस्पताल है। चावल, सखुआकी लकड़ी, तेलके बीज, चमडा और नैपालके पैदावारकी तिजारत होती है। शोरा और जनेऊ बहुत तैयार होते है। लखनदेई नदी पर लकडीका पुल बना है। चैत्रकी रामनवमीके समय एक बडा मेला होता है और २ सप्ताह तक रहता है। मेलेके समय दूर दूरके यात्री लोग आते है। यह मेला बैलकी खरीद बिक्रीके लिये प्रसिद्ध है। इसमे पीतलके वर्तन, मसाला, कपड़ा और हाथीकी भी तिजारत होती है। सीतामढ़ीमें एक घेरेके भीतर सीताका मन्दिर और चार पाँच दूसरे मन्दिर और घेरेके आसपासमे तीन चार देवमन्दिर है। इनमें सीता, रामचन्द्र, लक्ष्मण, शिव, हनूमान, गणेश, इत्यादि देवताओंकी मूर्त्तियाँ स्थापित हैं और सीतामढीके महन्तका समाधिस्थान भी है। सीतामढ़ी कसबेसे १ मील पश्चिम पुनचडा बस्तीके निकट एक पक्का सरोवर है। लोग कहते हैं कि इसी स्थान पर अयोनिजा सीताजी उत्पन्न हुई थीं। सरोवरके पूर्व एक बडी ठाकुरबाडी है। यात्रीगण सरोवरमें स्नान करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—विष्णुपुराण—(चौथा अंश-पाँचवाँ अध्याय) जनकपुरके राजा ह्रस्वरोमाके सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र थे, उनमें सीरध्वज मिथिलाके राजा हुए। वह एक समय पुत्र कामनाके निमित्त सोनेके हलसे यज्ञभूमिको जोतते थे, उसी समय हलके अग्रभागसे सीता कन्या उत्पन्न होगई।

सींगेश्वरनाथ।

दरभङ्गासे ६० मील पूर्व राघवपुरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे २५ मील दक्षिण भागलपुर जिलेमें एक छोटी नदीके किनारेपर सींगेश्वर स्थान नामक वस्ती है, वहाँ नदीके किनारेपर एक घेरेके भीतर सींगेश्वरनाथ महादेवका, जिनका शुद्ध नाम शृङ्गेश्वरनाथ है, बडा मन्दिर स्थित है।

फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय सींगेश्वरनाथका बडा मेला होता है, और दो सप्ताह तक रहता है। मेलेमे बिकनेके लिये हाथी बहुत आते हैं और घोडे, अङ्गरेजी कपड़ा, जूता, नेपालियोंकी लम्बी छूरी, जिसको वे लोग खुखुडी कहते है और वर्तन इत्यादिकी तिजारत होती है। पुर्निया, मुँगेर, तिरहुत और नेपालके बहुत सौदागर आते हैं। वैशाखकी शिवरात्रिको फाल्गुनके मेलेसे छोटा मेला होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–वाराहपुराण (उत्तरार्द्ध २०७–वाँ अध्याय) एक समय शिवजी मन्दराचलके उत्तर किनारेके मुञ्जवान पर्वतसे श्लेष्मातक वनमे चले गये और नन्दीश्वरसे कह गये कि तुम किसीके पूछनेपर हमारे जानेका स्थान मत कहो। (२०८ वाँ अध्याय) उसके पश्चात् इन्द्रने ब्रह्मा और विष्णुको साथ ले मुञ्जवान पर्वतपर आकर नन्दीश्वरसे पूछा कि भगवान् शंकर कहाँ है। (२०९ वाँ अध्याय) जब नन्दीश्वरने शिवजीका पता नहीं बतलाया, तब देवता गण शिवजीको ढूँढते ढूँढते श्लेष्मातक वनमे पहुँचे। वहाँ शिवजीने मृगरूप धारण किया था। देवतागण उनको पहचानकर पकडनेके लिये चारोओरसे दौडे। इन्द्रने मृगके शृङ्गका अग्रभाग जा पकडा ब्रह्माने विचला भाग पकड लिया और शृङ्गका मूल भाग विष्णुके हाथमे आया। जब वह शृङ्ग तीन टुकडे होकर तीनोके हाथोमे रह गया और मृग अन्तर्द्धान होगया, तब आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ! तुम लोग हमको नहीं पासकोगे, अब शृङ्गमात्रके लाभसे संतुष्टहो जाओ। (२१० वाँ अध्याय) इन्द्रने शृङ्गके निज खण्डको स्वर्गमें स्थापित किया और ब्रह्माने अपने हाथके शृङ्ग खण्डको उसी स्थानमे स्थापित करदिया। दोनो खण्डोंका गोकर्ण नाम प्रसिद्ध हुआ। विष्णुने अपने हाथके शृङ्ग खण्डको लोकके हितके लिये स्थापित किया, उसका नाम शृङ्गेश्वर हुआ। जिन स्थानो पर शृङ्गके खण्ड स्थापित हुए, उन स्थानोंमे शिवजी निज अंश कलासे स्थित हो गये। कुछ कालके पश्चात् रावण इन्द्रको जीतकर गोकर्णेश्वरको उखाडकर अमरावती पुरीसे लंकाको ले चला और कुछ दूर जाकर शिवलिङ्गको भूमिमे रख संध्योपासन करने लगा। जब चलनेके समय रावणके उठानेपर वह शिवलिङ्ग नहीं उठा, तब रावण उसको वहाँही छोडकर लंका चला गया। उसी लिङ्गका नाम दक्षिण गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ और ब्रह्माके स्थापित शृङ्गके खण्डका नाम उत्तर गोकर्ण है। (उत्तर गोकर्णकी कथा दूसरे खण्डके गोला गोकर्ण नाथके वृत्तान्तमे और दक्षिण गोकर्णकी कथा चौथे खण्डके गोकर्णमे देखो)।

वाराहक्षेत्र।

सकरीके स्टेशनसे ६३ मील और दरभंगासे ७५ मील पूर्व थोडा उत्तर बगाल नर्थवेष्टर्न रेलवेका खतमी स्टेशन कोशी नदीके दहिने किनारेपर कनवाघाट है, जिसके उस पार इष्टर्नबंगाल स्टेट रेलवेका अंचराघाट स्टेशन है। वहाँसे १० कोश उत्तर पैदल या बैल गाडीकी राहसे कोशी नदीके किनारे हिमालयके पादमूलपर चतरागद्दी स्थानमे पहुँचना होताहै। चतरागद्दीसे ३ कोस उत्तर वनखण्डीनाथकी धूनी है, जहाँ अनेक साधु रहते है। धूनी सर्वदा जलती रहती है। वाराहक्षेत्रके यात्री उस धूनीमें कुछ लकडी फेक देते है। उससे आगे १० कोस उत्तर धवलागिरिका कठिन चढाव है। पहाडका रास्ता एक दो हाथ चौडा है। कहीं कहीं समथल भूमि मिलती है, जहाँ पहाडियोंके दो चार घर बने हुए हैं। वहाँ कमला नींबू बहुत होता है। पहाडपर खानेके लिये यही मिलते हैं। चतरागद्दीसे मन्दिरतक पैदल अथवा कुलीकी पीठपर छींके या झूलेमें बैठकर, या नावमे बैठ कोशी नदीके मार्गसे जाना चाहिये। नावका भाडा एक आदमीका ८ आना लगता है। कोशी नदीमें नावको ऊपर चढ़ना पड़ता है। नदीमें अनेक चट्टान हैं। जलका वेग प्रबलहै। कोशी नदी हिमालयसे निकलकर करीब २२५ मील दक्षिण बहनेके उपरान्त भागलपुरके नीचे गङ्गामे मिलगई है।

कोशी नदीके किनारे नेपाल राज्यमें धवलागिरि शिखरपर वाराहक्षेत्र है, जिसको कोकामुख भी कहते है। एक साधारण कदके मन्दिरमे छोटी चतुर्भुज वाराहजीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके चारोओर दीवार बनी है और आस पास एक बिगहा समतल भूमि है। उत्तर ओर कोवरा नदी बहती है, जिसमे स्नान करके यात्री लोग उसका जल वाराहजीपर चढ़ाते हैं। कार्त्तिक पूर्णिमाके दिन स्नान और जल चढ़ानेकी बडी भीड होती है। नेपाल सरकारकी ओरसे शान्ति रखनेको पुलिस रहती है। कमला निम्बू सस्ते मिलते है और चिउड़ा भी मिल जाता है खानेकी सामग्री साथ लेजाना चाहिये। वाराहक्षेत्रका मेला कार्त्तिकी पूर्णिमाके ४ रोज पहलेसे ४ दिन पीछे तक रहता है। मन्दिरसे दो तीन मील दूर पहाड़ीके ऊपर सूर्य्यकुण्ड नामक पुराना तालाब है। नाव कोशी नदीके मार्गसे वाराहक्षेत्रसे चतरागदी शीघ्र पहुँचती है क्योंकि पानीका उतार है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण—(बालकांड ३४ वॉ सर्ग) विश्वामित्रने रामचन्द्रसे कहा कि सत्यवती नामक मेरी जेठी बहन महर्षि ऋचीकसे व्याही गई थी, वह अपने पतिके संग स्वर्गमें गई और पीछे लोकके हितके निमित्त पवित्र जलवाली कौशिकी नदी होकर हिमवान पर्वतसे निकली, इसी लिये मै अपनी बहनके स्नेहसे हिमवानके पास निवास करता हूँ।

महाभारत-(वन पर्व्व–८७ वॉ अध्याय) गयाकी ओर कौशिकी नामक नदी है। विश्वामित्र वही ब्राह्मण बने थे। (अनुशासन पर्व्व २५ वॉ अध्याय) कौशिकी नदीमें वायुभक्षी होकर त्रिरात्रि उपवास करनेसे गन्धर्व्वनगरमे वास होता है। (वनपर्व्व ८३ वॉ अध्याय) वाराह तीर्थमे वाराहरूपधारी विष्णुने निवास किया था, वहॉ स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है।

वाराहपुराण-(उत्तरार्द्ध-पहला अध्याय) कोकामुखक्षेत्र, जिसको शूकरक्षेत्र भी कहते है, भागीरथी गङ्गाके निकट है। (२४ वॉ अध्याय) कोकामुख नामक क्षेत्रको महात्माजन बदरी भी कहते है। इस क्षेत्रमें जलविन्दु नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊँचे पर्व्वतसे जलधारा पडती है और एक विष्णुधारा नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊँचे पर्व्वतसे मूसलके समान धारा पृथ्वीमें गिरती है। उसी कोकामुखमे विष्णुपद नामक स्थान है, जिसे वाराहशिला भी कहते है, सोम तीर्थ नामक स्थान है जिसमें विष्णुनामांकिता पञ्चशिला नामक भूमि प्रसिद्ध है, अग्निसर नामक तीर्थ है, जहॉ पॉच धारा पर्व्वतकी कन्दरासे निकलती है, नहासर नामक गुप्त तीर्थ है, जहॉ ऊँचेसे एक धारा शिलाके ऊपर गिरती है, सूर्य्यप्रभ नाम अति पवित्र तीर्थ है, जिसमे अग्नि समान अति जलती हुई जलकी धारा गिरती है, और कौशिकी नामक पुण्य देने वाली नदी है। कोकामुखके समीप मत्स्यशिला नाम एक पवित्र तीर्थ है, जिसमे पर्व्वतके ऊपरसे एक जलकी धारा गिरती है। वाराहजी बोले कि कोकामुख हमाराक्षेत्र पॉच योजन विस्तारका है।

मत्स्यपुराण—(१९२ वॉ अध्याय) जहॉ जनार्दन भगवान वाराहरूप धारणकर स्थित होकर पूजित हुए है, वह वाराह तीर्थ है। वहां विशेष करके द्वादशीको जाकर स्नान करनेवाला पुरुष विष्णुलोकमें प्राप्त होता है।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड—११ वाँ अध्याय) कोकामुख नाम परमोत्तम तीर्थ है। इस तीर्थसे होकर इन्द्रपुरी जानेका रास्ता दिखाई देता है। पुष्करके समान ब्रह्माजीकी मूर्त्ति यहाँ भी निरन्तर रहती है।

आदिब्रह्मपुराण—(१०५ वाँ अध्याय) त्रेता और द्वापरकी सन्धिमें पितरगण दिव्य मनुष्यरूप होकर मेरुपर्वतकी पीठपर विश्वेदेवों सहित स्थित हुए। चन्द्रमासे उत्पन्न हुई कांतियुक्त एक दिव्य कन्या उनके आगे हाथ जोड़कर खड़ी हुई और पितरोंसे बोली कि मैं चन्द्रमाकी कलाहूं तुमको वरूंगी। मै पहिले ऊर्जा नामवाली थी; पश्चात् स्वधा हुई और तुमने मेरा कोकानाम किया है। पितरदेव उसके वचनको सुनकर मोहित होकर उसका मुख देखने लगे। तब विश्वेदेवा पितरोंको योगसे भ्रष्ट देख उनको त्यागकर स्वर्गको चले गये। चन्द्रमाने अपनी आत्मजा ऊर्जाको उस स्थानमें न देख मनमें ध्यान करके जाना कि कामसे पीडित हुई ऊर्जा पितरोंको प्राप्त हो रही है। तब उन्होने पितरोंको शाप दिया कि तुम योगसे भ्रष्ट हो जाओ और इसने जो तुमपर मोहित हो पतिभावसे तुमको वरा है, इस कारणसे यह नदी होकर लोकमें कोका नामसे प्रसिद्ध हो इस पर्वतके शिखरपर स्थित रहे। निदान चन्द्रमाके शापसे पितर योगभ्रष्ट हो हिमवान पर्वतके नीचे जा पडे और ऊर्जा भी कोका नामसे विख्यात नदी होकर वहांपर वेगसे बहने लगी। पितर भी योगसे हीनहो उस नदीको देखने लगे; तब वह एक उत्तमतीर्थ हो गया। उस पर्वतने क्षुधासे पीडित पितरोंको देखकर उनके भोजनके लिये वदरीबन तथा अमृत देनेवाली गौको आज्ञा दी और उस कोका-रूपी नदीका जल दुग्ध होगया। इसी तरह पाप युक्त होकर पितर १०००० वर्ष वास करते रहे। सब लोक स्वधाकार और पितरोंसे रहित और दैत्य आदि वली हो गये, तब वे सब विश्वेदेवोसे रहित पितरोंको देख कर चारों तरफसे आये। उन्हें आते देख कोकाने क्रोधसे युक्त हो अपने वेगसे हिमाचलको डुवाकर पितरोंको घेर लिया पितरोंको अन्तर्हित हुए देख राक्षस आदिक भय देनेके लिये वहाँही स्थित हो गये, पितर जलमे दुःखित होकर हरिकी शरणमें गये, और उनकी वहुत स्तुतिकी। तव विष्णुने दिव्य मूर्त्ति सूकर रूप धारणकर जलमे डूवे हुए पितृगणोंका उद्धार किया। शूकर रूप धारण करके पितरोका उद्धार करनेसे वहाँ विष्णुतीर्थ स्थापित हुआ। सूकरभगवान्ने विष्णुसे जल और अपने रोमोसे उत्पन्न हुई कुशाको लेकर अपने पसीनेसे उत्पन्न हुए तिलों साहित उस उत्तम तीर्थमे पितरोंका तर्पण किया। वाराहजीने कहा कि कोकाके जलका पान पापोका नाश करता है, उस तीर्थमे स्नान करनेवाला धन्य है। माघ मासके शुक्ल पक्षमें प्रातःकाल कोकामें स्नान करे और ५ दिन वहाँ ठहरे। एकादशी और द्वादशीको वहाँ रहना योग्य है।

नरसिंहपुराण—(३९ वाँ अध्याय) वाराहजीने कोका नामक तीर्थमें वाराहरूप छोड़ कर वैष्णवोंके हितके लिये उसको उत्तम तीर्थ वना दिया।

गरुडपुराण—(पूर्वार्द्ध ८१ वाँ अध्याय) कोकामुख तीर्थ सम्पूर्ण कामका देनेवाला है।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वाँ अध्याय) कोकामुख नामक विष्णुका तीर्थ है, उसके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पातकोका विनाश होजाता है और विष्णुलोक मिलता है। (४० वाँ अध्याय) वाराह तीर्थमें जनार्दन भगवान् रहते है वहाँ स्नानादिक कर्म करनेसे मनुष्यको विष्णुलोकमें निवास होता है।

छठा अध्याय।

(सूबे विहारमें) ल(क्खी)क्ष्मीसराय जंक्शन, जमालपुर, मुंगेर, अजगयबीनाथ, भागलपुर, साहबगंज, राजमहल, मालदह और इङ्गलिशबाजार, गौड, पाण्डुआ, मुर्शिदाबाद और बरहमपुर।

लक्ष्मीसराय जंक्शन।

ईष्टइण्डियन रेलवेके मोकामा जक्शनसे २० मील पूर्व-दक्षिण सूबे विहारके मुंगेर जिलेके लक्ष्मीसरायमें रेलवेका जक्शन है, जहाँसे कार्डलाइन या लूपलाइनसे खाना जंक्शन जाकर कलकत्तेके निकट हवडा पहुँचना होता है। वैद्यनाथ, आसनसोल, रानीगंज, वर्दवान, हवडा, कलकत्ता इत्यादिके जानेवालेको कार्डलाइनसे जाना चाहिये। ईष्ट इण्डियन रेलवेका महसूल प्रति मील २½ पाई है।

(१) लक्ष्मीसरायसे पूर्व-दक्षिण कार्डलाइनपर,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ जमुई।
२७ गिद्धौर।
६१ वैद्यनाथ जंक्शन।
७९ मधुपुर जक्शन।
१२४ सीतारामपुर जक्शन।
१३० आसनसोल जंक्शन।
१४१ रानीगंज।
१४६ अण्डाल जक्शन।
१८७ खाना जंक्शन।

वैद्यनाथ जक्शनसे ४ मील पूर्व दक्षिण देवघर या वैद्यनाथजी।

मधुपुर जक्शनसे २३ मील पश्चिम-दक्षिण गिरिडी।

सीतारामपुर जंक्शनसे पश्चिम ५ मील वराकर और ३९ मील पटरसगढ।

आसनसोल, जक्शनसे पश्चिम-दक्षिण वगाल नागपुर रेलवेपर ४७ मील पुरुलिया, २२१ मील वामरा और २४४ मील झारसूगढ जक्शन।

अण्डाल जक्शनसे २४ मील पश्चिमोत्तर गौरागद्दी।

खाना जंक्शनसे पूर्व दक्षिण ८ मील वर्दवान, ४६ मील मगरा, ५१ मील हुगली जंक्शन, ५४ मील चन्दरनगर, ६१ मील सेवडाफूली जंक्शन, ६३ मील श्रीरामपुर और ७५ मील हवडा।

(२) लक्ष्मीसरायसे लुपलाइनपर पूर्व साहवगंज और साहवगंजसे दक्षिण खाना जंक्शन,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

७ कजरा।
२५ जमालपुर जंक्शन।
४३ सुलतानगंज।
५८ भागलपुर।
७८ कहलगाँव।
१०४ साहवगंज।
१२८ तीन पहाड जंक्शन।
१५४ पकउड सवडिवीजन।
१६८ मुराडोई।
१७८ नलहाटी जंक्शन।
१८७ रामपुरहाट सवडिवीजन।

३०४ साइन्थिया ।

२४८ खाना जंक्शन ।

जमालपुर जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर मुङ्गेर ।

साहवगंजके मनिहारीघाटसे इष्टर्न वंगाल स्टेट रेलवेके स्टेशनोकी तफसील साहवगंजमें देखो ।

तीनपहाड़ जंक्शनसे ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल ।

नलहाटी जंक्शनसे २७ मील पूर्व मुर्शिदावादके पास अजीमगंज ।

जमालपुर ।

लक्षीसरायसे ७ मील पूर्व कजराका रेलवे स्टेशन है, जहांसे १$\frac{3}{2}$ मील उत्तर रेलवे लाइन और ओरियन गॉवके पास एक पहाडी है । कहा जाता है कि इस पहाडीपर कुछ समय तक बुद्धदेव रहे थे और यहाँ एक प्रसिद्ध जलसा हुआ था । पुराने समयमें यह यात्राके लिये विख्यात था । यहॉ बुद्धकी निशानियां पाई जाती हैं ।

लक्षीसराय जंक्शनसे २५ मील पूर्व जमालपुरमें रेलवेका जंक्शन है । सूवे विहारके मुङ्गेर जिलेमे जमालपुर एक कसवा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जमालपुरमें१८०८९मनुष्य थे; अर्थात् १४११२ हिन्दू, ३२९० मुसलमान और ६८७ कृस्तान ।

रेलवेका काम और इंजन वननेका यह हिन्दुस्तानमें प्रधान स्थान है यहॉ ५५ एकडमें कारखानेका काम होता है, जिसमे करीव १७ एकड जमीन छाई हुई है । यहॉ ३००० से अधिक हिन्दुस्तानी आदमी और सैकडों यूरोपियन काम करते हैं । यूरोपियनलोगोंके रहनेके लिये कारखानेके पास मकान वने हैं । देशी कसवे और यूरोपियन वस्तीके वीचमें रेलकी लाइन है । युरोपियन वस्तीके पास गिर्जा, हम्माम और कई एक स्कूल वनेहुए हैं ।

यह कारखाना सन् १८६२ ई० में कायम हुआ । सन् १८९१ में जो काम तय्यार हुए उनकी कीमत १० लाख थी । कारखानेका काम वहुत तरक्कीपर है । यहाँ लोहेके असवाव हरतरहके ढाले जाते हैं । सवसे वड़े ३० टन तक होते हैं । यहाँके रोलिङ्ग मिलमे हर महीनेमें ४०० टन छर वनते हैं । हिन्दुस्तानमें रौलिङ्गमिले दूसरी जगह नहीं हैं । यहाँ ३$\frac{1}{2}$ टनका एक कलका हथउरा है । हिन्दुस्तानके कुल हिस्सोंके सम्पूर्ण लाइनोंके लिये लोहेके रेलवे असवाव यहॉसे जाते हैं ।

जमालपुरके पास पहाड फोडकर रेलकी सडक निकाली गई है ।

ऋषिकुण्ड—जमालपुरसे २ मील दूर पहाडीके ऊपर ऋषिकुण्ड नामक गरम पानीका कुण्ड है । पांच छ कुण्डहोकर पानी निकलता है । यहॉ मलमासमे मेला होता है ।

मुंगेर ।

जमालपुर जंक्शनसे ५ मील उत्तर थोडा पश्चिम और लक्षीसराय जक्शनसे रेलवे द्वारा ३० मील पूर्व मुंगेरका रेलवे स्टेशन है । सूवे विहारके भागलपुर किस्मतमें गङ्गाके दहिने किनारेपर (२५ अंश २२ कला ३३ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश ३० कला २१ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका प्रधान कसवा और सदरस्थान मुंगेर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुंगेरमें ५७०७७ मनुष्य थे; अर्थात् २७१८८ पुरुष और २९८८९ स्त्रियाँ। इनमें ४४१२१ हिन्दू, १२५७८ मुसलमान; ३२२ कृस्तान, ५२ जैन और ४ बौद्ध थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ६६ वाँ बङ्गालमें ९ वाँ और सूबे विहारमें ६ ठा शहर है।

यहाँके वडे वाजारमें अच्छी अच्छी दुकानें हैं। इसमें वन्दूक, छुरी, पिस्तौल, आदि अच्छे वनते है। मुङ्गेरके पास छोटी छोटी कई पहाडी हैं। प्रधान सड़क दो वडे तालावोंके वीचमें उत्तरसे दक्षिण गई है। एक तालावके पास पहाडी पर विजयानगरके महाराजका कर्णचौरा नामक मकान और दूसरे तालावके निकटकी पहाडी पर साहव-महल करके प्रसिद्ध एक सुन्दर मकान है। उसके पीछे शाहशुजाके रहनेकी इमारत है, जो अव जेलखानेके काममे आती है। भागलपुरके जज मुङ्गेरमें आकर दौरेके मुकदमोंका विचार करते हैं।

किला—गङ्गाके दक्षिण किनारेपर एक पहाडीके अखीरके पास करीव ५००० फीट लम्बा और ३५०० फीट चौडा एक पुराना किला है। किलेका डौल दुरुस्त नहीं है। किलेकी दीवारमें भीतरसे मट्टी और वाहरसे ईटे दिये गये हैं। वहुतेरी जगहोंमें अव ईटे नहीं है। उत्तर ओर गङ्गा और जमीनकी ओर खाई है। किलेमें उत्तर एक टीला है। लोग कहते हैं कि इसपर राजा कर्णका गढ था, अव गढ़की कुछ निशानी नहीं है, टीलेपर किसी राजाका वँगला वना है। किलेमें एक तरफ जिलेकी कचहरियाँ और गङ्गाकी तरफ जगह जगह अङ्गरेजोके वँगले हैं। किलेसे पूर्व और दक्षिण शहर वसा है।

घाट—किलेके पास गङ्गाजीका कष्टहरनी घाट है। सीढ़ियाँ पक्की वनी हैं। घाटपर देवताओंके कई मन्दिर वने हैं। माघी पूर्णिमाके दिन इस घाटपर स्नानका मेला होता है। घाटसे पश्चिमकी ओर गङ्गाकी वीचधारमें एक पत्थरका चट्टान देख पडता है।

सीताकुण्ड—शहरसे ५ मील दूर सीताकुण्ड है, वहाँ दीवारसे घेरी हुई १½ वीघा जमीन है। घेरेके भीतर राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न चारों भाइयोंके नामसे अलग अलग ४ कुण्ड अर्थात् वहुत छोटे छोटे पोखरे वने हैं, जिनका जल ठंढा है और सीताकुण्ड नामक एक पाँचवाँ कुण्ड है, जिसका पानी वहुत गरम है, उससे कोई स्नान नहीं कर सकता है। वहाँके ब्राह्मण कुण्डका पानी लोटेसे निकालकर यात्रियोंके ऊपर छिडकते है। कुण्डके चारो तरफ लोहेका जँगला लगा है। कुण्डमे सर्वदा धुँआ निकलता है। कुण्डका पानी एक नाला होकर वरावर वाहर गिरता है। घेरेके भीतर दो एक छोटे मन्दिर और एक छोटा मकान है। वहाँ माघकी पूर्णिमाको मेला होता है। इसके अतिरिक्त वैशाख और कार्त्तिककी पूर्णिमा और चैत्रकी रामनवमीको भी वहाँ वहुत यात्री जाते हैं। वहाँके पण्डे गरीव हैं।

चण्डीका मन्दिर—सीताकुण्डसे ५ मील और गङ्गासे १ मील दूर चण्डीका स्थान है। वहाँ पक्की पत्थरका अर्द्धगोलाकार गुम्वजके समान चण्डीका मन्दिर है। उसमें एक तरफ छोटा द्वार है, भीतर माथा टेकता है, दीवारमें चण्डीका आकार है, जिसकी पूजा लोग करते है। मन्दिरके ऊपर गच किया हुआ है। लोग कहते थे कि यह मन्दिर चण्डीका वरता हुआ कडाह है। राजा कर्ण इसी कडाहमें कूदकर नित्य चण्डीसे सवामन सोना पाकर कष्टहरनी घाटपर दान देते थे।

मुङ्गेर जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३९२१ वर्ग मील है। इसके उत्तर भागलपुर और दरभङ्गा जिला; पूर्व भागलपुर जिला, दक्षिण संथाल परगना और हजारीवाग जिला और पश्चिम गया, पटना और दरभङ्गा जिले है। गङ्गानदी जिलेके मध्य होकर जिलेमें ७० मील वहती है। गङ्गाके उत्तर जिलेका छोटा भाग और दक्षिण वडा भाग है। उत्तरके भागमे गण्डकी और तिलजुगा नदियाँ और उपजाऊ भूमि और दक्षिण भागमें पहाडियोंका सिलसिला और कम उपजनेवाली भूमि है गङ्गासे दक्षिणखानोंसे लोहा सीसा, कङ्कड और कोयला निकलते हैं, पत्थर और स्लेटकी भी खान है। जिलेके दक्षिणी भागमें जङ्गल वहुत है. जङ्गली पैदावारोमें महुआ अधिक होता है। वृक्षोंसे गोंद इकट्ठा किया जाता है। जगली वंवर और घाससे रस्सियाँ वनाई जाती है। संथाल लोग वाघ और भालुओको मार कर सरकारसे इनाम लेते हैं।

इस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २०३५२१८ और सन् १८८१ में १९६९७७४ मनुष्य थे, अर्थात् १७७४०१३ हिन्दू, १८७५१७ मुसलमान, १०९१ कृस्तान, और ७१५३ संथाल और कोल। जातियोके खानेमें २१७६१६ ग्वाला, १७५९९५ भूमिहार, १२३३३७ मुसहर, ११८९४० धानुक, १०८४३३ दुसाध, ९३६५२ कोईरी, ५९८६४ कानू, ५७२९१ ब्राह्मण, ५६०६७ राजपूत, ५६६३२ तेली, ५४०११ तांती, ५२६३४ चमार, ४८६३१ बनियाँ शेषमें दूसरी जातियाँ थी। सन् १८९१ में इस जिलेके कसवे मुंगेरमें ५७०७७ जमालपुरमें १८०८९ और शेखपुरा, वधिया, वरवीघा, खुटिया, और मथुरापुरमें दस हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि मुंगेर कसवा पूर्वकालमे मुद्गर मुनिके नामसे मुद्गरपुर या मुद्गराश्रम नामसे प्रसिद्ध था। क्योंकि मुद्गर मुनि यहाँ निवास करते थे। मुद्गरका अपभ्रंश मुंगेर है। कुछ लोगोका मत है कि विश्वामित्रके पुत्र राजा मुद्गरके नामसे इसका नाम मुंगेर हुआ था। लोग मुङ्गेरको राजा कर्णकी राजधानी कहते है, किन्तु महाभारत या पुराणोंमे मुझको इसका कोई प्रमाण नहीं मिला। जान पडता है कि सन् ११९५ ई० में महम्मद वखतियार खिलजीने मुङ्गेरको ले लिया था। गोरके अफगान वादशाह हुसेनशाहके पुत्र दनआलने सन् १४९७ ई० मे मुङ्गेरके किलेको सुधारा था।

बंगालेके नव्वाव मीरकासिमने, जो मुर्शिदावादमें रहता था, अङ्गरेजोकी हुकूमतसे छूट जानेका मनसूवा वांधा और मुङ्गेरमें आकर फौज दुरस्त करके अङ्गरेजोंकी भांति उसे कवाइद सिखाई। उसने सन् १७६३ में अवधके नव्वावको मिलाकर लडाई आरम्भकी, घेरिया और ऊधानालाकी लडाइयोंमें उसकी सेना परास्त हुई। वह भागकर अवधके नव्वावके पास चला गया इत्यादि। अङ्गरेजी अधिकार होनेपर मुङ्गेर प्रसिद्ध हुआ। सन् १८१२ ई० में मुङ्गेरमें सिविल स्टेशन वना। एक समय मुङ्गेरके मुसलमानोके पुराने किलेमें ईष्टइडियन कम्पनीकी एक फौज रहती थी।

अजगयवीनाथ।

जमालपुरसे १८मील (लक्खीसराय जंक्शनसे ४३ मील) पूर्व भागलपुर जिलेमें सुलतानगञ्जका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे थोडी दूर उत्तर जहांगीरा गाँवके पास गङ्गाके वीच धारामें एक चट्टानपर अजगयवीनाथ महादेवका मन्दिर है। यात्रीगण नावमें सवार हो

चट्टानपर जाते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाँ जह्नु ाश्रम था और बैजू नामक ग्वाला उसी स्थानसे गङ्गाजल ले जाकर बैद्यनाथजीपर चढ़ाता था। बहुतेरे लोग वहाँसे जलले जाकर बैद्यनाथजीपर चढ़ाते है। अजगयवीनाथ लिङ्गस्वरूप हैं। उनके पास जह्नुमुनिका स्थान और उनके मन्दिरके आस पास कई जीर्ण पुराने मन्दिर है। चट्टानके बगलमें चट्टान काट कर गणेश, सूर्य, विष्णु, भगवती, महावीर आदि देवताओंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। माघकी पूर्णमासीसे फागुनकी शिवरात्रितक चट्टानपर मेला होता है।

भागलपुर।

मुलतानगञ्जसे १५ मील (लक्षीसराय जंक्शनसे ५८ मील) पूर्व भागलपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे विहारमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान, (२५ अंश १५ कला १६ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश २ कला २९ विकला पूर्व देशान्तरमे) गङ्गाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर २ मील लम्बा और लगभग 1 मील चौडा भागलपुर शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भागलपुर शहर और इसकी फौजी छावनीमें ६९१०६ मनुष्य थे, अर्थात् ३४७०८ पुरुष और ३४३९८ स्त्रियां। इनमेसे ४८९१० हिन्दू, १९६६६ मुसलमान, ३०३ कृस्तान, १४४ जैन, ४३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाडी, २५ बौद्ध और १५ यहूदी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ४९ वां, बङ्गालमें ७ वाँ और विहारमें ४ था शहर है।

शुजागञ्ज, नाथनगर, चम्पानगर, मसूरगञ्ज, आदि नामोसे कई खण्ड होकर भागलपुर शहर बसा है। शुजागञ्जमें रेलवे स्टेशन है। और यह सब मुहल्लोंसे अधिक रवनकदार है। स्टेशनके निकट टोडरमलकी उत्तम धर्मशाला बनी हुइ ह उसीमे मैं टिका था। गङ्गाके तीरपर बूढानाथ महादेवका सुन्दर मन्दिर बना है। भागलपुरमें बूढानाथ बड़े प्रसिद्ध देवता है। एक महन्तके आधीन मन्दिरकी बडी जायदाद है।

चम्पानगर, जो पूर्व समयमें बौद्ध राजाओंकी राजधानी था। शुजागंजसे ४ मील पश्चिम ह। उसमे रामेश्वरदत्त ठाकुरका सदावर्त जारी है। स्टेशनसे करीब २ मील एक पहाडीपर अङ्गरेजोंकी एक पुरानी कोठी है। स्टेशनसे २ मील कमिश्नरी और जिलेकी कचहरिया है। स्टेशनसे ३ मील एक जैन मन्दिर है, जहाँ जैन यात्री उत्साहसे जाते है। मन्दिरके पास एक बडी सराय है। शहरमे अङ्गरेजोके २ स्मरण स्तम्भ और शहरमें तथा इसके आस पास मुसलमानोके कई दरगाह है। करनगढ़ पहाड़ीपर देशी पल्टन रहती है।

भागलपुर तिजारतका स्थान है। वहाँ रेशमका बडा कार बार होता है और २५$\frac{1}{2}$ गण्टेके सेरसे जिनिस बिकते है। शहरमें जल कल लगी है। भागलपुरका सेंट्रलजेल, दरी, कम्बल और पर्दा बननेके लिये मशहूर है। भागलपुरमें एक देशी कालिज, सिविल अस्पताल, दवाई खाना. और कई मान्य जमींदार है।

भागलपुर जिला—जिलेका क्षेत्रफल ४२६८ वर्गमील है। यह जिला गङ्गाके दोनों ओर है। इसके उत्तर नेपालका राज्य. पूर्व ओर गङ्गाके उत्तरका पूर्निया जिला, पूर्व और दक्षिण गंगाके दक्षिण ओर संथाल परगना जिला और पश्चिम दरभङ्गा और मुङ्गेर जिला है।

जिलेके पूर्वोत्तर भागमें जगल है, जिसमे बाघ, भैंसे और गेंडे रहते हैं। जिलेमें आम और ताडके बाग बहुत है। भागलपुर शहरके २० मील दक्षिणसे पहाडी देश आरम्भ होता

मुङ्गेर जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३९२१ वर्ग मील है । इसके उत्तर भागलपुर और दरभङ्गा जिला; पूर्व भागलपुर जिला; दक्षिण संथाल परगना और हजारीबाग जिला और पश्चिम गया, पटना और दरभङ्गा जिले है । गङ्गानदी जिलेके मध्य होकर जिलेमे ७० मील वहती है । गङ्गाके उत्तर जिलेका छोटा भाग और दक्षिण वडा भाग है । उत्तरके भागमे गण्डकी और तिलजुगा नदियाँ और उपजाऊ भूमि और दक्षिण भागमें पहाडियोंका सिलसिला और कम उपजनेवाली भूमि है गङ्गासे दक्षिणखानोसे लोहा सीसा, कङ्कड और कोयला निकलते हैं, पत्थर और स्लेटकी भी खान है। जिलेके दक्षिणी भागमे जङ्गल वहुत है. जङ्गली पैदावारोमे महुआ अधिक होता है । वृक्षोंसे गोद इकट्ठा किया जाता है। जंगली चंवर और घाससे रस्सियाँ वनाई जाती है । संथाल लोग वाघ और भालुओको मार कर सरकारसे इनाम लेते हैं ।

इस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २०३५२१८ और सन् १८८१ में १९६९७७४ मनुष्य थे; अर्थात् १७७४०१३ हिन्दू, १८७५१७ मुसलमान, १०९१ कृस्तान, और ७१५३ संथाल और कोल । जातियोके खानेमें २१७६१६ ग्वाला, १७५९९५ भूमि-हार, १२३३३७ मुसहर, ११८९४० धानुक, १०८४३३ दुसाध, ९३६५२ कोईरी, ५९८६४ कानू, ५७२९१ ब्राह्मण, ५६०६७ राजपूत, ५६६३२ तेली, ५४०११ तांती, ५२६३४ चमार, ४८६३१ बनियाँ शेषमें दूसरी जातियाँ थी । सन् १८९१ में इस जिलेके कसवे मुंगेरमें ५७०७७ जमालपुरमें १८०८९ और शेखपुरा, वधिया, वरवीघा, खुटिया, और मथुरापुरमे दस हजारसे कम मनुष्य थे ।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि मुंगेर कसवा पूर्वकालमे मुद्गर मुनिके नामसे मुद्गरपुर या मुद्गराश्रम नामसे प्रसिद्ध था । क्योंकि मुद्गर मुनि यहाँ निवास करते थे । मुद्गरका अपभ्रंश मुंगेर है । कुछ लोगोंका मत है कि विश्वामित्रके पुत्र राजा मुद्गरके नामसे इसका नाम मुंगेर हुआ था । लोग मुङ्गेरको राजा कर्णकी राजधानी कहते हैं, किन्तु महाभारत या पुराणोंमे मुझको इसका कोई प्रमाण नहीं मिला । जान पडता है कि सन् ११९५ ई० में महम्मद वखतियार खिलजीने मुङ्गेरको ले लिया था । गोरके अफगान वादशाह हुसेनशाहके पुत्र दनआलने सन् १४९७ ई० में मुङ्गेरके किलेको सुधारा था ।

बंगालेके नव्वाव मीरकासिमने, जो मुर्शिदावादमें रहता था, अङ्गरेजोकी हुकूमतसे छूट जानेका मनसूवा वांधा और मुङ्गेरमें आकर फौज दुरस्त करके अङ्गरेजोंकी भांति उसे कवाइद सिखाई । उसने सन् १७६३ में अवधके नव्वावको मिलाकर लडाई आरम्भकी, घेरिया और ऊधानालाकी लडाइयोंमें उसकी सेना परास्त हुई । वह भागकर अवधके नव्वावके पास चला गया इत्यादि । अङ्गरेजी अधिकार होनेपर मुङ्गेर प्रसिद्ध हुआ । सन् १८१२ ई० में मुङ्गेरमें सिविल स्टेशन वना । एक समय मुङ्गेरके मुसलमानोंके पुराने किलेमें ईष्टइंडियन कम्पनीकी एक फौज रहती थी ।

अजगयबीनाथ ।

जमालपुरसे १८मील (लक्खीसराय जंक्शनसे ४३ मील) पूर्व भागलपुर जिलेमें सुल-तानगञ्जका रेलवे स्टेशन है । स्टेशनसे थोडी दूर उत्तर जहांगीरा गाँवके पास गङ्गाके बीच धारामे एक चट्टानपर अजगयबीनाथ महादेवका मन्दिर है । यात्रीगण नावमें सवार हो

चट्टानपर जाते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाँ जह्नु ाश्रम था और बैजू नामक ग्वाला उसी स्थानसे गङ्गाजल ले जाकर वैद्यनाथजीपर चढ़ाता था। वहुतेरे लोग वहाँसे जलले जाकर वैद्यनाथजीपर चढ़ाते है। अजगयबीनाथ लिङ्गस्वरूप हैं। उनके पास जह्नुमुनिका स्थान और उनके मन्दिरके आस पास कई जीर्ण पुराने मन्दिर है। चट्टानके वगलमें चट्टान काट कर गणेश, सूर्य, विष्णु, भगवती, महावीर आदि देवताओंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। माघकी पूर्णमासीसे फागुनकी शिवरात्रितक चट्टानपर मेला होता है।

भागलपुर।

सुलतानगञ्जसे १५ मील (लक्षीसराय जंक्शनसे ५८ मील) पूर्व भागलपुरका रेलवे स्टेशन है। सूवे विहारमे किस्मत और जिलेका सदर स्थान, (२५ अंश १५ कला १६ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश २ कला २९ विकला पूर्व देशान्तरमें) गङ्गाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर २ मील लम्बा और लगभग 1 मील चौडा भागलपुर शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भागलपुर शहर और इसकी फौजी छावनीमें ६९१०६ मनुष्य थे, अर्थात् ३४७०८ पुरुष और ३४३९८ स्त्रियां। इनमेसे ४८९१० हिन्दू, १९६६६ मुसलमान, ३०३ क्रस्तान, १४४ जैन, ४३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाडी, २५ वौद्ध और १५ यहूदी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ४९ वां, बङ्गालमें ७ वाँ और विहारमें ४ था शहर है।

शुजागञ्ज, नाथनगर, चम्पानगर, मसूरगञ्ज, आदि नामोसे कई खण्ड होकर भागलपुर शहर वसा है। शुजागञ्जमे रेलवे स्टेशन है। और यह सब मुहल्लोंसे अधिक रवनकदार है। स्टेशनके निकट टोडरमलकी उत्तम धर्मशाला वनी हुइ ह उसीमें मैं टिका था। गङ्गाके तीरपर वूढ़ानाथ महादेवका सुन्दर मन्दिर वना है। भागलपुरमें वूढ़ानाथ बड़े प्रसिद्ध देवता हैं। एक महन्तके आधीन मन्दिरकी वडी जायदाद है।

चम्पानगर, जो पूर्व समयमे वौद्ध राजाओंकी राजधानी था। शुजागंजसे ४ मील पश्चिम है। उसमें रामेश्वरदत्त ठाकुरका सदावर्त जारी है। स्टेशनसे करीब २ मील एक पहाडीपर अङ्गरेजोंकी एक पुरानी कोठी है। स्टेशनसे २ मील कमिश्नरी और जिलेकी कचहरिया है। स्टेशनसे ३ मील एक जैन मन्दिर है, जहाँ जैन यात्री उत्साहसे जाते है। मन्दिरके पास एक वडी सराय है। शहरमे अङ्गरेजोंके २ स्मरण स्तम्भ और शहरमे तथा इसके आस पास मुसलमानोंके कई दरगाह है। करनगढ पहाडीपर देशी पल्टन रहती है।

भागलपुर तिजारतका स्थान है। वहाँ रेशमका वडा कार वार होता है और २५¼ गण्डेके सेरसे जिनिस विकते हैं। शहरमें जल कल लगी है। भागलपुरका सेंट्रलजेल, दरी, कम्वल और पर्दा वननेके लिये मशहूर है। भागलपुरमें एक देशी कालिज, सिविल अस्पताल, दवाई खाना, और कई मान्य जमींदार हैं।

भागलपुर जिला—जिलेका क्षेत्रफल ४२६८ वर्गमील है। यह जिला गङ्गाके दोनों ओर है। इसके उत्तर नेपालका राज्य, पूर्व ओर गङ्गाके उत्तरका पूर्निया जिला, पूर्व और दक्षिण गंगाके दक्षिण ओर संथाल परगना जिला और पश्चिम दरभङ्गा और मुङ्गेर जिला है।

जिलेके पूर्वोत्तर भागमें जंगल है, जिसमे वाघ, भैंसे और गेंडे रहते हैं। जिलेमें आम और ताडके वाग वहुत हैं। भागलपुर शहरके २० मील दक्षिणसे पहाडी देश आरम्भ होता

है। पानी जमीनकी सतहसे थोडेही नीचे है। वृक्ष बडे बड़े होते हैं। इस जिलेमें गङ्गाके दक्षिण चन्दन नदी और उत्तर कोशी, तिलजुगा, डिमरा इत्यादि बहुत नदियां बहती है और रेशमके कीडे बहुत पाले जाते हैं। अमरपुर, खदवली, वलुआ और सुलतानगज तिजारती गॉव है। गङ्गासे उत्तर सीङ्गेश्वर स्थान गाँवमे हाथीका मेला होता है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय २०३३३८५ और सन् १८८१ में १९६६१५८ मनुष्य थे; अर्थात् १७६४३०४ हिन्दू, १८५५३३ मुसलमान, १५७३२ पहाड़ी जाति, ५७८ कृस्तान और ११ यहूदी। जातियोंके खानेमें ३४३८३० ग्वाला, १०१६६५ धानुक, ८२६०९ ततवा, ८२३०२ कोइरी, ७९५८४ मुसहर, ७६४०७ चमार, ७१४२० ब्राह्मण, ७०८६३ दुसाध, ६६९४६ तेली, ६०४९१ राजपूत, ४२३५१ भूमिहार, ३८३६३ कूर्मी, ३६३१९ कुँभार, ३५५१६ केवट, ३५१७४ वनियां, ३४७२४ कान्दू, ३३९२७ नाई और शेषमे दूसरी जातियां थीं। पहाडी जातियोंमें १७९०४ भुइयॉ, १३३८४ संथाल, ८९७७ भुम्मिज और २३२२ कोल थे। भागलपुर जिलेमें केवल भागलपुर एक शहर है, कोलगङ्ग और सोनवरसा छाटे कसबे हैं।

मन्दरागिरि—भागलपुर जिलेके वांका सवडिवीजनमें लगभग ७०० फीट ऊँची मन्दरागिरि नामक एक छोटी पहाडी है। उसके निकट दो तीन अन्य छोटी पहाडियां हैं। मन्दरागिरिके ऊपर सीताकुण्ड और रामकुण्ड नामक शीतल जलके कुण्ड, शिखरपर मन्दिरमे भगवानका चरणचिह्न और देवीका मस्तक, और पहाड़ीके पादमूलपर पापहरणी नामक पुष्करणी है। उससे दो मील पश्चिम वौलीगाँवमें मधुसूदन भगवान्का मन्दिर है। मन्दिरसे कुछ दूरपर एक वड़ा सरोवर है। पौषकी संक्रांतिके समय मेला लगता है और ३ दिनों तक रहता है। यात्री-गण पापहरणी पुष्करणीमें स्नान करके मन्दरागिरिपर एकत्र होते हैं और वहॉसे उतर कर मधुसूदन का दर्शन करते हैं। अधिकारी गण मधुसूदन भगवान्को पापहरणी पुष्करणीमें स्नान कराकर मन्दर पहाडीके एक छोटे मन्दिरमें ठहराते है और सन्ध्याके समय उनको फिर लेजाते हैं लोग कहते थे कि मन्दरागिरिके नीचे एक दैत्य दवा हुआ है। विष्णुने उसका शिर काटडाला और उसके धडको दवानके लिये उस गिरिपर अपना चरण-चिह्न रखते हैं। इसीसे सब लोग पहाडीको पवित्र समझते है।

साहवगंज।

भागलपुरसे ४६ मील (लक्षीसराय जंक्शनसे १०४ मील) पूर्व साहवगञ्जका रेलवे स्टेशन है। सूबेविहारके संथालपरगना नामक जिलेमें गङ्गाके दहिने किनारे पर साहवगञ्ज उन्नती करता हुआ तिजारती कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय साहवगञ्जमें ११२९७ मनुष्य थे, अर्थात् ९०८९ हिन्दू, २०६४ मुसलमान, १२२ कृस्तान और २२ जैन।

गङ्गाके किनारे पर एक धर्मशाला वनी है, कसवेसे सवईघास, जिसका कागज वनता है, दूसरी जगहोमें वहुत भेजे जाते हैं।

साहवगञ्जके उसपार मनिहारीघाटसे इष्टर्नवङ्गाल स्टेट रेलवे उत्तर और पूर्वोत्तर गई है। पूर्नीया, दिनाजपुर, दार्जिलिङ्ग, रङ्गपुर, ग्वालपाडा, गौहाटी इत्यादिके जानेवाले लोग उसकी गाडीमें सवार होकर जाते हैं।

साहवगञ्जसे ७ मील पश्चिम तेलियागढ़ी नामक उजडा हुआ पुराना किला है, एक समय गङ्गा उसके पास वहती थी।

साहवगञ्जसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है, तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ $\frac{1}{2}$ पाई लगता है।

(१) साहवगञ्जसे दक्षिण ईष्टइण्डियन रेलवे।

मील–प्रसिद्ध–स्टेशन–

२४ तीनपहाड जंक्शन।
५० पकउड।
६४ मुडाडोई।
७४ नलहाटी जक्शन।
८२ रामपुरहाट।
१०० साँइथिया।
१४४ खाना जक्शन।

तीन पहाड जंक्शनसे ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल।

नलहाटी जक्शनसे २७ मील पूर्व मुर्शिदावादके पास अजीमगञ्ज।

खाना जक्शनसे पूर्व-दक्षिण ८ मील वर्दवान, ४६ मील मगरा, ५१ मील हुगली जक्शन. ५४ मील चन्दरनगर, ६१ मील सेवडाफुली जंक्शन, ६३ मील श्रीरामपुर, और ७५ मील हवडा और खाना जक्शनसे पूर्वोत्तर ४६ मील रानीगञ्ज, ५७ मील आसनसोल जंक्शन, १०८ मील मधूपुर जक्शन, १२६ मील वैद्यनाथ जक्शन, और १८७ मील लक्षीसराय जक्शन।

(२) साहवगञ्जसे उत्तर कुछ पश्चिम ईष्टर्नवङ्गाल स्टेट रेलवे, मनीहारी घाटसे फासिला।

मील–प्रसिद्ध–स्टेशन–

७ मनीहारी।
२३ कठिहर जंक्शन।
४० पुर्नियाँ।
४५ कसवा।
८२ फर्विसगञ्ज।
९६ अचराघाट (कोसीके किनारेपर)

कठिहर जंक्शनसे पूर्व २४ मील वरसूई जक्शन, ३७ मील रायगञ्ज, ७० मील दीनाजपुर, और ८९ मील पार्वतीपुर जक्शन। और वरसूई जंक्शनसे ३५ मील उत्तर किसनगञ्ज।

(३) साहवगञ्जसे पश्चिम ईष्टइण्डियन रेलवे।

मील–प्रसिद्ध स्टेशन–

२६ कहलगाँव।
४६ भागलपुर।
६१ सुलतानगञ्ज।
७९ जमालपुर जंक्शन।
१०४ लक्षासराय जंकशन।

जमालपुर जक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर मुङ्गेर।

राजमहल।

साहवगञ्जसे २४ मील दक्षिण कुछ पूर्व तीन पहाडका रेलवे जंक्शन है। तीन पहाडसे ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल तक रेलवेकी शाखा गई है। सूबे विहारके संथाल परगना जिलेमें (२५ अंश, २ कला, ५१ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश ५२ कला ५१ विकला पूर्व देशान्तरमें) गङ्गाके दहिने सब डिवीजनका सदर स्थान राजमहल एक छोटा कसवा है।

राजमहल एक समय बङ्गालकी राजधानी था, अब मट्टीके छोटे मकानोंका जिनमें चन्द अच्छे मकान हे, एस छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय केवल ३८३९ मनुष्य थे। वर्तमान कसबेके पश्चिम मुसलमानोंके पुराने शहरके खँडहर जङ्गलमें ४ मील फैले हुए हैं। रेलवे स्टेशनसे कई सौ गज दूर उत्तरसे दक्षिणको १०० फीट लम्बी संगीदालान नामक एक इमारत हीन दशामें खडी है। उसके मध्यमे काले पत्थरके ३ दरवाजे है। लोग कहते है कि दिल्लीके बादशाह जहाँगीरके पुत्र बिहारके गवर्नर सुलतान शूजाके महलका यह हिस्सा है। कचहरीसे ३ मील पश्चिम मैनातालाबके दक्षिण एक ईंटोकी इमारत और १०० गज दक्षिण मैनामसजिद है। इनके अलावे राजमहलमें बहुतेरी पुरानी मसजिदें और मुसलमानोके स्मारक चिह्न हैं। स्टेशनके पास सरकारी इमारतें बनी हुई है। गल्ला, तसर, पहाडी बांस, छोटी लकडियाँ इत्यादि वस्तु राजमहलसे दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती है।

इतिहास—प्रथम राजमहलका नाम आगमहल था। बादशाह अकबरके प्रसिद्ध जनरल राजा मानसिंहने उडीसाको जोतकर लौटनेपर सन् १५९२ ई० में आगमहलको सूबे बंगालका सदर स्थान बनाया और उसका नाम राजमहल रख दिया। सन् १६०७ में इसलामखाँने राजमहलको छोड़कर ढाकेको सूबेका सदर स्थान बनाया, किन्तु सन् १६३९ में बादशाह जहाँगीरके पुत्र सुलतान शुजाने फिर राजमहलको बगालेका सदर स्थान नियत किया। अठारहवीं सदीके आरम्भमें जब मुर्शिदकुलीखाँने मुर्शिदाबादको सूबेका सदर मुकाम बनाया, तबसे राजमहलकी घटती होने लगी। सन् १८६३ में गङ्गाजीकी प्रधान धारा राजमहलसे ३ मील दूर हो गई।

मालदह और इंगलिस बाजार।

राजमहलसे ३४ मील दूर (२५ अंश १४ विकला उत्तर अक्षां और ८८ अंश, ११ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें) महानन्दाके दहिने किनारेपर पुराने मालदहसे ४ मील दक्षिण सूबे विहारमे भागलपुर विभागके मालदह जिलेका सदर स्थान इंगलिसबाजार कसबा है, जिसको अङ्गरेजी बाजार भी कहते हैं। राजमहलके समीप आगबोट गङ्गाके आर पार चलता है आगे देहाती सड़क है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इंगलिसबाजारमें १३८१८ मनुष्य थे, अर्थात् ८०५७ हिन्दू, ५७४६ मुसलमान, ८ कृस्तान, ४ जैन और ३ एनिमिष्टिक।

कसबेको बाढ़से बचानेके लिये एक छोटा बान्ध बना है। ईष्टइंडियन पनीकी पुरानी कोठीमें जिलेकी कचहरियां और सम्पूर्ण सरकारी आफिस हैं कसबेमें गल्लेकी बडी तिजारत होती है।

इगलिसबाजारसे लगभग ४ मील दूर महानन्दा और कालिन्दीके सङ्गमके निकट पुराना मालदह, जिसको मालदा भी कहते हैं, एक छोटा कसबा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मालदहमें ४६९४ मनुष्य थे। मालदहमे बहुतेरे लोग रेशमके कीडोंको पालकर रेशमका काम करते है। वहाँ रेशमी कपडा अच्छा बुना जाता है और वहाँके आम बहुत प्रसिद्ध हैं। मालदह अठारहवीं सदीमें रूई और रेशमके कामके लिये बडा प्रख्यात था। वहाँ डच और फरासिसियोंकी कोठियाँ थीं। इंगलिसबाजारमें सन् १६५६ की नियतकी

हुई अङ्गरेजोंकी कोठी थी। मालदहसे २५ मील दक्षिण महानन्दा और खाढ़ीनदीके संगमके पास रहमपुर तिजारती कसवा है।

मालदह जिला—इस जिलेका क्षेत्र फल १८९१ वर्ग मील है। इसके पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण गङ्गा नदी वहती है। यह जिला सन् १८७६ ई० में राजशाही विभागसे भागलपुर विभागमें कर दियागया। महानन्दा नदी जिलेके मध्य होकर उत्तरसे दक्षिण वहती है। जिलेके पूर्वका आधा भाग ऊँचा है। जिलेमे महानन्दाके अतिरिक्त कालिन्दी, पूर्णभावा इत्यादि कई नदियां वहती है और वंगालकी प्रसिद्ध पुरानी राजधानी गौड और पाण्डुआकी दिलचस्प तवाहियाँ है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ८१३८५५ और सन् १८८१ में ७१०४४८ मनुष्य थे, अर्थात् ३७९१५३ हिन्दू, ३२९५२५ मुसलमान, १७३४ पहाडी संथाल जो अपने पुराने मतमें है, २६ क्रस्तान, ७ यहूदी और ३ ब्राह्म। पहाडी कोमोमेंसे ७००४४ हिन्दूमें लिखे गये थे, जिनमेसे ६०७०० कोचवाली और राजवंशी, ७५७८ वीन, ४१८२ खरवार, ८९७ कोल, ८३३ सथाल और २५९ भुंइयाँ थे। खास हिन्दुओंमें २३७५६ कैवरत, १६८७५ ग्वाला, १५७३६ तियर, १२००१ ब्राह्मग और शेपमें दूसरी जातियाँ थीं, राजपूत केवल ५१०४ थे।

इतिहास—मालदह जिलेका प्राचीन इतिहास गौड और पाण्डुआके इतिहासमें देखो! सन् १६५६ में ईष्टइंडियन कम्पनीकी कोठी मालदहमें नियत हुई। सन् १८१३ में राजशाही, दीनाजपुर और पुर्नियाँ इन ३ जिलेसे निकाल कर मालदह जिला बना।

गौड़।

इंगलिसवाजारसे ८ मील दक्षिण पश्चिम मालदह जिलेमें (२४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १० कला पूर्व देशान्तरमे) वगालकी प्राचीन राजधानी गौड अति हीन अवस्थामें विद्यमान है, जिसको लखनवती भी कहते हैं। पुरानी वस्तुओंके प्रेमियोंके लिये यह वडा हृदयग्राही है। इसके किले और महलोंमें वडा जङ्गल होगया था, किन्तु निवासीगण जङ्गलको साफ करके खेती वढ़ाते जाते हैं। शहरतलियोंके साथ गौडका क्षेत्र फल २० से ३० वर्गमील तक था। खास शहर उत्तरसे दक्षिण तक ७½ मील लम्बा और १ से २ मीलतक चौडा अर्थात् लगभग १३ वर्गमील क्षेत्रफलको छिपाता था। महानन्दा और गङ्गाके वीचमें गौडकी तवाहियाँ फैली हुई हैं। गौड़के पश्चिम भागीरथीके वर्तमान छोटे नालेमें पहले गङ्गाकी प्रधान धारा थी। अव गङ्गाको धारा चार पाँच कोस हट गई है। लगभग ६ मील लम्बी किलावंदियोंकी एक लाइन भागीरथीके पुराने नालेसे भोलाहाटके पास महानन्दाके निकट तक टेढी शकलमें फैली हुई है। किलेकी भीति खास कर ईंटोसे वनी हुई लगभग १०० फीट चौडी है। घुमावके पूर्वोत्तरभागके समीप एक फाटक है। उसके आस पास अनेक तालाव और एक मुसलमानी फकीरका स्मारकचिह्न है। उससे पूर्वोत्तर ७१ फीट ऊँचा एक पुराना मीनार खडा है। किलेकी भीतिके उत्तर आदिशूर और वल्लालसेन दो हिन्दू राजाओके महलोंकी निशानियाँ हैं और पीछे गौडकी उत्तरीय शहरतली है उसके पश्चिमी भागमें भागीरथीके निकट हिन्दुओंका वनाया हुआ उत्तरसे दक्षिण प्रायः १६००

गज लम्बा और पूर्वसे पश्चिम तक ८०० गजसे अधिक चौडा सागर दीघी नामक मीठे जलका बडा तालाव है । उसके किनारे ईंटोंसे बंधे हुए हैं । किनारोंपर मुसलमानी इमारतें हैं, जिनमें मखदुमशाह जलालका मकबरा प्रसिद्ध है । उस शहरतलीके सामने शाहदुलापुर वाजारके पास गङ्गाके पुराने बेडका एक प्रधान घाट है । उस जगह दूर दूरसे मुर्दे जलानेके लिये लाये जाते हैं । गौडमें छोटे तालाव प्रत्येक स्थानोंमे देखे जाते हैं । स्थान स्थानमें मकानोंकी नेव और पूजाके छोटे स्थानोंकी निशानियाँ देख पडती हैं । भागीरथीके किनारेपर उत्तरसे दक्षिण तक लगभग १ मील लम्बा और ६०० से ८०० गज तक चौड़ा मुसलमानो का किला फैला हुआ है । किलेकी दीवार ईटोंसे बनी हुई है । प्रत्येक कोनेके पास पाये और दक्षिणके कोनेके निकट ४० फीट ऊंची और ८ फीट मोटी ईटोंकी दीवारसे घेरा हुआ महल उजाड पडा है । महलसे थोडा उत्तर शाही कवर स्थान है जिसमें हुसेनशाह और बंगालके दूसरे स्वाधीन बादशाह दफन किये गये थे । वह स्थान निहायत उजड गया है । किलेके भीतर एक उजडी हुई मसजिद और दूसरी कदमरसूल नामक छोटी मसजिद है । किलेके पूर्वकी दीवारसे बाहर ईंटोंके एक ऊँचे टावरपर एक कमरा है, जिसपर जानेके लिये गोलाकार सीढ़ियां बनी हैं । किलेसे लगभग १½ मील उत्तर खाईसे घेरा हुआ फूलवाग नामसे प्रसिद्ध एक स्थान है । उसके दक्षिण-पूर्व 'प्यास वारी' नामक खारा जलका एक वहुत बडा तालाब है । गौड शहरकी दीवारके भीतर वहुतेरे दूसरे बडे तालाव हैं । उनमेंसे कई एकमें घड़ियाल रहते हैं । वहाँके तालावोंमें छोटी सागरदीघी उत्तम है । 'प्यास वारी' और किलेके बीचमें गौडमें सबसे बडी इमारत सुनहली मसजिद खडी है । इसकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक १८० फीट, चौडाई पूर्वसे पश्चिमतक ६० फीट और ऊँचाई कारनिसके शिरोभाग तक २० फीट है । पहले इसके ऊपर ३३ गुम्बज थे । गौड शहरके दक्षिणकी दीवारमें कोतवाली दरवाजा नामक सुन्दर बनावटका पुराना फाटक खडा है ।

इतिहास—गौडके नियत होनेका समय जान नहीं पड़ता है । ऐसा निश्चय है कि यह पूर्वकालमें हिन्दू राजाओंके आधीन वंगालकी राजधानी थी । इसी गौडसे पञ्चगौड ब्राह्मण प्रसिद्ध हुए थे । कथा ऐसी है कि गौडके राजा आदिशूरने कन्नौजके राजासे ५ वैदिक ब्राह्मण मांगे । कन्नौजमें देश देशके विद्वान् ब्राह्मण रहते थे । राजाने ५ वैदिक ब्राह्मणोंको गौडमें भेज दिया । राजा आदिशूरने अवध प्रदेशके गोंडाके ब्राह्मणोंको गौड़ की, मिथिला देशके ब्राह्मणको मैथिलकी, कन्नौजके ब्राह्मणको कान्यकुब्जकी, सरस्वतीके निकटके ब्राह्मणको सारस्वतकी, और उत्कल देशके ब्राह्मणको उत्कलकी पदवी दी । देशी लोग गौड़के उजडे पुजडे महलोंमेंसे चन्दको आदिशूर वल्लालसेन और लक्ष्मणसेनके कहते हैं । जान पडता है कि शहरका पुराना नाम लक्ष्मणवती था, जिसका अपभ्रंश लखनवती है । गौड़ नाम भी वहुत पुराना है किन्तु यह राज्यका नाम ज्ञात होता है ।

गौडका ठीक इतिहास मुसलमानोंके विजयके समय सन् १२०४ ई० से आरम्भ होता है । लगभग ३०० वर्ष तक यह मुसलमानोंके बंगालका प्रधान बैठक था । उस समयके अन्तके भागमें वहुतेरी मसजिदें और मुसलमानोंकी दूसरी इमारतें बनी थीं, जो अबतक देखनेमें आती हैं । वङ्गालके अफगान बादशाहोंने स्वाधीन बन जानेके पश्चात् गौडको छोड कर पाण्डुआको राजधानी बनाया, किन्तु पीछे पाण्डुआ छोड़ दियागया और फिर गौड़

मुसलमानोंकी राजधानी हुआ । अफगान वंशके पीछे गौडसे चन्द मील दक्षिण-पश्चिम गङ्गाके किनारेपर गवर्नमेन्टका सदर स्थान बनाया गया । सन् १५३७ में शेरशाह अफगानने गौडको लूटा । उस समयसे गौडकी घटती आरम्भ हुई । सन् १५७५ में दिल्लीके मुगल बादशाह अकबरने गौडके सबसे पिछले अफगान बादशाह दाउदखांको परास्त किया। शहर बरबाद हुआ ।

पांडुआ ।

मालदहसे ८ मील, और इंगलिसबाजारसे लगभग १२ मील (गौडसे २० मील) पूर्वोत्तर मालदह जिलेमे पाण्डुआका अदीना मसजिद है । पाण्डुआको परुआ भी कहते हैं । एक पक्की ६ मील लम्बी सडक पाण्डुआ होकर गई है । मुसलमानोंके प्रायः सम्पूर्ण स्मारक चिह्न और लगातार शहरकी निशानियाँ उसी सड़कके किनारोपर है । सिकन्दरशाहने सन् १३६० ई० में अदीना मसजिदको बनवाया । मसजिद उत्तरसे दक्षिणको लगभग ५०० फीट और पूर्वसे पश्चिमको ३०० फीट फैली हुई है । यह ऐसे ढवसे बनी है कि इसकी दीवारो और खम्भोसे १२७ मुरब्बे भाग बन गये है । प्रत्येक भागके ऊपर एक गुम्बज है, बाहरी ओर बहुतेरी छोटी खिड़कियां बनी हुई है । खास मसजिदके मध्यका गुम्बज सतहसे ६० फीट ऊँचा है । पाण्डुआकी सम्पूर्ण इमारतें पत्थरकी है । गौड़के समान पाण्डुआमें भी अब पहलेके समान जङ्गल नहीं है । वहाँके निवासी हलसे जोतकर खेत बढ़ाते जाते हैं । किलेकी निशानी भी दूरतक देखनेमें आती हैं । मखदुमशाह जलाल और उसके पोते कुतब शाहके स्मारक चिह्न बने है । वहाँ कार्तिक या अगहनमें मेला होता है और ५ दिन रहता है । मेलेमे पाँच छः हजार मनुष्य आते हैं ।

इतिहास—पाण्डुआ आरंभमें गौडके बाहरीका एक पड़ाव था । पीछे दिहाती लोगोंके रहनेका प्रिय स्थान हुआ । बंगालके अफगान बादशाहने स्वाधीन होजानेके पश्चात् सन् १३५३ ई० में गौड़को छोड़कर पाण्डुआको राजधानी बनाया । जान पड़ता है कि तिजारती और कारीगर लोगोंने गौड़को नहीं छोडा, केवल सरकारी कचहरियां पाण्डुआमें बनाई गई । पीछे पाण्डुआको तोडकर फिर गौड राजधानी बना । किन्तु कुछ दिनों तक पाण्डुआ बादशाहोंका दिहाती महल था । पाण्डुआमें सुनहली मसजिद, १० गुम्बजवाली लक्खीमसजिद, अदीना मसजिद, जो इस देशमें सबसे अधिक प्रसिद्ध इमारत है और बादशाहोंका महल प्रधान इमारतें हैं ।

मुर्शिदाबाद ।

तीनपहाड़ जक्शनसे ५० मील (साहबगञ्जसे ७४ मील) दक्षिण मुर्शिदाबाद जिलेके नलहाटीमें रेलवे जंक्शन है । लोग कहते है कि राजानलके नामसे इसका नाम नलहाटी है। नलहाटी बस्तीसे कई एकसौ गज दूर पहाडीके नीचे पत्थरपर सीताजीका चरणचिह्न और १ मील दूर पार्वतीजीका बडा मन्दिर है ।

नलहाटीसे पूर्व २७ मीलकी रेलवे शाखा भागीरथी गङ्गाके दहिने किनारेपर अजीमगञ्जको गई है । अजीमगञ्ज मुर्शिदाबाद जिलेमें एक बस्ती है, जिसमें कई एक धनी सौदागर

रहते है और कई एक सुन्दर जैन मन्दिर वने हुए हैं। वाजार होकर एक पक्की सडक गई है। अजीमगञ्ज और मुर्शिदावादके वीचमे नाव चलती है।

अजीमगञ्जके सामने उसपार अर्थात् भागीरथीके वायें किनारेपर (२४ अंश, ११ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १८ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमें) सूबे वङ्गालके नदिया विभागमें मुर्शिदावाद जिलेमे प्रधान कसवा मुर्शिदावाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुर्शिदावादमे ३५५७६ मनुष्य थे, अर्थात् १८०४६ पुरुष और १७५३० स्त्रियाँ। इनमे २०७८९ हिन्दू, १२६१५ मुसलमान, २१३२ जैन और ४० कृस्तान थे।

मुर्शिदावाद एक समय वहुत वडा शहर था। यद्यपि इसकी मनुष्य-सख्या घट रही है किन्तु अवतक इसमें बहुतेरे धनी जैन सौदागर विद्यमान हैं और चन्द वस्तु देखने योग्य है, दूरतक ईटोंके वहुतेरे मकान वने हुए है मकानोके पास वाँसका झाड और वृक्ष लगे हुए है और कई महल्लोंमे सुन्दर देवमन्दिर वने हुए है।

निजामत किलेसे अलग मुबारक मञ्जिलके निकट मनीवेगमकी वनवाई हुई मसजिद किलेके वाहर वरहमपुर जानेवाली सड़कके पास घोडेगाडीके मकान और घोड़े और हाथियोका वडा अस्तवल, और सामने कुछ दूर पर निजामत कालिज जो नव्वावके रिस्तेदारोंकी शिक्षाके लिये ७८००० रुपयेके खर्चसे वना है, देखनेमें आते है। कसवेके वाहर दक्षिण-पूर्व ओर मोती झीलके पूर्वोत्तरके कटरेमें मक्केकी वडी मसजिदके ढाँचेकी वनी हुई नव्वाव मुर्शिद-कुलीखाँका मकवरा है। इसके ७० फीट ऊँचे दो मीनार हीन दशामे खडे है। इस अभि-प्रायसे सीढोके नीचे नव्वावकी कवर वनी है कि सव लोगोंके पाँव उसपर पडेगे। उसके पडोसमें तोपखाना था। सडकसे ६० गज दूर १७ फीट लम्वी, जिसकी नल ६ इञ्च चौडी है, एक वडी तोप पडी है उसपर सन् १६३७ का पारसी लेख है।

कसवेसे २ मील दक्षिण एक मनोरम स्थानमें मोतीझील है। झीलमे वहुतेरे घडियाल रहते हैं। पहले झीलके वगलोंमें शिराजुद्दौलाका वनवाया हुआ उत्तम महल था, उसकी चन्द मेहरावियाँ अवतक देखनेमें आती हैं।

भागीरथीके दहिने किनारेपर मोतीझीलके सामने मुर्शिदावादके नव्वावोका खुसवाग नामक पुराना कवरगाह है, वहाँ वहुतेरे मकवरोंके अतिरिक्त एक मसजिद और अन्य दो इमारते हैं। एक मकवरेमे सिराजुद्दौला और उसकी स्त्री की कवर है।

मुर्शिदावादमें धनी जैन सौदागर वहुत हैं। वहुत लोग रेशमके कीडे पालते है और कोएको कातनेवालोके पास भेजते है। रेशमी कपडा और रुमाल वहुत तैयार होते है। सो[illegible] चाँदीके कारचोवी और हाथीदाँतका उत्तम काम वनता है।

कासिमवाजारमें एक वङ्गाली राजाका सुन्दर महल वना है। राजवाडीके पास देवमन्दिरके चारों वगलोके मकानोंमें अनेक देवमूर्त्तियाँ स्थापित है। और वहाँ सदावर्त लगा हुआ है।

नव्वावका महल—मुर्शिदावादमें दिलचस्पीकी प्रधान वस्तु नव्वावका महल है। वह भागीरथीके किनारेपर वहुत वडी इमारत इटेलियन ढाँचेका वना हुआ है, जो सन् १८३७ ई० में लगभग १७००००० रुपयेके खर्चसे १० वर्षमें तैयार हुआ था। वह महल ४१५

फीट लम्बा, २०० फीट चौड़ा और ८० फीट ऊँचा है। अग्रभाग उत्तर है मार्बुलका चमकीला फर्श बना है। जेवनारका मकान २९० फीट लम्बा, जिसमें आइने जडे हुए बहुतेरे दरवाजे हैं, बना हुआ है। इमारतके मध्यमें गुम्वजके नीचे १५० शाखाओका एक बडा झाड लटका है और फर्श पर हाथीदाँतका मनोहर तख्त है। दीवारमें नव्वाब और उनके वंशके बहुतेरे लोगोंकी तस्वीरे टँगी हुई हैं। प्रधान दर्वाजेके दहिने जनाना किता है।

हातेके भीतर उत्तरके प्रधान फाटकके सामने सन् १२६४ हिजरी (सन् १८४७ ई०) का बना हुआ एक सुन्दर इमामबाडा खडा है।

खास महलको लोग आइनामहल कहते है। एकही घेरेके भीतर नव्वाबका महल, इमामबाडा और दूसरी इमारते है। सब मिलाकर निजामत किला कहलाता है।

मुर्शिदाबाद जिला—जिलेके उत्तरसे दक्षिण-पूर्वके कोनतक सीमापर गंगाकी प्रधान धारा पदमा जो इस जिलेको मालदह और राजशाही जिलेसे अलग करती है, दक्षिण वीरभूमि जिला और पश्चिम संथाल परगना जिला है। जिलेका प्रधान कसबा मुर्शिदाबाद और सदर स्थान बरहमपुर है। गङ्गाकी दूसरी धारा भागीरथी जिलेके मध्य होकर बहती है। भागीरथीके दाहिने अर्थात् पश्चिमका देश सरद और अंकड़ीला है और उपजाऊ नहीं है, किन्तु पूर्वका देश जो पदमा, भागीरथी और जलांगी नदियोंसे घेरा हुआ है, बंगालके सबसे अधिक उपजाऊ देशोंमेंसे एक है। गङ्गाके बायेंके हिस्सेमें भगवान्‌गोला और धुलियान प्रधान बाजार और बायें किनारे पर जगीपुर, जियागंज, मुर्शिदाबाद, कासीमबाजार और बरहमपुर प्रधान स्थान है। इस जिलेके मालिमापुरमे प्रसिद्ध जगतसेठका घर है। वह सरकारसे कुछ पेंशन पाकर अब उसीसे गुजारा करते है। कई छोटी धारा गङ्गाकी धारासे निकली है और कई एक भागीरथीमें गिरती है। जंगलोसे मधुमक्खियोका मोम और लाही बनाई जाती है। जगली जात संथाल और धांगड, जूट और बूटीके वृक्षोंपर लाहके कीड़ेको पालते है। गाँव वाले अपने घरपर रेशमके कीडेको पालते है और कोवेको कातने वालोंके पास भेजते हैं। सालमें लाखों रूपयेके रेशमी कपडे तैयार होते है। जल वायु अच्छा नहीं है। जिलेमें नीलकी कई बडी कोठी हैं। मुर्शिदाबादके कासिम बाजारसे २५ मील दक्षिण सन् १७५७ की लडाईका प्रसिद्ध मैदान पलासी है।

सन् १८८१ में जिलेका क्षेत्रफल २१४४ वर्ग मील और मनुष्यसंख्या १२२६७९० थी, अर्थात् ६३४७९६ हिन्दू, ५८९९५७ मुसलमान, ८७७ आदि निवासी, ६७५ जैन्न, ४७० क्रस्तान, १४ ब्राह्म, और १ बौद्ध। जातियोंके खानेमें १००३५५ कैवर्त, ३६९२७ सदगोप, ३५४११ ग्वाला, ३३९३५ ब्राह्मण, ३०५६८ बागडी, २२५५० चमार, शेपमें तान्ती, चण्डाल, कोच, कायस्थ, वनियाँ, नापित, सूडी, काल्ह, हाडी, डोम, मदक इत्यादि थे। राजपूत केवल ८९५५ थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेके कसबे मुर्शिदाबादमें ३५५७६, बरहमपुरमें २३५१५,यमखण्डीमें ११३२१ और जंगीपुरमें १०००० से कुछ कम मनुष्य थे।

इतिहास—बंगालके बडे नव्वाब मुर्शिदकुलीखाँने सन् १७०४ ई० मे ढाकाको छोड़कर मकसुदाबादको सूबेका सदर स्थान बनाया और मकसुदाबादका नाम बदलकर अपने नामके अनुसार मुर्शिदाबाद रक्खा। उस समय वह गङ्गाकी सौदागरीका बन्दरगाह था,

वहाँ उसने एक महल बनवाया । मुर्शिदकुलीखाँने इकबालके साथ तमाम मुल्क बंगालेपर २१ वर्ष राज्य किया और अपने दामाद और पोतेको अपना राज्य छोडकर मरा; परन्तु सन् १७४० मे अलीवर्दीखां हकदार वारिसोको निकालकर खुद नव्वाव वन बैठा ।

अलीवर्दीखां सन् १७५६ में मर गया और उसकी जगह उसका पोता सिराजुद्दौला, जव उसकी उमर १८ वर्षकी थी, गद्दीपर बैठा । वह दोही महीनेके अन्दर अङ्गरेजोसे विगड़कर एक भारी फौजके साथ कलकत्तेपर चढ़ गया । बहुतसे अङ्गरेज नदीकी राहसे समुद्रकी तरफ उतर गये और बाकीको उसने पकड़ लिया और काली कोठरी नामक किलेके जेलखानेमें रात होनेपर बन्द करवा दिया । कोठरी बहुत तंग थी, इस लिये जब दूसरे दिन सुवहको दरवाजा खोला गया तो १४६ आदमियोमेसे २३ आदमी जीते निकले । जितनी फौज जमा होसकी उसको लेकर अङ्गरेजी अफसर क्लैव और वाटसनने मन्दरासमे आकर कुछ ऐसाही सामना करनेके पश्चात् कलकत्तेपर फिर अपना अधिकार करलिया ।

क्लैबने अलीवर्दीखाँके दामाद मीरजाफरको सूबे बंगालकी गद्दीके दावाके लिये तय्यार किया और आप १००० गोरे २००० तिलंगे और ८ तोपें लेकर पलासीकी, जो मुर्शिदाबादसे लगभग २५ मील दक्षिण है राहली । सिराजुद्दौला ३५००० पैदल, १५००० सवार और ५० तोपें लेकर सामना करनेको निकला । सन् १७५७ की तारीख २३ जूनको जब नव्वावकी फौजने बे फिकरीसे खाने पकानेमें लगी थी, क्लैवने दुश्मनके एक आगेके मोर्चेपर हमला किया । उस समय जब नव्वावके बहुतसे अफसर मारे गये तब मीरजाफरने, जो अङ्गरेजोंसे मिला था, सिराजुद्दौलाको यही सलाह दी कि आज फौज पीछे हटालीजिये कल लडेंगे । उसी समय नव्वाव सिराजुद्दौलाकी तमाम फौज छितर वितर होगई, वह घबड़ाकर एक साँडिनी पर सवार हो भागा किन्तु राजमहलके पाससे पकडकर मुर्शिदाबादमें लाया गया । मीरजाफरके लड़का मीरनने उसको कतल करवा डाला ।

अङ्गरेजोने मीरजाफरको मुर्शिदाबादमें नायबकी गद्दी पर बैठाया परन्तु सन् १७६१ में उन्होने मीरजाफरको गद्दीसे उतारकर उसकी जगह उसके दामाद मीरकासिमको नव्वाब बनाया ।

मीरकासिमको नव्वाब हुए बहुत अरसा न हुआ था कि उसने अङ्गरेजोकी हुकूमतसे छूटजानेका मनसूबा बाँधा । इस नियतसे उसने सन् १७६३ मे अपने रहनेकी जगह मुङ्गेरमें मुकर्रर की और अवधके नव्वाब शुजाउद्दौलाको मिलाकर अङ्गरेजोंके साथ लडनेका इरादा किया । झगडा बहुत बढ़गया, तमामसूबेमें फसाद फैल गया, अङ्गरेजोंके २००० हिन्दुस्तानी सिपाही पटनेमें टुकडे करडाले गये और २०० अङ्गरेज जो वहाँ और सूबेकी दूसरी जगहोंमें मुसलमानोंके हाथ पड़े काट डाले गये । घेरिया और उधानालाकी २ बड़ी लडाइयोंमें मीरकासिमकी फौजने शिकस्त खाई, वह भागकर अवधके नव्वाबके पास चला गया ।

मीरकासिमकी जगहपर मीरजाफर फिर नव्वाब बनाया गया । सन् १७६५ में मीरजाफरके मरनेपर उसके भाई नजमुद्दौलाको अङ्गरेजोने गद्दीपर बैठाया, जो ५०००००० रुपया सालाना पेंशन पाता था । सन् १७६६ में नजमुद्दौला मरगया और उसका भाई सैफुद्दौला उसकी जगह बैठा । सन् १७७० मे सैफुद्दौलाके मरनेपर उसका भाई मुबारकुद्दौला

बंगालका सूबेदार हुआ। वह नाबालिग था, कम्पनीने उसके लिये केवल १६ लाख रुपया सालाना कबूल किया। सन् १७७२ में अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने दीवानी और फौजदारी कचहरियोंको मुर्शिदाबादसे उठाकर कलकत्तेमें नियत किया। सन् १७९९ में टकशाल मुर्शिदाबादसे उठा दिया गया। लगभग उसी समय जिलेका सदर स्थान वरहमपुर हुआ, जहाँ पहलेहीसे छावनी थी। मुर्शिदाबादके नव्वाब सन् १८८२ ई० तक १६००००० रुपया सालाना पेंशन पाते थे; किन्तु अब पेंशन घटा दी गई है।

वरहमपुर।

मुर्शिदाबाद कसबेसे ५ मील दक्षिण भागीरथीके बायें किनारे पर मुर्शिदाबाद जिलेका सदर स्थान वरहमपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वरहमपुरमे २३५१५ मनुष्य थे, अर्थात् १८७७९ हिन्दू ४२०२ मुसलमान, २८५ एनिमिष्टिक, २३६ कृस्तान और १३ जैन।

वरहमपुरमें कई एक गिरजा, कबरगाह, कालिज और बारकसे लगभग १ मील दक्षिण पश्चिम जिलेकी कचहरियाँ खजाना जेलखाना और पागलखाना है।

इतिहास—मुर्शिदाबादके नव्वाब शिराजुद्दौलाने कासिमबाजारकी अङ्गरेजी कोठीको तोड दिया था, इस लिये सन् १७५७ की पलासीकी लडाईके थोड़े ही पीछे फौजी बारकके लिये वरहमपुर चुना गया। सन् १७६५ में ३०२२७०० रुपयेके खर्चसे बारक तैयार हुआ।

सन् १८५७ के बलवेके समय ता० २५ फरवरीको पहले पहल १९ वीं रेजीमेण्टके सिपाहियोंने इसी जगह गोली बारूद लेनेसे इनकार किया था। उस समय वे बारकपुर भेजे गये और वहाँ उनसे अफसरोंने सम्पूर्ण हथियार छीन लिया। सन् १८७० में वरहमपुरसे फौज उठा दी गई।

सातवां अध्याय।

(सूबे बिहारमें) पुर्निया, (सूबे बंगालमें) दीनाजपुर, पार्वतीपुर, जंक्शन, जलपाई गोड़ी, दार्जिलिंग, (देशीराज्य) शिकम और (स्वतंत्र राज्य) भूटान।

पुर्निया।

साहबगञ्जसे उसपार गंगाके पास मनिहारीघाटपर इष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवेका स्टेशन है। साहबगञ्जसे वहाँ तक आगबोट चलता है। मनिहारी घाटसे उत्तर २३ मील कटिहार जंक्शन और ४० मील पुर्नियाका रेलवे स्टेशन है।

सूबे बिहारके भागलपुर विभागमें संवरा नदीके पूर्व किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसबा पुर्निया है। सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय इसमें

१४५५५ मनुष्य थे, अर्थात् ९५७६ हिन्दू, ४७५७ मुसलमान, १३३ कृस्तान, ८४ जैन, ४ यहूदी और १ दूसरे।

पुर्नियामे जिलेकी कचहरियां दीवानी और फौजदारी एक दूसरीसे अलग हैं। उनके अलावे वहाँ जेलखाना, अस्पताल और कई स्कूल हैं और मामूली सौदागरी होती है तथा कई धनी महाजनोंके अच्छे मकान वने हैं। वहाँका जल वायु अच्छा नहीं है। वहॉ वहुत वोखार हुआ करता है। किसी किसी वर्पमें तो सैकड़े पीछे ९० आदमी वोखारसे वीमार हो जात हैं, किन्तु उनमेंसे वहुत कम आदमी मरते है।

पुर्निया जिला–जिलेका क्षेत्रफल ४९५६ वर्गमील है। यह भागलपुर विभागके पूर्वोत्तरका जिला है इसके उत्तर नैपालका राज्य और दार्जिलिङ्ग जिला, पूर्व जलपाई गोड़ी, दीनाजपुर और मालदह जिले, दक्षिण गङ्गा नदी, वाद भागलपुर और संथाल परगना जिला और पश्चिम भागलपुर जिला है। जिलेके आधे पश्चिमी भागमे मवेसी और भेड़के झुंडोके चारागाह हैं और पूर्वी हिस्सेकी अपेक्षा उस भागमें वस्ती वहुत कम है। जिलेकी सम्पूर्ण नदियां गङ्गामें गिरती हैं। कोसी नदी नैपाल राज्यसे ३ धाराओसे निकली है। और अङ्गरेजी सीमामें पहुँचनेपर उसकी चौडाई लगभग १ मील हो गई है। उसकी धार वडी तेज है। प्रति वर्ष उसका स्थान वदलता है। कालीकोसी दक्षिण और साहवगञ्जके सामने गङ्गामे गिरती है। महानन्दा नदी शिकमके पहाड़ोंसे निकलकर जिलेके दक्षिण-पूर्व इस जिलेमें प्रवेश करके जिलेकी पूर्वी सीमापर ८ मील तक वहती है। वहाँसे, वह पहले पश्चिमको, उसके वाद दक्षिणको और अन्तमें पूर्वको वहती हुई मालदह जिलेमे जाकर गङ्गामें मिल गई है। महानन्दाके किनारेपर कलियागञ्ज, हल्दीवाड़ी, खड़खड़ी, किशनगञ्ज, दुलारगञ्ज और वरसूई तिजारती गाँव हैं। जिलेमें कोसीके किनारोंपर और वालूदार टापुओमें तथा उत्तरी सीमाके जङ्गलमें वाघ रहते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १९४०९९५ और सन् १८८१ मे १८४८६८७ मनुष्य थे, अर्थात् १०७६५३९ हिन्दू, ७७११३० मुसलमान, ६७९ कोल, ३२७ कृस्तान और १२ यहूदी। जातियोके खानेमे १३१६२९ ग्वाला, ७१८३३ कोच, ४८४६५ राजपूत, ४४२२१ कैवर्त, ३८१३१ तेली, ३५५८४ धानुक, ३४८२२ ब्राह्मण, ३१२९० वनियां, ३१२०९ मुसहर, १२७६१ कायस्थ और शेपमे दूसरी जातियाँ थी। जिलेके कसवे पुर्नियामें १५०१६, वसगाँवमें ६१९८, सीतलपुरमे ६००२, किसनगञ्जमें ६०००, रानीगञ्जमें ५९७८, भटवागमें ५७२३ और कसवामे ५१२४ मनुष्य थे। किसनगञ्ज और खगड़ामें मुसलमान राजा ह।

इतिहास—१३ वीं सदीमें पुर्निया जिला मुसलमानोंके आधीन हुआ। लोग कहते हैं कि उससे पहले जिलेका दक्षिणी भाग वगालके अतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेनके राज्यका एक भाग था। १७ वीं सदीमें नवाव उस्तवालखां पुर्नियाका फौजदार था। अवदुल्लाखां उसका उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७२२ में वभनारखांके मरनेपर सयफखां पुर्नियाका सूवेदार हुआ। सन् १७५६ में वंगालके नवाव अलीवर्दीखांके दामाद सैयद अहमदखांके मरनेपर सवक्तजंग उत्तराधिकारी हुआ। नवावगञ्जके निकटकी लड़ाईमें सवक्तजङ्ग मारा गया। सन् १७७० में एक अङ्गरेजी अफसर सुपरिंटेंडेंट नियत हुआ। कालीकोसीके स्थान

छोडनेके कारण क्रम क्रमसे सन् १८२० ई० में पुर्निया कसबा रोगवर्द्धक स्थान हो गया। इधर उसकी जन-संख्या वहुत घट गइ है। लगभग सन् १८३५ में सरकारी आफिस २ मील पश्चिम ऊँची भूमिपर हटा दिये गये।

दीनाजपुर।

मनिहारीघाटसे उत्तर २३ मील कठिहर जंक्शन और कठिहरसे पूर्व २४ मील वरसुई बाजार, ३७ मील दीनाजपुर जिलेमें एक सबडिवीजन रायगंज और ७० मील दीनाजपुरका रेलवे स्टेशन है। सूवे वंगालके राजशाही विभागमें (२५ अंश, ३८ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ४० कला, ४६ विकला पूर्व देशान्तरमे) पूर्णभाभा नदीके पूर्व किनारेपर जिलेका सदर स्थान दीनाजपुर एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दीनाजपुर कसवेमें १२२०४ मनुष्य थे, अर्थात् ६६६६ हिन्दू, ५३७३ मुसलमान, ८६ कृस्तान, ७८ जैन और १ बौद्ध।

दीनाजपुरमें सिविल कचहरियाँ, अस्पताल, पुलिसस्टेशन स्कूल और एक राजा है। राजवाड़ीमें कलियाजीका सुन्दर मन्दिर बना हुआ ह।

दीनाजपुर कसवेसे १८ या २० मील उत्तर जंगलमें कन्तजीका विशाल मंदिर स्थित है। मन्दिरके शिरोभागपर ९ शिखर वने हैं और नीचेसे ऊपर तक अनेक भांतिकी सैकड़ों मूर्त्तियाँ वनी हुई है। वहाँ कन्तजीके भोगरागका बड़ा प्रबन्ध रहता है। महापुआ प्रसाद मिलता है। कंगलियोंको कच्ची रसोई खिलाई जाती है। कन्तजीके मन्दिरसे लगभग २० मील पश्चिम जगलमे गोविन्दजीका एक बड़ा मन्दिर है।

दीनाजपुर जिला—यह राजशाही विभागके पश्चिमका जिला ह, जो वंगालके दूसरे जिलोंके साथ सन् १७६५ ई० मे अंगरेजी अधिकारमें आया। जिलेका क्षेत्रफल ४११८ वर्गमील है। इसके पूर्व करतोया नदी और पश्चिम महानन्दा नदी है। महानन्दा नदी जिलेकी पश्चिमी सीमापर लगभग ३० मील वहती है। छोटी नदियाँ अनेक हैं। जंगली पैदावार मधुमक्खियोंका मोम और सिंगहाड़ेका फूल, जिससे कपड़े रंगे जाते हैं, इत्यादि और जगली जानवरोंमें वाघ, तेंदुआ, भैंसे, सूअर, वारसींगा हरिन और कई प्रकारकी विल्लियाँ है। वाघ सघन वनोंमें और तेन्दुये सर्वत्र मिलते हैं।

इस जिलेमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १९४०६५५ और सन् १८८१ में १५१४३४६ मनुष्य थे, अर्थात ७९५८२४ मुसलमान, ७१६६३० हिन्दू, १४३५ पहाड़ी सन्थाल और ४५७ कृस्तान। जातियोंके खानेमे ४०७९२३ राजवंशी, पाली और कोच तीनों मिलकर, ३७७८५ कैवर्त, ३१९३४ हाड़ी, २११४९ वनियाँ, १३५६० जलुआ, १२७३५ नाई, ८९१३ ब्राह्मण, ६८३४ भूमिज, ६८१३ सन्थाल, ६०२४ कायस्थ, २८८५ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियाँ थीं।

पार्वतीपुर जंक्शन।

दीनाजपुरसे १९ मील पूर्व पार्वतीपुर जंक्शन है। पार्वतीपुरसे ईष्टर्न वगाल स्टेट रेलवेकी लाइन ४ ओर गई है। तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २½ पाई लगता है। शिलीगोड़ीसे पश्चिमोत्तर दार्जिलिङ्ग तक ५१ मील तक दार्जिलिङ्ग हिमालय रेलवे है, जिसका महसूल प्रतिमील सवाआना है।

(१) पार्वतीपुरसे उत्तर कुछ पश्चिम;
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन—
६१ जलपाईगोड़ी।
८४ सिलीगोड़ी।
१३५ दार्जिलिङ्ग।

(२) पार्वतीपुरसे पूर्व कुछ उत्तर;
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन।
२२ रंगपुर।
३३ कौनिया।
३९ तिष्टा जंक्शन।
५३ मगलहाट जंक्शन।

तिष्टा जंक्शनसे २६ मील पूर्व कुछ उत्तर यात्रापुर।

मगलहाट जंक्शनसे उत्तर कुछ पश्चिम ३८ मील कूचविहार कसबेके पास तोरसा।

(३) पार्वतीपुरसे दक्षिण,—
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन—
४९ नव्वाबगञ्ज।
८८ नाटउर।
११२ सांराघाट (पद्माके वायें)
१३४ दामुक दिया घाट। (पद्माके दहिने)
१४१ पोड़ादह जंक्शन।
१८६ वगुला।
१९८ रानाघाट जंक्शन।
२२० नईहाटी जंक्शन।
२३० वारकपुर।
२३४ सोदपुर।
२३७ वेलघरिया।
२३९ दमदम जंक्शन।
२४४ सियालदह (कलकत्ता)।

पोड़ादह जंक्शनसे पूर्व ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया और ४८ मील ग्वालण्डो।

ग्वालण्डोसे ब्रह्मपुत्र नदीके आगबोटके मार्गसे ७९ मील पूर्व दक्षिण चान्दपुर, और चान्दपुरसे २५ मील उत्तर नारायणगञ्ज।

चाँदपुरसे आसाम वङ्गाल रेलवेपर ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्सससे दक्षिण पूर्व २५ मील फेनी, ५७ मील सीताकुण्ड, ६१ मील वलवाकुंड और ८१ मील चटगाँव और लक्समसे उत्तर ७ मील लालमाई, १५ मील कुमिला और ४५ मील अखउरा।

नारायणगञ्जसे उत्तर १० मील ढाका और ८५ मील मैमनसिंह।

रानाघाट जक्शनसे ३१ मील पूर्व वनगाँव जंक्शन, वनगाँवसे २६ मील पूर्वोत्तर जशर और जशरसे ३५ मील दक्षिण-पूर्व खुलना और वनगाँवसे पश्चिम-दक्षिण २६ मील वारासत, ३४ मील दमदम छावनी और ३६ मील दमदम जंक्शन।

नइहाटी जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन।

दमदम जंक्शनसे पूर्वोत्तर २ मील दमदम छावनी, १० मील वारासत और ३६ मील वनगाँव जक्शन।

(४) पार्वतीपुर जंक्शनसे पश्चिम,
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
१९ दीनाजपुर।
५२ रायगञ्ज।
६५ वरसुई जंक्शन।
८९ कठिहर जंक्शन।

वरसुई जक्शनसे ३५ मील उत्तर किसनगञ्ज।

कठिहर जंक्शनसे उत्तर १७ मील पुर्निया और दक्षिण १६ मील मनिहारी और २३ मील मनिहारीघाट।

जलपाईगोड़ी।

पार्वतीपुरसे ६१ मील उत्तर जलपाईगोडीका रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगालके राजशाही विभागमें तिष्टानदीके पश्चिम किनारेपर जिलेका सदर स्थान जलपाईगोड़ी एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जलपाईगोडीमें ७९३६ मनुष्य थे अर्थात् ४२४५ हिन्दू, ३६४७ मुसलमान और ४४ दूसरे।

वहाँ पहले फौजी छावनी थी। सन् १८६९ ई० में वह जिलेका सदर स्थान नियत हुआ। उस समयसे वह प्रसिद्ध हुआ और उसकी मनुष्य संख्या बढ़ने लगी। उत्तरी बंगाल स्टेट रेलवेके खुलनेसे उसकी और भी उन्नति हुई है। वहाँ सिविल कचहरियां और सरकारी आफिसें बने हुए हैं।

जलपाईगोड़ी जिला—यह राजशाही विभागके पूर्वोत्तरका जिला २८८४ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैला है। इसके उत्तर भूटान और दक्षिण कूचविहारका राज्य और रङ्गपुर जिला है।

मैदानोंमें जगह जगह बाँस, ताड़ और फलदार वृक्षोंके बाग, जिनमें छोटी २ बस्तियां हैं, देखनेमें आते हैं। जिलेके उत्तरीय भागमें पहाडी देश है। जिलेमें महानन्दा, करतोया, तिष्टा, जलधाका इत्यादि नदियाँ बहती हैं। पश्चिमी द्वार नामक सबडिवीजनमें ४०० वर्ग मीलसे अधिक बचाया हुआ जङ्गल और जलपाई गोडी सबडिबीजनमें केवल वैकुण्डपुर नामक जङ्गल है। पश्चिमीद्वारके चरागाहोंमें चरनेके लिये बंगालसे बहुतसी मवेशियाँ आती हैं। इस जिलेमें पहाडियोंके निकट जङ्गली हाथी और बनैली मवेशियाँ और जंगलोमे बाघ, तेंदुयें, भालू, गेंड़, भैंसे इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं।

जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५८१५६२ मनुष्य थे, अर्थात् २६७८९१ हिन्दू, २०८५१३ मुसलमान, ४५०७ आदिनिवासी अर्थात् जङ्गली, ४८६ बौद्ध, ४५९ कृस्तान और ६ जैन। खास हिन्दुओंमे ३५८९६ तियर, २४५२७ बागड़ी, ५८३८ कैवर्त, ५४५३ तातियाँ, ३९०९ ब्राह्मण, ३७८२ कायस्थ, २६७२ बनियाँ, १२६९ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियाँ थीं।

दार्जिलिङ्ग।

जलपाईगोडीसे २३ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ८४ मील) उत्तर सिलीगोड़ीका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे ५१ मील पश्चिमोत्तर दार्जिलिंग तक दार्जिलिंग हिमालय रेलवेकी छोटी लाइन गई है यह लाइन केवल २ फीट चौडी है, गाड़ी भी बहुत छोटी छोटी हैं। ५१ मील जानेमें ८ घण्टा समय लग जाता है।

सिलीगोडीसे ७ मील सुकना स्टेशनके पास गाडीकी चढ़ाई आरम्भ होती है। लाइनकी घुमाव बहुत टेढ़ी है। पहाडके बगल ऊँचे दरख्तों और जङ्गलोंसे छिपे हुए हैं। १५ मीलके पास पर्वतके एक छोटे शृङ्गके चारों तरफ गाड़ी घूमती है और १००० फीट ऊँचे खड़े पहाडके किनारे पर लाइन निकली है। ३० मील पर कुरासियङ्गके पास, जो समुद्रके सतहसे ५००० फीट ऊपर है, चायका बाग और ५१ मील पर दार्जिलिंगका स्टेशन है।

दार्जिलिंग (२७ अंश, २ कला, ४८ विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १८ कला,

३६ विकला, पूर्व देशान्तरमें) सूबे बङ्गालके राजशाही विभागमे जिलेका सदर स्थान एक प्रसिद्ध जगह है। यह वड़ी रनजीत नदीकी घाटीके ऊपर १००० फीट ऊँचे एक सिलसिले पर बसा है। पहाड़ीकी वगलमें विले और वॅगले छितराये हुए हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दार्जिलिंगमें १४१४५ मनुष्य थे, अर्थात् ८५८६ हिन्दू, ३६५७ वौद्ध, १२९८ मुसलमान, ५२४ कृस्तान, ५२ सिक्ख, और ३८ जैन। अपरैलके पहिले यह मनुष्य-गणना हुई थी। अपरैलसे अकटूवर तक दार्जिलिंगकी मनुष्य-संख्या वहुत वढ़ जाती है।

एक स्थानपर वाजा वजनेकी जगह और पानी पीनेका एक हौज वना है। पुराना सेक्रेटरियट एक चौड़े प्लेट (समतल भूमि) पर है। सेक्रेटरियटसे ऊपर सेण्टएंड्रूका चर्च है, जिसकी नेवका पत्थर सन् १८७० ई० में रक्खा गया। पुराना चर्च सन् १८४३ में वना। कसवेसे १ मील दूर एक पहाड़ी पर १५० सैनिकोंके रहने योग्य वारक् वना है।

चर्चसे करीव ½ मील वाद बङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरकी वडी कोठी है। वह यहाँ गर्मीकी ऋतुओंमें समय समय पर रहते हैं।

कसवेके मध्यमे प्रधान बाजार देखने लायक है। एतवारके दिन उसमें इतनी भीड़ होती है कि उससे होकर निकलना मुशकिल होता है। वहाँ वहुत लेपचा, लिम्बू, भुटिया; तिव्वती, नैपाली, पहाडी, हिन्दुस्तानी, कावुली, काश्मीरी और पारसी देख पड़ते हैं। सेंचल शृङ्गके झरनोंसे नलद्वारा दार्जिलिंगमें पानी जाता है।

दार्जिलिंगसे १ मील दूर एक सुन्दर भुटिया वस्ती है, जिसमें तिव्वतन ढाचेका एक दिलचस्प वौद्ध मन्दिर बना हुआ है।

दार्जिलिंगसे दुनियाँकी सवसे ऊँची पहाडी चोटियाँ देखी जा सकती है। इनमें सबसे ऊँची माउण्ट एवरेस्ट समुद्रके जलसे २९००२ फीट ऊँची है। यद्यपि उसका फासिला कमसे कम १२० मील है, किन्तु वह व्याघ्रपहाड़ीसे, जो दार्जिलिंगसे ६ मील है, या जेला पहाड़ फौजी छावनीसे देख पड़ती है। दूसरी चोटियाँ जो दार्जिलिंग या जेला पहाड़से देख पड़ती हैं ये हैं,—

चोटियोंके नाम	ऊँचाई फीट।
किञ्चि जङ्गा	२८१५६
जानू	२५३०४
कब्रू	२४०१५
चुमालरी	२३९४३
पौहन्द्री	२३१८६
डोकिया	२३१७६
वौडिम्	२२०१७
नरसिंह	१९१४६
व्लाएक राक (काला चट्टान)	१७५७२
चोमुङ्को	१७३२५

इनमेसे किञ्चिजङ्गा ४५ मील, चुमालरी ८४ मील, डोंकिया ७३ मील और नरसिह चोटी ३२ मील दूर पर है।

दार्जिलिंगसे १० मील पर रङ्गमो नदीके साथ रनजीत नदीका सङ्गम है। रनजीतकी धारा घने जङ्गल होकर दौडती है। रङ्गमो नदी सन्मुख और ऊपरसे आई है, जिसपर वेतके पुल बने है। उससे नीचे रनजीत नदीका तिष्टा नदीके साथ सङ्गम है। तिष्टा अधिक गहरी, चौडी और तेज है। उसके किनारे किनारे सिलीगोडी जानेकी राह है।

दार्जिलिङ्ग जिला—यह राजशाही विभागके उत्तरका जिला १२२४ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैला है। इसके उत्तर नदियोके सिलसिले, वाद शिकमका राज्य, पश्चिम ऊँची पहाडियोंका सिलसिला, जो नेपाल राज्यसे इसको जुदा करता है, पूर्व और दक्षिण जलपाईगोडी और पुर्निया जिला है।

समुद्रके जलसे इस जिलेके मैदानकी ऊँचाई केवल ३०० फीट और मैदानकी पहाडियोकी ऊँचाई ६००० फीटसे १०००० फीट तक है पहाड़ियोंकी चोटियोंपर सघन जंगलोंके मनोहर दृश्य देख पडते हैं। नीचले सिलसिलेपर जहाँ तहाँ चायके बाग है। जिलेके पर्वतकी सवसे ऊंचो फलालुम नामक चोटी १२०४२ फीट ऊँची है। जिलेमें तिष्टा, महानन्दा और वलासन प्रधान नादियाँ है। तिष्टाकी प्रधान सहायक नदियोंमेंसे एक बड़ी रंजीत नदी है। इन दोनों नदियोंके संगमसे थोडे नीचे तिष्टापर लटकाऊ पुल बना है, जिससे होकर तिब्वतके साथ इस जिलेमें सौदागरी होती है। महानन्दा इस जिलेमें छोटी धारा है और तराईके वालूमें कुछ दूरतक अदृश्य रहती है जिलेकी सरहद्के वाहर इसमें कई छोटी छोटी नदियाँ मिल जाती हैं। जिलेकी खानोंसे कोयला, लोहा, तास्वा और स्लेट निकलते हैं। पहाडियोंमें कई एक गुफा हैं, जिनमेसे सवसे अधिक प्रसिद्ध गुफा दार्जिलिङ्ग स्टेशनके कचारी पहाडोमें है। यहाँके देशी लोग विश्वास करते है कि यह गुफा तिव्वतसे लासा तक चली गई है। ऊँची पहाडियोंपर तेन्दुआ, भालू, और कस्तूरी वाली हरिने होती हैं। वड़ी हरिन निचले सिलसिलोंपर और चन्द हाथी और वाघ मैदानके ऊपरी ढालूपर पाये जाते है। तराईमें वाघ, गेण्डा, हरिन, वनैले सूअर वहुत हैं।

इस जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १५५१७९ मनुष्य थे; अर्थात् १२६७१७ हिन्दू, १८७७५ वौद्ध, ८२०४ मुसलमान, ८४२ क्रस्तान, ६२४ जंगली कौमे, १४ ब्राह्मो और ३ सिक्ख। आवादीका वडा भाग जगली कोम और वे जंगली लोग, जो अव मैदानके लोगोंकी चालपर चलते हैं होते हैं। इनमे नापित वहुत अधिक हैं। लेपचा वौद्धोंमे शामिल है। सन् १८८१ में ३०८०१ राजवंशी कोच थे। खास हिन्दुओंमें १०७३९ ब्राह्मण ६३५२ राजपूत और १०००० से अधिक दूसरी जातियाँ थीं।

इतिहास—अङ्गरेजी गवर्नमेंटने सन् १८३५ ई० में ३००० रुपये वार्षिक खेराजपर १३८ वर्गमील भूमि गर्मीके दिनोंमे अफसरोंके रहनेके लिये शिकमके राजासे खरीदी और पीछे उसका खेराज ६००० रुपये कर दिये। उसके वाद शीघ्रही गर्मीके दिनोंमे सूवे वंगालके अफसर लोग दार्जिलिंगमें रहने लगे। रोगग्रस्त यूरोपियन सिपाहियोंके रहनेके लिये स्थान वना। सन् १८३९ में डाक्टर कैंवलने वहाँका चार्ज लिया। उसने २० वर्ष सुपरिंटेंडेंट रहकर वहाँ वाजार, कचहरी, सडक और चर्च वनवाया और दार्जिलिंगके दक्षिग फौजी छावनी निय-

तकी। सन् १८४९ ई० में जब सरकारी अफसर शिकममे कैदकर लिये गये, तब सन् १८५० में सरकारी फौज तिरस्कारके बदले लेनेके लिये शिकममें भेजी गई। अन्तमे शिकम राज्यकी तराई अर्थात् मोरंग जो पहाडियोंके कदमके पास है, अङ्गरेजी राज्यमे मिला लिया गया और पहाडियोंके दर्मियानकी बहुत सी भूमि अंगरेजी, राज्यमें जोड ली गई। सन् १८६४ में तिष्टाके पूर्वका पहाडी देश इस जिलेमें कर दिया गया। सन् १८२६ ई० मे पहले पहल हिन्दुस्तानमे ऊपरी आसाममे चायके दरख्त और बीज आये। सन् १८५६में चायका बाग दार्जिलिङ्गमें नियत हुआ। अब लगभग ५०००० एकड भूमिपर लगभग २०० चायके बाग बने है। सन् १८८२–८३ मे, जब फसिल अच्छी थी, ८०००००० पौण्डसे अधिक चाय हुआ था। बंगालके लेफ्टिनेंटगवर्नर प्रति वर्ष गर्मीके दिनोंमें कई महीने दार्जिलिङ्गमे रहते हैं।

शिकम।

दार्जिलिङ्गके उत्तर शिकम एक पहाडी देशी राज्य है। इसके उत्तर और पूर्वोत्तर तिब्बत, पूर्व-दक्षिण स्वतन्त्र राज्य भूटान, दक्षिण अङ्गरेजी राज्यमे दार्जिलिङ्ग जिला और पश्चिम स्वतन्त्र राज्य नैपाल है। यह राज्य हिमालयके ऊँचे सिलसिलेपर १५५० वर्ग मीलके क्षेत्रफलमे फैला है। इसके सबसे नीचेका मार्ग समुद्रके जलसे १३००० फीट ऊपर है। शिकम राज्यमें तिष्टा और उसकी सहायक नदियाँ पहाडियोंके बहुत नीचे अति तीव्र वेगसे बहती हैं। नदियोंपर कई जगह बेतका पुल बना है और कई जगह लोग घरनईसे पार उतरते हैं। सम्पूर्ण बस्तियाँ और ढालू पहाड़ियाँ सघन बनोंसे छिपी हुई हैं। बाँस बहुत बडे और बेत मोटे तथा बडे होते हैं। बेतोंसे हिमालयमे पुल बनाये जाते हैं। बन और पहाडियोंमें बाघ, भालू, कस्तूरीवाले मृग, बनैले सूअर इत्यादि बनजन्तु रहते हैं।

शिकमकी आनुमानिक मनुष्य-संख्या ७००० है, अर्थात् प्रायः ३००० लेपचा, २००० भोटिया, १००० लेंबू और १००० दूसरे। इनमें अधिकांश लोग बौद्ध मतपर चलते है। बहुत बौद्ध पुजारी अपने अपने लामा अर्थात् गुरुके आधीन मठोंमें रहते है। लामा लोग विना मालगुजारी दिये हुए जितना चाहे उतना खत जोत सकते है। राज्यका प्रधान गाँव तमलाङ्ग और कंटक, जिसमें काजीका सुन्दर मकान बना है, और प्रधान मठ लयेबर्ग है।

गेहू, जव, जनेरा, और थोडा धान घाटियोमे उपजते हैं। पश्चिम भागमे तेलहन भी होत ह। बागोंमें केला, नारंगी और दूसरे फल बहुत होते है। तिब्बतके सौदागर शिकम होकर जाते हैं। शिकमके लोग टट्टू, भेड और जंगली पैदावारोंको कपडे, तम्बाकू आदि चीजोंसे बदलते हैं।

राजधानी—शिकमकी राजधानी तमलांग है, जहाँ जाडे और बसन्तऋतुमे राजा रहते हैं। गरमी और बरसातमें राजा अपने तिब्बतकी मिलकियत चूर्म्बीमे बहुधा जाया करते हैं तमलांग पहाडीपर राजाके महलके अतिरिक्त शिकम राज्यके बहुतेरे अफसरोंके सुन्दर मकान बने हुए हैं। प्रत्येक मकानके चारोंओर बाँस या फलदार वृक्षोंके कई झुण्ड है। शिकमके वर्तमान नरेश महाराज 'चोटाल शिक्यं नामरिय' हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि शिकमके राजाका पुरुषा तिब्बतके लासाके पडोससे आकर कंटकमें बसा। सन् १७७८ ई० मे गोरखोंने शिकमपर आक्रमण करके राज्यका एक

छोटा भाग लेकर सुलह कर लिया। सन् १७९२ में जब गोरखोंने दूसरी बार शिकमपर आक्रमण किया तब चीनियोंने उनको खदेड़ा। नैपालियोंके परास्त होनेपर सन् १८१६ ई० में अंगरेज महाराज और नैपालियोंसे सन्धि हुई। उसके अ सार शिकमके राजाका राज्य; जो नैपालियोंने छीन लिया था, उनको फिर मिल गया। सन् १८३५ में अंगरेजी सरकार शिकमके राजासे दार्जिलिंग लेकर उसके बदलेमें ३००० रुपय सालाना खिराज देनेलगी। शिकमवाले अंगरेजी राज्यसे लडके चुराकर उनको दास बना लेते थे और सन् १८४९में शिकमके राजकर्मचारियोंने सफर करते हुए दो अंगरेजी अफसरोंको पकडकर कैदकर लिया। तब उनको छुडानेके लिये अङ्गरेजी सेना गई। अम्बमें शिकमके राज्यका एक भाग अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने ले लिया। तिसपर भी शिकम वाले अङ्गरेजी राज्यसे लडका चोरा ले जाते थे। सन् १८६१ मे अङ्गरेजी सेना शिकमकी राजधानी तक पहुँची, तब राजाने परवश होकर सुलह किया। उसके अनुसार अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको शिकममें सौदागरी करने और सडक बनानेका अधिकार होगया। सन् १८७३ मे शिकमके वर्तमान महाराजने दार्जिलिगमे आकर बंगालके छोटे लाटसे भेटकी थी। अब शिकमका राजा अङ्गरेजी सरकारके आधीन हो गया है।

भूटान।

शिकमसे पूर्व हिमालयके पूर्व भागमे स्वाधीन राज्य भूटान है। इसके उत्तर हिमालय, बाद तिब्बत, पूर्व चीन, दक्षिण आसाम देश और जलपाईगोडी जिला और पश्चिम, शिकम है। सन् १८६४ मे सम्पूर्ण क्षेत्र फल अनुमानसे २०००० वर्ग मील और मनुष्य-संख्या करीब १५०००० थी। सम्पूर्ण देशमें ऊँचे और नीचे पहाड़ है। बहुतेरी नदियाँ तंग रास्तेसे बहती हुई ब्रह्मपुत्रमें गिरती हैं।

भूटिये लोग सख्त और दिलेर होते है। उनका चमड़ा काला और चेहरे चीनियोके समान है। उनकी आदत और बदन मैला है। उनकी खोराक चावल, जवका आटा, सलगम, गोस्त, खासकर सूअरका मांस और चाय है। सब दर्जेके लोग शराब आदि नशावाले अर्क पीते हैं। पुरुष ऊनका ढीला कोट टेहुने तक पहनते हैं, कमर पर कपड़े या चमड़ेकी पेटी बाँधते है और जूतेमें लगा हुआ पायजामा और पशमकी या मोटे ऊनकी टोपी पहनते हैं, और स्त्रियाँ लम्बा लबादा ढीले अस्तीनके साथ पहनती हैं। उस राज्यमें कई भाइयोंके एकही स्त्रीके साथ विवाह होनेकी रिवाज जारी है। वहाँके लोग बराय नामके बौद्ध मतवाले है, परन्तु वे भूत आदिकी बहुत पूजा करते हैं।

पहाडी देश होनेके कारण वहाँ खेती कम होती है। एक प्रकारके घोड़े जो टाँघन कहलाते है, भूटानमें पाले जाते है। भूटानके दक्षिण भागमें मोटे कम्बल और कपड़े बनते है। भूटानमे एक प्रकारके वृक्षसे कागज बनाया जाता है। वहाँ तलवार, बर्छी और तीर बनते है। प्राय. ऊँचे स्थानोंपर वर्षा अधिक होती है। राज्यमें पैदावार जिनिश और सौदागरीकी वस्तुओमेंसे मालगुजारी ली जाती है।

२ या ४ मञ्जिलके मकान हैं। झोपडियोंके चारो तरफ बहुतेरी जमीन जोतनेके लिये तय्यारकी जाती है। गेहूँ, जव, मिलेट और सलगम प्रधान फसिलोंमेसे हैं। भोटिए लोग पहाडियोंके बगलोंमे काटकर चबूतरोंके कतार बनाते हैं और उन पर खेती

करते है। जङ्गलोमे भाँति भाँतिके वड़े वृक्ष है। पहाड़ियोके निचले सिलसिलेमे वहुत हाथी, तिष्टा नदीके निकट वाघ, घाटियोमें तेंदुआ और हरिन, वर्फोंमें कस्तूरीवाली हरन और पहाडियोंके वगलोपर सूअर और गैडे मिलते हैं। तिव्वती भाषाओंमेंसे एक वहाँकी भाषा है।

भूटानके राजा धर्मराजा कहलाते हैं और जो उनके राज्यमें देशके प्रवन्ध करते है उन्हे देवराजा कहते है। वह तीसरे वर्ष कौसिल द्वारा वदल जाता है। नीचेके ओहदेदार तनखाह नही पाते; परन्तु अपने मातहतके लोगोसे जितना हो सकता है वे लेते है। लूट-पाट सर्वत्र जारी रहती है।

धर्मराजा बुद्धका अवतार समझा जाता है। उसके मरनेके एक या दो वर्ष पीछे प्रायः एक अफसरके खान्दानमे लड़केके शकलमें नया अवतार होता है। वह मठमें शिक्षा पाता है और वालिग होने पर राजा होता है। प्रधान शहर अर्थात् राजधानी पुनाखा स्वाभाविक अभेद्य स्थानमें दार्जिलिंगसे ९६ मील पूर्वोत्तर वुगनी नदीके वायें किनारेपर है। अङ्गरेजी राजदूतने सन् १८६४ में भूटानकी फौजकी संख्या ६००० अनुमान किया था।

इतिहास—भूटान पहले टेफूजातियोंके अधिकारमे था। टेफू कूचविहारके कोच खियाल किये जाते हैं। करीव २०० वर्ष हुए कि तिव्वतके सिपाहियोंके एक जमायतने टेफुओको जीतकर उस देशको अपने अधिकारमे कर लिया।

सन् १७७२ ई०में जव भूटियोंने कूचाविहारपर चढ़ाई की, तव अङ्गरेजोंके साथ उनका पहला सरोकार हुआ। कूचविहारके राजाके दरखास्त करने पर जव एक अङ्गरेजी फौज भेजी गई तव भूटिये लोग भाग गये। सन् १८२६ में जव अङ्गरेजोने आसामको लेलिया। तव भूटिये लोग पहाड़के पाँवके पासकी जमीन जो द्वारे कहलाती हैं, ले चुके थे। उसके पश्चात् भोटियोंने अङ्गरेजी राज्यपर आक्रमण करके वासिन्दोंको लूटा और उनको कैदी वना लिया। वे लोग वहुतेरोको जव कैदी वनाकर ले गये तव अङ्गरेजी सरकारने द्वारोको भूटियोंसे छीन लिया। पर भोटिये लोग द्वारोंमें अङ्गरेजी प्रजाओ पर अत्याचार करतेही रहे। सन् १८६५ में भूटान गवर्नमेण्टने एक लडाईके पीछे अङ्गरेजोको दूसरे देशके साथ वङ्गाल और आसामके १८ द्वारोको दे दिया और अङ्गरेजी प्रजाओंको जिनको भोटिये लोग चोराले गये थे; छोड दिया।

आठवां अध्याय।
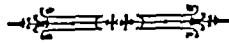
(सूबे बङ्गालमें) रंगपुर, (देशीराज्यमें) कूचबिहार, ब्रह्मपुत्र तीर्थ, (आसामदेशमें) त्युरा, ग्वालपाड़ा, गौहाटी और कामाख्या।

रङ्गपुर।

पार्वतीपुर जंक्शनसे २२ मील पूर्वोत्तर (मनिहारी घाटसे १३४ मील) रङ्गपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे वङ्गालके राजशाही विभागमें घाघाट नदीके उत्तर किनारेपर(२५अंश, ४४ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १७ कला, ४० विकला, पूर्व

देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान रंगपुर एक कसबा है, जिसमें माहीगञ्ज, धाप और नवाबगञ्ज, शामिल हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रंगपुरमें १४२१६ मनुष्य थे, अर्थात् ७४३७ हिन्दू, ६६६७ मुसलमान, ७६ जैन, ३३ क्रस्तान, २ बौद्ध और १ दूसरे । रंगपुरमे सिविल कचहरियां, पुलिसस्टेशन, जेलखाना और अस्पताल है।

रंगपुर जिला—यह राजशाही विभागके मध्यका जिला ३४८६ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैला है। इसके उत्तर जलपाईगोडी जिला और कूचविहारका राज्य; पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी वाद ग्वालपाडा और मैमनसिह जिला; दाक्षिण बुगड़ा जिला और पश्चिम दीनाजपुर और जलपाईगोडी जिला है।

इस जिलेमें कोई पहाड़ नहीं है। जिलेके क्षेत्रफलके ३/४ भागकी भूमि जोती जाती है। धान, तम्बाकू, आलू, ऊख, अदरख और अनेक भाँतिके तेलके बीज उत्पन्न होते हैं। विना जोती हुई भूमिपर नरकट और वेंत बहुत होते है। जिलेकी पूर्वी सीमापर ब्रह्मपुत्र नदी वहती है। उसकी सहायक नदियोमे तिष्टा, ढइला, संकोस, करतोया, गङ्गाधर और दुधकुमार नदियां प्रधान हैं। इनमे तिष्टा अधिक प्रसिद्ध है, जिसका नाम पुराणोमें तृष्णा और त्रिस्रोता भी लिखा है। यह सन् ई०की १६ वीं सदीमें गङ्गामे गिरती थी, किन्तु सन् १७८७ में अधिक वर्षा होनेके कारण ब्रह्मपुत्रमे गिरने लगी। तिष्टाके सहायक नदियोंमे करतोया, वाघी, मानस और गुजरिया प्रसिद्ध है। जिलेमें गवर्नमेंटको मालगुजारी देनेके योग्य कोई जङ्गल नही है। पंगा गाँवके पास ८ मीलके घेरेमें एक जङ्गल है, जिसमें मोटा बेंत, जो छडीके लिये विकते है, वहुत उत्पन्न होते है। जिलेमें बेंत और नरकट बहुत होते हैं। ब्रह्मपुत्र नदीके वालूदार टापुओमे वाघ और तेंदुये वहुत रहते है। साधारण प्रकारसे बनैले भैंसे और सूअर और कई भाँतिकी हरिन देख पड़ती हैं।

जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २०९७९६४ मनुष्य थे, अर्थात् १२७९६०५ मुसलमान, ८१६५३२ हिन्दू, १३९९ पहाड़ी और जंगली जो अपने पुराने मतपर चलते है, २७४ जैन, ८६ क्रस्तान, ६० बौद्ध और ८ ब्राह्मो। जातियोके खानेमें ४३२४९८ कोच, पाली और राजवंशी, जो अव हिन्दूके मतपर चलते हैं, ९२७९० तियर, ३६७९५ चण्डाल, ३०६१२ कैवर्त, २५१८० मदक, १३०४१ नाई, १२०७५ ब्राह्मण, जो मैथिल और कामरूपी दो प्रकारके हैं, ११४४९ कायस्थ, ८३८७ जलिया, शेषमें दूसरी जातियां थी, जिनमें २६९७४ वैष्णव और केवल २३२५ राजपूत थे। रंगपुर जिलेके कसवे रगपुरमें १३३२०, वरखतामें ११३९३, वोगदावाडीमें १०८९२, ढीमलामे १०५०३, गुरग्राममे ९६१६ और छतनाईमें ९५०१ मनुष्य थे।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि रंगपुर पूर्व कालमें राजा भगदत्तका, जिसकी राजधानी कामरूप जिलेके गौहाटी थी, देहाती महल था। भगदत्त महाभारतके युद्धमे अर्जुनके हाथसे मारा गया। सन् १५०० ई० से पहले ३ घरानेके राजाओंने इस देशमे राज्य किया था। इनमे पहला पृथुराजा था, जिसकी राजधानीकी फैली हुई निशानियाँ जलपाईगोड़ी जिलेमें देख पडती है। दूसरे घरानेमें ४ राजा हुए, जिनको बंगाल और आसामके लोग पाल घरानेके राजा कहते हैं। पहला राजा धर्मपालके शहरकी निशानी जलपाईगोड़ी जिलेमें अवतक

विद्यमान है। पाल घरानेके तीसरा राजा भावचन्द्रका नाम बंगालमें प्रसिद्ध है। तीसरे घरानेमें नीलध्वज, चक्रध्वज और नीलाम्बर ३ राजा हुए। नीलध्वजने कामतापुरको बसाया। कूचविहारके राज्यमें उसकी तबाहियां १९ मीलके घेरेमें देख पडती हैं। कहा जाता है कि गौडके अफगान बादशाह हुसेनशाहने, जिसने सन् १४९७ से १५२१ तक गौड़में राज्य किया था, राजा नीलाम्बरको छलसे पकड़कर रंगपुरको लेलिया, किन्तु मुसलमानोने इस देशमें अपना अधिकार नहीं रक्खा। आसामकी पहाड़ियोंसे जगली जातियोमेसे कोच लोग आकर बस गये जो कूचविहारमें अबतक विद्यमान है। उनमेंसे राजा बीसूने पूर्व ओर आसामकी खाडीमें और दक्षिण रंगपुरतक अपना अधिकार फैलाया। उसकी मृत्यु होनेपर राज्य कई भागोंमे बँट गया। सन् १६८७ ई० में औरङ्गजेबने खास रंगपुरको अपने राज्यमे मिला लिया। पीछे यह अङ्गरेजी सरकारके आधीन हुआ।

कूचविहार।

रंगपुरसे ३१ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ५३ मील) पूर्वोत्तर मगलहाटमे रेलवे जंक्शन है। उससे २८ मील उत्तर कुछ पश्चिम कूचविहार स्टेट रेलवे कूचविहार कसबेके निकट तोरसा नामक स्टेशन तक गई है।

बंगालमे प्रधान देशी राज्यकी राजधानी (२६ अंश, १९ कला, ३६ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, २८ कला, ५३ विकला, पूर्व देशान्तरमें) तोरसा नदीके निकट कूचविहार एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कूचविहार राजधानीमें ११४९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७५९१ हिन्दू, ३७१६ मुसलमान, ११० जैन, ६७ कृस्तान, ४ सिक्ख, २ बौद्ध और एक दूसरे।

हाल तक कसबेमें ईटोंके राजभवनके चारोंओर चटाई और फूसकी झोपडियाँ थी, किन्तु चन्द बरसोंसे कसबेकी बडी उन्नति हुई है। कसबेके प्रधान स्केयरके उत्तर बगलमे दो मंजिली इमारत, महाराजकी कचहरीके मकान और आफिस, पूर्व अङ्गरेजी और वर्नेक्युलर स्कूल, छापाखाना और राज्यका दफतरखाना और दक्षिण १ उत्तम इमारत, जिसमें ४ बडे कमरे और दूसरे छोटे आफिस हैं, और मातहत दीवानी और फौजदारी कचहरियाँ हैं। स्केयरके मध्यमें सागरदीघी नामक बडा तालाव है। कसबेके प्रायः सब लोग इसी तालावका पानी पीते हैं। पुराने बाजारके स्थानपर नया चौकोना बाजार बना है। बाजारके मकानोंकी छत लोहेकी चादरसे पाटी गई है। प्रधान सडक बाजार होकर गई है। हालमें १२००००० रुपयेके खर्चसे एक उत्तम राजमहल बनाया गया है। इनके अलावे वहाँ पोष्टआफिस, जेलखाना, पुलिस-स्टेशन, कारीगरीका स्कूल और ब्राह्मसमाजकी एक सभा है।

सौदागरी बहुत नहीं है। ३ छोटी नदियाँ, जो तुरसा कहलाती है, कसबेको ३ ओरसे घेरती हैं। इनमे केवल बरसातमें नाव चलती हैं। एक सडक, रंगपुरसे कूचविहार कसबे होकर जल्पाईगोड़ीको गई है।

कूचविहार-राज्य–यह देशी राज्य, अङ्गरेजी राज्यसे घेरा हुआ है। इसके उत्तर जल्पाईगोडीके पश्चिमी द्वार और दक्षिण रंगपुर जिला है इसके अलावे रंगपुर और जल्पाई

गोडी जिलेमें कूचविहार राज्यके कई टुकड़े है। सम्पूर्ण राज्यका क्षेत्रफल, १३०७ वर्गमील है। राज्यसे महाराजको १३३३००० रुपये मालगुजारी आती है।

यह राज्य समतल मैदानमें है। इसमें तिष्टा, सीङ्गमारी, तोरसा, कालजानी, राधक, गदाधर इत्यादि लगभग २५ नदियॉ बहती है। इनमे बहुतेरी बहुत छोटी है। तिष्टा और राधकको छोड़कर सम्पूर्ण नदियाँ गर्मीकी ऋतुओंमे स्थान स्थानपर विना नावके पार होजाने योग्य रहती है। सम्पूर्ण नदियॉ उत्तरसे ब्रह्मपुत्रमें गिरती हैं। राज्यके अधिक भागमे खेती अच्छी तरह होती है पूर्वोत्तरके कोनेमे कुछ जङ्गली देश है। वोने वाली भूमिमेंसे $\frac{3}{4}$ भूमिपर धान उत्पन्न होता है। मैदानमें किसानोंके बथानके आस पास बांसके झुंड और फलदार वृक्षोंके बाग देख पड़ते है। जूट, तम्बाकू, तेल और लकड़ी राज्यसे दूसरे स्थानोमे भेजी जाती है सैकड़ों मील सड़क बनी है। पहले दश बीस गाड़ी चलती थी, अब हजारहॉ चलती है। हालमें विद्याकी बडी उन्नति हुई है। इस राज्यके लोग बस्ती बना कर इकट्ठा नही रहते हैं धनवान् लोग अपना अपना मकान अलग अलग बनाये है।

इस राज्यमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६०२६२४ मनुष्य थे, अर्थात् ४२७४७८ हिन्दू, १७४५३९ मुसलमान, १४४ जैन, ४८ कृस्तान और ४१५ दूसरे। जातियोंके खानेमें २९९४५८ राजबंसी, जो पहलेके कोच जाति है, ५४१५२ तियर और मछुहा, १४१९२ बागड़ी, ५२०८ चण्डाल, ४४३१ जोगी, ३५८६ कुर्मी, ३५३० ब्राह्मण, ३१९७ राजपूत, ३०५२ नाई, २६७८ कैवर्त्त, २६४० जलिया, २५२२ कायस्थ थे; शेषमे दूसरी जातियॉ थी। कूचविहार राज्यमें कूचविहारके अतिरिक्त कोई दूसरा कसबा नहीं है।

इतिहास—पूर्व कालमे इस राज्यमें कामरूपके पुराने हिन्दू राजाकी राजधानी थी जिसको १५वीं सदीके अन्तके भागमे गौड़के अफगान बादशाहोंने विनाश करदिया। उनकी राजधानियोंमेंसे कई एककी निशानियॉ अब तक देख पड़ती है। उसके पीछे अंधेरका समय आया। जङ्गली लोग पूर्वोत्तरसे आकर लूट पाट करने लगे, जिनमे कोच लोग जो अब राजवंशी कहलाते है, अगहर थे। उन्होंने कूचाविहार राज्य नियत किया। कोचवंशमें बीसृसिंह पहला राजा था, जिसका पुत्र नरनारायण सबसे बडा राजा हुआ, जिसका राज्य सन १५५० ई० से आरम्भ हुआ था। उसने सम्पूर्ण कामरूप देशको जीता और आसाममे अनेक मन्दिर बनवाये। उजड़े पुजड़े मन्दिरोके लेखोंमें अबतक उस राजाका नाम देख पडता है। उसने भूटानके राजाको कर देनेके लिये मजबूर किया. और दक्षिण-पश्चिममें जो अब रंगपुर और पुर्निया जिलेका भाग बना है, अपने राज्यको वढ़ाया। इसीके राज्यके समय नारायणी सिक्का चलाये गये थे, जो अभी तक कुछ २ चलते हैं। कोच राज्यकी स्वाधीनता बहुत दिनो तक नहीं रही। नरनारायणने अपने आधीनकी आसामकी भूमि अपने भाइयोंको बॉट दी। अबतक वहॉ उनके वंशधर धनी जमीदार विद्यमान हैं। नरनारायणका पुत्र लक्ष्मीनारायण, जो कूचविहारमे राज्यका उत्तराधिकारी था, कैदी बनाकर दिल्लीमें भेजा गया। उसके पीछे राजघराना तीन भागोंमे बट गया। सन् १७७२ ई० में भूटियोंने कूचविहारके राजा नाजिरदेवको निकाल दिया। तब अङ्गरेजी गवर्नमेंटने नाजिरदेवके दरखास्त करने पर कूचविहारमें अपनी सेना भेजकर भूटियोको खदेरा और सन् १७७३ ई० में एक सन्धि की।

सन् १८६३ ई० में कूचबिहारके राजा अपने १० महीनेके शिशु पुत्र वर्तमान कूच-विहार नरेशको छोड़कर मरगये। उस समय राज्यके प्रवन्धके लिये अङ्गरेजी कमिश्नर नियत किया गया। पीछे राज्यकी पैमाइश होकर मालगुजारी नियत कीगई, पुलिसका सुधार हुआ, सडकें वनाई गईं, डाकघर और टेलीग्राफ आफिस कायम हुए और नावालिग राजा पटनेमें एक यूरोपियन अफसरसे पढा और पीछे उसने कलकत्तेके प्रेसीडेन्सी कालिजमें आइनकी शिक्षा प्राप्त की। सन् १८७८ में राजाने सुप्रसिद्ध वावू केशवचन्द्रसेनकी पुत्रीसे अपना विवाह किया और उसी साल वह इङ्गलैण्ड गये। सन् १८८३ में महाराज, सर एन. नारायणभूप वहादुर जी. सी आई.ई. जिनकी अवस्था इस समय ३० वर्ष की है, सवालिग होने पर राज्यके अधिकारी हुए, तवसे उनको महाराजकी पदवी मिली।

ब्रह्मपुत्र तीर्थ।

रंगपुरसे ११ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ३३ मील) पूर्व कुछ उत्तर तिष्टा नदीके किनारे कौनिया तक रेल है। कौनियासे ६ मील तिष्टाके पूर्व किनारेके तिष्टा गाँवतक आग-वोट चलता है। तिष्टासे पूर्व १६ मील कुरीग्राम और २६ मील ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर यात्रापुर है। तिष्टासे यात्रापुर तक रेल वनी है।

कुरीग्रामसे १३ मील दक्षिण-पश्चिम और यात्रापुरसे इससे कम दूर पर ब्रह्मपुत्र नदीका चिलमारी घाट है, जिसको ब्रह्मपुत्र तीर्थ भी कहते हैं। कुरीग्रामसे देहाती मार्ग और यात्रापुरसे ब्रह्मपुत्र नदीमें नावका रास्ता है।

ब्रह्मपुत्र नदी कैलास पर्वतमे मानसरोवरके पाससे निकलकर हिमालयके उत्तरमें पूर्वकी ओर वहनेके उपरान्त पश्चिमको लौटी है और फिर दक्षिणको वह कर दो धारोमें वट गई है, जिनमेंसे पूर्ववाली धारा नदीके निकाससे लगभग १७०० मील वहनेके पश्चात् समुद्रमें मिली है और पश्चिमकी धारा जिसको यमुना और जनाई कहते हैं, गंगाकी प्रधान धारा पदमामें जा मिली है। ब्रह्मपुत्रको तिव्वतमें यारु और सॉपू कहते है। लोहित नदीके सङ्गम होनेके पश्चात् इसका नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा है और समुद्रमें, गिरनेसे ६० मील पहले यह मेगना कहलाता है। इसके निकट डिब्रूगढ़, शिवसागर, नवगाँव, तेजपुर, गौहाटी, ग्वाल-पाड़ा, और धुवडी प्रसिद्ध कसवे हैं।

चिलमारी घाटपर चैत सुदी ८ को ब्रह्मपुत्र स्नानका मेला होता है। जिस साल चैतकी वुधाष्टमी होती है उस साल अधिक यात्री एकत्र होते हैं। यात्रीगण चिलमारी घाट-पर केवल एक रात निवास करके चले जाते हैं। वे लोग वहाँके नियमानुसार लौटनेके समय पीछेकी ओर फिरकर घाटको नहीं देखते। ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि जमदग्निके पुत्र परशु-रामजी यहाँ आनेपर मातृ-हत्याके दोपसे विमुक्त हो गये।

त्युरा।

यात्रापुर तक रेल है। वहाँसे आगवोट द्वारा लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर धुवरी जाना होता है। धुवरीसे त्युरा तक लगभग ५० मील टट्टूकी सवारीका मार्ग और टेली-ग्राफ है। आसाम प्रदेशमें (२५ अंश, २९ कला, ३० विकला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, १६ कला १० विकला, पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे लगभग १३०० फीट ऊपर त्युरा पहाडीके सिलसिलेपर गारो पहाडी जिलेका सदरस्थान त्युरा एक गाँव है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय त्युरामें ७४४ मनुष्य थे। वह जगह रोग-वर्द्धक है। वहां लोगोंको वोखार वहुत आता है। लकड़ी, वॉस और फूससे मकान वने हुए हैं। सरकारी इमारतोमें मामूली कचहरियां और आफिस, ३०० कानेष्टवुलोंके लिये वारक, डिपुटीकमिश्नर, पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट और सिविलसरजियनके लिये वँगले वने हैं। और एक अस्पताल, और एक स्कूल है, वहॉ सालमें औसत १२६ इञ्च वर्षा होती है।

गारोपहाड़ी जिला—इसके उत्तर ग्वालपाडा जिला, पूर्व खासी और जयन्ती पहाड़ियां जिला, दक्षिण और पश्चिम सूबे बंगालका मैमनसिंह और रंगपुर जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३१४६ वर्गमील है । सम्पूर्ण जिला पहाडी देश है। ब्रह्मपुत्र नदीके उत्तरकी पहाड़ियाँ नीची है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १०९५४८ मनुष्य थे; अर्थात् ८५६३४ पहाडियोंमें और २३९१४ मैदानमे। गारो लोग स्त्री पुरुष सव कुरूप और काले होते हैं। इनके गालकी वडी हड्डियां, चौडा नाक, मोटा ओठ और लम्वा कान होता है। इनकी दाढीपर वाल वहुत कम जमता है। वे लोग अपने मुखपर जमे हुए वालोंको तोड़ डालते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों अपने सिरके वालोंको कभी नहीं कटवाते। पुरुष केवल डेढगज लम्वे कपड़ेका भगवा, जिसको वे लोग आपही वनाते है। पहनते है। स्त्रियोंका वस्त्र इससे थोडा अधिक फैला रहता है। स्त्री और पुरुष दोनों एक छोटे कम्वल लिये रहते हैं, जो साधारण तौरसे एक वृक्षके छालसे वनाया जाता है। पूर्वके पहाड़ियोंके गारो लोग खासिआ लोगोंके समान छोटे अंगरखे पहनते है। पुरुष अपने कानोंमे ३-४ पीतलके वाले और गलेमें गुरियाका लच्छा पहना करते है। स्त्रियां अपने गलेमें कांच और पीतलके गुरियेका लच्छा और कानोमें वहुत वडे और भारी वाला लगाती है। गारो लोगोंका हथियार, तलवार, वरछी और ढाल हैं। इनकी घराऊ रीति और चाल खासिआ लोगोंके समान है। स्त्रियां अपने घरकी मालिक होती है। खासिआ लोगोंमें सम्पूर्ण घरऊ कामोंमे स्त्रियां वहुत मानी जाती है। युवा होनेपर वर और कन्याका विवाह होता है। विवाह होनेपर पुरुष अपनी स्त्रीके घर चला जाता है। पुरुष अपनी स्त्रीकी अनुमतिके विना दूसरा विवाह नहीं कर सकता। वे लोग अपने मुर्दोंको जलाकर उनकी राख अपनी झोपड़ीके दरवाजेके निकट गाड देते हैं। लाश जलानेके समय मृतकको मार्ग दिखानेके लिये एक कुत्ता वलिदान किया जाता है। हाल तक प्रधानके मौतके स्थानपर मनुष्य वलि दिये जाते थे।

इतिहास—सन् १८६६ ई० में गारो पहाड़ियोंमें एक अङ्गरेजी अफसर नियत हुआ। सन् १८६७ में त्युरामें डिपुटी कमिश्नर गये। सन् १८६८ में गारो पहाड़ी जिला नियत होकर त्युरामें सिविल स्टेशन वना। सन् १८७१ के अन्तवक लगभग १०० गाँव अङ्गरेजी अधिकारमें हुए। सन् १८७३ के मईमें सम्पूर्ण जिलेका नकशा तैयार हुआ।

ग्वालपाड़ा।

यात्रापुरतक रेल है, वहॉसे आगवोटमें जाना होता है। यात्रापुरसे लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर ब्रह्मपुत्रके दहिने किनारेपर ग्वालपाड़ा जिलेका सदर स्थान धुबड़ी एक वस्ती है। आगवोट धुवड़ी छोड़नेके दूसरे दिन दोपहरको ग्वालपाडा पहुँच जाता है।

आसाम प्रदेशमें ब्रह्मपुत्र नदीके बॉये अर्थात् दक्षिण किनारेपर यात्रापुरसे लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ४१ कला, पूर्व देशान्तरमे) एक गावदुमी पहाडीके पादमूलके पास जिलेमें प्रधान कसवा ग्वालपाड़ा है, जो पहले जिलेका सदर स्थान था।

ग्वालपाडा कसवेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ५४४० और सन् १८८१ में ६६९७ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५१ हिन्दू, २३७३ मुसलमान, और १७३ दूसरे।

एक पहाड़ीपर मैदानसे २६० फीट ऊपर सिविल स्टेशन वना है। वहाँसे ब्रह्मपुत्रकी घाटीके उत्तम दृश्य और उत्तर ओर हिमालयके शिरो भाग पर वर्फ देख पड़ती है। पहाड़ीके पश्चिम ढालूपर देशी लोगोंका कसवा वसा है। मकान लकड़ीके खम्भे, चटाई और काससे वने हुए हैं। कसवा अव तक इस देशमे प्रधान तिजारती स्थान है। इसमे वहुतेरे देशी सौदागर और पहाड़ी लोग, जो चमड़े आदिकी सौदागरीके लिये नीचे आते हैं, देख पड़ते हैं।

ग्वालपाड़ा जिला—पूर्वकालमे एक ग्वाला आकर यहॉ वसा इसलिये इस देशका नाम ग्वालपाड़ा पड़ा। यह आसाम देशका पश्चिमी जिला ब्रह्मपुत्र नदीके ऊपरी घाटीका दरवाजा वनता है। इसके उत्तर भूटानकी पहाड़ियॉ और दक्षिण गारो पहाड़ियोंका नया जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३८९७ वर्ग मील और सदर स्थान ब्रह्मपुत्र नदीके उत्तर किनारेपर धुबरी कसवा है। यह जिला ब्रह्मपुत्र नदीके उत्तर किनारेपर ६५ मील और दक्षिण किनारेपर १२० मील फैला है। नदीके किनारोंपर सघन बेत और नर्कट और उसके वाद धानके खेत फैले हुए हैं। ब्रह्मपुत्रके उत्तर मानस, गदाधार और गंगा धार जिलेकी प्रधान नदियाँ हैं। जिलेमें विशेष करके पूर्वी द्वारोंमें बेशकीमती लकड़ीके जंगल है और वाघ, गेड़ा, भैंसा इत्यादि जंगली जानवर वहुत रहते हैं। जंगली जानवर प्रति वर्ष वहुतेरे लोगोंको मार डालते हैं। पहाड़ियोंमें मकान वनाने योग्य पत्थर निकाला जाता है।

इस जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४४६२३२ मनुष्य थे, अर्थात् ३२९०६६ हिन्दू, १०४७७७ मुसलमान, ११७१२ आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली ५१३ कृस्तान, ७९ वौद्ध, ३९ जैन, ३२ ब्राह्म और १४ सिक्ख। जातियोंके खानेमे १९२३० जलिया जो मछुहेका काम करते हैं, ११७१० गारो, ११२९४ कुलिता, जो ब्राह्मणका काम करते हैं, २९७० ब्राह्मण, १७३३ कायस्थ, ५७ राजपूत थे शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। पहाड़ी जातियोमे राझ, मेंच और कचारी ३ जाति अव हिन्दुओंमें लिखे जाते हैं और कोच ऊँचा मरतवा रखनेके कारण राजवंशी कहाते हैं और हिन्दुओंमें सामिल हुए हैं। ग्वालपाड़ा जिला रोगकारक देश है और इसमे भूकंप वहुधा हुआ करता है। जिलेमें ग्वालपाडाके अतिरिक्त किसी गाँवमे ५००० से अधिक मनुष्य नहीं हैं। धुवरी और विजनी प्रसिद्ध वस्ती है।

इतिहास—ग्वालपाड़ा सर्वदा वंगाल और आसामकी सीमापर था। पूर्व कालमे यह जिला कामरूपके हिन्दु राज्यका एक भाग था। लोग कहते हैं कि पीछे यह कूचविहारके कोचोंके अधिकारमें हुआ। विजनीके वर्तमान राजा, जिनकी जमीन्दारी इस जिलेमें फैली हुई है, अपनेको कूचविहारके एक राजाके छोटे पुत्रका वंशधर कहते हैं।

गौहाटी।

यात्रापुर तक रेल है। यात्रापुरसे आगवोट द्वारा ब्रह्मपुत्र नदीके मार्गसे लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर ग्वालपाड़ा और ग्वालपाड़ासे ९५ मील यात्रापुरसे १७५ मील पूर्व गौहाटी

जाना होता है। आसाम देशके कामरूप जिलेका प्रधान कसवा और जिलेका सदरस्थान (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४८ कला, पूर्व देशान्तरमे) ब्रह्मपुत्र नदीके वायें अर्थात् दक्षिण किनारे पर गौहाटी एक छोटा कसबा है। ब्रह्मपुत्रके किनारोंपर या इसके आस पास ग्वालपाडा, गौहाटी और २ या ३ दूसरे स्थानोके अतिरिक्त सर्वदा रहने वाले मकान नहीं देख पड़ते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गौहाटीमे १०८१७ मनुष्य थे, अर्थात् ७७७३ हिन्दू, २४०५ मुसलमान, ५१७ एनिमिष्टिक, ९९ कृस्तान, और २३ जैन। मनुष्य-गणनाके अनुसार गौहाटी आसाममें दूसरा शहर है।

उत्तरी पहाडीके ढालूपर वर्षमे एक बार सौदागरीके लिये भोटिये लोग एकत्रित होते है। गौहाटीके निकट ब्रह्मपुत्र नदीके बीचमें उमानन्द नामक छोटे चट्टानी टापूमे एक मन्दिर है। गौहाटीके पडोसका पवन पानी रोगवर्द्धक है।

प्राचीन कालमे गौहाटीका नाम प्रागज्योतिषपुर था। यहाँहीसे श्रीकृष्णचन्द्रने भौमासुरको मारकर १६१०० राजकुमारियोंको, जिनको भौमासुरने छीनकर रक्खा था, द्वारिकामें लेजाकर उनसे व्याह किया और महाभारतमे प्रसिद्ध राजा भगदत्तकी यही प्रागज्योतिषपुर राजधानी थी, जिनको कुरुक्षेत्रके संग्राममे अर्जुनने मारा। भगदत्तके वंशधरोंके महल और मन्दिरोंकी निशानियाँ अवतक उनके पराक्रमकी साक्षी देती है। मुसलमानोंने उसके वंशका विनाश किया था। लोग कहते है कि कूचबिहार दरंग, बिजनी और सीदल्लीके राजा उसी वंशसे है।

कामरूप जिला—यह जिला आसामके ब्रह्मपुत्र घाटीमे ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों ओर ३८५७ वर्ग मील क्षेत्र फलमे फैला है। इसके उत्तर भूटान देश, पूर्व दरंग और नौगाँव जिला, दक्षिण खसिया पहाडियाँ और पश्चिम ग्वालपाडा जिला है। जिलेका सदर स्थान गौहाटी कसवा है। ब्रह्मपुत्रके दक्षिणकी पहाडियाँ चन्द स्थानोंमें २००० से ३००० फीट तक ऊँची है इनके ढालुओंपर चायके वाग वनाये गये हैं। ब्रह्मपुत्रके दोनो ओर वहुतेरी छोटी नदियाँ ब्रह्मपुत्रमे गिरती है। जिलेमें लगभग १३० वर्ग मील क्षेत्रफलमें जङ्गल लगा है। हाथी, वाघ, तेंदुए, भालू, भैंडा, भैंसा, वडी हरिन और जङ्गली सूअर, खासकर जिलेके उत्तरमें वहुत होते है। वहुतेरे गाँव जङ्गली जानवरोंके भयसे वेरानसे घिरे हुए है। प्रतिवर्ष जङ्गली जानवर वहुतेरे आदमियोंको मार डालते है। जिलेमें मयूर पक्षी वहुत होते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कामरूप जिलेमें ६४४९६० मनुष्य थे, अर्थात् ५६९९०६ हिन्दू, ५०४५२ मुसलमान, २३५२५ आदिनिवासी, ६९० बौद्ध, ३६६ कृस्तान, २० जैन और १ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें १४०९२३ कोलीटा, ९९२९३ कचारी, ८१५५१ कोच, ५३२०३ केवट, ३६३३६ ब्राह्मण, २२७९३ राभा, शेषमें कटानी, डोम, चण्डाल, सिकिर मुनरिया इत्यादि जातियाँ थीं। राजपूत केवल २११ थे।

कामरूप जिला महापुरुषिया करके प्रसिद्ध वैष्णवोंका प्रधान स्थान है। इनमें ६१ मठ जो [illegible] कहलाते है प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त देवलायी करके प्रसिद्ध दूसरे वहुतेरे मठ हैं।

कामरूप जिलेमें कई एक तीर्थ स्थान हैं। इनमेंसे एक महामुनिका बौद्ध मन्दिर है, जहाँ हिमालयके उसपारके भी बौद्ध यात्री आते हैं।

इतिहास—अति पूर्व कालमें राजा भगदत्त, जिसकी राजधानी प्रागज्योतिपपुर (वर्त्तमान कालकी गौहाटी) थी, इस देशमें राज करता था। उसको कुरुक्षेत्रके संग्राममें अर्जुनने मार डाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा भगदत्तका राज्य पूर्व दिशामें मनीपुरकी पहाड़ियोंसे करतोया नदी तक और सम्पूर्ण आसामकी घाटी पर फैला था। आईन अकबरीमें लिखा है, कि भगदत्तके वंशमें २३ उत्तराधिकारी राजा हुए। एक टीकाकारने लिखा है, कि भौमासुरका पुत्र भगदत्त था, किन्तु मुझको किसी पुराणमे यह बात नहीं मिली।

देशी कहावते है कि इस देशमें भुइयाँ लोग राज्य करते थे। यह निश्चय है कि पीछे कोच लोगोंने आसामसे आकर कूचबिहारको जीता। सन् १२०४ ई० मे मुसलमान बादशाहोंके साथ कामरूपका सम्बन्ध आरम्भ हुआ। रंगामतीका किला, जो अब ग्वालपाड़ा जिलेमें है, दिल्ली राज्यके अखीर पूर्वोत्तरमें बाहरीका पडाव था। सन् १८२४ के पीछे आसामके नीचेकी घाटीको अङ्गरेजी गवर्नमेंटने बंगालमें मिला लिया और ऊपरीघाटी आसामके राजा पुरन्दरसिंहके आधीन एक देशी राज्य बना; परन्तु सन् १८३८में पुरन्दरसिंहका सम्पूर्ण राज्य गवर्नमेंटने छीन लिया। सन् १८७४ ई० में आसाम प्रदेश एक चीफकमिश्नरके आधीन बंगालसे अलग एक देश नियत हुआ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(उद्योग पर्व्व, चौथा अध्याय) पूर्वके समुद्रके पासका रहनेवाला भगदत्त है। (१९ वाँ अध्याय) राजा भगदत्तके संग चीन और किरात देशकी सेना हस्तिनापुरमें दुर्योधनकी सहायताके लिये आई। (कर्ण पर्व्व पाँचवाँ अध्याय) अर्जुनने राजा भगदत्तको, जो पूर्व समुद्रके निकटके अनूपदेशके किरातोंका स्वामी, इन्द्रका प्यारा मित्र और क्षत्रियोंके धर्ममें सदा निरत रहनेवाला था, कुरुक्षेत्रके संग्राममें मारडाला। (शान्ति पर्व्व १०१ वा अध्याय) प्रागदेशीय योद्धा लोग हाथियोंके युद्धमे निपुण होते हैं।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध ५९ वाँ अध्याय) श्रीकृष्णचन्द्र सत्यभामाके सहित गरुड़ पर चढ़ भौमासुरके नगर प्रागज्योतिषपुरमें गये। वहाँ पर्वत, जल, अग्नि, पवन और शस्त्रका किला था। भौमासुर, जिसका नाम नरकासुर भी है, गजारूढ़ सेना सहित बाहर निकला। बड़ा युद्ध करनेके पश्चात् कृष्णभगवान्ने पृथ्वीके पुत्र भौमासुरका शिर अपने चक्रसे काट डाला और १६१०० कन्याओको, जिनको भौमासुरने छीनकर एकत्र किया था, पालकियोंमें बैठाकर चार चार दांत वाले ६४ हाथियों सहित द्वारिकापुरीमें भेज दिया। वहाँ सम्पूर्ण कन्याओंसे कृष्णभगवान्का व्याह हुआ (यह कथा आदिब्रह्मपुराणके ९१ वे अध्यायमें भी है)

कामाख्या।

गौहाटीसे लगभग २ मील पश्चिम (२६ अंश, १० कला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४५ कला, पूर्व देशान्तरमें) कामाख्या नामक पहाड़ी है। उसके सिरपर एक सरोवरके निकट कामाख्या देवीका, जिनको लोग कामाक्षाभी कहते हैं, सुन्दर मन्दिर है। मन्दिरमें अधियारा रहनके कारण दिनमें भी दीप जलता है। मन्दिरके पास मोदियोंकी अनेक दूकानें

और पण्डाओंके मकान बने हैं । हिन्दुस्तानके सब विभागोंसे यात्रीगण कामाख्या जाकर देवीका दर्शन करते हैं । माघ, भादो और आश्विनमें उत्सवके समय बहुत लोग कामाख्या मे एकत्र होते हैं ।

शिवके १२ ज्योतिर्लिंगोंमेके भीमशङ्करको शिवपुराणमे कामरूप देशमें लिखा हुआ है, किन्तु बम्बईके पासके भीमशंकरको लोग ज्योतिर्लिङ्ग कहते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–देवीभागवत–(७ वाँ स्कंध ३८ वाँ अध्याय) कामरूप देशके कामाख्या भूमंडलमे देवीका महाक्षेत्र है। भूमण्डलमे इससे श्रेष्ठ स्थान देवीका नहीं है । वहाँ साक्षात् देवी प्रति मास रजस्वला होती हैं। वहाँकी सब पृथ्वी देवी रूप है । कामाख्या योनि मण्डलसे पर और स्थान नहीं है ।

पद्मपुराण–(पाताल खण्ड १२ वाँ अध्याय) शत्रुघ्नजी यज्ञ-अश्वकी रक्षा करते हुए, अहिछत्रा नामक बड़े नगरमें पहुँचे । उसने एक देवालय देखकर अपने मन्त्री सुमतिसे पूछा कि यह मन्दिर किसका है । मन्त्रीने कहा कि यह मन्दिर विश्वकी माता कामाख्याजीका है, जिनके दर्शन मात्रसे सम्पूर्ण सिद्धि उत्पन्न होती है । अहिछत्रापुरीके राजा सुमदने इनकी पूजा की, तबसे यह इस पुरीमें स्थित हुई हैं और सबका शुभ करती हैं । (१३ वाँ अध्याय) राजा सुमदकी आज्ञासे पुरजनोंने तोरणादिकोसे अपने २ गृह भली भाँतिसे सँवारे । सहस्रों कन्या रम्य भूषणोंसे भूषित होकर हाथियोंपर चढ़कर शत्रुघ्नजीके सन्मुख उपस्थित हुई और राजा अपनी सेना सहित शत्रुघ्नजीसे जा मिले । जब राजा शत्रुघ्नजीको अपने राज-मन्दिरको लेचले तब हाथियोंपर चढी हुई कन्याओंने शत्रुघ्नजीके ऊपर लावा मिश्रित मोतियोंकी वर्षाकी ।

दूसरा शिवपुराण—(दूसरा खण्ड ३७ वाँ अध्याय) शिवकी स्त्री सती दक्षके यज्ञमें अपने श्वासको ब्रह्माण्डमें चढाकर शरीरको छोड निज लोकको गई । शिवजीने दक्षके यज्ञ विध्वंस करनेके पश्चात् सतीके शरीरको गङ्गाके तटमे पड़ा हुआ देखा । तब वह उसको अपने शरीरमें लपटाये हुए चारोओर दौड़ने लगे । जिस २ स्थानपर सतीके अंग गिरे वह सब स्थान सिद्धपीठ होगये । काम शैलपर सतीकी योनिगिरनेसे कामाख्या नाम देवी प्रकट हुई, जिनको कामरूपा कहते हे ।

वामनपुराण—(८४ वाँ अध्याय) प्रह्लादने कामरूप देशमें जाकर पार्वती शिवका पूजन किया ।

शिवपुराण–(ज्ञान संहिता ३८ वाँ अध्याय) शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्ग हैं, जिनमेसे डाकिनीमे भीमशंकर स्थित है । (४८ वाँ अध्याय) लंकाके कुम्भकर्णका पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटीके साथ सह्यपर्वतपर रहता था । उसने दश हजार वर्षतक कठोर तप करके ब्रह्माजीसे अप्रमेय वर लाभ किया । उसके पश्चात् वह कामरूपके राजाको परास्त कर वन्दिखानेमें रख कामरूप देशका स्वामी बनगया और देवतागण तथा ऋषीश्वरोंको क्लेश देने लगा । कामरूपका राजा वन्दिखानेमें पडी हुई अपनी स्त्रीके सहित पार्थिव बनाकर शिवजीकी आराधना करने लगा । उधर देवताओंने शिवजीको प्रसन्न कर भीमके विनाशके लिये उनसे प्रार्थनाकी भीमने जब सुना कि राजा वन्दि-गृहमें भी शिवकी पूजा करता है तब राजाके पास जा उनको अनेक दुर्वचन कहकर उन

ऊपर तलवार चलाया। उसी समय शिवजीने पार्थिवसे निकलकर भीमकी तलवारको अपने पिनाकसे सौ टुकडे कर डाला। भगवान् शंकर और भीम दैत्यका भयंकर युद्ध होने लगा। उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछलने लगा और देवतागण अति त्रसित हुए। जब नारदने आकर शिवजीकी प्रार्थना की तब उन्होंने हुंकाररूपी अस्त्रसे सम्पूर्ण राक्षसोंके सहित भीमको भस्म कर दिया। उस समय देवताओंने शिवजीसे प्रार्थना की कि हे भगवन! आप लोकके हितके लिये इस स्थानमें निवास करके इस दुष्ट देशको पवित्र कीजिये। शिवजी देवताओंके वाक्य स्वीकार करके उस स्थानमें रह गये और भीम शंकर नामसे प्रसिद्ध हुए, जिनके दर्शन और स्मरण करनेसे सम्पूर्ण पापका विनाश होजाता है।

नवां अध्याय।

(आसाम देशमें) शिलांग, सिलहट, सिलचर, और देशी राज्य मनीपुर।

शिलांग।

गौहाटीसे ६४ मील दक्षिण (२५ अंश, ३२ कला, ३९ विकला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ५५ कला, ३२ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे ४९०० फीट ऊपर खसिया और जयन्ती पहाडियाँ जिलेका प्रधान कसबा और आसामके चीफ कमिश्नरका सदर स्थान शिलांग एक छोटा कसबा है। गौहाटीसे ताँगाकी डाक एक दिनमें शिलांग चली जाती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके सहित शिलाङ्ग मे ६७२० मनुष्य थे, अर्थात् ३०९५ हिन्दू, २५११ एनीमिष्टिक, ५६६ मुसलमान, ५४० क्रस्तान, १ बौद्ध और ७ दूसरे।

शिलाङ्गमें चीफ कमिश्नर सर्वदा रहते है। मनुष्य संख्या बढ़ती जाती है। वहुत रुपये खर्च करके सरकारी इमारतें वनाई गई हैं। और एक गिरजा वना है। नलद्वारा पानी सर्वत्र पहुँचता है। साप्ताहिक हाट लगता है। सन् १८८५ ई० मे शिलाङ्गकी छावनीमें २ पहाडी तोपोंके साथ वङ्गाल पैदलकी ४२ वीं रेजीमेण्ट थी। शिलाङ्गमे सालाना औसत ८७ १/२ इंच वर्षा होती है। अगहनसे चैत वा वैशाख तक जाडा रहता है। वर्फ कभी नहीं पड़ती है, किन्तु कभी २ सरदीसे कम गहडा पानी जम जाता है।

खसिया और जयन्तिया पहाडियाँ जिला—इस जिलेके उत्तर कामरूप और नौगाँव जिला, पूर्व नौगाँव और कचार जिला, दक्षिण सिलहट जिला और पश्चिम गारो पहाड़ियाँ है। जिलेका क्षेत्रफल ६१५७ वर्गमील और सदर स्थान शिलाङ्ग है।

खासी पहाडियों पर अङ्गरेजी गवर्नमेंटके आधीन छोटे छोटे वहुतेरे देशी राजा हैं और वहुतेरे गाँव अङ्गरेजी हैं। जयन्ती पहाडियाँ अङ्गरेजी राज्यमें है, जिसको सन् १८३५ में सरकारने वहाँके राजासे छीन लिया। खसिआ पहाड़ी पर पहाडी नदियाँ वहुत है। जङ्गलोंमें मधुमक्खीका मोम और लाही होती है और हाथी, गेंडे, वाघ, भैसे वनैली गाय

इत्यादि सब प्रकारके वनैले जन्तु रहते है और वहुतेरे आश्चर्य्य गुफा और खोह देखनेमे आते है, जिनमेंसे चेरापुंजी और रूपनाथका खोह वहुत प्रसिद्ध है। रूपनाथका खोह भूमिमें वहुत दूर तक फैला है। कचारकी सीमापर कपिली नदीके किनारे एक गर्म झरना है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १६९३० मनुष्य थे; अर्थात् १६०९७६ आदि निवासी अर्थात् पहाडी और जङ्गली जातियॉ, ५६९२ हिन्दू, २१०७ कृस्तान, ५७० मुसलमान और १५ ब्राह्म।

इस जिलेमें स्त्रियाँ मालिक है। पुरुष विवाह करनेके पश्चात् अपने ससुरके घरमे रह जाता है। जो धन सम्पत्ति पुरुष अपने घरसे ले आता है, वह उसके मरनेपर उसकी सवसे छोटी वहिन पाती है, और विवाहके पहलेकी सम्पूर्ण जायदादकी वही वारिस होती है। विवाहके पश्चातकी प्राप्त हुई जायदाद मृत पुरुषकी स्त्री और लडके पाते हैं, किन्तु जिलेके भिन्नभिन्न प्रान्तमें यह रीति वदली हुई है। दक्षिणी ढालु और घाटियोंके निवासी विवाहके पहले और पीछेकी उपार्जनकी हुई सम्पत्तिमें भेद नही मानते। वहॉ मृत पुरुषकी सन्तान सम्पूर्ण धन सम्पत्तिकी मालिक होती है। खसिया और जयन्ती पहाडियोंमें केवल शिलांग और जोआई अङ्गरेजी स्टेशन और चेरापुञ्जी और शोलापुञ्जी देशी कसवा है। गौहाटी और शिलांगके वीचमें गाडीकी एक अच्छी सडक सन् १८७७ में वनाई गई। उसके कई एक वर्ष पीछे सन् १८८३ में वह चेरापुंजी तक ३० मील वढ़ाई गई।

इस जिलेमें नारंगी, आलू, तेजपात और सुपारी बहुत होती हैं। जयन्ती पहाड़ियोंमे हल चलता है, किन्तु खसिया पहाडियोंमें केवल कुदालसे खेती होती है।

चेरापुजी—खसिया पहाडियोंके दक्षिण भागमें जेठसे कार्तिक तक भारी वर्षा होती है। चेरापुजीके पास, जो इस जिलेमें शिलांगसे ३० मील दक्षिण है, सन् १८७७ से १८८१ तक ४६३ इञ्च वर्षा हुई थी। लोग कहते है कि दुनियाँकी जानी हुई वर्षासे सवसे वड़ी वर्षा सन् १८७६ के १६ जूनको चेरापुंजीमें हुई। उस समय २४ घण्टेमें ३४ इञ्च पानी गिरा था। सन् १८६१ में ८०५ इञ्च वर्षा हुई, जिसमेंसे केवल जूनमें ३६६ इंच हुई थी।

इतिहास—अङ्गरेजी सरकारने सन् १८३५ में जयन्तीके राजा राजेन्द्रसिंहसे जयंती पहाडियॉ छीन लीं। खसियाका राजा सन् १८३३ में सरकारके आधीन हो चुका था। पहले इस जिलेका सदर स्थान चेरापुञ्जी था, किन्तु सन १८६४ में शिलाङ्ग सदर स्थान वनाया गया। सन् १८७४ में जब आसाम एक चीफ कमिश्नरके आधीन हुआ तव शिलाङ्ग चीफ कमिश्नरका सदर स्थान वना।

आसाम देश—आसाम देशका क्षेत्रफल ४९००४ वर्गमील है। इस देशमें कितनीही जगह अवतक नापी नही गई है। देशके उत्तर भूटान; पूर्वोत्तर मिश्मी पहाडियाँ, पूर्व ब्रह्मा और मनीपुरका राज्य, दक्षिण लुसाइयोके रहने वाली पहाडियॉ, टिपरा जिला और टिपराका राज्य और पश्चिम सूवे वङ्गालमें मैमनसिंह, रगपुर और जलपाईगोडी जिले तथा कूचविहारका राज्य है।

यह देश ब्रह्मपुत्र नदीके दोनो टारपर चीनकी सीमा तक चला गया है। और स्वाभाविक ३ भागोंमें वटा है; अर्थात् ब्रह्मपुत्र घाटी, सुरमा घाटी, और मध्यके पहाडी देशमें। इनमें पहाडियाँ और जङ्गल वहुत है, जिनमें दफला, मीरी, मिश्मी, नागा, कूकी, लुशाई

इत्यादि जङ्गली जातियाँ बहुत रहती हैं। भारतवर्षका कोई भाग इस देशके समान आर्द्र नहीं है। इसकी प्रधान नदी ब्रह्मपुत्र और सुरमा है, किन्तु लगभग ४० नदियाँ ऐसी हैं, जो वर्षभरमें किसी समय थाह नहीं होतीं। चैत्रसे कार्तिक तक बडी वर्षा होती है। यह देश चायके उपजके लिये प्रसिद्ध है। चायके बागोंमे काम करनेके लिये दूर दूरके देशोंसे आसाममे कुली लाये जाते है। आसाममे लोहा और कोयला बहुत निकलताहै। जङ्गलोंमे हाथी और गैंडे बहुत रहते हैं। बहुतेरे लोग जङ्गलोंसे हाथियोंको बझाकर दूसरे देशोंमें लेजाते हैं। जंगली लोग तसरके कीड़ोंको ले आते हैं। इस देशमें भूडोल बहुधा हुआ करता है।

आसाम प्रदेशमें ११ जिले है,–सिलहट, कचार, ग्वालपाड़ा, कामरूप, दरंग, नवगॉव, शिवसागर, लखिमपुर, नागा, खसिया पहाड़ियाँ और गारू। खसिया पहाड़ियाँ जिलेके शिलाङ्गमें आसामके चीफ कमिश्नर रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय आसाम देशमें ५४७६८३३ मनुष्य थे, अर्थात् २८१९५७५ पुरुष और २६५७२५८ स्त्रियां। इनमेंसे २९९७०७२ हिन्दू, १४८३९७४ मुसलमान, ९६९७६५ जंगली जातियाँ इत्यादि, १६८४४ कृस्तान, ७६९७ बौद्ध, १३६८ जैन, ८३ सिक्ख, ५ यहूदी और २५ अन्य थे। इनमें सैकडे पीछे बंगाली भाषा वाले ५० मनुष्य, आसामी भाषा वाले २५¾ मनुष्य, हिन्दी वाले ४¾ मनुष्य, कचारी भाषाके ३½ मनुष्य, खासी भाषा वाले ३¼ मनुष्य, गारो भाषा वाले २¼ मनुष्य और अन्य भाषा वाले ११ मनुष्य थे।

आसामके कसबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य–गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	कसबा	जिला	जन-संख्या
१	सिलहट	सिलहट	१४०२७
२	गोहाटी	कामरूप	१०८१७
३	डिब्रुगढ़	लखिमपुर	९८७६
४	बरपेटा	कामरूप	९३४२
५	सिलचर	कचार	७५२३
६	शिलाङ्ग	खसिया पहाडी	६७२०
७	ग्वालपाड़ा	ग्वालपाड़ा	५४४०
८	शिवसागर	शिवसागर	५२४९

अति पूर्व कालमे आसाम प्रदेश महाभारतमें प्रसिद्ध राजा भगदत्त और उनके उत्तराधिकारियोंके आधीन था। बाद लगभग १३ वीं सदीमें वह 'अहम' नामक पहाडी जातियोंके अधिकारमें हुआ। अङ्गरेजी गवर्नमेन्टने सन् १७६५ ई० में आसामके सिलहट और ग्वालपाडा जिलेका, सन् १८२६ में आसामका निचला भाग, सन् १८३० में राजा गोविन्दचन्द्रके विना वारिस मृत्यु होनेपर कचारके मैदानका भाग; और सन् १८३८में राजा पुरंदरसिंहको निकालकर घाटीका ऊपरी हिस्सा अपने राज्यमें मिला लिया। अङ्गरेजी अधिकार बहुत समयमें धीरे धीरे पहाडी देशोंपर फैलता गया। एक अङ्गरेजी अफसर सन् १८६८ में नागा

पहाड़ीके 'समागुतीङ्ग' में रक्खा गया; किन्तु नागा जातियोंकी एक असभ्य जाति अब तक स्वाधीन है। सन् १८७४ मे ११ जिले बंगालके लेफ्टिनेन्ट गवर्नरके अधिकारसे निकालकर एक चीफ कमिश्नरके आधीन आसाम देश बनाया गया।

सिलहट।

शिलाङ्गसे ३० मील दक्षिण कुछ पश्चिम चेरापूँजी और चेरापूँजीसे लगभग ३० मील दक्षिण कुछ पूर्व (२४ अंश, ५३ कला, २२ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ५४ कला, ४० विकला, पूर्व देशान्तरमे) सुरमा नदीके दहिने अर्थात् उत्तर किनारेपर आसाम देशमें प्रधान कसबा और एक जिलेका सदर स्थान सिलहट कसबा है। शिलाङ्गसे सिलहट तक चेरा होकर सडक बनी हुई है और नारायणगञ्जसे, जो सिलहटसे पश्चिम दक्षिणकी ओर बंगाल प्रदेशमे है, सिलहट कसबेसे लगभग १५ मील दूर नित्य, आगबोट आता है। उस सफरमे आगबोटको दो दिन लगते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिलहट कसबेमें १४०२७ मनुष्य थे, अर्थात् ७९७६ पुरुष और ६०५१ स्त्रियाँ। इनमे ७०२० मुसलमान, ६८८८ हिन्दू, ७४ कृस्तान ३६ जैन और ९ एनिमिष्ट्रिक थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह आसाम प्रदेशमे पहला शहर है।

यूरोपियन लोगोंके मकान दो मील तक सुर्मा नदीके किनारेपर और कसबेके पीछे छोटी पहाडियोंपर छितराये हुए हैं। वहाँ मामूली सरकारी इमारतें और एक सुन्दर गिर्जा बना हुआ है। शाहजलाल नामक फकीरकी प्रसिद्ध मसजिद है, जहाँ दूर दूरसे मुसलमान यात्री आते हैं।

सिलहट तिजारती कसबा है। चावल, ढाल, चमडा, सीतलपाटी, नारङ्गी पत्तीका छाता, जेवर इत्यादि वस्तु वहाँसे दूसरे स्थानोंमे जाती हैं और कपड़ा, निमक, चीनी, रेशम, मसाला इत्यादि सामान दूसरे स्थानोंसे वहाँ आते हैं। सिलहटमें सीतलपाटी, हाथीदांत और हड्डीके जेवर, पेटाढा और मोढ़े अति उत्तम बनते हैं। वहाँके समान उत्तम नारङ्गी किसी जगह नहीं होती। वहाँ ईदके तिहवारके समय मुसलमानोंका मेला होता है, जो दो दिनों तक रहता है। सन् १८६९ के भारी भूकंपसे सिलहटकी इमारतोंको बडी हानि पहुँची थी।

सिलहट जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ५४१३ वर्गमील है, जिसके उत्तर खशिया और जयन्ती पहाडियाँ जिला, पूर्व कचार जिला, दक्षिण टिपराका राज्य और बंगालके अङ्गरेजी राज्यका टिपरा जिला और पश्चिम बङ्गालमे मैमनसिंह जिला है। जिलेके बड़े भागमे समतल भूमि है। स्थान स्थानमे छोटी छोटी पहाडियाँ, जो टीला कहलाती हैं, देख पड़ती हैं। जिलेमें नदियाँ बहुत है। आषाढसे कार्त्तिक तक जिलेका पश्चिमी भाग नदियोंके जलसे समुद्रसा देख पडता है। लोग केवल नौकाओं द्वारा आवागमन करते हैं। बाँस, ताड और दूसरे वृक्षोंके कुञ्जोंमें गाँव बने है। जिलेके दक्षिणी भागके मैदानोंमें पहाडियोंके ८ सिलसिले हैं; इनमेंसे किसीकी ऊँचाई समुद्रके जलसे १०० फीटसे अधिक नहीं है। जिलेके मध्यमे हट्टा पहाडियां है। सिलहट कसबेके निकटकी पहाडियाँ लगभग ८० फीट ऊँची हैं, जिनमेंसे

वहुतेरियों पर चायकी खेती होती है। जिलेमें सुरमा नदीकी वहुतेरी शाखा और सहायक नदियाँ वहती हैं। जिलके दक्षिण पूर्वके भागमें अच्छी लकड़ी होती है। जिलेके जङ्गली पैदावारोंमें लकडी, वास, छप्पर छाने योग्य घास; लाही, मधुमक्खियोंका मोम, मधु वृक्षके रससे वना हुआ अगर अत्तर औरजङ्गली जानवरोंमें वाघ, हाथी, भैंसा, गेंडा प्रधान है। जिलेके पूर्व दक्षिणके भागमें हाथी वझाये जाते है।

सन् १८८१ को मनुष्य-गणनाके समय सिलहट जिलेमें १९६९००९ मनुष्य थे, अर्थात् १०१५५३१ मुसलमान, ९४९३५३ हिन्दू, ३७०८ जङ्गली जातियाँ, ३७९ क्रस्तान और ३८ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें १५७१३० कायस्थ, १२९६०९ चण्डाल, १०२०६५ दास या हलवा, ८२१७० नाथ या जोगी ४९६०० पाटनी, ४५४३४ ब्राह्मण, ४०४१२ माली, ३६४२२ सूँडी, ३५४०७ कैवर्त, २७२६४ डोम, २६३३० धोवी और केवल ३६५८ राजपूत थे, शेषमें दूसरी जातियाँ थीं।

इतिहास—मुसलमानोंने १४ वीं सदीके अन्तमें सिलहट जिले पर आक्रमण करके जिलेके हिस्सेको जीता। जयन्तियाके राजाने चन्द अङ्गरेजी प्रजाओंको वलसे छीनकर कालीजोको वलि चढ़ाया; इस लिये अङ्गरेजी सरकारने सन् १८३५ ई० में उसका राज्य छीनकर अपने राज्यमें मिला लिया। राजा इन्द्रसिंह अपने मरनेके समय सन् १८६१ ई० तक ६००० रुपया वार्षिक पिंशन पाते थे। सिलहट जिला सन् १८७४ में आसाम की कमिश्नरीमें मिला दिया गया।

सिलचर।

सिलहट कसवेसे लगभग ८० मील पूर्व (२४ अंश, ४९ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अंश, ५० कला, ४८ विकला, पूर्व देशान्तरमें) वारक नदीके दक्षिण किनारेपर आसाम देशके कचार जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा तथा फौजी छावनी सिलचर है। सूखी ऋतुओंमें सिलहटसे कचार तक सुर्मा नदीमें नावपर जाना होता है। वरसातमें नारायणगञ्जसे कचार तक आगवोट चलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिलचरमें ७५२३ मनुष्य थे, अर्थात् ५१४४ हिन्दू, २२२४ मुसलमान, ८४ क्रस्तान, ६३ एनिमिष्टिक ५ जैन, १ बौद्ध, १ यहूदी और १ दूसरा।

सिलचरमें एक सुन्दर गिर्जा हालमें वना है। सिविल स्टेशन और फौजी छावनी इत्यादि सरकारी इमारत वनी हुई है। माघ मासमें एक मेला होता है, जो ७ दिन तक रहता है। मेलेमें वीस पचीस हजार मनुष्य और मनीपुरसे विकनेके लिये वहुत टांघन (घोड़े) आते हैं। सिलचरसे मनीपुर तक सड़क वनी हुई है, जिसको अङ्गरेजी गवर्नमेंटने सन् १८३२ और १८४२ ई० के वीचमें वनवाया था।

कचार जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३७५० वर्गमील है। जिलेके पूर्व मनीपुरका राज्य और नागा पहाडी जिला, दक्षिण पहाड़ी देश जिसमें लुशाई और कूकी पहाडी लोग रहते हैं, पश्चिम सिलहट जिला और जयन्ती पहाडी और उत्तर कपिली और ढ्याग नदी वाद नौगाँव जिला है जिलेका सदर स्थान सिलचर है। कचार जिलेके ३ ओर पहाड़ियोंके ऊंचे सिलसिले है, केवल पश्चिम सिलहटकी ओर खुला मैदान है। मध्यमें एक नदी पूर्वमें

पश्चिम बहती है, जिसमें वर्षाकालमें आगबोट चलता है। बारक नदी कचार जिलेमें १३०मील बहतीहै इन नदियोंको सहायक बहुतेरी छोटी नदियाँ है। पहाडियोंके नीचे ढालूभूमिपर चायके बाग है। जगह जगह नीची भूमिपर भाँगकी खेती होतीहै। बाँस और फलदारवृक्षोंके कुञ्जोंमे जिनका दृश्य मनोरम है, लोगोंकी झोपड़ियाँ बनी हुई है। जङ्गलोंमे हाथी, गेंडे, भैंसे, बाघ और बनैली बिल्ली देखनेमें आती है। खास करके भैंसोसे खेत जोते जाते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कचार जिलेमें ३१३८५८ मनुष्य थे; अर्थात् २८९४२५ मैदानमे और २४४३३ पहाड़ी देशमें। इनमेसे मैदानमे १८६६५७ हिन्दू, ९२३९३ मुसलमान, ९५७० पहाड़ी जाति, ७६५ कृस्तान, और ४० ब्राह्म और पहाड़ी देशमें १०९४७ हिन्दू, ३ मुसलमान, २ कृस्तान, और शेप पहाड़ी जङ्गली मनुष्य थे। जातियोंके खानेमें कचारी ४४२५ मैदानमे और १०८९० पहाडियोंमे, कूकी और लुशाई २७९४ मैदानमें और ६४२० पहाड़ियोंमें, नागा ५९८४ मैदानमें और ४०२१ पहाड़ियोंमे; मिकिर ६५९ मैदानमें और ३०४५ पहाड़ियोंमें थे, शेषमे-अन्य जातियाँ थीं। कचार जिलेमे कूली बहुत है। इस जिलेके लोग धानकी खेती या चायके बागोंमे काम करते है। जिलेमे सिलचरके सिवाय ५००० से अधिक मनुष्योंकी कोई बस्ती नही है।

इतिहास—सन् १८३० ई० मे पिछला कचारी राजा मारा गया और देश अङ्गरेजी गवर्नमेन्टके अधिकारमे आया। खियाल किया जाता है कि उस पहाड़ी देशमे कचारी राजा लोग रहते थे, जहाँ अब नागा जातिके लोग बसते है। उनकी राजधानी पहाड़ियोंके पावके निकट दीमापुर था। कचारके उत्तर भागके पहाड़ी देशमे अबतक कचारी लोग बसते है। कचार जिलेमें भूकंप बहुत होता है। सन् १८६९ ई० की १० वीं जनवरीके भूकम्पसे सिलचरका गिर्जा और सरकारी इमारतें गिर गई, बाजारका बड़ा भाग उजड़ गया और पृथ्वीमे दरार हो गये और सन् १८८२ ई० के १३ वीं अकतूबरके भूकम्पसे सिलचरकी पक्की इमारतोंकी बडी हानि हुई।

मनीपुर।

कचारसे १०८ मील पूर्व आसाममे देशी राज्यकी राजधानी मनीपुर है। कचारसे मनीपुरतक पहाड़ी सड़क बनी है। नागापहाड़ी जिलेके कोहिमा छावनीसे १८ मील दूर माओ है। माओसे दक्षिण मनीपुर तक घोडे चलने योग्य एक पहाड़ी सड़क है।

सन् १८९१ ई० से मनीपुरके राजा कुलचन्द्रने आसामके चीफ कमिश्नर और अन्य बडे अङ्गरेजोंको मारडाला, इस लिये अङ्गरेजी सरकारने उनके महलका बड़ा भाग और उनका देवमन्दिर तोड डाला। राजाका खास महल छोड़ दिया गया है। राजा काला-पानी भेजा गया। अब मनीपुरका एक छोटा लड़का राजा बनाया गया है। राज्यका प्रबंध अङ्गरेज महाराज करते है। मनीपुरमें रेजीडेंसी है और अङ्गरेजी सेना रहती है।

मनीपुर राज्य—इसके उत्तर नागा पहाड़ी जिला और पहाड़ी देश, जिनमें नागा जातिके लोग बसते है और दूसरे लोग नहीं जासकते पश्चिम कचार जिला, पूर्व ब्रह्माका एक भाग और दक्षिण लुशाई, कूकी और सूती लोगोंका देश है। इस राज्यमें सख्त पहाड़ी देशके भीतर एक फैली हुई घाटी है। राज्यका क्षेत्रफल लगभग ८००० वर्गमील और खास घाटीका क्षेत्रफल ६५० वर्गमील है। साधारण तरहसे पहाड़ी सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको गये हैं

'लोगताक' झीलके दक्षिणकी घाटी वासके जंगलसे पूर्ण विना वृक्षकी है, किन्तु राज्यके उत्तर और पूर्वके भागमें वहुत वस्तियां देखनेमें आती हैं । फासिलेपर उत्तरकी पहाडियोके नीचे एक कोनेमें राजधानी मनीपुर है । देशके दूसरे भागोंकी अपेक्षा राजधानीके आस पासका देश अधिक आवाद है । कई एक नदियाँ उत्तर और पश्चिमसे लोगताक नामक झीलमें प्रवेश करती है । लोगताक झील वहुत वडा है, किन्तु प्रतिवर्ष छोटा होता जाता है। घाटीकी लम्बाई लगभग ३६ मील और इसकी सवसे अधिक चौडाई लगभग २० मील है। घाटीके वहुतेरे कूपोंसे नमक निकलता है, जिनमें प्रधान कूप राजधानीसे १४ मील पूर्वोत्तर पहाड़ियोके पादमूलके निकट है । यही सव नमक मनीपुरमे खर्च होता है। घाटीमें कोई प्रसिद्ध नदी नहीं है । सव नदियोमे वड़ी वारक नदी है। जंगलोंमें विविध प्रकारके वृक्ष देखनेमें आते हैं। बाँसके जंगल सर्वत्र लगे हुए हैं । पहाडी देशमे वहुतेरे हाथी, वाघ, तेन्दुये और भालू विचरते हैं। पूर्व और दक्षिणके भागमे गेंडे मिलते हैं। ऐसा जान पडता है कि मनीपुर राज्यमें जहरीले सर्प नहीं है।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय मनीपुर राज्यमे ९५४ वस्तियाँ ४५३२२ मकान और २२१०७० मनुष्य थे, अर्थात् १३०८९२ हिन्दू, ८५२८८ पहाडीकोम, ४८८१ मुसलमान, ७ कृस्तान और २ वौद्ध ।

मनीपुर राज्यकी स्त्रियाँ बड़ी परिश्रमी हैं । खेतीके कामोके अतिरिक्त खरीदना, वेचना इत्यादि वहुतेरे कामोको वही करती हैं । भारतवर्षके किसी स्थानमे मनीपुरकी स्त्रियोंसे अधिक परिश्रम करनेवाली स्त्रियाँ नहीं हैं। वहाँ तिजारत, दुकान्दारीका काम प्राय. सव स्त्रियांहीं करती हैं।

राज्यके उत्तर भागमें खास करके नागा लोग और दक्षिण भागमे कूकी लोग वसते है। नागा लोग मामूली तौरसे पगड़ी नहीं वाँधते, किन्तु कूकी लोग सर्वदा सिरपर पगडी रखते हैं।

राज्यमे धान, कपास, तेलके बीज, आलू, मकई, तम्वाकू और अनेक प्रकारकी तरकारियाँ होती हैं। मनीपुरके टाँघन घोड़े प्रसिद्ध हैं। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८३२ और १८४२ ई० के मध्यमें मनीपुरसे कचार तक सडक वनवा दी। सन् १८८३ ई० में घोड़े चलने योग्य एक अच्छी सड़क मनीपुरसे कोहिमासे १८ मीलकी दूरीपर है, जो वनाई गई। इनके अलावे घाटीमें देशी सौदागरीके योग्य कई एक कच्ची सड़के हैं।

इतिहास—सन् १७१४ ई० में 'पामहीवा' नामक नागा हिन्दू मतमे आकर गरीवनेवाजके नामसे मनीपुरका राजा वना। उसने कई वार ब्रह्मा मुल्कपर चढाई की। उसके मरनेके पश्चात् ब्रह्मावालोने मनीपुरपर आक्रमण किया। तव मनीपुरके राजा जयसिंहने अङ्गरेजी सरकारसे सहायता मांगी। सरकारने फौज भेजी, किन्तु पीछे वह लौटा ली गई । सन १८२४ मे अंगरेजी सरकार और ब्रह्माके राजाकी पहली लड़ाई आरम्भ हुई । जव ब्रह्मा वालोंने कचार, आसाम और मनीपुर पर आक्रमण किया तव मनीपुरकेराजा गम्भीरसिंहने अंगरेज महाराजसे सहायता मांगी। अंगरेजी सरकारने अपनी फौज कचारकी ओर भेजी और दुश्मनोंको खदेरकर कूवोघाटी ले ली। सन् १८३६ में जव सरकारको ब्रह्मावालोंसे सन्धि हुई तव उन्होंने मनीपुरको स्वाधीन वनाया। सन् १८३४ मे गम्भीरसिंह मर गया,

उस समय उसका पुत्र चन्द्रकीर्तिसिंह केवल एक वर्षका लडका था, इस लिये उसका चचा (गरीबनेवाजका परपोता) नरसिंह राज्यका मालिक बना। सन् १८३४ में अङ्गरेजी सरकारने ब्रह्माके राजाको कूबोघाटी लौटा दी और उसके बदलेमे मनीपुरके राजाको सालाना ६०३७० रुपया देना कबूल किया। सन् १८५० मे राजा नरसिंहकी मृत्यु होनेपर उसके भाई देवेन्द्रसिहको अङ्गरेजी गवर्नमेन्टने मनीपुरका राजा बनाया, किन्तु ३ महीनेके बाद गम्भीरसिहके पुत्र चन्द्रकीर्तिसिहने मनीपुर पर आक्रमण किया। देवेन्द्रसिह कचारकी ओर भाग गया और चन्द्रकीर्तिसिंह राजा बन गया। सन् १८५१ की फरवरीमें अङ्गरेज महाराजने उसको राजा कबूल किया। सन् १८७९ मे नागा लोगोकी लडाईके समय चन्द्रकीर्ति सिंहने अङ्गरेजी सरकारकी सहायता की, इसकी कृतज्ञतामें सरकारने उसको के. सी. एस आई की पदवी दी।

सन् १८९० ई० में महाराज शूरचन्द्रसिह मनीपुरके राजा थे। उनके छोटे भाई कुलचन्द्रसिह युवराज और कुलचन्द्रसे छोटे भाई टिकेंद्रजितसिंह सेनापति थे और उनसे भी छोटे भाई अङ्गसिंह 'पक्कासेना' का काम करते थे इनके अलावे महाराजके और भी ४ भाई थे। टिकेन्द्रजितसिंहने महाराजके विरुद्ध विद्रोह मचाया। तारीख १२ सितम्बरकी आधी रातमें महाराज शूरचन्द्रसिहने 'पक्कासेना' और कई एक सेवको सहित भागकर रेजीडेन्सीमें पनाह लिया और दूसर दिन वृन्दावन जानेके बहाने करके अपने लोगोके साथ कलकत्तेका मार्ग पकडा। उसने कलकत्तेमें पहुँचकर भारत गवर्नमेन्टसे सहायता मांगी। बड़ेलाट लार्ड लैंसडौनने उनको सहायता नहीं की। उन्होंने युवराज कुलचन्द्रको मनीपुरके महाराज बनाने और सेनापति टिकेन्द्रजितसिंहको मनीपुरसे निकाल देनेके लिये आसामके चीफकमिश्नर क्विन्टन साहबको मनीपुर जानेकी आज्ञा दी। आज्ञापत्रमे लिखा था कि, टिकेन्द्राजितसिह मनीपुरमे नही रहे, तो गवर्नमेन्ट कुलचन्द्रसिंहको मनीपुरका महाराज स्वीकार करेगी। क्विन्टन साहब चार पॉच सौ आदमियों सहित जिनमें १७५ सिपाही थे, मनीपुर चले। उन्होंने मनमें निश्चय किया कि दरबारमें युवराज, सेनापति आदिको बुलाकर गवर्नमेन्टकी आज्ञा सुनादें और उसी समय सेनापति टिकेन्द्रजितसिंहको पकड लें। तारीख २२ मार्चको जब चीफकमिश्नर साहब मनीपुरकी राजधानीसे कुछ दूरही थे, तब सेनापति २ पल्टन अपने साथ ले उनके स्वागतके लिये उनसे जा मिले। साहबके राजधानीके पास पहुंचनेपर युवराज कुलचन्द्रसिंह भी उनसे मिले। चीफकमिश्नरने दरबारके लिये दोपहर दिन नियत किया। दरबारके समय युवराज थे; पर सेनापति नही आये इस लिये दरबार नहीं हुआ। साहबने युवराजके पास कहला भेजा कि विना सेनापतिके आये दरबार नहीं होगा। दूसरे दिन ८ बजे दरबारके समय भी सेनापति नहीं आये तब दरबारका समय १ बजे नियत हुआ। उस समय भी वह नहीं आये, तब मनीपुरके रेजीडेन्ट ग्रिमउड साहबने मनीपुरके दरबार गृहमें जाकर बडे लाटकी आज्ञा युवराज कुलचन्द्रसिंहसे कह सुनाई और उनके पीछे सेनापतिको समझाया कि आप मनीपुरसे चले जाइये, पर सेनापतिने उनका कहना स्वीकार नही किया। चीफकमिश्नरने राजमहलमें मनीपुरी सेनाको प्रवेश करते देखकर रेजीडेन्सीके हातेको दृढकर रक्खा। ता० २४ मार्चको चीफकमिश्नरने अङ्गरेजी सेनाको सेनापतिको पकडनेकी आज्ञा दी। सबेरे ५ बजे अङ्गरेजी सेनाका

आक्रमण आरम्भ हुआ। मनीपुरी सेना उनसे लड़ने लगी। दिनभर युद्ध होता रहा। कई अङ्गरेजी अफसर घायल हुए। शामको अङ्गरेजी सेना परास्त होकर रेजीडेन्सीके हातेमे भाग गई। मनीपुरी सेनाने रेजीडेन्सीके मकानको घेरलिया। इसके पीछे चीफकमिश्नर और कई एक अन्य अङ्गरेज युवराज और सेनापतिसे सन्धिकी बात करने गये। उसी समय मनीपुर वालोंने उनको कैद कर लिया। कई अङ्गरेज मारे गये। रेजीडेन्सीके भीतरके लोग निकल भागे। मनीपुरियोंने रेजीडेन्सीको जला दिया। चीफकमिश्नर किंटन साहब, इत्यादि ५ अङ्गरेज घातको द्वारा दावसे काट डाले गये। पीछे मनीपुर वालोंने सब देशी कैदियोंको छोड दिया।

यह खबर पाकर अङ्गरेजी सेनाने तीन ओरसे मनीपुरपर चढाई की, एक कोहिमा होकर, दूसरी तम्म स्थान होकर और तीसरी सिलचर होकर। लगभग ३० अप्रैलको मनीपुरी सेना कुछ मुकाबिला करनेके पश्चात् परास्त होकर भागी। अङ्गरेजी सेनाने राजधानीपर अपना अधिकार कर लिया। किन्टन साहब आदि कई एक मृत अङ्गरेजोंके सिर राजभवनके आगनमें गडे हुए मिले, जो मरनेके ३८ दिन बाद दफन किये गये। अङ्गरेजोंने महाराजके मन्दिर और राजमहलका बडा भाग तोड दिया। युवराज कुलचन्द्रसिंह, सेनापति टिकेन्द्रजितसिंह इत्यादि प्रधान लोग क्रम क्रमसे पकडे गये। विचार करनेके लिये मनीपुरमें एक कमीशन बैठा। सेनापति 'टिकेन्द्रजितसिंह' नायब सेनापति, बूढा तोंगल जेनरल और बहुतेरे अन्य राजकर्मचारी फॉसी दिये गये और युवराज कुलचन्द्रसिंह, उनके भाई अङ्गसिंह इत्यादि बहुतेरे लोग कालापानी भेजे गये। इनके लडके बाले मनीपुरसे निकाल दिये गये। राजवंशका एक छोटा लडका मनीपुरका राजा बनाया गया। राज्यका प्रबंध अङ्गरेजी अफसर द्वारा होने लगा।

दसवां अध्याय।

(आसाम देशमें) तेजपुर, नवगाँव, शिवसागर, कोहिमा, डिब्रुगढ़ और परशुरामकुण्ड।

तेजपुर।

गौहाटीसे लगभग ८० मील पूर्वोत्तर आसाम प्रदेशमें ब्रह्मपुत्र नदीके दहिने अर्थात् उत्तर किनारेपर (२६ अंश, ३७ कला, १५ विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अंश, ५३ कला, ५ विकला, पूर्व देशान्तरमें) दरंग जिलेका प्रधान कसबा और सदर स्थान तेजपुर है। तेजपुरके निकट भैरवी नदी ब्रह्मपुत्रमें मिली है। पहाडियोंके दो सिलसिलोंके बीचके मैदानमे तेजपुर बसा है। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इसमें २९१० मनुष्य थे।

पहाडीपर यूरोपियन लोगोंकी कोठियाँ बनी हैं। देशी बस्तीमें खपडे और लोहेकी चादरसे छाये हुए बहुतेरे पक्के मकान हालमें बने हैं। वहाँ मामूली अनेक सिविल आफिस, जेलखाना, एक खैराती अस्पताल और एक अङ्गरेजी स्कूल है।

कचहरीके आसपास बहुतेरे स्तंभ और नकाशीदार पत्थर पडे हुए हैं, इससे अनुमान होता है कि पूर्व कालमें तेजपुर प्रसिद्ध स्थान था। तेजपुरके पडोसके जङ्गलमे बहुतेरे मन्दिरोंकी निशानियाँ देख पडती हैं। उस देशमें तेजपुर प्रसिद्ध तिजारती जगह है। वहाँ चायवाले यूरोपियन बहुत रहते है। चाय उत्पन्न होनेके लिये वह बहुत प्रसिद्ध स्थान है।

दरंग जिला––इसके उत्तर भुटिया, आका और डफला पहाडियाँ, पूर्व एक नदीके बाद लक्खिमपुर जिला, दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदी और पश्चिम कामरूप जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३४१८ वर्गमील और सदर स्थान तेजपुर है।

जिलेमे कई एक नदियाँ बहती हैं। मनुष्य संख्या कम है। खेती कम होती है नरकट और बेंतके सघन जङ्गल है। हाथी, भालू, गेंडे, भैसे, बाघ इत्यादि विविध प्रकारके बनैले जन्तु रहते हैं। हिंसक जन्तुओंके मारनेवालोंको सरकारसे इनाम मिलता है। सन् १८८२–१८८३ में हाथी बझानेवालोसे सरकारको २५६० रुपया महसूल मिला था। कई एक नदियोंमें खास करके भीवानीमें बालू धोकर सोना निकाला जाता है। कई एक नदियाँ मैदानमे कुछ दूर जाकर बालूदार भूमिमे गुप्त हो जाती हैं। और कई एक मीलके पश्चात् फिर प्रकट होकर बहती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय दरंग जिलेमे २७३३३३ मनुष्य थे, अर्थात् २५१८३८ हिन्दू, १४६७७ मुसलमान, ४८५२ पहाडियोके मतवाले, ७२३ बौद्ध, ३७१ कृस्तान, २७ जन और १८ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें ७२२०० कचारी, ४२०६१ कोच, २४४६० कलिता, १६६०९ जोगी (रेशम विननेवाले) १५०९० राभा, १३९७० कंवट, ९४१८ डोम, (मछुहा), ८९२९ ब्राह्मण, ८७९८ गनक और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं, क्षत्री केवल ७२४ थे। जिलेमें सबसे वडा कसबा तेजपुर, सबडिवीजन मङ्गलदाई और तिजारती बस्ती बिश्वनाथ, हवाला मोहनपुर, नलबाड़ी और करुआगाँव है।

नवगाँव।

तेजपुरके दक्षिण ब्रह्मपुत्रके दूसरे पार अर्थात् उससे दक्षिण और कलंगा नदीके पूर्व किनारेपर आसाम प्रदेशमें जिलेका सदर स्थान नवगाँव एक छोटा कसवा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उसमे ४२४८ मनुष्य थे। नवगाँवमें जिलेकी सरकारी इमारतेंऔर आफिस बने हुए है और लकडी, बाँस तथा फूससे बनी हुई झोपडियोमें वहाँके लोग रहतेहै।

नवगाँव जिला–इसके उत्तर ब्रह्मपुत्र नदी बाद दरङ्ग जिला, पूर्व शिवसागर जिला और नागा पहाडियाँ, दक्षिण खासिया और जयन्ती पहाडियाँ जिला और पश्चिम कामरूप जिला है। वह जिला ३४१७ वर्ग मील क्षेत्रफलमे फैला है। जिलेके पूर्वोत्तरके कोनेमे मिकिर पहाडी और पूर्व भागमे ब्रह्मपुत्रके दक्षिण किनारेसे कलङ्गा नदीके उत्तर किनारे तक कामाख्या पहाडी फैली है। उसके एक शिखरपर दुर्गादेवीका मन्दिर है। पहाडीके ढालुओंपर चायकी खेती होती है। कामाक्षाका प्रसिद्ध मन्दिर कामरूप जिलेमें है।

जङ्गलोंमे लाही मधुमक्खियोका मोम, गोंद इत्यादि वस्तु होती हैं। जङ्गली जन्तु प्रतिसाल बहुतेरे लोगोंको मार डालते है। उनको मारनेवाले मनुष्योको गवर्नमेण्टसे निरमित इनाम मिलता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ३१०५७९ मनुष्य थे, अर्थात २४९७१० हिन्दू, ४८४७८ पहाड़ी जङ्गली कोम, अर्थात् मिकिर, गारो और कूकी १२०७४ मुसलमान, २५४ कृस्तान, ३२ जैन और ३१ ब्रह्मो। जातियोंके खानेमें ४७४९७ मिकिर, ४२८७८ कोच, ४१६९५ लालुन, २५५५३ डोम, २३१४४ कलिता, १७८९६ केवट, १६६०९ काटनी, १२५५५ कचारी और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। इनमे ७५०२ ब्राह्मण, २३१२ कायस्थ और केवल ७७ राजपूत थे। नवगॉव जिलके जलवायु अत्यन्त रोगवर्द्धक हैं।

शिवसागर।

नवगॉवसे १०० मीलसे आधिक पूर्वोत्तर और डिब्रुगढ़से तीस चालिस मील दक्षिण पश्चिम ब्रह्मपुत्र नदीके दक्षिण किनारेसे ९ मील दूर एक छोटी नदीके किनारेपर (२६ अंश ५९ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ९४ अंश, ३८ कला, १० विकला, पूर्व देशान्तरसे) आसाम प्रदेशके जिलेका सदर स्थान शिवसागर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय शिवसागरमें ५८६८ मनुष्य थे, अर्थात्४४२५ हिन्दू, १३५१ मुसलमान और ९२ कृस्तान।

शिवसागर अहम वंशके राजाओंकी राजधानियोंमेसे एक था। अब तक उस समयका एक उत्तम तालाव ११४ एकड़ क्षेत्रफलमे फैला हुआ है। उसके किनारेपर बहुतेरे पुराने मन्दिर विद्यमान हैं। नदीके दोनों किनारोंके बाजारोमे लोहेसे छाये हुए बहुतेरे मकान और कई एक अच्छी दुकानें बनी है प्रति दिन हाट लगता है। मारवाड़ी सौदागर रहते हैं। चावल और खास करके चाय शिवसागरसे अन्य स्थानोंमें भेजे जाते हैं। तालावके बाँधके आस पास सरकारी इमारत और यूरोपियन लोगोंकी कोठियाॅ बनी हैं।

शिवसागर जिला—जिलेका क्षेत्रफल २८५५ वर्ग मील है। इसके उत्तर और पूर्व लक्खिमपुर जिला, दक्षिण नागा पहाड़ियाॅ जिला और पश्चिम नवगॉव जिला है। जिलेमें जङ्गल वास और, ब्रह्मपुत्रकी सहायक बहुत नदियाॅ हैं। जिलेके भीतर कोई पहाड़ी नहीं है। उत्तरकी सीमापर ब्रह्मपुत्र नदी बहती है। खेती योग्य अच्छी भूमि है। जंगलोंमें हाथी गेंडे, बाघ, भालू, भैंसे इत्यादि सब प्रकारके वनजन्तु मिलते है। सन् १८८२—१८८३ में जङ्गली हाथियोंको बझानेवाले लोगोंने सरकारको ८००० रुपया दिया था।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ३७०२७४ मनुष्य थे, अर्थात् २१५२२४ आदि निवासी, जो अपने मतपर अब तक चलते हैं और जो अब हिन्दूके मतपर चलते है, १३९०७५ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, ३०७ यूरोपियन और यूरेशियन, और ३ चीनी। इनमे मजहबके अनुसार ३३९६६२ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, १३८२९ आदिनिवासी जो अपने पुराने मतपर चलते है, ८०४ कृस्तान, २७६ बौद्ध, ३७ जैन और १ ब्रह्मो थे। जातियोंके खानेमें ११७८७२ अहम, ३३८१२ कलिता, २९९५२ चटिया, २४२४८ कोच, २२८६७ डोम, १८४९२ भूमिज, १९७५३ कचारी, १७७३६ केवट, ११६०७ ब्राह्मण, १०८३६ मीरी, ५४०४ कतानी और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं, जिनमें ३१०९ कायस्थ, और १४२८ राजपूत थे। इस जिलेके जारहाट और गोलाघाटमें सौदागर लोग रहते हैं। नजीरामें आसामके चाय कम्पनीका सदर स्थान है। जिलेमें मारवाडी खास करके सौदागरी करते हैं।

इतिहास—शिवसागर जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार होनेसे पहिले अहम वंशके राजाओने ४०० वर्ष तक राज्य किया था। उनसे पहिले चटिया लोगोंका अधिकार था। अहम लोगोकी पहली राजधानी शिवसागर कसबेसे थोडा दक्षिण-पूर्व गढ़वालमें थी। वहाँ अब तक दूर तक खण्डहर देखनेमें आते है। राजमहल लगभग २ मील लम्बी, ईंटोकी दीवारसे घेरा हुआ था। वहाँ सम्पूर्ण स्थानमे जङ्गल लग गया है। अहम लोगोकी दूसरी राजधानी शिवसागर कसबेके दक्षिण रङ्गपुर था, जिसको सन् १६९८ ईस्वीमें राजा रुद्रसिंहने नियत किया था। उसके महलका खण्डहर और उसका बनवाया हुआ 'जयसागर' में एक मन्दिर घने जंगलमें अब तक विद्यमान है। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा रुद्रसिंहके बडे पुत्र शिवसिंहने लगभग सन् १७२२ मे ११४ एकडमे शिवसागरके बडे तालाबको बनवाया। सन् १७८४ तक रङ्गपुर अहम लोगोकी राजधानी थी। उस वंशके राजा गौरीनाथ अपनी प्रजाओंके बागी होनेपर डिसाई नदीके किनारे पर जोराहाटमे भाग गया। वहाँ वह सन् १७९३मे मरगया।

अङ्गरेजी सरकाने इस देशके हुकूमत करनेवाला पुरन्दरसिंहको नियत खिराजपर शिवसागर देदिया था, किन्तु सन् १८३८ मे उसको राज्यच्युत करके शिवसागरको अपने अधिकारमे कर लिया।

कोहिमा।

आसाम प्रदेशमे नागा पहाडी जिलेका प्रधान स्थान कोहिमा एक गाँव और फौजी छावनी ह। वहाँ जिलेके सिविल आफिस बने है। कोहिमासे १८ मील दूर माओ है। अङ्गरेजी सरकारने सन १८८३ ई० मे माओसे मनीपुर तक घोडे चलनेके योग्य सडक बनवा दी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोहिमा और फौजी छावनीमे १३८० मनुष्य थे, अर्थात् १३५१ पुरुष और २९ स्त्रियां। इनमें १२५९ हिन्दू, ९४ मुसलमान, २५ कृस्तान और २ दूसरे थे।

नागा पहाडी जिला—यह जिला नौगाँव जिला और मनीपुरके राज्यके मध्यमें है। इसके उत्तर शिवसागर जिला, पश्चिम नवगाँव जिला और दक्षिण मनीपुरका राज्यहै। इसका क्षेत्रफल लगभग ६४०० वर्गमील है। जिलेका सदर स्थान कोहिमा स्टेशन है। जिलेमे सर्वत्र जङ्गल, पर्वत और नदिया है। सर्वत्र मनुष्य नहीं जासकते। घाटियाँ और पहाडियाँ सघन बनोसे ढपी हुई हैं। स्थान स्थानपर छोटी गहडी झील और दलदल है। मधुमक्खीका मोम, अनेक भाँतिकी दारचीनी और रंग जङ्गली पैदावार है। कोयला, पत्थरभाठ और स्लेट खानोसे निकाले जाते हैं। बहुतेरे स्थानोमें गरम झरने हैं। बनोंमें हाथी, गेडे, बाघ, तेंदुये इत्यादि बहुत होते हैं। ढाँग, धनेश्वरी और यमुना नामक नदी इस जिलेमे प्रधान नदियाँ है। इनमे बरसातमें छोटी नाव चलती हैं।

सन् १८८१ मे मोटे तौरके अनुमानसे जिलेमे ११०३०० मनुष्य थे; अर्थात् ९४००० अनेक भाँतिके नागा, ८८०० मिकिर, ३५०० कचारी, २६०० कूकी, १००० आसामी और ४०० ग्टानिया। इन लोगोंका खास हथियार बर्छी, दाव और ढाल है।

इतिहास—सन् १८६७ ई० में नागा पहाडी एक डिपुटी कमिश्नरके आधीन एक जिला बनाया गया। अबतक इस देशकी पैमाइश ठीक तौरसे नहीं हुई है। उसमें प्रायः

सम्पूर्ण आदि निवासी अर्थात् पहाडी जातियाँ बसती हैं, जिनको नागा कहते है। वे आसामके अहम राजाओंके साथ मेलसे रहते थे; किन्तु देशपर अङ्गरेजी अधिकार होनेपर उत्तर और नौगाँव और शिवसागर जिलोंमे और दक्षिण-पश्चिम कचारमें लूट पाट करने लगे। सन् १८३२ और १८५१ के बीचमें उनको डरवानेके लिये हथियार बन्द अङ्गरेजी सेनाओंने १० बारसे अधिक उनके देशी पहाडियोंमें आक्रमण किये। नागा लोग अगम स्थानोंमें रहते है। १२ वें आक्रमणके पीछे सन् १८८१ की फरवरीमें भारत गवर्नमेन्टने निश्चय किया कि कोहिमाका अङ्गरेजी अधिकार कायम रहे, एक अङ्गरेजी रेजींमेंट सर्वदा पहाडियोंमें रहा करे और जिलेका प्रबन्ध अङ्गरेजी राज्यके तौर पर किया जावे, उसके बाद गसाही सब प्रबन्ध हो गया।

डिब्रू गढ़।

शिवसागरसे ४० मीलसे अधिक पूर्वोत्तर (२७ अंश, २८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ९४ अंश, ५७ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे) ब्रह्मपुत्र और डिब्रू नदीके संगमसे ४ मील दूर डिब्रू नदीके किनारेपर आसाम प्रदेशमें लक्खिमपुर जिलेका प्रधान कसबा और सदर स्थान डिब्रूगढ है। तेजपुरसे डिब्रूगढ़ तक मार्गके पास चायके बाग फैले हुए हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय डिब्रूगढ़ और छावनीमें ९८७६ मनुष्य थे, अर्थात् ७१०१ हिन्दू, २३९५ मुसलमान, २३८ एनिमिष्टिक, ९० कृस्तान, ४७ जैन, ४ बौद्ध और १ दूसरे।

छावनीमे लगभग ५०० लडाके सिपाही रहते हैं। आसपास हजारहा एकड भूमिपर चायकी खेती होती है और कई एक झरने और अनेक कोयलेकी खान है। चाय डिब्रूगढसे दूसरे स्थानोंमे भेजे जाते हैं।

लक्खिमपुर जिला—यह जिला आसाम प्रदेशके पूर्वमें ब्रह्मपुत्र नदीके दोनो ओर लगभग ११५०० वर्गमीलमे फैला हुआ है। जिलेके अधिक विभागोंमें पहाड़ी जातियोंके लोग रहते हैं, जो अङ्गरेजी गवर्नमेन्टके साधारण अधिकारको स्वीकार नहीं करते। जिलेका बन्दोबस्ती हिस्सा हालके पैमाइशसे ३७२३ वर्गमील हुआ है। जिलेके उत्तर डफला, मीरी, अवर, और मिशमी पहाड़ियाँ, पूर्व मिशमी और सिगाफो पहाडियाँ, दक्षिण नागा पहाडियाँ इत्यादि और पश्चिम शिवसागर और दरंग जिला है। उत्तर और पूर्वकी सीमा निश्चय नहीं हुई है। ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक अनेक छोटी नदियाँ जिलेमें बहती है। जिलेके सब भागो में विना जोती हुई चरागाहकी भूमि फैली हुई है। जङ्गली पैदावारोंमे प्रधान रेशम, मधुमक्खीका मोम, रंग और भाँति भाँतिकी जड़ी बूटी हैं। इनको पहाडी लोग हाटोंमें बेचते है। जङ्गलोंमें हाथी, गेंडे, भैंसे, बनैली गाय, भालू इत्यादि सब भाँतिके बनैले जन्तु रहते हैं। गवर्नमेंटको हाथी बझाने वालोंसे प्रति वर्ष २०००० रुपयेसे ३०००० रुपये तक मिलतो है। इसके अलावे गवर्नमेंट हाथी पकडनेवालोंसे प्रति हाथी १००) लेती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हालकी पैमाइश की हुई ३७२३ वर्ग मील बन्दोबस्ती हिस्सेमें १७९८९३ मनुष्य थे। उनमें विना पैमाइश की हुई भूमिके कुछ पहाड़ी

कौम भी शामिल थे। इनमे १५२१९० हिन्दू, १६३८२ पहाडी कौम, जो अवतक अपने मतपर है, ५८२४ मुसलमान, ४६५७ बौद्ध, ८३७ कृस्तान, और ३ जैन थे। जातियोंके खानेमें ५१५८८ अहम, १८६९९ कचारी, १६७०८ चोटिआ, ११७६५ डोम, ११६८७ मीरी, ७७४२ कलिता, ४५९८ कोच, २८८३ कामटी, शेषमे दूसरी जातियाँ थी, जिनमे २०७० कायस्थ, १७९१ राजपूत और १३६३ ब्राह्मण थे। जिलेमें लक्खिमपुर और सदियामे देशी कामके लिये कपडे तैयार होते है और थोडी तिजारत होती है।

परशुरामकुण्ड।

भारतवर्षके पूर्वोत्तरकी सीमापर जहाँ ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय पर्वतसे निकलकर आसामके मैदानमे प्रवेश करती है, परशुरामकुण्ड है। जो पूर्वकालमें ब्रह्मकुण्ड करके प्रसिद्ध था। कुण्डके चारो ओर पहाड़ियाँ है। ब्रह्मपुत्रकी खास धारा पूर्वोत्तरसे कुण्डके समीप आई है। ऐसा प्रसिद्ध है कि ब्रह्मपुत्र नदी पर्वतसे आकर इस कुण्डमे गुप्त हो गई और फिर आसामके मैदानमे प्रकट हुई, इसी कारणसे अर्थात् ब्रह्मकुण्डमें गुप्त होकर फिर प्रकट होनेसे इस नदीका नाम ब्रह्मपुत्र पडा। उस कुण्डके पास ब्रह्मपुत्र नदी देवपाणिक नामसे प्रसिद्ध है और वहाँसे कुछ दूर नीचे आकर ब्रह्मपुत्रके नामसे विख्यात हुई है। कुण्डके निकट कोई गृह नहीं है, दूरकी पहाडी पर एक पहाड़ी वस्ती है। कुण्डके समीप गुफाके भीतर १ झरना और बाहर २ झरने है। कुण्डका जल वड़ा ठण्ढा है। यात्रीगण विशेष करके साधु संन्यासी दूर दूरसे आते हैं और कुण्डमे गोता मारकर झरनेके जलसे स्नान करते है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि विष्णुके अवतार परशुरामजीने २१ वार क्षत्रियोका विनाश करके अन्तमे ब्रह्मकुण्ड पर परशुको त्याग दिया और वहाँ तपस्या करके वह पापसे विमुक्त हुए तभीसे उस कुण्डका नाम परशुराम कुण्ड हुआ।

ग्यारहवां अध्याय।
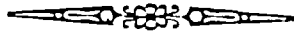
(सूबे बङ्गालमें) बुगड़ा, रामपुरबौलिया, कुष्टिया, ग्वालंडो, पवना, सिराजगञ्ज, फरीदपुर, नोआखाली, सीताकुण्ड, वलवाकुण्ड, चटगाँव, कोमिला, टिपरा, नारायणगञ्ज, ढाका और मैमनसिंह।

बुगड़ा।

पार्वतीपुर जंक्शनसे ४९ मील दक्षिण नवावगञ्ज रेलवेका स्टेशन है। स्टेशनसे ३० मीलसे अधिक पूर्व सूबे बङ्गालके राजशाही विभागमे बुगडा नदीके पश्चिम किनारे पर जिलेका सदर स्थान बुगड़ा एक छोटा कसवा है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बुगडामे ६१७९ मनुष्य थे अर्थात ३४६३ मुसलमान, २६६७ हिन्दू, और ४९ दूसरे। कसबेमें देखने योग्य कोई इमारत या दूसरी वस्तु नहीं है फाटीनगर और मालतीनगर दो हाट है।

बुगड़ा जिला—यह जिला ब्रह्मपुत्र नदीके पश्चिम १४९८ वर्ग मील क्षेत्रफलमें फैला है। जिलेमें वहुतेरी छोटी नदियाँ वहती हैं। जङ्गली पैदावारोंमें अनेक भाँतिके रंग और मधुमक्खियोंका मोम है। जङ्गलोंमे बाघ, भैसे, सूअर और तेंदुए रहते है। जिलेमें गाजीमियाँके नामसे मुसलमानोंके वहुतेरे तिहवार और मेले होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेमें ७३४३५८ मनुष्य थे, अर्थात ५९३४११ मुसलमान, १४०८६० हिन्दू, ५४ जैन, २७ क्रस्तान, २ बौद्ध और ४ दूसरे। जातियोंके खानेमे ११९५५ कोच, पाली और राजवंशी १५५६६ कैवर्त, ११३१४ वैष्णव इत्यादि, ९८९२ चण्डाल और शेषमे दूसरी जातियाँ थी; जिनमे ४६१४ ब्राह्मण, ३७४० कायस्थ और केवल ३७२ राजपूत थे।

इतिहास—बुगडाका कोई खास इतिहास नहीं है। सन् १८२१मे राजशाही दीनाजपुर और रंगपुरसे निकालकर यह एक जिला वनाया गया। सन १८६९ मे यह स्वाधीन जिला वना और जिलेमे कलक्टर और मजिस्ट्रेट नियत हुए।

रामपुरबौलिया।

नव्वावगंजसे ३९ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ८८ मील) दक्षिण नाटउरका रेलवे स्टेशन है। नाटउर राजशाही जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान एक कसबा है. जिसमें सन् १८८१ मे ९०९४ मनुष्य थे, अर्थात् ५३६८ मुसलमान, ३७२१ हिन्दू और ५ दूसरे। कसबेके मध्यमें नाटउरके राजाका 'जो ब्राह्मण हैं' सुन्दर मकान वना हुआ है।

नाटउरके रेलवे स्टेशनसे ३० मील पश्चिम (२४ अंश, २२ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३८ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) पद्मा नदीके बाये सूबे बंगालके राजशाही विभागमे राजशाही जिलेका सदर स्थान और प्रधान कसवा रामपुरबौलिया है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रामपुरबौलियामे २१४०७ मनुष्य थे, अर्थात ११२५५ हिन्दू, १००४९ मुसलमान, ७८ क्रस्तान, १३ जैन, १० बौद्ध और २ दूसरे।

कसवेकी उन्नति हालमे हुई है। इसमे तिजारत वहुत होती है। पद्माकी वाढ कसबेमे घुसजाती है। रामपुरबौलियामे जिलेके प्रधान हाकिमोके अतिरिक्त कमिश्नर साहब भी रहते हैं।

कसवेसे १५ मील पूर्व पोठिया गाँवमे एक वंगाली ब्राह्मण राजा है। वहाँ महाराज जगतनारायण रायकी स्त्री महारानी भुवनमयीका बनवाया हुआ भुवनेश्वरनाथ महादेवका विशाल मन्दिर देखनेमे आता है।

राजशाही जिला—यह जिला राजशाही विभागके दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें २३६१ वर्गमील क्षेत्रफलमे फैलता है। इसके उत्तर दीनाजपुर और बुगडा जिला; पूर्व बुगडा और पबना जिला, दक्षिण गङ्गा अर्थात् पद्मा नदी और नदिया जिला, और पश्चिम मालदह और मुर्शिदावाद जिला है। सदर स्थान रामपुरबौलिया है। जिलेमें जगह जगह ऊँचे स्थानोंपर वृक्षोंके कुञ्जोंके बीचमें वस्तियाँ देखनेमे आती हैं। सर्वत्र पोस्तेके खेत फैले हुए है। जङ्गल विशेष नहीं है। जिलेके वहुतेरे लोग कीडोको पालकर रेशम तैयार करते है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेमे १३३८६३८ मनुष्य थे, अर्थात् १०४९७०० मुसलमान, २८८७४९ हिन्दू, १२१ क्रस्तान, ५५ बौद्ध, ४ जैन, २ यहूदी और ७

दूसरे। जातियोंके खानेमें ६३१३४ कैवर्त, २९७९२ चण्डाल, १७०८१ वैष्णव, १६५२३ ब्राह्मण, १३७७४ जलिया, ९२७३ ग्वाला और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। राजपूत केवल १२३३ थे। जिलेमें रामपुरबौलिया, नाटउर और पोठिया यही ३ में ५००० से अधिक मनुष्य थे।

इतिहास—नाटउरके राजवंशका पहला राजा बडा धनी जिमीदार था। उसकी मिलकियत राजशाही करके प्रसिद्ध थी। वही राजशाही नाम अङ्गरेजी जिलेका रक्खा गया। प्रथम इस जिलेका सदर स्थान नाटउर था, किन्तु वहाँके जलवायु रोगवर्धक होनेके कारण उसको छोडकर रामपुरबौलिया सदर स्थान बनाया गया।

कुष्टिया।

नाटउरसे ५३ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे १४१ मील) दक्षिण पोड़ादह जंक्शन और पोडादहसे १० मील पूर्व कुष्टियाका रेलवे स्टेशन है। पहले सांराघाटसे दामुकदिया घाट तक पद्मा नदीमें १२ मील आगबोटमे जाना होता है। सूबे बङ्गालके नदिया जिलेमें पद्मा-गङ्गाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर सबडिवीजनका सदर स्थान कुष्टिया एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुष्टियामे ११११९ मनुष्य थे, अर्थात् ६०४९ मुसलमान, ५१३२ हिन्दू और १८ कृस्तान।

कुष्टियामें सबडिवीजनकी कचहरियोंके मकान हैं और साधारण तिजारती होती है। वहाँ कोई देखने योग्य प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

पवना।

कुष्टियाके रेलवे स्टेशनसे दस पन्द्रह मील पूर्वोत्तर सूबे बंगालके राजशाही विभागमें इच्छामती नदीके किनारोंपर जिलेका सदर स्थान पवना एक कसवा है। कुष्टियासे पवना आगबोट जाता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पवना कसबेमें १६४८६ मनुष्य थे, अर्थात ९०१४ मुसलमान, ७४४४ हिन्दू, २७ कृस्तान और १ बौद्ध।

कसबा इच्छामतीके दोनो किनारोंपर वसा है। इसमें ५ बडे बाजार, कई एक पक्की सडके, अस्पताल, स्कूल, नीलकी कोठी और जिलेकी कचहरियाँ हैं।

पवना जिला—यह राजशाही विभागके दक्षिण-पूर्वके कोनेमें १८४७ वर्गमीलमें फैला है। इसके पूर्व ब्रह्मपुत्र नदीकी प्रधान धारा यमुना, और दक्षिण पश्चिम गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा वहती है। जिलेका सदर स्थान पवना कसवा है, किन्तु जिलेमें सबसे बड़ा कसबा और तिजारती स्थान सिराजगञ्ज है। जिलेमें अनगिनत नदियाँ वहती है इस लिये बरसातमे प्रत्येक गाँवमे नाव जा सकती है। सम्पूर्ण जिलेमें धानकी खेती होती है। बस्तियोंके आस पास बाँस और वृक्षोंके झुण्ड है। जिलेमें पद्माकी प्रधान शाखा इच्छामती नदी बहती है, बहुतेरी झील भी है और जगह जगह बाघ, तेंदुये और बनैले सूअर मिलते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पवना जिलेमें १३११७२८ मनुष्य थे, अर्थात ९४९९१८ मुसलमान, ३६१४३९ हिन्दू, २२६ जैन, १४४ कृस्तान और १ बौद्ध। जातियोंके खानेमें ५२३११ चण्डाल, ३९२७९ जालिया, ३४६०२ कायस्थ, २६०४९ सुन्डी,

२३३०६ कैवरत, २०९७० ब्राह्मण और केवल ४५५ राजपूत थे; शेषमें दूसरी जातियां थी। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेका कसवा सिराजगञ्जमें २३२६७ और पवनामें १६४८६ मनुष्य थे।

इतिहास—प्रथम यह जिला राजशाही जिलेका एक बडा भाग था। सन् १८३२ में यहाँ एक जण्ट मजिष्टर और डिपुटी कलक्टर नियत हुए। सन् १८६९ में यहाँके अफसरको मजिष्टर और कलक्टरका पूरा अधिकार मिल गया। सन् १८७३ में एक वलवा हुआ था, जिसको पुलिसने दवाया। उस समय लगभग ३०० आदमी पकडे गये, जिनमेंसे वहुतेरोंको सजा दी गई।

सिराजगञ्ज।

पवनासे लगभग ५० मील सीधा पूर्वोत्तर (२४ अंश, २६ कला, ५८ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ४७ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमें) ब्रह्मपुत्र नदीकी प्रधान धारा यमुनाके निकट सूबे वङ्गालके पवना जिलेमें प्रधान कसवा और देशमे प्रसिद्ध दरियाई वाजार सिराजगञ्ज है। पवनासे सिराजगञ्ज होकर सडक गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिराजगञ्जमें २३२६७ मनुष्य थे, अर्थात् १२३२१ मुसलमान, १०६९२ हिन्दू, २११ जैन और ३३ कृस्तान।

सिराजगञ्ज कसवेमें १ वाजार और १२ पतली सडके है। नदीके किनारेपर नावोंमे उतरनेके लिये ४ घाट बने हैं। बरसातमे यमुनामें वडी वाढ़ होती है। प्रति वर्ष उस नदीका स्थान कुछ वदल जाता है, इस कारणसे उसके किनारेपर गोदाम या वृक्ष नहीं रहते है।

नदीमें नावोंका आमदरफत वहुत रहता है। वडी नावें वीच धारेमे लङ्गडोंपर रहती हैं और छोटी नावे नदीके स्वाभाविक झुकावोंमें ठहरती हैं। तिजारती व्यापारी और दलाल लोग हलकी डोंगियोंमे इधर उधर फिरते हैं। झुण्डके झुण्ड कुली माल उतारने और चढ़ानेमें लगे रहते हैं। वहुत लोग प्रतिदिन अपने मकानोंसे नदीके किनारेपर जाते है।

सिराजगञ्जमें कई एक यूरोपियन कोठियाँ है। वहाँ देशी सौदागरोमे प्रधान मारवाडी हैं, जिनको वहाँके लोग कैआ कहते हैं। उनके अतिरिक्त वङ्गाली सौदागरभी वहुत है। व्यापारी लोग चारोंओरके देशके खेतोके पैदावार छोटे छोटे व्यापारियोंसे सिराजगञ्जमें खरीदकर कलकत्ते भेजते हैं। सिराजगञ्जके व्यापारकी प्रधान वस्तु नमक, तेल, तेलके वीज जूट, पटशन, चावल, गल्ले, तम्वाकू चीनी और खुर्दा यूरोपियन चीजे है। अधिक व्यापार कलकत्तेके साथ होता है। रंगपुर, मैमनसिंह, कूचविहार, वुगडा, ग्वालपाडा, जलपाईगोडी इत्यादिके साथ भी सिराजगञ्जकी सौदागरी होती है। सन् १८७३ के ३१ अगस्तको सिराजगञ्जमें नावोंकी गिनती हुई; उस दिन वहाँ १४३६ नावोंमें १६२००० मन माल लदा था। जिसमेंसे तीन चौथाई जूट था और सन् १८७४ के ४ थी सितम्बरकी गिनतीके समय ११८५ नावोमे १९५००० मन माल था। सन् १८७६–७७ मे उजान और भाटी दोनो ओरकी नावे ४९६४४ गिनी गई थीं।

इतिहास—उन्नीसवीं सदीके आरम्भमे सिराजअली नामक एक मुसलमान जमीन्दारने कसवेमें एक वाजार वनाया; उसीके नामसे उस कसवेका नाम सिराजगञ्ज पड गया। उस समय कसवा यमुना नदीके किनारे पर था। सन् १८४८

की भारी बाढ़से जब सिराजगञ्ज बह गया तब वहाँके सौदागर लोग उस जगहसे लगभग ५ मील पीछे नदीके नए किनारे पर जा बसे। पीछे नदी अपने पुराने स्थान पर चली गई, किन्तु सौदागर लोग वहाँ ही रह गये। सन् १८७७ ई० मे सिराजगञ्जमें बङ्गाल बंककी एक एजेंसी और ६ यूरोपियन कोठियाँ थीं।

ग्वालण्डो।

पोडादह जंक्शनसे ४८ मील पूर्व (पार्वतीपुरसे १८९ मील और कलकत्तेसे १५१ मील) ग्वालण्डोका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके ढाके विभागके फरीदपुर जिलेमें गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा और ब्रह्मपुत्र नदीके सङ्गमके निकट ग्वालण्डो एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ग्वालण्डोमें ८६५२ मनुष्य थे अर्थात् ४५०८ हिन्दू, ४१३० मुसलमान और १४ दूसरे।

ग्वालण्डोमें सर्वदा रहनेवाले मकान नहीं है, क्योंकि नदीके निकटकी भूमि बदलती रहती है। बरसातमें नदीकी तेजी बेहद बढ़जाती है। प्रति वर्ष ज्येष्ठ मासमे वहाँके निवासी गङ्गाके किनारेको छोडकर २ कोस दूर जा बसते है। रेलवेका स्टेशन भी उतनीही दूर चला जाता है। ग्वालण्डोमें बहुतेरी नाव रहती हैं।

लगभग २५ वर्ष पहले ग्वालण्डो मछली मारने वालोका एक छोटा गाँव था जो अब बहुत प्रसिद्ध हुआ है। सन् १८७० में कुष्टियासे ग्वालण्डो तक रेलवे बढ़ाई गई। कसबेमें प्रति दिन बाजार लगता है, एक कचहरीका मकान है। और बहुतेरे बङ्गाली और मुसलमान खास करके मारवाडी सौदागर रहते है। तम्बाकू, नमक अनेक प्रकारके गल्ले और तेलके बीजकी तिजारत होती है। वहाँसे बहुत मछलियाँ कलकत्ते भेजी जाती हैं।

ग्वालण्डोसे आगबोट प्रतिदिन नारायणगञ्जको और तीन चार दिनपर आसामके लिये धोबरीको जाते हैं।

फरीदपुर।

ग्वालण्डोसे लगभग २९ मील दक्षिण-पूर्व छोटी पद्माके दहिने अर्थात् दक्षिण (२३ अंश, ३६ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ५३ कला, ११ विकला पूर्व देशान्तरमे) सूबे बङ्गालके ढाका विभागमें जिलेका सिविल स्टेशन फरीदपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फरीदपुरमें १०७७५ मनुष्य थे, अर्थात् ५७११ हिन्दू ५००८ मुसलमान, ५१ कृस्तान और ४ बौद्ध।

कसबेके दक्षिण टोलसमुद्र नामक मीठा पानीका झील और कसबेमें एक गिरजा है। फरीदपुरमें प्रति वर्षके माघमे खेतीकी नुमाइश होती है और सन् १८८३ से ब्रह्मोसमाजकी एक सभा नियत हुई है।

फरीदपुर जिला—इसके उत्तर और पूर्व गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा नदी, दक्षिण ननगा और भगनी नदी और दलदलोकी लाइनें और पश्चिम कई छोटी नदियाँ हैं। जिलेका क्षेत्रफल २२६७ वर्ग मील है। जिलेकी बस्तियाँ खास करके नदियोंके किनारोपर मट्टीकी पहाडियोंसे बनी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय फरीदपुर जिलेमें १६३१७३४ मनुष्य थे; अर्थात् ९७४९८३ मुसलमान, ६५३९९२ हिन्दू, २७४१ कृस्तान, १३ बौद्ध और ५ ब्रह्मो। जातियोके खानेमे २४४९२३ चण्डाल, ८४१९३ कायस्थ, ४६९०५ब्राह्मण, ३४४९१ सूण्डी, ३८६०७ जलिया, ३४०१० कैवरत और शेपमें दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेके कसवे मदारीपुरमें १३७७२,, फरीदपुरमें १०७७४ और ग्वालण्डो तथा कुतवपुरमे दश हजारसे कम मनुष्य थे।

नोआखाली।

ग्वालण्डोके रेलवे स्टेशनसे ७९ मील दक्षिण-पूर्व ब्रह्मपुत्र नदीमे आगवोट द्वारा चान्दपुर जाना होता है। चान्दपुरसे आसाम वङ्गाल रेलवे गई है। चान्दपुरसे ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्समसे २५ मील दक्षिण-पूर्व फेनीका रेलवे स्टेशन है। फेनीसे लगभग २५ मील दूर (२२ अंश, ४८ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ८ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तरमे) सूबे वङ्गालके चटगाँव विभागमें नोआखाली खालके दहिने किनारे पर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा नोआखाली है, जिसको देशी लोग सुधाराम कहते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नोआखाली कसबेमे ५१२४ मनुष्य थे, अर्थात् २५६० हिन्दू, २५२८ मुसलमान और ३६ दूसरे।

कसवेमें अनेक मसजिदें, सरकारी कचहरियां और तालाब बने हुए है। एक समय यह कसवा समुद्रके किनारे पर था; किन्तु अव समुद्र वहाँसे लगभग १० मील दूर है।

वहाँके जमीन्दार सुधाराम मजुमदारने वहाँ एक वडा तालाव बनवाया, तबसे नोआखालीको देशी लोग सुधाराम कहते हैं।

नोआखाली जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल१६४१वर्ग मील है। इसके उत्तर टिपराका दशी राज्य और अङ्गरेजी जिला, पूर्व टिपराका राज्य और चटगाँव जिला, दक्षिण बङ्गालकी खाड़ी और पश्चिम मेगना है। इस जिलेमें ऊँची भूमिपर वास्तियां बनी है। वर्षा कालमे वस्तियोके अतिरिक्त देशमे सर्वत्र जल फैल जाता है। तालाबोके चारोओर बाँध बनाये गये हैं। जिलेके पश्चिमोत्तरकी सीमाके समीप समुद्रके जलसे ६०० फीट ऊँची एक पहाडीका भाग है। समुद्रके किनारे पर नदियोंसे कई एक टापू बन गये है। इस जिलेमे बाघ, तेन्दुये, सूअर, जंगली भैंसे इत्यादि वनैले जन्तु होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नोआखाली जिलेमे ८२०७७२ मनुष्य थे; अर्थात् ६०८५९२ मुसलमान, २११४७६ हिन्दू, ५८८ कृस्तान, ११४ बौद्ध और २ दूसरे। जातियोंके खानेमें ३७८७९ जोगी, ३७५६५ कायस्थ, १८८४४ चण्डाल, १६१५१ कैवरत, १५१५१ धोवी, १२६७१ नापित, १०९६३ ब्राह्मण, ८६०२ जालिया (अर्थात् मछुहा), ५९८१ सूण्डी थे, शेपमे दूसरी जातियाँ थीं। जिलेमे कोई कसवा नहीं है। एक या दो वाजारोंके अतिरिक्त इस जिलेमें सिलसिलेसे वसी हुई वस्ती नही है। प्रत्येक झोपडी वृक्षोंके बीचमें अकेली खडी है। केवल नोआखाली जिसको सुधाराम कहते हैं, एक वडा गाँव है।

इतिहास—सन् १७५६ ई० में ईष्टइण्डियन कम्पनीने नोआखाली और टिपरामें अपनी कोठियाँ नियत कीं, जिनमेंसे चन्दकी निशानियां अव तक विद्यमान हैं। समुद्रके डाकू इस

देशमे बहुत दिनोंसे लूटपाट करते थे । पीछे उनको सजा देनेके लिये एक ज्वाइंट मजिष्ट्रेट कायम किया गया । इस नये प्रवन्धके होनेसे इस जिलेका नाम नोआखाली पड़गया ।

सीताकुण्ड ।

फेनीके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील (लक्सम जंक्शनसे ५७ मील) दक्षिण–पूर्व सीताकुण्डका रेलवे स्टेशन है । बङ्गालके चटगाँव जिलेमें (२२ अंश, ३७ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४१ कला ४० विकला पूर्व देशान्तरमे) समुद्रके जलसे ११५५ फीट ऊपर सीताकुण्ड नामक पवित्र पहाडोंका सिलसिला है । उसकी सबसे ऊँची चोटीपर पवित्र सीताकुण्ड है, जिसका जल सदा गर्म रहता है । उसके जलके निकट जलती हुई बत्ती लेजानेसे उसकी वाफ बारूतके समान भभक उठती है । हिन्दुस्तानके प्रति विभागोंके बहुतेरे यात्री वहाँ जाते है । सीताकुण्डसे लगभग ३ मील उत्तर एक पवित्र झरना है ।

बलवाकुण्ड ।

सीताकुण्डके स्टेशनसे ४ मील दक्षिण बलवाकुण्डका रेलवे स्टेशन है । उसके निकट चटगाँव जिलेमे बलवाकुण्ड एक प्रसिद्ध तीर्थ है । उस स्थानके कुण्डमे पानीके ऊपर ज्वालामुखीकी भाँति सदा आग बलती रहती है । सीताकुण्डके समान वहाँ भी बहुत यात्री जाते है ।

चटगांव ।

सीताकुण्डसे २४ मील और लक्सम जक्शनसे ८१ मील दक्षिण-पूर्व (ग्वालण्डोसे १९१ मील) चटगाँवका रेलवे स्टेशन है । सूबे बङ्गालमे समुद्रके किनारेसे दस बारह मील पूर्व (२२ अंश, २१ कला, ३ विकला उत्तर अक्षाश और ९१ अंश, ५२ कला, ४४ विकला पूर्व देशान्तरमे) कर्णफूली नदीके दहिने किनारेपर किस्मत और जिलेका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसवा और बङ्गालमे प्रसिद्ध बन्दरगाह चटगाँव है, जिसको चिटागङ्ग और इस्लामाबाद भी कहते है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके चटगाँव म्युनिसिपल्टीके भीतर २४०६९ मनुष्य थे; अर्थात १४२५४ पुरुष और ९८१५ स्त्रिया । इनमे १६५५३ मुसलमान, ६२७५ हिन्दू, ९४२ कृस्तान और २९९ बौद्ध थे ।

पहाडियोंपर यूरोपियन लोगोकी बहुतेरी कोठियां बनी हुई है । प्रधान सडके, जो उत्तरसे दक्षिणको गई है, दीवान बाजार और चन्दनपुरा बाजार कहलाती है । यूरोपियन और देशी निवासियोंके मकानोके अतिरिक्त अनेक सरकारी आफिस, गिरजे, डाकबंगले और बडी बडी मसजिदे ईंटोंकी बनी हुई हैं । और कई एक अस्पताल और स्कूल है । बहुतेरे कुण्ड और तालाब होनेसे और दूसरे अनेक कारणोंसे चटगाँवका जल वायु बहुतही रोग वर्द्धक है ।

चटगाँव क्रम क्रमसे बढकर अब बडा तिजारती स्थान हुआ है । बन्दरगाहमें विदेश और हिन्दुस्तानके शहरोंसे बहुत जहाज आते है । बन्दरगाहकी सौदागरी बढ़ रही है ।

सन् १८८१-८२ में चटगाँवमें लगभग ७७१ जहाज आये और गवर्नमेन्टको ६०८२० रुपया बन्दरगाहका महसूल मिला। वहाँ खास कर निमक बहुत आता है और वहाँसे धान चाय इत्यादि वस्तु दूसरे देशोमे भेजी जाती है।

चटगाँव जिला—जिलेका क्षेत्रफल २५६७ वर्गमील है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर फेनी नदी है, जो नोआखाली और टिपराके अङ्गरेजी जिले और टिपराके राज्यसे इस जिलेको अलग करती है, पूर्व चटगाँवका पहाड़ी देश और ब्रह्माका आराकान देश, दक्षिण ब्रह्मा और पश्चिम बङ्गालेकी खाडी है।

बङ्गालेकी खाडी और चटगाँव और आराकानके बीचमें नीची पहाडियोंके सिलसिले है। कर्णफूली और संगू उस जिलेकी प्रधान नदियाँ है। जिलेमें सीताकुण्ड, सातखनिआ इत्यादि पाँच प्रधान पहाडी सिलसिले हैं, जिनमेंसे सीताकुण्डके सिलसिलेपर सीताकुण्ड और चन्द्रनाथ नामक पवित्र चोटी (जिलेमे सबसे अधिक) ११५५ फीट ऊँची है। गल्ला, मट्टीका बर्तन, जलावनकी लकडी, सूखी मछली और बाँसकी तिजारत नावों द्वारा होती है। समुद्र और नदियोकी मछलियोसे आबादीके एक बडे हिस्सेका निर्वाह होता है। सूखी मछलियाँ खास करके चटगाँवको भेजी जाती हैं। जङ्गलोमें नरकट, बेंत और बाँस बहुत उत्पन्न होते हैं और हाथी, बाघ, गेंडे, सूअर और तेंदुये बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चटगाँव जिलेमें ११३२३४१ मनुष्य थे, अर्थात् ८०१९८६ मुसलमान, २७५१७७ हिन्दू, ५४११० बौद्ध, १०५५ क्रस्तान, ८ ब्रह्मा और ५ सिक्ख। जातियोंके खानेमें ७२३७० कायस्थ, २९३३४ शूद्र, २७३५१ योगी, (पटहेरा) २१३५५ ब्राह्मण, १५३८२ नाई, १५३१२ जालिया, ११४४६ धोबी, ८०३० बनियाँ और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं, इनमें केवल १०४० राजपूत थे। जिलेके काक्स बाजार नामक छोटे कसबेमें चायकी खेती होती है।

इतिहास—पूर्व कालमें चटगाँव जिला टिपराके हिन्दु राजाओके राज्यका एक हिस्सा था। १३ वीं या १४ वीं सदीमें अफगान मुसलमानोंने इस जिलेको जीता। १६ वीं सदीमें जब बङ्गालके राज्यके लिये मोगल और अफगानोमें विवाद था, तब आराकानके राजाने चटगाँवको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १५८२ मे अकबरके मन्त्री टोडर मलने इसके लगानका प्रबन्ध किया। उस समय चटगाँव आराकानका एक देश था, जो सन् १६६६ तक वैसेही रहा। सन् १६६४-६५ में बङ्गालके गवर्नर शाइस्ताखाँने अपनी बडी फौज भेजकर आराकानियोंको परास्त करके चटगाँवको बङ्गालमे मिला लिया और चटगाँवका नाम बदलकर इसलामाबाद नाम रक्खा। सन् १७६०में बर्दवान और मिदनीपुर जिलेके साथ चटगाँव जिला अङ्गरेजी अधिकारमे आया।

सन् १८५७ के १८ वीं नवम्बरकी रातमे ३४ वी देशी पैदलकी दूसरी, तीसरी और चौथी कम्पनियाँ अचानक बागी हो गई। उन्होने खजाना लूट लिया जेलखानेसे कैदियोंको छोड़ दिया और एक सिपाहीको मार डाला। जब उन्होंने पहाडी टिपराकी राह ली तब अङ्गरेजोने पीछा करके उनको छितर बितरकर दिया। पहाडी टिपराके राजा और पहाडी लोगोंने इधर उधर फिरनेवाले बागी सिपाहियोंको पकडकर अङ्गरेजी अफसरोंके पास भेज दिया।

कोमिला।

लकसम जंकशनसे १५ मील उत्तर (ग्वालण्डोसे १३५ मील) कोमिलाका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके चटगाँव विभागमे गोमती नामक नदीके किनारे पर (२३ अंश, २७ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, १२ कला, १८ विकला पूर्व देशान्तरमें) टिपरा जिलेका सदर स्थान कोमिला एक कसबा है। एक सडक चटगाँवसे कोमिला होकर ढाका गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोमिलामे १४६८० मनुष्य थे; अर्थात् ८५२० मुसलमान, ६०२३ हिन्दू, ८१ कृस्तान, और ५६ बौद्ध।

कसबेको बरसातके पानीसे बचानेके लिये एक बाँध बाँधा गया है प्रधान सडकके बगलोंमें सुन्दर वृक्ष लगे हुए है। एक मील घेरेका धर्मसागर नामक तालाब है, जिसको १५ वीं सदीमें टिपराके राजाने बनवाया था। इसके किनारोपर यूरोपियन अफसरोकी कोठिया और जिला स्कूल बना है। कोमिलामे मामूली सरकारी कचहरिया और इमारते, यूरोपियन लोगोंके मकान, एक गिरजा और पोस्ट आफिस ईटोके बने हुए है। इनके सिवा ईटोंके मकान बहुत कम हैं, क्योंकि टिपराका राजा, जिसकी वह जमीन्दारी है, बहुत भारी भेट लेकर ईटोका मकान बनाने देता है। कोमिलासे दाउदकण्डी चटगाँव, कम्पनीगञ्ज, हाजी-गाँव, लकसम, बीबी बाजार और लालमाईको गाडीकी सडके गई है। सडकोंके नीचे स्थान स्थानपर पुल बनाये गये हैं।

टिपरा जिला—इसका क्षेत्रफल २४९१ वर्गमील है। इसके उत्तर मैमनसिंह और सिलहट जिला, पूर्व पहाडी टिपरा, दक्षिण नोआखाली जिला और पश्चिम मेघना नदी बाद मैमनसिंह, ढाका और बाकरगज जिले हैं। जिलेका सदर स्थान कोमिला है, किन्तु ब्राह्मण बेरिया सबसे बडा कसबा है। जिलेमें केवल लालमाई सिलसिला पहाडी देश है। मैदानमें अच्छी तरहसे खेती होती है। खाल और नदियाँ सर्वत्र हैं। प्राय सम्पूर्ण गाँव ताड, बाँस और केलोंके बागोंमें बसे है। इस जिलेमें सीतलपाटीका खर बहुत उपजता है। जङ्गलोंमें बाघ और तेन्दुये होते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमे १५१९३३८ मनुष्य थे, अर्थात् १००७७४० मुसलमान, ५११०७५ हिन्दू ३६४ बौद्ध और १५९ कृस्तान। जातियोके खानेमें ८३०२३ चण्डाल. ७५२७२ कायस्थ, ५५८४८ योगीजात, ५०२९० कैवर्त, ३२९९० सूडी, ३१५०२ ब्राह्मण, २२०७७ नाई और शेषमे दूसरी जातियाँ थी। राजपूत केवल ११९२ थे। सन् १८९१ में इस जिलके कसबे ब्राह्मणबेरियामें १८००६ और कोमिलामे १४६८० मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १७६५ में टिपरा जिला ईस्टइन्डियन कम्पनीके अधिकारमें हुआ। सन् १७७२ मे नोआखाली और टिपराके लिये एक कलक्टर नियत हुआ। सन् १८[illegible] में टिपरा एक अलग जिला बनाया गया।

टिपरा राज्य।

टिपराके सरकारी जिलेसे मिला हुआ पहाडी टिपरा एक देशी राज्य है। जिसको त्रिपुरा भी कहते है। इसके उत्तर सिलहट जिला पूर्व लुशाई देश और चटगाँवका पहाडी

देश, दक्षिण नोआखाली और चटगाँव जिला और पश्चिम अङ्गरेजी टिपरा जिला और नोआखाली जिला है। राज्यका क्षेत्रफल ४०८६ वर्ग मील है। अगरतालामे जो एक गाँव है, वहाँ टिपराके राजा और अङ्गरेजी पोलिटिकल रहते है। पहाड़ियोंके ५ अथवा ६ सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको समानान्तर रेखामें गये है। औसत फासिले एक दूसरेसे लगभग १२ मील है। पहाडियोका बड़ा भाग बाँसके जङ्गलसे छिपा है। नीची भूमि पर अनेक भाँतिके वृक्ष और दलदल है। जङ्गलोंमें हाथी बहुत मिलते हैं और गेंडे, बाघ, भालू, तेंदुए और अनेक भॉतिके बहुत सॉप रहते है। राज्यकी प्रधान फसिल धान है। राजाको राज्यसे २५०००० रुपया मालगुजारी आती है, किन्तु अपने राज्य और अङ्गरेजी राज्यकी जमींदारी दोनो मिलकर लगभग ५००००० रुपया मालगुजारी होजाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय टिपरा—राज्यमे ९५६३७ मनुष्य थे, अर्थात् ४९९१५ पहाडियोंपर और ४५७२२ मैदानोमें। इनमेंसे पहाड़ियोंपर ३५२५७ टिपरा लोग, जो तीन प्रकारके होते है; ११६८८ रिआंग और हलाम, २७३३ कूकी, २११ चकमा, और २६ खासी और मैदानोमे;–२६९९१ बङ्गाली मुसलमान, ९७३९ बङ्गाली हिन्दू, ८८१३ मनीपुरी, ११३ बङ्गाली कृस्तान और ६६ आसामी थे। इस राज्यमे कोई कसवा नहीं है। राजधानी अगरताला मामूली गाँव है।

अगरताला—कोमिलासे ३८ मील उत्तर अगरताला तक सड़क बनी है। टिपरा राज्यमे एक नदीके उत्तर किनारे पर टिपरा राज्यकी राजधानी अगरताला एक गाँव है। जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २१४४ मनुष्य थे। उसमे टिपराके महाराजका एक महल, स्कूल, अस्पताल, जेलखाना और पुलिस स्टेशन बने है। कभी कभी राजा उस महलमें रहते हैं।

पुराना अगरताला—वर्तमान राजधानी अगरतालासे ४ मील पूर्व पुराना अगरताला है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ११८६ मनुष्य थे।

प्रथम टिपराके राजा उस गाँवेंमे रहते थे; किन्तु सन् १८४४ में नये अगरतालामें चले गये। वहाँ टिपराके राजा और रानीके कई एक स्मारक चिह्न बने हुए हैं। पुराने महलके स्थानपर नई इमारतें बनी हैं। टिपराके राजा सन् १८७५ ई० से साधारण प्रकारसे वहॉ रहते है। महलके निकट एक छोटे पवित्र मन्दिरमें सोने, चाँदी और दूसरी धातुओंसे बने हुए १४ सिर है। पहाडी लोग टिपराके देवता समझ कर उस मन्दिरका बड़ा मान्य करते है।

उदयपुर—पुराने उदयपुरसे कई एक मील दूर गोमती नामक नदीके दक्षिण अर्थात् बायें किनारे पर टिपराके राजा उदयमानिक्यकी पुरानी राजधानी पुराना उदयपुर है। उदयमानिक्यने सोलहवीं सदीमें राज्य किया था। टिपराके राजा प्रथम उदयपुरमें रहते थे। अब वह छोटीसी बस्ती है। वहाँ जङ्गल लग गया है। रुई, लकडी और बॉसका बाजार लगता है। उदयपुरमें त्रिपुरेश्वरका पुराना मन्दिर है। वह तीर्थस्थान समझा जाता है। सालाना हजारों यात्री वहाँ जाते हैं। उसी मन्दिरके नामसे उस देशका नाम त्रिपुरा पडा जिसका अपभ्रंश टिपरा है।

इतिहास—इस राज्यमे उदयपुर एक पुरानी पवित्र बस्ती है। उसके त्रिपुरेश्वरके मन्दिरके नामसे देशका नाम त्रिपुरा पडा, जिसका अपभ्रंश टिपरा है। टिपराका राजवंश बहुत पुराना है। इसका इतिहास राजमाला नामक बङ्गला पुस्तकमें और इतिहास लिखनेवाले मुसलमानोकी किताबमें लिखा हुआ है। टिपराके राजा अपनेको चन्द्रवंशी राजा ययातिके पुत्र द्रुह्युका वंशधर कहते है।

लोग कहते है कि धर्ममानिक्यके राज्य (सन् १४०७—१४३९ ई०) तक सालाना लगभग १००० मनुष्य बलिदान किये जाते थे, किन्तु धर्ममानिक्यने आज्ञा दी कि तीन वर्ष पर नर बलिदान दिया जाय। इन्हींकी इच्छासे राजमाला पुस्तकका पहला भाग बना था टिपराका राज्य अनेक बार पश्चिममे सुन्दर वनसे पूर्वमें ब्रह्मानक और उत्तरमें कामरूप पर्यन्त फैला था। सोलहवीं सदीमे राजा शिधन्यने अपने राज्यके चारोंओरके देशोपर आक्रमण किया। सन् १५१२ में टिपराके जनरलने चटगांवको जीता था और उसको बचानेवाली गौडकी फौजको परास्त किया था। उसी राजाके राज्यमें मुगलोकी भारी सेना बङ्गालसे आक्रमण करके नाकामयाब लौट गई, किन्तु बादशाह जहांगीरके राज्यके समय सन् १६२० मे मुगलोने टिपरापर आक्रमण करके उदयपुर राजधानीको लेलिया और राजाको कैदकर दिल्लीमे भेज दिया। बादशाहने खिराज लेनेकी शर्तपर राजाको छोड दिया, किन्तु राजाने खिराज देना अस्वीकार किया। सन् १६२५ में जब राजा कल्यानमानिक्य राजसिंहासनपर बैठा तब बादशाहने फिर राजासे खिराज लेनेके लिये टिपरापर आक्रमण किया, किन्तु मुसलमानी सेना परास्त होकर लौट गई। पीछे मुसलमानोंने बारबार आक्रमण करके नीचेकी जमीनोंको अपने अधिकारमें किया। सन् १७६५ मे वह भूमि, जो टिपराका अङ्गरेजी राज्य है, अङ्गरेजोके अधिकारमें आई।

सन् १८०८ से अङ्गरेजी सरकार टिपराके सब राजाओको राजसिंहासनपर बैठाती है और उनसे नजर लेती है। हिन्दुस्तानके देशी राजाओसे टिपरा अधिक स्वाधीन है। लोग कहते हैं कि वर्तमान टिपरानरेश महाराज वीरचन्द्रमानिक्यदेव वर्मन ९२ वां राजाहै। इनकी अवस्था इस समय लगभग ५० वर्षकी है।

नारायणगञ्ज।

नदीके मार्गसे ग्वालण्डोसे ७९ मील पूर्व-दक्षिण पूर्व कथित चाँदपुर और चाँदपुरसे २५ मील उत्तर (२३ अंश, ३७ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ३२ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमे) लखमिया और धवलेश्वरी नदीके सङ्गमके निकट लखमियाके पश्चिम किनारेपर ढाका जिलेमें नारायणगञ्ज एक तिजारती कसबा है। प्रति दिन आगबोट ग्वालण्डोसे नारायणगञ्ज जाता है। नारायणगञ्जसे उत्तर मैमनसिंह तक रेल बनी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नारायणगञ्जमे १७७१५ मनुष्य थे; अर्थात् ११७१८ हिन्दू, ५९०८ मुसलमान. ८९ कृस्तान और १ दूसरे।

कसबा नदीके किनारे ३ मीलकी लम्बाईमें फैला है। म्युनिसिपल्टीके भीतर मदनगञ्ज है। नारायणगञ्जके आसपास सत्रहवीं सदीके मीर जुम्लाके बनवाये हुए कई एक किले और प्राय सामने कदमरसूल नामक एक मसजिद है। कसबेसे नमक, तम्बाकू, जूट,

कपास इत्यादि दूसरे शहरोंमें भेजे जाते हैं। और जूट, नमक, चावल, चीनी, तम्बाकू, अनेक भाँतिके तेलके बीज इत्यादि सामग्री अन्य स्थानोंसे वहाँ आती हैं। वहाँ जूट दबानेकी कई एक कल हैं।

ढाका।

नारायणगञ्जसे १० मील पश्चिमोत्तर (ग्वालण्डोसे ११४ मील) ढाकाका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालमें बूढीगङ्गाके बांये किनारेपर (२३ अंश, ४३ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २६ कला, २५ विकला पूर्व देशान्तरमें) किस्मत और जिलेका सदरस्थान ढाका एक शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ढाकेमें ८२३२१ मनुष्य थे, अर्थात् ४५१९९ पुरुष और ३७१२२ स्त्रियाँ। इनमे ४१५६६ हिन्दू, ४०१८३ मुसलमान, ४६७ कृस्तान, ७६ बौद्ध, १३ जैन, ९ एनिमिष्टिक, और ७ दूसरे थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ३५ वाँ और सूबे बङ्गालमे तीसरा शहर है।

शहर नदीके साथ साथ लगभग ४ मीलकी लम्बाईमे वसा है। नदीकी ओर उत्तम मकान बने हुए हैं। शहरकी २ प्रधान सडकें एक दूसरीको समान कोनमें काटती है, जिनमेंसे एक लालबाग महल्लेसे दोलाईकोल तक नदीके समानान्तर रेखामें २ मीलसे अधिक लम्बी और दूसरी चौडी सडक, जिसके बगलोंमें सुन्दर मकान बने हैं, शहरके उत्तर ओर पुरानी छावनी तक १¾ मील लम्बी है। पश्चिम ओर सडकोंके मेलके पास, जहाँ एक बागहै, चौक बना है। शहरके मकान चौमञ्जिलेतक हैं। शहरके बीचमें नदीके निकट यूरोपियन लोगोंका महल्ला देखनेमें आता है। शहरमे ढाकाके नब्वाब सरख्वाजा अबदुलगनी के. सी एस. आई का सुन्दर मकान बना हुआ है, जिनके बापने एक खैराती मकान बनवाया, एक स्कूल नियत किया, शहरकी सफाईके लिये म्युनिसिपलिटीको ५० हजार रुपया दिया और जलकल अपने खर्चसे बनवाया। नब्वाबके महलसे आगेजाने पर अस्पतालकी उत्तम इमारत मिलती है। कमिश्नरकी कोठीसे १०० गज दक्षिण एक गिरजा और गिरजासे ½ मील दूर कबरगाह है। इनके अतिरिक्त 'ढाका कालिज' की उत्तम इमारत और कई एक स्कूल हैं।

सत्रहवीं सदीका बना हुआ पुराना किला अब नहीं है। कटरा और लालबागका महल, जो तैयार नहीं हुए थे, उजाड पड़े हैं। कसबेसे ८ मील दूर धवलेश्वरी नदी और बूढ़ी गङ्गाका संगम है।

ढाकेका मलमल प्रसिद्ध है। सोने और चांदीकी उत्तम प्रकारकी वस्तु वहाँ बनती हैं और खास करके कलकत्तेमें भेजी जाती हैं। कसीदेका काम, डोरिया, जामदानी चारखाना इत्यादि सामान अब तक वहाँ बहुत तैयार किये जाते हैं। ढाकेमें मुहर्रमका तेहवार बडी धूमधामसे होता है। यूरोपियन और मारवाडी वहाँ अधिक तिजारत करते हैं।

ढाका जिला—इसके उत्तर मैमनसिंह जिला, पूर्व टिपरा, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम बाकरगञ्ज और फरीदपुर जिला और पश्चिम थोडी दूरके लिये पबना जिला है। अनेक नदियाँ इसकी स्वाभाविक सीमा बनती हैं, पूर्व मेगना दक्षिण और दक्षिण पश्चिम पद्मा और पश्चिम यमुना नदी। जिलेका क्षेत्रफल २७९७ वर्ग मील है। धवलेश्वरी नदी जिलेके

मध्यमें पूर्वसे पश्चिमको वहती है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी नदियाँ जिलेमें है। मधुपुर जङ्गलको छोडकर दूसरा कोई बडा जङ्गल नहीं है। वहुतेरे लोग वरसातमें अपने मवेशियोंको चरनेके लिये मधुपुरके जङ्गलमे भेजते है। जिलेकी नदियोंकी मछलियोसे प्रतिवर्ष लगभग १ लाख रुपयेकी आमदनी होती है। वहाँ भूकम्प वहुधा हुआ करता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ढाका जिलेमें २११६३५० मनुष्य थे अर्थात् १२५०६८७ मुसलमान, ८५६६८० हिन्दू, ८७९९ कृस्तान, ४९ वौद्ध, ४३ ब्राह्म और ९२ दूसरे। जातियोके खानेमें २०२५१० चण्डाल, ९२९०९ कायस्थ, ६०५४२ ब्राह्मण, ५७९१७ सूँडी, ४९२७४ जलिया, ४०४२२ कैवर्त, २५३२७ ग्वाला और शेषमें दूसरी जातियाँ थी। सन् १८९१ की मनुष्य-गणानाके समय जिलेके कसवे ढाकेमे ८२३२१ और नारायणगञ्जमे १७७१५ मनुष्य थे। मानिकगञ्ज इत्यादि कई दूसरे छोटे कसवे हैं। जिलेका प्रधान वाजार नारायणगञ्ज है। मुन्सीगञ्जमें प्रति वर्ष एक वडा तिजारती मेला होता है और ३ सप्ताह तक रहता है। सन् १८८१ मे इस जिलेमें ७९ इञ्च वर्षा हुई थी।

इतिहास––ढाके वृक्षके नामसे या ढाकेश्वरी देवीके नामसे ढाका नामकी उत्पत्ति है। अति पूर्व कालमें वलवान हिन्दू राजाओसे ढाका शासित होता था। जान पडता है कि मुसलमानोंके आक्रमणके पहले ढाका जिलेका केवल एक भाग, जिसकी सीमापर धवलेश्वरी नदी थी, वङ्गालके हिन्दू राज्यके आधीन था। नदीके दक्षिण विक्रमादित्य नामक एक राजा राज्य करता था। जिसके नामसे विक्रमपुर परगना है और उत्तर पाल खांदानके भुइया राजाओंका राज्य था, इनकी राजधानी और महलोंके खँडहर वङ्गालके पूर्वी भागके ब्रह्मपुत्र घाटीमे अनेक जगह विद्यमान है। धवलेश्वरी नदीके उत्तर ढाका जिलेके मधुवनपुर सामर और दुरदुरियामें उनके समयका वहुतेरे मट्टीका काम और ईंटोंके टीले देखनेमे आते है।

लगभग सन् १३२५ मे महम्मद तोगलकने वर्तमान ढाका जिलेको गौडके राज्यमें मिला लिया। सन् १५७५ मे सुनहर गाँव प्रधान तिजारती शहर था। सत्रहवीं सदीके आरम्भमे वादशाह जहांगीरके समय उसके सूवेदार इसलामखाँने राजमहलको छोडकर ढाका शहरको वङ्गालका सदर स्थान वनाया। उस समय ढाका शहरका नाम जहांगीरनगर रक्खा गया और शहर उन्नतपर हुआ। पीछे अङ्गरेज फरासीसी और डचवालोंने वहाँ अपनी अपनी कोठियां कायम कीं। ढाकेका मलमल यूरपमें प्रसिद्ध हुआ। सन् १६४५में वादशाह शाहजहांके पुत्र सुलतानशुजाने नदीके दक्षिण किनारेपर वडा कटरा वनवाया। सन् १६५७में औरंगजेवके पुत्र महम्मद आजिमने शहरके पूर्व लालवागके महलका काम आरम्भ किया, किन्तु उसका काम पूरा नहीं हुआ। सन १६८३ मे साइस्ताखाँने छोटे कटरेको वनवाया। सन १६९०में इब्राहिमखाँने किला वनवाया। अठारहवीं सदीके आरम्भमे ढाका शहरकी घटती हुई, क्योंकि सन् १७०४ मे वङ्गालके सूवेदार मुर्शिदकुलीखाँने ढाकेको छोडकर मुर्शिदावादको वङ्गालकी राजधानी वनाया। लोग कहते है कि उस समय ढाका शहरकी शहरतलियाँ उत्तर ओर १५ मील तक फैली हुई थीं। अव तक वहुतेरी मसजिदे और ईटोके मकान जङ्गलमें छिपे हुए मिलते है। सन १७५७ में ढाकेपर अङ्गरेजी अधिकार हुआ।

सन् १८५७ के बलवेके समय ढाकेके किलेमें सिपाहियोंकी २ कम्पनी थीं । मेरठके बलवेके पीछे एक जङ्गी जहाज ढाकेको बचानेके लिये कलकत्तेसे भेजा गया । किलेके सिपाही बागी हो गये । अन्तमें ४१ बागी लडाईमे मारे गये, बहुतेरे भागते समय नदीमें डूब गये अथवा गोलीसे मरगये और चन्द भूटानके जङ्गलमे चले गये ।

मैमनसिंह ।

ढाकेसे ७५ मील (नारायणगञ्जसे ८५ मील) उत्तर मैमनसिंहका रेलवे स्टेशन है । सूबे बङ्गालके ढाका विभागमें ब्रह्मपुत्र नदीकी धाराके पश्चिम किनारे पर (२४ अंश, ४५ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २६ कला, ५४ विकला पूर्व देशान्तरमे) जिलेका सदर स्थान मैमनसिंह एक कसबा है, जिसको नसीराबाद भी लोग कहते हैं ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैमनसिंह कसबेमे ११५५५ मनुष्य थे; अर्थात ६५०८ हिन्दू, ४९२९ मुसलमान, ८८ कृस्तान, २७ जैन और ३ एनिमिष्टिक । कसबा तिजारतके लिये प्रसिद्ध नहीं है, उसमे २ पुराने मन्दिर, १ खैराती अस्पताल और छोटे बडे कई स्कूल हैं । कसबेमें सूर्यकान्त आचार्य बहादुर एक जमीन्दार राजा है, जिन्होंने ३० हजार रुपयेके खर्चसे टाउनहाल बनवाया और अपनी रानीके स्मरण चिह्नके अर्थ मैमनसिंहके जलकलके लिये १ लाख १३ हज़ार रुपया चन्दा दिया ।

मैमनसिंह जिला—जिलेका क्षेत्रफल ६२८७ वर्ग मील है । इसके उत्तर गारो पहाडी जिला; पूर्व आसामका सिलहट जिला, दक्षिण-पूर्व टिपरा जिला, दक्षिण ढाका जिला और पश्चिम यमुना नामक नदी, बाद पवना, बुगडा और रङ्गपुर जिले है । जिलेका बडा भाग समतल और मैदान है । मधुपुर जङ्गलके अतिरिक्त सर्वत्र खेती होती है । मधुपुर जङ्गल ढाका जिलेके उत्तरी भागसे मैमनसिंह जिलेके भीतर प्राय. ब्रह्मपुत्र नदी तक फैला हुआ है । इसकी औसत ऊँचाई मैदानसे ६० फीट और सबसे अधिक ऊँचाई १०० फीट, लम्बाई लगभग ४५ मील और चौडाई ६ मीलसे १६ मील तक, और क्षेत्रफल ४२० वर्ग मील है । यमुना नामक नदी जिलेके पश्चिम सीमापर ९४ मील बहती है । इसके अलावे ब्रह्मपुत्र, मेगना और अनेक छोटी नदियां जिलेमें हैं । जिलेमे बाघ अब कम है । मधुपुरके जङ्गलमे भालू मिलते हैं । गारो और सुसङ्ग पहाडियोंमें प्रतिवर्ष बहुतसे हाथी पकडे जाते है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उस जिलेमें ३०५१९६६ मनुष्य थे, अर्थात् २०३८५०५ हिन्दू, ९८७३५५ मुसलमान, २५९५५ आदि निवासी और १५१ कृस्तान । जातियोके खानेमें १४८३८० चण्डाल, ९४२१७ कैवर्त, ५०६१५ नाई, ५०१५२ ब्राह्मण, ४४३०८ मूँडी, ४३३९३ योगी, ३२०११ जलिया, ३१९७९ कोच, २८७२४ बढई और शेषमें दूसरी जातियां थीं । राजपूत केवल २१६७ थे । सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके कसबे टङ्गइलमे १६९७३, जमालपुरमे १५३८८, किशोरगञ्जमें १३९८८ मैमनसिंहमे ११५५५ और शेरपुरमे १०७४४ मनुष्य थे । जमालपुर एक समय फौजी स्टेशन था । प्रतिवर्ष सावन मासमे किशोरगञ्जमें मेला होता है ।

बारहवाँ अध्याय।

(सूबे बंगालमें) कृष्णनगर, नदिया, शान्तिपुर जशर, खुलना, बैरीसाल, नइहाटी, बारकपुर, दमदम और बारासत।

कृष्णनगर।

पोडादह जक्शनसे ४५ मील (पार्वतीपुर जक्शनसे १८६ मील) दक्षिण और कलकत्ताके स्यालदहसे ५८ मील उत्तर बगुलाका रेलवे स्टेशन है। बगुलासे १२ मील पश्चिम कृष्णनगर तक पक्की सडकपर घोडा गाडी चलती है। मार्गमें हाँसनगरका घाट उतरना होता है। सूबे बङ्गालके नदिया विभागमे जलंघी नदीके बायें किनारेपर (२३ अंश, २३ कला, ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३२ कला, ३१ विकला पूर्व देशान्तरमें) नदिया जिलेका सदर स्थान कृष्णनगर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कृष्णनगरमें २५५०० मनुष्य थे, अर्थात् १२४४४ पुरुष और १३०५६ स्त्रियाँ। इनमे १७१०६ हिन्दू, ७७५७ मुसलमान, और ६३७ कृस्तान थे।

कृष्णनगर तिजारती कसबा है। वहाँ मट्टीकी रंगदार मूर्त्तियाँ बहुत सुन्दर बनती है और एक कालिज है। खाडी महल्लेमें मामूली सरकारी कचहरियाँ और आफिस बने हुए हैं। कृष्णनगरमें नदियाके राजाका महल है।

नदिया।

कृष्णनगरकी कचहरीसे ६ मील (बगुलाके रेलवे स्टेशनसे १८ मील) पश्चिम सूबे बङ्गालके प्रेसिडेन्सी विभागके नदिया जिलेमें (२३ अंश, २४ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २५ कला, ३ विकला पूर्व देशान्तरमें) भागीरथीके दहिने अर्थात् पश्चिम किनारेपर नदिया एक कसबा है, जिसको नवद्वीप भी कहते हैं। पहले यह भागीरथीके पूर्व किनारेपर था। अब तक कसबेके पश्चिम भागीरथीका खाल देख पडता है। कसबेके निकट खडुआ नदी भागीरथीमें मिली है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नदियामें १३३३४ मनुष्य थे; अर्थात १२८५६ हिन्दू, और ४७८ मुसलमान।

पूर्व कालमें नदिया संस्कृत पाठशालाओंके कारण प्रसिद्ध थी, वहाँके पण्डित न्याय शास्त्रमें बडे प्रवीण होते थे। अब भी नदियामें संस्कृतकी अनेक पाठशाला हैं, जिनमें दूर दूरसे विद्यार्थी आकर विद्या पढते है।

नदिया कसबेसे लगभग [illegible] मील दूर विद्यानगर, जो एक समय बडा गांव था, अब छोटी बस्ती है। इसी जगह चैतन्य महाप्रभुने विद्या पढी थी। वहां [illegible] मन्दिरमें [illegible] मूर्ति [illegible]।

चैतन्य महाप्रभु—नदिया कसबा चैतन्य महाप्रभुकी, जिनको कृष्णचैतन्य और गौरांग प्रभुभी कहते हैं, जन्म भूमि है । नदियाके एक मन्दिरमें गौरांग प्रभुकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है । यात्रीगण प्रथम पुडामाव और बूढाशिवके दर्शन करके तब गौरांग प्रभुके दर्शन करते हैं । प्रति वर्ष माघमें वहाँ एक मेला होता है । मेलेमें पाँच सात हजार वैष्णव एकत्रित होते हैं ।

चैतन्य महाप्रभुने सन् १४८५ ईस्वी में नदियाके जगन्नाथ मिश्र ब्राह्मणकी स्त्रीके गर्भसे जन्म लिया । वह सम्पूर्ण बङ्गाल और उडीसेमे विष्णुकी भक्तिका उपदेश करते रहे । उन्होंने एक सन्तकी पुत्रीसे अपना विवाह किया था, किन्तु २४ वर्षकी अवस्थामें वह गृहको छोड कर उडीसेमें चले गये । उसके पश्चात् वह १८ वर्ष तक विष्णुके उपासनाका प्रचार करके सन् १५२७ ईस्वीमें परमधामको चले गये ।

चैतन्य महाप्रभुका ऐसा मत था कि सब जातिके मनुष्य विष्णुकी पूजाके समान अधिकारी है । सचाई और सर्वदाका भजन उनके उपदेशका सारांश था । उनके उपदेशके अनुसार केवल भक्तिहीसे नहीं किन्तु उसके साथ ज्ञान होनेसे मोक्ष मिलती है । और मोक्षका माने केवल सत्ताका नष्ट होनाही नहीं है, किन्तु उसमे शरीरके दुर्गुण और विकारको दूर होजाना खास कर शामिल है ।

चैतन्यके मतके सन्त लोगोमेसे अधिक लोग अपना व्याह करते है और अपनी स्त्री पुत्रोंके साथ कृष्णके मन्दिरके निकटके गृहमें निवास करते है । चैतन्य महाप्रभुको लोग कृष्ण भगवान्‌का अवतार समझते हैं । उनकी पूजा बङ्गाले, खासकर उडीसेमे घर घर होती है । बहुतेरे लोग अपने अपने घरके छोटे मन्दिरोमें नित्य उनकी पूजा करते हें ।

लगभग ३०० वर्ष हुए कि नाभाजीने भक्तमाला ग्रन्थ पद्य भाषामे बनाया । उसमें भक्त और सन्तोका यश वर्णन किया गया है भक्तमालामें लिखा है कि श्रीनित्यानन्द कृष्ण-चैतन्यकी भक्ति दशों दिशाओंमें फैल गई । उन्होंने गौड देश (बङ्गाल) के पाखण्डको दूर करके वहाँके मनुष्योंको भजनमें निरत किया और कृपा दृष्टिसे असंख्य मनुष्योंको सुगति दी।

नदिया जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३४०४ वर्गमील है इसके उत्तर राजशाही जिला, पूर्व पवना और जशर जिला, दक्षिण चौवीसपरगना जिला, पश्चिम बीरभूम, बर्दवान, और हुगली जिला, और पश्चिमोत्तर मुर्शिदावाद जिला है । नदिया जिलेको गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा नदी पवना और राजशाही जिलेसे जलंघी नदी मुर्शिदाबाद जिलेसे, एक छोटी नदी दक्षिण-पूर्वकी सीमापर जशर जिलेसे अलग करती है और नदियाकी पश्चिमी सीमाके पास भागीरथी बहती है । भागीरथीसे जगह बदलकर जिलेका एक पतला भाग, जिसमे नदिया कसबा हे, भागीरथीके पश्चिम हो गया है ! जिलेका सदर स्थान कृष्णनगर है । सीमाकी नदियोंके अतिरिक्त पद्माकी बहुतेरी शाखा और जलङ्गी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियाँ जिलेमें बहती हैं । उस जिलेमे नदियोंके किनारे पर कालीगञ्ज, सन्तीपुर, करीमपुर, कृष्ण-नगर, स्वरूपगञ्ज, मुंशीगञ्ज, गोपालनगर, आलमडङ्गा, कुष्टिया इत्यादि तिजारती जगह हैं । नदिया जिलेमें जङ्गली सूअर, तेन्दुआ और साँप बहुत है,प्रति वर्ष लगभग ५०० मनुष्य साँपके काटनेसे और ५० जङ्गली जानवरोंके मारनेसे मर जाते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नदिया जिलेमें २०१७८४७ मनुष्य थे, अर्थात् ११४६६०३ मुसलमान, ८६४७७२ हिन्दू, ६४४० कृस्तान, २८ ब्राह्म और ३ दूसरे ।

जातियोंके खानेमें १२६०६२ कैवर्त, ९३३८२ ग्वाला ५९८९४ ब्राह्मण, ४०७८० कायस्थ, २३२३४ नाई और शेषमे दूसरी जातियाँ थी। केवल ६०४७ राजपूत थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उस जिलेके कसबे सन्तीपुरमे ३०४३७, कृष्णनगरमें २५५००, नवद्वीप अर्थात् नदियामें १३३३४, कुष्टियामें ११९९ और चगड़ा, रानाघाट, कुमारखाली, मिहरपुर, वीरनगरमे दश हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—नदिया कसबेमे राजा वल्लालसेनके पुत्र बंगालके अंतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेन रहते थे। लोग कहते है कि उन्हीने सन् १०६३ ईस्वीमें नदियाको बसाया और गौडको छोडकर इसको अपनी राजधानी बनाया। सन् १२०३ ई० में बख्तियार खिलजीके आधीन मुसलमानोने नदियाको ले लिया और हिन्दू राजाके वंशका विनाशकर दिया।

नदियाके वर्तमान राजा, भट्टनारायणके वंशधर है। बंगालके राजा आदिशूरने, जिनकी राजधानी गौड थी, कन्नोजसे ५ ब्राह्मणोको बुलाया, जिनसे सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड, मैथिल और उत्कल ये ५ प्रकारके ब्राह्मण हुए, जो पंचगौड करके प्रसिद्ध हैं; उन्ही पांचोमेसे एक भट्टनारायण थे। उनके वंशमें सबसे अधिक प्रसिद्ध महाराज कृष्णचन्द्र हुए, जो सन् १७२८ ईस्वीमें राजसिंहासनपर बैठे। वह वडे विद्वान् और दानी थे। सन् १७५७ में जब सिराजुद्दौला अङ्गरेजोंसे लडा, तब महाराज कृष्णचन्द्र अङ्गरेजोके सहायक थे। उसकी कृतज्ञतामें अङ्गरेजी सरकारने उनको राजेन्द्र वहादुरकी पदवी और १२ तोपें नजर दी, जो अब तक महलमे देखी जाती हैं। कृष्णचन्द्रके पीछेके राजा भी पण्डित और दानी होते आये हैं, इस लिये नदिया कसवा और जिलाने न्यायशास्त्र और पण्डितोंका घर होनेकी प्रसिद्धता प्राप्तकी है। कृष्णचैतन्य महाप्रभुके जन्म होनेके कारण नदिया कसवा पवित्र समझा जाता है।

सन्तीपुर।

भागीरथी (अर्थात् हुगली नदी) के किनारे पर (२३ अंश, १४ कला २४विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २९ कला, ६ विकला पूर्व देशान्तरमें) नदिया जिलेमें सबसे वडा कसवा सन्तीपुर है।

सन् १८९१ मनुष्य-सख्याके समय सन्तीपुरमें ३०४३७ मनुष्य थे, अर्थात् २११९७ हिन्दू, ९२३१ मुसलमान और ९ कृस्तान।

सन्तीपुर कपडेकी दस्तकारीके लिये प्रसिद्ध है। उसमे देशी तिजारत बहुत होती है और गङ्गास्नानका यह एक प्रसिद्ध स्थान है। वहाँ कार्तिककी पूर्णिमाके समय श्रीकृष्णकी रासयात्राका मेला होता है। जो ३ दिन रहता है। अन्तिम दिन प्रधान सडक होकर वडी धूमधामसे श्रीकृष्ण भगवान्की सवारी निकलती है। मेलेमे पचीस तीस हजार आदमी आतेहै।

जशर।

कलकत्ते स्टेशनसे ४२ मील (पार्वतीपुरसे १९८ मील) दक्षिण रानाघाट जंक्शन, रानाघाटसे २१ मील पूर्व बनगाँव जंक्शन और बनगाँवसे २६ मील पूर्वोत्तर जशरका रेलवे स्टेशन है। यह बङ्गालके प्रेसीडेंसी विभागमें (२३ अंश, १० कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १५ कला, पूर्व देशान्तरमें) भैरव नदीके पश्चिम किनारे पर रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा जशर

है, जिसको उस देशके लोग कसवा कहते है। उसका शुद्ध नाम यशहर है जिसका अपभ्रंश जशर होगया है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जशरमे ८४९५ मनुष्य थे; अर्थात् ४५११ हिन्दू, ३८२२ मुसलमान और १६२ दूसरे। म्युनिसिपल्टीकी सीमाके भीतर पुराना कसवा शंकरपुर, चच्चरागॉव और बदाहर है।

कसबेके चौकका नाम मछुहा वाजार है। कसबेके पश्चिम जिलेकी मामूली कचहरियाँ; जेलखाना और पुलिसकी लाइन पक्की बनी हुई है। इनके अतिरिक्त जशरमें स्कूल, गिर्जा, एक खैराती अस्पताल, सन् १८८३ का बना हुआ श्रीरघुनाथजीका १ मन्दिर और २ कबरगाह हैं। कसबेसे १ मील दक्षिण चच्चरा बस्तीमें जशरके राजाके महलकी निशानी देखी जाती है। उस महलके निकट जशरके एक राजाका बनवाया हुआ चोरमारा नामक एक बड़ा तालाव है। लोग कहते हैं कि इस तालावके पास राजाका जेलखाना था, इस लिये तालावका चोरमारा नाम पडा।

जशर जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल २९२५ वर्गमील है। इसके उत्तर और पश्चिम नदिया जिला, दक्षिण खुलना जिला और पूर्व फरीदपुर जिला है। जिलेमें कई एक छोटी नदियाँ बहती है।

सन् १८८१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय जशर जिलेमें १५७७२४९ मनुष्य थे, अर्थात् ९४५९९७ मुसलमान, ६२१४३९ हिन्दू, ४७४ क्रस्तान और ३९ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें ७८००३ जालिया, कैबर्त, मलाह पोडी इत्यादि; ६२६११ कायस्थ, ३७७५२ ब्राह्मण, ९०३ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियॉ थी। इस जिलेके जशर कसबेमें ८४९५ कोटचान्दपुरमें ९२३१ और केशवपुरमें ६४०५ मनुष्य थे।

सन् १७८१ ई० में गवर्नरजनरलने जशर कसबेके निकट मुरलीमे एक कचहरी नियत होनेकी आज्ञा दी और पूरे तौरसे जिलेमें अङ्गरेजी प्रवन्ध कायम होगया।

खुलना।

जशरसे ३५ मील दक्षिण-पूर्व (रानाघाट जंक्शनसे ८२ मील) खुलनाका रेलवे स्टेशन है। सूबे वङ्गालके प्रेसीडेंसी बिभागमे (२२ अंश, ४९ कला, १० बिकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ३६ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान खुलना एक छोटा कसवा है।

खुलनाके निकट भैरव नदी सुन्दर वनमें मिल गई है। ऐसा कहा जा सकता है कि खुलना सुन्दरवनकी राजधानी है। इसमें ३ वाजार हैं, जिनमेसे सेनका वाजार जो सबमें प्रधान है, भैरव नदीके पूर्व और दूसरे २ उस नदीके पश्चिम किनारे पर है। खुलनामे सरकारी कचहरियॉ वनी हुई हैं। खुलना होकर ढाका और वाकरगञ्जसे चावल, सिलहटसे चूना और नारंगी, सुन्दरवनसे लकडी और राजशाही, पवना और फरीदपुरसे तीसी और दाल कलकत्ता भेजी जाती है।

खुलना जिला—इसका क्षेत्रफल विना नाप किया हुआ सुन्दरवनको छोडकर २०७७ मील है। इसके पूर्व वाकरगञ्ज जिला, दक्षिण सुन्दरवन, पश्चिम चौबीसपरगना जिला

और उत्तर जशर जिला है। इस जिलेके पश्चिमोत्तरके भागमे खजूर आदि वृक्षोंके सुन्दर कुञ्ज फैले हुए हैं। प्रत्येक बस्तियोंके समीप बाग और कुञ्ज लगे हुए हैं। नदीके किनारेके ऊँचे स्थानोंपर मकान बने है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खुलना जिलेमें १०७९९४८ मनुष्य थे; अर्थात् ५५५५४४ मुसलमान, ५२३६५७ हिन्दू, और ७४७ कृस्तान। जातियोके खानेमें २८६५४ ब्राह्मण, ५५१ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। इस जिलेके कसबे सतखीरामें ८७३८, कालामोआमें ५९९५, कालीगञ्जमें ५५५४, और देवहाटमे ५५१४ मनुष्य थे।

इतिहास—लगभग १०० वर्षसे खुलना कसबा प्रसिद्ध हुआ है। एक समय वह कम्पनीके नमक बनानेका सदर स्थान था। सन् १८८२ ई०में खुलना एक जिला बनाया गया।

बैरीसाल।

खुलनाके रेलवे स्टेशनसे लगभग ५० मील पूर्व (२२ अंश, ४१ कला ४० विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे) बैरीसाल नदीके पश्चिम किनारेपर सूबेबङ्गालके ढाका विभागमें बाकरगञ्ज जिलेका प्रधान कसबा और सदर स्थान बैरीसाल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बैरीसालमे १५४८२ मनुष्य थे, अर्थात् ८०४७ हिन्दू, ७०५४ मुसलमान, ३६७ कृस्तान और १४ बौद्ध।

बैरीसालमे मामूली सरकारी कचहरियाँ बनी हुई हैं। देशियोंके मकान साधारण तरहसे लकड़ी, बाँस टट्टी और फूससे बने है।

बाकरगञ्ज जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३६४९ वर्गमील है। इसके पूर्व मेगना और शाहबाजपुर नदी, जिसके बाद नोआखाली और टिपरा जिला है, दक्षिण बङ्गालकी खाडी; पश्चिम जशर और फरीदपुर जिला और उत्तर ढाका और फरीदपुर दोनो जिले हैं। सदर स्थान बैरीसाल कसबा है। इस जिलेमें गङ्गा, ब्रह्मपुत्र और मेगना तीनोंकी मिली हुई धारा बहती है। दूसरी बहुतेरी छोटी छोटी नदियाँ हैं। कोई पहाडी या टीला नहीं है। बस्तियोंके चारोओर बाँस और सुपारीके कुञ्ज लगे हुए हैं। जिलेमें बागिया, सालटी, रामसील इत्यादिक बहुतेरी झीलें है। भूमिसे बहुत नमक तैयार किया जाता है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बाकरगञ्ज जिलेमें १९००८८९ मनुष्य थे; अर्थात् १२६५६९४ मुसलमान, ६२४५९७ हिन्दू, ४५९७ बौद्ध, ३७१७ कृस्तान, ८३ ब्राह्म और १ यहूदी। जातियोंके खानेमें २६०७५१ चण्डाल, ८७८३४ कायस्थ, ४४७३६ ब्राह्मण, ३३४९९ नापित, २१६२८ धोबी, २१५१८ जोगी, १८०८० कैवर्त, १६८४५ सूद्री और शेषमें दूसरी जातियाँ थी। सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाकरगञ्ज जिलेके कसबे बैरीसालमे १५४८२, और फीरोजपुरमे १२२४६ मनुष्य थे।

बाकरगञ्ज, जो सन् १८०१ ई० से पहले इस जिलेका सदरस्थान था, खैराबाद और [illegible] दूसरी नदीके सङ्गमके पास है जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय [illegible] मनुष्य थे।

नइहाटी।

रानाघाट जंक्शनसे २२ मील (पार्वतीपुरसे २२० मील) दक्षिण और कलकत्ताके सियालदहसे २४ मील उत्तर नइहाटीका रेलवे जंक्शन है, जहाँसे ५ मीलकी रेलवे लाइन पश्चिमोत्तर हुगली कसबेके पास जाकर ईष्टइण्डियन रेलवेसे मिली है, बीचमें हुगली अर्थात् भागीरथी नदी पर रेलवे-पुल बना हुआ है। सूबे बङ्गालके प्रेसीडेन्सी विभागके चौवीस परगने जिलेमें नइहाटी एक तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नइहाटीमें २९७२४ मनुष्य थे अर्थात् २४७६६ हिन्दू, ४८०६ मुसलमान, १३५ कृस्तान और १७ बौद्ध।

बारकपुर।

नइहाटीसे १० मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे २३० मील) दक्षिण और सियालदहसे १४ मील उत्तर बारकपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके चौवीस परगना जिलेमें भागीरथीके बायें किनारे पर श्रीरामपुरके आमने सामने बारकपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ बारकपुरमें ५६६२७ मनुष्य थे,–इनमेंसे दक्षिणीय बारकपुरमें ३५६४७ (अर्थात् २६१५१ हिन्दू, ८५१२ मुसलमान, ९५२ कृस्तान, २४ सिक्ख २ पारसी, १ बौद्ध और ५ दूसरे) और उत्तरीबारकपुरमें जिसको नवाबगञ्ज भी कहते हैं २०९८० (अर्थात् १६३३४ हिन्दू, ४५०५ मुसलमान, १३६ कृस्तान और ५ जैन) थे।

छावनीसे दक्षिण २५० एकड़ भूमि पर एक सुन्दर पार्क बना हुआ है उसमे खूबसूरतीके साथ वृक्ष लगाये गये हैं और हिन्दुस्तानके वाइसरायकी दिहाती कोठी बनी है, जिसको लार्डमिण्टोने जो सन् १८०६ से १८१५ तक भारतवर्षका गवर्नरजनरल था, बनवाया और उसके बादके गवर्नरजनरल मार्किस आफ हेस्टिंगसने बढ़ाया। बडे लाटसाहब समय समय पर कलकत्तेसे आकरके इस गवर्नमेंट हौसमे रहते है। छावनीमे यूरोपियन और देशी पलटन रहती है और लेडी केनिङ्गकी कबर है।

रेशकोर्सके निकट हाथियोंके सिखलानेका अस्तवल है। जो हाथी पूर्वी बङ्गालके जङ्गलोंसे पकड कर आते हैं वे आम तरहसे सिखलानेके लिये वहाँ भेजे जाते है और तालीमके लिये चन्द महीनोतक अस्तबलमे रक्खे जाते हैं।

इतिहास—सन् १७७२ ई० में बारकपुरमें फौजी छावनी नियत हुई इस लिये उसका नाम बारकपुर पड गया। सन् १८२४ में ४७ वीं बङ्गाल पैदल फौजको जो बारकपुरमें थी, ब्रह्माकी लडाईमें जानेका हुक्म हुआ। उसके अफसर और सिपाहियोंने कहा कि हम लोग समुद्रकी राहसे नहीं जायँगे। हम लोगोंको खुसकी मार्गसे भेजा जाय और भत्ता दुगुना कर दिया जाय तब जा सकेंगे। तारीख १ नवम्बरको वे लोग बागी हो गये। उन्होने हथियार रख देनेसे इनकार किया। जब यूरोपियन आरटिलरीका एक बैटरी बागियोंपर खोली गई तब वे लोग अपने हथियारोंको फेंक कर नदीकी राहसे भागे। उनमेसे चन्द गोलीसे मार दिये गये। चन्द पानीमें डूब गये; बहुतेरोंको फाँसी दी गई और उस रेजीमेंटके लोग कामसे अलग कर दिये गये।

सन् १८५७ ई० में बारकपुरमें बगावत हुई। वर्षके आरम्भमें फौजी स्टेशनोंमें यह बात फैली कि नया टोंटा अपवित्र है। अङ्गरेजी सरकार देशी सिपाहियोंकी जात भ्रष्ट करके कृस्तान बनाना चाहती है। यह झूठा खियाल दिन पर दिन बढ़ने लगा। तारीख २९ मार्चको बारकपुरकी छावनीके मङ्गलपांडेने एक यूरोपियन अफसरको गोलीसे मारा किन्तु बगावत बढ़ी नहीं।

दमदम।

बारकपुरसे ९ मील दक्षिण और कलकत्तेके सियालदहसे ५ मील पूर्वोत्तर दमदमका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे रेलवे शाखा दमदम छावनी और बारासत होकर बनगाँव गई है। सूबे बङ्गालके २४ परगना जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान और फौजी छावनी दमदम है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणके दमदममें ११०३७ (अर्थात् ६२८६ हिन्दू, ४६९१ मुसलमान और ६० कृस्तान) और उत्तरके दमदममें जिसमें फौजी छावनी है; १०३९६ मनुष्य, (अर्थात् ६३८८ हिन्दू, २७१८ मुसलमान और १२९० कृस्तान) थे।

दमदममें सन् १८८३ ई० से फौज रहती है। बारक ईटोंके बने हुए हैं। लैनसे थोड़ी दूरपर बाजार है। गोली बनानेके लिये बहुत बडा कारखाना बना है।

बारासत।

दमदम जङ्क्शनसे पूर्वोत्तर बनगाँवकी लाइनपर २ मील दमदम छावनीका और १० मील बारासतका रेलवे स्टेशन है। बारासत चौबीस परगना जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान (२२ अंश, ४३ कला, २४ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३१ कला, ४७ विकला पूर्व देशान्तरमें) एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बारासतमें १०५३३ मनुष्य थे; अर्थात् ५७०२ हिन्दू, ४८०७ मुसलमान, और २४ दूसरे।

बारासतमें सबडिवीजनकी सरकारी इमारतें बनी हैं और थोडी तिजारत होती है।

इतिहास—सन् १८३४ ई०में नदिया और जशरके कई एक परगनेसे बारासत जिला बना, किन्तु सन् १८६१ में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट बारासतसे उठा दिया गया, बारासत चौबीस परगना जिलेका एक सबडिवीजन बनाया गया।

तेरहवाँ अध्याय।
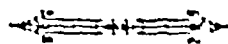
कलकत्ता।

गङ्गाकी पश्चिमी शाखा भागीरथीके, जिसको हुगली नदी भी कहते हैं, बायें अर्थात् पूर्व किनारे पर हवड़ाके सामने पूर्व (२२ अंश, ३९ कला, २ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २२ कला ५९ विकला पूर्व देशान्तरमें समुद्रसे ८० मील उत्तर भारतवर्षकी राजधानी और सबसे प्रधान शहर कलकत्ता है।

कलकत्तेके पासके सियालदहके रेलवे स्टेशनसे उत्तर ५ मील दमदम जंक्शन, २४ मील नइहाटी जंक्शन, २४४ मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३७९ मील दार्जिलिङ्ग और दक्षिण ३८ मील "डायमण्ड हारवर" और कलकत्तेके निकटके हवड़ेके रेलवे स्टेशनसे पश्चिमोत्तर ६७ मील वर्दवान, ७५ मील खाना जंक्शन, २६२ मील (कार्ड लाईनसे) लक्षीसराय जंक्शन, ३३२ मील पटना, ३३८ मील वांकीपुर जंक्शन, ३६८ मील आरा, ४६९ मील मुगलसराय जंक्शन, ४७६ मील बनारस, ५६४ मील इलाहाबाद, ६८४ मील कानपुर जंक्शन, ८२७ मील तुण्डला जंक्शन, ८४३ मील आगरा किला, और ९५४ मील दिल्ली; हवड़ेसे पश्चिम ओर १३२ मील आसनसोल जंक्शन, ७५९ मील नागपुर, १११७ मील मनमार जंक्शन, और १२७८ मील बम्बईका विक्टोरिया स्टेशन और स्टेशन और हवड़ेसे नागपुर और मनमार जंक्शन होकर २१९३ मील पश्चिम-दक्षिण मदरास है।

खास कलकत्ता शहर भागीरथीके किनारेपर लगभग ७ वर्ग मीलके क्षेत्रफलमें फैला है। इसकी लम्बाई चितपुरसे दक्षिण और खिदिरपुरसे उत्तर ४½ मील और औसत चौड़ाई भागीरथी गङ्गासे पूर्व और सर्कुलर रोडसे पश्चिम १½ मील है। खास शहरसे पूर्व और दक्षिण-पूर्व नर्कुलडाङ्गा, शिमला, सियालदह, एंटाली, बालीगञ्ज, भवानीपुर, अलीपुर और खिदिरपुर (शहरतालियाँ) हैं। शहरमें सड़कोंकी लम्बाई १२० मील है। सड़कोंपर रात्रिमें गैसकी लालटेनसे रोशनी होती है। ट्रामगाडी चलनेपर भी प्रधान सड़कोपर घोडेगाडी और एक्कोंकी भीड रहती है। सन् १८८९–१८९० ई० में कलकत्तेकी म्युनिसिपेल्टीकी आमदनी ४३१७१२१ रुपये और उसका खर्च ४१२७८३१ रुपये थे।

हवड़ा स्टेशनके पास आरमेनियन घाटके सामने भागीरथी गङ्गाकी चौडाई लगभग ६०० गज है। राजमहलसे आगे गङ्गाकी दो धारा हो गई हैं। उनमेंसे प्रधान धारा पद्मा, जिसको पद्दा भी कहते हैं, फरीदपुर और ग्वालण्डो होकर कलकत्तेसे बहुत पूर्व समुद्रमे गिरती है और दूसरी धारा भागीरथी,(जिसको हुगली भी कहते है) जो एक समय प्रधान धारा थी, चन्दरनगर हुगली और कलकत्ता होकर दक्षिणको वहती हुई कलकत्तेसे लगभग ८० मील दक्षिण समुद्रमें मिली है। पहिले समयमें भागीरथी कालीजीके मन्दिरके निकट होकर वहती थी। उसका भागर अर्थात् नाला, जिसमें यात्री लोग स्नान करके कालीजीका पूजन करते हैं, अब तक विद्यमान है।

कलकत्तेके पास भागीरथीमें नावके पुलसे दक्षिण कोसों तक सैकडों जहाज और आगबोट सर्वदा देखनेमें आते हैं। इनके मस्तूल और गुनरखोंका सुन्दर दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

कलकत्तेकी हवा सर्द है, वहाँ वार वार और भारी वर्षा हुआ करती है, किन्तु लगातार नहीं। वहाँ औसतमें सालाना वर्षा ६० इञ्च होती है। कलकत्तेका समय मदरासके समयसे ३३ मिन्ट और दिल्लीके समयसे ४६ मिन्ट अधिक और बम्बईके समयसे२९ मिन्ट कम है।

कलकत्तेके आस पास कागज इत्यादिके अनेक कल कारखाने हैं। कागजके कारखानेसे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके दफतर खानेके लिये सरकारने २७० टन कागज खरीदा था। कलकत्तेमें ओरियन्टल इन्सियोरेन्स कम्पनीके पास जिन्दगीका वीमा होता है।

वह आदमीसे उसके जीवन पर्यन्त प्रति महीने नियत रुपया लेकर उसके मरनेपर उसके वारिसको एक नियत रकम देती है। प्रतिवर्ष आषाढ़ सुदी ३ को कलकत्तेमें जगन्नाथ घाटसे जगन्नाथजीकी धूमधामसे रथयात्रा होती है। कलकत्तेमें महाराज यतींद्रमोहनठाकुर इत्यादि कई बङ्गाली जमीन्दारोंको सरकारसे महाराज तथा राजाकी पदवी मिली है। यद्यपि बम्बईकी मनुष्य-संख्या कलकत्तेसे कम नहीं है, किन्तु कलकत्तेके समान विशाल और दृढ इमारतें बम्बईमें बहुत कम हैं।

रेलवे—कलकत्तेके निकटसे रेलवे लाइन ३ तरफ गई है। महसूल तीसरे दर्जेका फी मील $2\frac{3}{4}$ पाई लगता है।

(१) कलकत्तेसे दक्षिण ईष्टर्नबङ्गाल स्टेट रेलवेके सदर्न सेक्सन—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३ बालीगञ्ज।
१० सोनारपुर जंक्शन।
२८ डायमण्ड हारबर।

सोनारपुर जंक्शनसे १८ मील दक्षिण पूर्व केनिंग।

(२) कलकत्तेसे उत्तर ईष्टर्नबङ्गाल स्टेट रेलवे—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

५ दमदम जंक्शन।
७ बेलघरिया।
१० सोदपुर।
१४ बारकपुर।
२४ नइहाटी जंक्शन।
४६ रानाघाट जंक्शन।
५८ बगुला।
१०३ पोडादह जंक्शन।
१२० दामुकदियाघाट (पद्मा गङ्गाके दहिने किनारेपर)
१२६ सारावाट (गङ्गाके बायें)।
१५६ नाटउर।
१९५ नव्वाबगञ्ज।
२४४ पार्वतीपुर जंक्शन।
३०५ जलपाईगोडी।
३२८ सिलीगोडी।
[illegible] दार्जिलिङ्ग।

दमदम जंक्शनसे पूर्वोत्तर २ मील दमदम छावनी, १० मील बारासत, और ३६ मील बनगांव जंक्शन।

नइहाटी जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन।

रानाघाट जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण २१ मील बनगाँव जंक्शन और ८२ मील खुलना।

पोडादह जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया और ४८ मील ग्वालण्डो।

दामुकदियाघाटसे आगबोट गङ्गाके उस पार सारावाटको जाते हैं। दोनों स्टेशनोंका फासिला १२ मील है। सूखी ऋतुओंमें इसके बडे हिस्सेपर चन्दरोजा लाइन बैठाई जाती है। सारावाटके पास 'उत्तरी बङ्गाल रेलवे' आरम्भ होती है।

ग्वालण्डोसे पूर्व थोडा दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदीमें आगबोट जाती है, जिसकी राहमें ७९ मील चाँदपुर और १०४ मील नारायणगञ्ज है।

नारायणगञ्जसे उत्तर रेलके रास्तेसे १० मील ढाका और ८५ मील मैमनसिंह।

कलकत्तेके पासके सियालदहके रेलवे स्टेशनसे उत्तर ५ मील दमदम जंक्शन, २४ मील नइहाटी जंक्शन, २४४ मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३७९ मील दार्जिलिङ्ग और दक्षिण ३८ मील "डायमण्ड हारबर" और कलकत्तेके निकटके हवड़ेके रेलवे स्टेशनसे पश्चिमोत्तर ६७ मील वर्दवान, ७५ मील खाना जंक्शन, २६२ मील (कार्ड लाईनसे) लक्षीसराय जंक्शन, ३३२ मील पटना, ३३८ मील बांकीपुर जंक्शन, ३६८ मील आरा, ४६९ मील मुगलसराय जंक्शन, ४७६ मील बनारस, ५६४ मील इलाहाबाद, ६८४ मील कानपुर जंक्शन, ८२७ मील तुण्डला जंक्शन, ८४३ मील आगरा किला, और ९५४ मील दिल्ली; हवड़ेसे पश्चिम ओर १३२ मील आसनसोल जंक्शन, ७५९ मील नागपुर, १११७ मील मनमार जंक्शन, और १२७८ मील बम्बईका विक्टोरिया स्टेशन और स्टेशन और हवड़ेसे नागपुर और मनमार जंक्शन होकर २१९३ मील पश्चिम-दक्षिण मदरास है।

खास कलकत्ता शहर भागीरथीके किनारेपर लगभग ७ वर्ग मीलके क्षेत्रफलमें फैला है। इसकी लम्बाई चितपुरसे दक्षिण और खिदिरपुरसे उत्तर ४½ मील और औसत चौडाई भागीरथी गङ्गासे पूर्व और सर्कुलर रोडसे पश्चिम १½ मील है। खास शहरसे पूर्व और दक्षिण-पूर्व नर्कुलडाङ्गा, शिमला, सियालदह, एंटाली, बालीगञ्ज, भवानीपुर, अलीपुर और खिदिरपुर (शहरतालियाँ) है। शहरमें सड़कोंकी लम्बाई १२० मील है। सड़कोंपर रात्रिमें गैसकी लालटेनसे रोशनी होती है। ट्रामगाड़ी चलनेपर भी प्रधान सड़कोंपर घोडेगाडी और एक्कोंकी भीड रहती है। सन् १८८९–१८९० ई० में कलकत्तेकी म्युनिसिपेल्टीकी आमदनी ४३१७१२१ रुपये और उसका खर्च ४१२७८३१ रुपये थे।

हवड़ा स्टेशनके पास आरमेनियन घाटके सामने भागीरथी गङ्गाकी चौडाई लगभग ६०० गज है। राजमहलसे आगे गङ्गाकी दो धारा हो गई हैं। उनमेसे प्रधान धारा पद्मा, जिसको पद्दा भी कहते हैं, फरीदपुर और ग्वालण्डो होकर कलकत्तेसे बहुत पूर्व समुद्रमें गिरती है और दूसरी धारा भागीरथी,(जिसको हुगली भी कहते हैं) जो एक समय प्रधान धारा थी, चन्दरनगर हुगली और कलकत्ता होकर दक्षिणको बहती हुई कलकत्तेसे लगभग ८० मील दक्षिण समुद्रमें मिली है। पहिले समयमें भागीरथी कालीजीके मन्दिरके निकट होकर बहती थी। उसका भागर अर्थात् नाला, जिसमें यात्री लोग स्नान करके कालीजीका पूजन करते हैं, अब तक विद्यमान है।

कलकत्तेके पास भागीरथीमें नावके पुलसे दक्षिण कोसों तक सैकडों जहाज और आगबोट सर्वदा देखनेमें आते हैं। इनके मस्तूल और गुनरखोंका सुन्दर दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

कलकत्तेकी हवा सर्द है, वहाँ बार बार और भारी वर्षा हुआ करती है, किन्तु लगातार नहीं। वहाँ औसतमें सालाना वर्षा ६० इञ्च होती है। कलकत्तेका समय मदरासके समयसे ३३ मिन्ट और दिल्लीके समयसे ४६ मिन्ट अधिक और बम्बईके समयसे २९ मिन्ट कम है।

कलकत्तेके आस पास कागज इत्यादिके अनेक कल कारखाने हैं। कागजके कारखानेसे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके दफतर खानेके लिये सरकारने २७० टन कागज खरीदा था। कलकत्तेमें ओरियन्टल इन्सियोरेन्स कम्पनीके पास जिन्दगीका बीमा होता है।

वह आदमीसे उसके जीवन पर्यन्त प्रति महीने नियत रुपया लेकर उसके मरनेपर उसके वारिसको एक नियत रकम देती है। प्रतिवर्ष आषाढ़ सुदी ३ को कलकत्तेमें जगन्नाथ घाटसे जगन्नाथजीकी धूमधामसे रथयात्रा होती है। कलकत्तेमें महाराज यतीद्रमोहनठाकुर इत्यादि कई बङ्गाली जमीन्दारोंको सरकारसे महाराज तथा राजाकी पदवी मिली है। यद्यपि बम्बईकी मनुष्य-संख्या कलकत्तेसे कम नहीं है, किन्तु कलकत्तेके समान विशाल और दृढ़ इमारतें बम्बईमें बहुत कम है।

रेलवे—कलकत्तेके निकटसे रेलवे लाइन ३ तरफ गई है। महसूल तीसरे दर्जेका फी मील $2\frac{1}{2}$ पाई लगता है।

(१) कलकत्तेसे दक्षिण ईष्टर्नबङ्गाल स्टेट रेलवेके सदर्न सेक्सन—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३ बालीगञ्ज।
१० सोनारपुर जंक्शन।
२८ डायमण्ड हारबर।

सोनारपुर जंक्शनसे १८ मील दक्षिण पूर्व केनिंग।

(२) कलकत्तेसे उत्तर ईष्टर्नबङ्गाल स्टेट रेलवे—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

५ दमदम जंक्शन।
७ बेलघरिया।
१० सोदपुर।
१४ बारकपुर।
२४ नइहाटी जंक्शन।
४६ रानाघाट जंक्शन।
५८ बगुला।
१०३ पोडादह जक्शन।
१२० दामुकदियाघाट (पद्मा गङ्गाके दहिने किनारेपर)
१३२ साराघाट (गङ्गाके बायें)।
१५६ नाटउर।
१९५ नव्वावगञ्ज।
२४४ पार्वतीपुर जक्शन।
३०५ जलपाईगोडी।
३२८ सीलीगोडी।
३५९ दार्जिलिङ्ग।

दमदम जंक्शनसे पूर्वोत्तर २ मील दमदम छावनी, १० मील बारासत, और ३६ मील वनगांव जंक्शन।

नइहाटी जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन।

रानाघाट जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण २१ मील बनगॉव जंक्शन और ८२ मील खुलना।

पोड़ादह जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया और ४८ मील ग्वालण्डो।

दामुकदियाघाटसे आगबोट गङ्गाके उस पार सांराघाटको जाते है। दोनो स्टेशनोंका फासिला १२ मील है। सूखी ऋतुओमें इसके बडे हिस्सेपर चन्दरोजा लाइन बैठाई जाती है। सांराघाटके पास 'उत्तरी बङ्गाल रेलवे' आरम्भ होती है।

ग्वालण्डोसे पूर्व थोडा दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदीमें आगबोट जाती है, जिसकी राहसे ७९ मील चॉदपुर और १०४ मील नारायणगञ्ज है।

नारायणगञ्जसे उत्तर रेलके रास्तेसे १० मील ढाका और ८५ मील मैमनसिंह।

चाँदपुरसे 'आसाम बङ्गाल रेलवे' द्वारा ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन।

लक्सम जंक्शनसे दक्षिण थोड़ा पूर्व ५७ मील सीताकुण्ड, ६१ मील बलवाकुण्ड और ८१ मील चटगाँव स्टेशन।

दामुकाद्दियाघाटके स्टेशनसे १२ मील पूर्व कुछ उत्तर सांराघाट स्टेशन तक, जो दूसरे पारमे है पद्मा-गङ्गामें आगबोट चलती है।

पार्वतीपुर जंक्शनसे पूर्वोत्तर २३ मील रङ्गपुर, ३९ मील तिष्टा-जंक्शन और ५३ मील मगलहाट और तिष्टा जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर २६ मील यात्रापुर।

पार्वतीपुर जक्शनसे पश्चिम कुछ दक्षिण १९ मील दीनाजपुर ६५ मील वरसुई जंक्शन और ८९ मील कठिहर जंक्शन।

(३) हवड़ेसे पश्चिमोत्तर 'ईष्टइण्डियन रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१२ श्रीरामपुर।

१४ सेवडाफुली जंक्शन।

२१ चन्दरनगर।

२४ हुगली जंक्शन।

२९ मगरा।

६७ वर्दवान।

७५ खाना जंक्शन।

खाना जंक्शनसे पश्चिमोत्तर कार्ड लाइन पर ४१ मील अण्डाल जंक्शन, ४६ मील रानीगञ्ज, ५७ मील आसनसोल जंक्शन, ६३ मील सीतारामपुर जंक्शन, १०८ मील मधुपुर जंक्शन, १२६ मील वैद्यनाथ जंक्शन और १८७ मील लक्षीसराय जंक्शन।

खाना जंक्शनसे लूपलाइन पर उत्तर ६१ मील रामपुरहाट, ७० मील नलहाटी जंक्शन, १२० मील तीन पहाड जंक्शन १४४ मील साहबगञ्ज।

साहबगञ्जसे पश्चिम ४६ मील भागलपुर, ६१ मील सुलतानगञ्ज, ७९ मील जमालपुर जंक्शन और १०४ मील लक्षीसराय जक्शन।

खास करके कूड़ा फेंकने और घाटोसे माल लेजानेके लिये कलकत्ते शहरके बगलों-पर नदीके किनारे और सर्कुलररोडपर रेलवे बनी हैं।

रेलवे सबसे पहले सन् १८१८ ई० में विलायतमे जारी हुई और सन् १८५२ ई० में हिन्दुस्तानमे बनी। इस समय तक हिन्दुस्तानमे १५ हजार मीलसे अधिक रेलवे लाइन बन चुकी है।

स्टीम् कम्पनियाँ—पेनिनसुलारऐड ओरिएण्टल स्टीम् नेवीगेशन कम्पनीके आगबोट १५ दिनपर कलकत्तेक जेटियोंसे लन्दनके लिये खुलते हैं और मदरास कोलम्बो, एडन, पोर्ट सेड मार्सिलेस और प्लाईमौथमें मुसाफिरोंको उतारते चढ़ाते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट नम्बर २३ गार्डनरीचसे मार्सिलेसके लिये दो हफ्ते पर खुलते हैं. और मदरास, पाण्डीचरी, कोलम्बो, गेली एडन, स्वेज, पोर्टसेड, मेसिना, नेपुल्स और जेनवामें मुसाफिरोंको चढ़ाते उतारते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट पन्द्रहवें दिन लन्दनके लिये, ६ हफ्तेपर आष्ट्रेलियाके लिये और हफ्तेपर बम्बेके लियेखुलते हैं. और किनारेके सब बन्दरोंपर लोगोको चढ़ाते उतारते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट रंगून, सिंगापुर, सिलोन, बम्बे मरीटियस और एंडमन जातेहैं।

एक कम्पनीके आगबोट हर पन्द्रहवें दिन लन्दनके लिये खुलते हैं और कोलम्बो, स्वेज, पोर्टसेड, और मालटामे मुसाफिरोको चढ़ाते उतारते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट पन्द्रहवें दिन लन्दनके लिये कलकत्तेको छोड़ते है और मार्सिलेस और लिवरपुलके लिये वम्बेसे खुलते है।

एक कम्पनीके आगबोट पन्द्रहवें दिन कलकत्तेसे खुलकर मदरास, कोलम्बो, स्वेज केनाल और मालटा होकर लन्दनको जाते है।

एक कम्पनीके आगबोट महीनेमे एकबार कलकत्तेसे लन्दनके लिये खुलते है और कोलम्बोमें मुसाफिरोंको चढ़ाते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट करीव हर महीनेमें पेनग, सिंगापुर, और हङ्गकङ्गके लिये कलकत्तेसे खुलते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट हर शुक्रके दिन आसामके लिये और हर मङ्गलको कचारके लिये खुलते है।

एक कम्पनीके आगवोट मामूली दिनोंपर बीचके स्टेशनोंपर होतेहुए आसाममें डिब्रूगढ़को और हफ्तावारी उड़ीसेमें चान्दबालीको जाते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट हररोज आरमेनियन घाटसे मिदनीपुर और बीचके स्टेशनोंके लिये खुलते हैं और उलवड़ियामे मोसाफिरोंको चढ़ाते है।

ट्रामवे—कलकत्ता ट्रामवे लाइने यह हैं,—(१) सियालदह स्टेशनसे वहूबाजार ष्ट्रीट, डलहौसी स्क्वेयर और हेयर ष्ट्रीट होकर ष्ट्रेण्ड तक, (२) चितपुरसे चितपुररोड, सामिल करते हुये नम्बर १ पुलिस कोर्टके नजदीक ष्ट्रेण्ड तक, (३) रशापुगलासे भवानीपुर, चौरङ्गी, एस्प्लानेड और वोलडकोर्ट हौस ष्ट्रीट होकर डलहौसी स्केयर तक। इनके अलावे धर्मतला ष्ट्रीट, वेलस्ली ष्ट्रीट, एलियट रोड, कालिज ष्ट्रीट, कर्नवालिस ष्ट्रीट, ष्ट्रेण्ड रोड इत्यादि होती हुई कई लाइनें वनी हैं। एक लाइन मैदान और पुल होकर खिदिरपुर गई है। इस भांतिसे करीव ५० मील सडक पर ट्रामवेकी लाइनें वनी हैं, जिनपर ट्रामगाडी चलती हैं। एक ट्रामगाडीको एक या दो घोडे खैंचते हैं और उसपर पचीस तीस आदमी चढ़ते हैं। उसपर बैठनेके लिये वेंच बने हुए हैं। आदमी जिस स्थान पर चाहे वहाँ उसपर चड जाता है और जिस स्थानमें इच्छा करे वहाँ उतरता है।

मनुष्य-गणना—सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय कलकत्तेमें २६०७० पक्के और ४७३५१ कच्चे मकान थे। खास शहर और शहर तलियोंमे ८१०७८६ मनुष्योंकी गणना हुई थी, जिनमेसे खास शहरमे ६८१५६० मनुष्य थे; अर्थात ४४६७४६ पुरुष और २३४८१४ स्त्रियाँ। इनमे ४४४८४५ हिन्दू, २०३१७३ मुसलमान, २८९९७ कृस्तान, २१९९ बौद्ध, १३९९ यहूदी, ४९४ जैन, २८७ सिक्ख और १६६ पारसी थे। शहरसे वाहर दो शहर तलियोंमें ५९५८४ मनुष्य थे, अर्थात् ३५८४२ पुरुष और २३७४२ स्त्रियाँ। इनमे ४३६८७ हिन्दू, १४९८५ मुसलमान, ९०७ कृस्तान, ३ जैन, १ बौद्ध और १ पारसी थे, और दक्षिणी शहरतलीमें ६९६४२ मनुष्य थे, अर्थात् ३७७९४ पुरुष और ३१८४८ स्त्रियां। इनमें ३९,१३१ हिन्दू, २९९६४ मुसलमान, ४६६ कृस्तान, ५१ बौद्ध, १ जैन और २९

दूसर थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार कलकत्ता भारत वर्षमे दूसरा शहर है, किन्तु आस पासकी शहरतलियाँ और हवडाके साथ वह पहला शहर होता है।

कलकत्तेमे यूरोपियन, यूरेशियन, पोर्चुगीज, आरमेनियन, ग्रीक, यहूदी, चीनी, पारसी इत्यादि परदेशी और हिन्दुस्तानके प्रत्येक विभागके हिन्दुस्तानी लोग बसे है।

कलकत्तेमें गङ्गाजीके ज्वार भाटेका समय,—

	ज्वार आरम्भ				भाटा आरम्भ			
तिथि	दिन		रात		दिन		रात	
	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट
दशमी	६	८	६	१३	१०	५८	११	३
एकादशी	६	५६	७	१	११	४६	११	५१
द्वादशी	७	४४	७	४९	१२	३४	१२	३९
त्रयोदशी	८	३२	८	३८	१	२२	१	२७
चतुर्दशी	९	२०	९	२५	२	१०	२	१५
अमावस्या पूर्णिमा ...	१०	८	१०	१३	२	५८	३	३
प्रतिपदा	१०	५६	११	१	३	४६	३	५१
द्वितीया	११	४४	११	४९	४	३४	४	३९
तृतीया	१२	३२	१२	३७	५	२२	५	२७
चतुर्थी	१	२०	१	२५	६	१०	६	१५
पंचमी ...	२	८	२	१३	६	५८	७	३
षष्ठी	२	५६	३	१	७	४६	७	५१
सप्तमी	३	४४	३	४९	८	३४	८	३९
अष्टमी	४	३२	४	३७	९	२२	९	२७
नवमी	५	२०	५	२५	१०	१०	१०	१५

प्रति दिन ज्वारके समय पानीकी ऊँचाई एकही समान अधिक होती है। समुद्र अपने हद्दसे अधिक (विना भारी तूफानके) नहीं बढता; परन्तु अमावस्या और पूर्णिमाके ज्वारका जल प्रति दिनके नियमसे अधिक ऊँचा होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(उद्योगपर्व्व—१५१ वाँ अध्याय) जैसे अमावस्या और पूर्णमासीको समुद्रकी तरंग उठती है, वैसेही पाण्डवोंकी सेनाका महा कोलाहलशब्द आकाशमण्डलको स्पर्श करने लगा। (मत्स्यपुराण—१२२ वाँ अध्याय) चन्द्रमाके बढ़ने घटनेके अनुसार समुद्र बढ़ता घटता है। पूर्णिमा और अमावस्याके दिनोंमे समुद्र १५००

अगुल वढ़ता और घटता है। वाल्मीकिरामयण–(अयोध्याकाण्ड–१४ वॉ सर्ग) सत्यताके कारण समुद्र अपने थोडी भी मर्य्यादाको नही छोडता (अर्थात् अपनी हद्दसे अधिक नहीं वढता) है।

पानीकी नल––वारकपुरसे २ मील उत्तरके मनीरामपुरसे हुगली नदीका पानी कलद्वारा कलकत्तेमें पहुँचाया जाता है। पम्पका स्टेशन और पानीके सव हौज वेलिंटन स्क्वेयरमे है और वैसाही पम्पका स्टेशन हेलीडे स्ट्रीटके पास हालमें वना है। पीने लायक पानीकी नल लगभग २३२ मील लम्वी है। प्रति दिन २ करोड गेलन पानी खर्च होता है। इसके सिवा सडकोपर छिडकनेके लिये विना तय्यार किया हुआ पानी आता है, जिसकी नल ६६ मील लम्वी है। सन् १८७० ई० में पानीकी नल खुली। सन् १८९१ की जनवरी तक १ करोड ५५ लाख रुपये इस काममे खर्च पडे थे। पम्पका नया स्टेशन भवानीपुरमें वना है, जिसमे नित्य ४० लाख गेलन पानी तय्यार होकर शहरके दक्षिण हिस्सेमे (पश्चिम) खिदिरपुरके डकसे (पूर्व) वालीगञ्ज तक जाता है।

कलकत्तेकी पुलिस—कलकत्ता शहर हाईकोर्टके मातहत है। पुलिसका प्रधान हाकिम पुलिस कमिश्नर कहलता है, जिसको और डिपुटी कमिश्नरको वङ्गालके 'लेफ्टिनेटगवर्नर' मोकर्रर करते हैं। पुलिसके लिये कलकत्ता शहर उत्तरीय, दक्षिणीय और मध्य तीन भागोंमें विभक्त है। प्रत्येक भागमें एक सुपरिंटेंडेन्ट और ६ थाने रहते हैं। प्रत्येक थानेमें १ इन्सपेक्टर है। चौथा भाग हुगली नदी है, जिसके लिये १ सुपरिटेन्डेन्ट और ३ थाने है। तीनोमें एक एक इन्सपेक्टर रहते है। एक शाखाभी है, जिसमें एक सुपरिंटेंडेन्ट है।

खास शहरके प्रवन्धके लिये ३ सुपरिंटेन्डेन्ट, २५ इन्सपेक्टर, ८ दारोगा, ३१ सर्जिएन्ट (हवलदार) ६९ करपोरल (नायक), ५१ स्पेशल कांसटिबल और ११०० कांस्टेवल है। सुपरिंटेंडेटोके साथ रिजर्वड् फोर्स १६२ आदमी और सवार पुलिस और गवर्नमेंट गार्डमें ५ इन्सपेक्टर और ३०५ आदमी है।

पुलिस कचहरीकी नई इमारत, जिसका नम्वर १७ है, लालवाजार स्ट्रीटमें सन् १८९० ई० के अक्तूवरमे खुली।

मजिस्ट्रेटके कामके लिथे उत्तरीय और दक्षिणीय दो भागोंमे कलकत्ता तकसीम है,–उत्तरीय भागके मोकदमेको उत्तर–भागके प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट और दक्षिणी भागके मोकदमेको चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट देखते हैं। फौजदारी मुकदमे देखनेके लिये हफतेमें ३ रोज ब्रेंच वैठती है, जिसमे मामूली तरहसे ३ मजिस्ट्रेट रहते हैं, जो अपनेमेंसे एक प्रधान चुन लेते है। म्युनिसिपल्टीके मुकदमे देखनेके लिये हफतेमें ३ दिन कचहरी होती है, जिसको एक आनरेरी मजिस्ट्रेट देखते है।

सवर्वन पुलिस—यहभी पुलिस कमिश्नरके मातहत है। चौवीस परगने जिलेमें कमिश्नर और डिपुटी कमिश्नर दोनोको मजिस्ट्रेटका अख्तियार दिया गया है। कलकत्ता शहरसे वाहरके हिस्से उत्तरी और दक्षिणी दो भागोंमें तकसीम है। हर एकमें एक सुपरिंटेंडेंट और ७ थाने हैं। प्रत्येक थानेमे १ इन्सपेक्टर या सव इन्सपेक्टर रहते हैं। फौजदारी मुकद्दमे देखनेके लिये दो पुलिस कचहरी है। उत्तरी हिस्सेके मुकद्दमोको सियालदहका सवडिविजनल अफसर और दक्षिणी हिस्सेके मुकद्दमोंको अलीपुरका डिपुटी मजिस्ट्रेट देखता है। वाहरो

हिस्सेकी खबरदारीके लिये २ सुपरिंटेंडेंट, १२ इन्सपेक्टर, ४ सब इन्सपेक्टर, २ दारोगा, १६ हवलदार, २६ नायक, और ६२५ कान्स्टेबल हैं।

नाम मुल्क आदि	नम्बर आफिस	पता
अमेरिका-आफिस	३	एस्प्लानेड रोड पूर्व ।
बेल्जियम	७	लियन्स रेंज ।
डेनमार्क	४	फेर्लीप्लेस ।
फ्रांस कंसल जनरलका आफिस	४	रसल ष्ट्रीट ।
जरमन एम्पायर कंसल जनरलका आफिस	४०	चौरङ्गी रोड ।
ए० कंसलका आफिस	२—३	क्लैव रोड ।
ग्रीसकंसलका आफिस	२३	केनिङ्ग ष्ट्रीट ।
इंपीरियल और रायल अष्ट्रो	१३६	केनिङ्ग ष्ट्रीट ।
हङ्गारियन कंसलका आफिस		
इटली आफिस	५५	पार्क ष्ट्रीट ।
नेदरलेंड्स आफिस	११	लालबाजार ।
परसिया—आफिस	५	वेटिङ्ग ष्ट्रीट ।
पोर्चुगाल—आफिस , ..., ..	१	वैंसी टार्ट रोड ।
स्याम—आफिस	१९	राधाबाजार ।
स्पेन—आफिस	१	वैंसी टार्ट रोड ।
स्वेडिस् नरवेजियन—आफिस	१	लालबाजार ।

धर्मशाले—नीचे लिखी हुई धर्मशालाओंमें ३ दिन तक मुसाफिर टिक सकते हैं। सबमें रसोईके चौके और पायखाने बने हैं। हर मंजिलोंमें मुसाफिर रहते हैं।

हेरिसनरोड (नई सडक) और चितपुर रोडके मेलके पास हेरिसनरोडके उत्तर बगलमें (नम्बर १६५) रामकिसुनदास और गिरधारीमलकी धर्मशाला है, जिसके आङ्गनके बगलोंमें तीनमंजिले मकान बने हैं।

रामकिसुनदास, गिरधारीमलकी धर्मशालाके पास हेरिसन रोडके दक्षिण बगल (नम्बर १५०) रामदेव बनियाकी तीन मञ्जिली छोटी धर्मशाला है।

ऊपर लिखी हुई धर्मशालाओंसे पश्चिम-दक्षिण मलिक ष्ट्रीटके पूर्व बगलमें (नम्बर ५४३) राय सूर्य्यमल बहादुरकी तीन मञ्जिली धर्मशाला है।

शहर—कलकत्ते शहरके दो भाग हैं, उत्तरी और दक्षिणी, सर्कुलर रोडसे पश्चिम हुगली नदी तक बैठक खाना, बहूबाजार स्ट्रीट, और लालबाजार—स्ट्रीट है, जिससे दक्षिणके शहरको दक्षिणी भाग और उत्तरके शहरको उत्तरी भाग कहते हैं।

उत्तरी भागमें डेलहौसी—स्कैयरके पश्चिमोत्तरके कारबारी हिस्सेको छोडकर प्रायः सब हिन्दुस्तानी लोग रहते हैं। सडक चौड़ी नहीं हैं। चन्द हिस्सोंमें ऊँचे मकान बने हैं और बहुतेरे हिस्सोंमें देहाती मकान हैं।

उत्तरी भागमे प्रधान स्ट्रीट अर्थात् सडक, जो उत्तरसे दक्षिण गई है; ये है,–स्ट्रेण्डरोड; चितपुररोड; कार्नवालिस-स्ट्रीट और कालिज–स्ट्रीट, जो एकही लाइनमे है और दोनोंके निकट एक एक स्क्वेयर और एक एक तालाव है; और ऐम्हरेष्ट–स्ट्रीट और पूर्वसे पश्चिम जानेवाले स्ट्रीट ये है,–कोलूटोला०स्ट्रीट, जिसकी लाइनमें पश्चिम केनिङ्गस्ट्रीट और पूर्व मिर्जापुर स्ट्रीट है, हेरिसन रोड,जो हुगलीके पुलसे सियालदहके रेलवे स्टेशन तक है, मछुआ बाजार रोड, जिसकी लाइनमें पश्चिम काटन स्ट्रीट है, बीडनस्ट्रीट, जिसकी लाइनमें पश्चिम नीमतल्ला स्ट्रीट है और उसके बीचमे एक स्क्वेयर बना है,और ग्रेस्ट्रीट जिसकी लाइनमे पश्चिम शोभाबाजार–स्ट्रीट है । इनमेंका हेरिसनरोड ७५ फीट चौडा है, वह सन् १८९२ में तैयार हुआ, उसपर बिजुलीकी रोशनी होती है ।

उत्तरीय भागमें राधाबाजार, पुराना और नया चीनाबाजार और बडाबाजार प्रधान बाजार है । राधाबाजार और चीनाबाजारमे सराव, तेल, और अनेक प्रकारके असबाव, कपडा और बहुत किसिमके माल बिकते है । वहाँ जानकार आदमियोको उचित दामपर चीज मिलती हैं, पर सोदागर लोग पहले दूना तक दाम कहते हैं । बडाबाजारमें खुरदा माल, कश्मीरीशाल, जौहरीकी चीजें, बेशकीमती पत्थर, बर्तन,दवा,कपडे इत्यादि वस्तु बिकती है ।

दक्षिणीय भागके बहूबाजारसे दक्षिण, धर्मतल्लासे उत्तर और वेंटिकष्ट्रीटसे पूर्वके हिस्सेमे हिन्दुस्तानी लोग नीचेके दरजेके यूरोपियन, पोर्चुगीज और बहुत वहाँके वासिन्द रहते हे । वहाँ घनी बस्ती देहाती मकान, तंग गली और खराब् नाले हैं ।

धर्मतल्लासे उत्तर चाँदनी चौक नामक बाजार है और उस हिस्सेमे निऊ मारकेट नामका भी एक बाजार बनी है ।

धर्मतल्लासे दक्षिण वेंटिक-स्ट्रीटके पाससे करीब २ मील लम्बा और ८० फीट चौडा चौरंगीरोड नामक सडक है जिसके पूर्व किनारे पर उत्तम मकान बने हुए है, जिनमें बहुतेरे अपने हातेमें और बहुतेरे बागमें खड़े है । मकानोंके आगे (पश्चिम) किलेका मैदान हुगली गङ्गा तक फैला हे । दक्षिणकी तरफके मकानोंके आगे सुन्दर बरण्डे बने है । उनमें बहुतेरे मकान तीन मञ्जिले है जिनमे लम्बे, चौडे तथा ऊँचे कमरे बने हुए है ।

चौरंगीरोडके समानान्तर पूर्व वेलस्ली-ष्ट्रीट नामक उत्तम सडक है, जो करीव करीव सीधी चली गयी है । वह चौड़ी सडक वेलस्ली स्क्वेयर और वेलिण्टन स्क्वेयर होकर गई है । वेलिण्टन स्क्वेयरमें बडा हौज और नया वाटर वर्क्स (पानीकी कल) का पम्पिङ्ग-स्टेशन है ।

वेलस्ली ष्ट्रीटके पूर्व टोटोला महल्ला है, जिसके उत्तर धर्मतल्ला, दक्षिण कलिङ्गा और पूर्व सर्कुलर रोड है । उसमें खास करके मुसलमान खलासी और लेसकार रहते हैं ।

चौरंगीरोडसे पूर्व-दक्षिण सर्कुलर रोड तक पार्कष्ट्रीट है । पार्कस्ट्रीट और उसके दक्षिणके महल्लोंमें प्रायः यूरोपियन लोग वसे हैं । कलकत्तेके उत्तम मकानोमे चन्द मकान वहाँ है । २५ वर्षके अन्दर वहाँ अङ्गरेजी मकान वहुत बढ़ गये हैं और कई नई सडकें कई स्क्वेयर और वहुतेरे मकान बने है । पहले वहाँ देशी लोगोंकी वस्ती थी ।

कलकत्ते शहरके पूर्वकी सीमापर सर्कुलर रोड है । वहाँ कई उत्तम मकान देखनेमें आते हैं और सडकके किनारोंपर खूब सूरतीके साथ दरख्त लगाये गये हें । मैदानमे बडे उत्तम तालाव हैं ।

शहरके यूरोपियन हिस्से, जिनमें वहुत कारोवार होता है, क्लैव ष्ट्रीट, हेयर ष्ट्रीट, होस्टिङ्ग-स्ट्रीट, क्लैवरो, एस्प्लानेड, ओल्डकोर्ट, हौस-ष्ट्रीट, और डेलहौसी स्केयर है और प्रधान यूरोपियन दूकाने, जिनमेंसे कई एक वहुत उमदे हैं, डेलहौसी स्केयर, ओल्डकोर्ट हौम स्ट्रीट और गवर्नमेंट प्रेसमें देख पड़ती हैं।

फौर्ट विलियम (किला)–कलकत्ता शहरके दक्षिण हुगली गङ्गाके पूर्व किनारेपर फोर्ट विलियम नामक उत्तम किला है। किलेके पश्चिम गङ्गा और तीनओर वहुत वड़ा मैदान है। सन् १७५७ ई० में लार्ड क्लैवने इसकी नेव दी। करीव सन् १७७३ ई० में २ करोड रुपयेसे अधिकके खर्चसे किला तैय्यार हुआ। उसकी शकल ८ पहली है पर वरावर नहीं। उनमेंसे ५ पहल जमीनकी ओर और ३ गङ्गाकी तरफ है। किलेके चारो तरफ ३० फीट गहड़ी और ५० फीट चौड़ी सूखी खाई है, जो जरूरत होने पर गङ्गाके पानीसे भर दी जा सकती है। किलेमें सेंटजर्ज गेट, ट्रेजरी गेट, चौरंगी गेट, पलासी गेट, कलकत्ता गेट और वाटर गेट नामसे ६ फाटक हैं। प्रत्येक फाटकपर एक मकान है जिनमें फौजका कमाण्डर इनचीफ और प्रधान अफसर लोग रहते हैं। किलेके भीतर वारकोकी कत्तार तोपखाना, भण्डार घर, मेगजीन और परेड की जमीन हैं। वारकोंमें यूरोपियन और देशी फौजोके लोग रहते हैं वाटर गेटके पास उत्तम तोपखाना है, जिसमे दुश्मनों और दूसरोंसे लियेहुए हर किसिमके छोटे वड़े गोलोंके नमूने हर किसिमके हथियार, और हजारो हथियार जो इस्तमालके लिये तय्यार है, रक्खे हुए हैं। कोयले घाट स्ट्रीटमें तोपखानेके इन्स्पेक्टर जनरलके आफिसमें दरखास्त करने पर तोपखाना देखनेकी इजाजत मिलती है। किलेमें एक यूरोपियन रेजीमेंट और एक देशी पैदल रेजीमेंट रहता है और १०००० आदमी रह सकते है। किलेसे ६०० तोप दग सकती हैं पृथ्वीमें पहले पहल सन् १३७५ ई० मे अग्नि अस्त्र (अर्थात् तोप, वन्दूक) का व्यवहार हुआ। सन् १८०७ ई० में टोपीकी कल्पना हुई और सन् १८३४ से वन्दूकोंके काममें टोपी साई जाती हैं पहले वन्दूकके घोडेमें चकमकका टुकडा लगाया जाता था। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय किलेमें ३४६८ मनुष्य थे, अर्थात् ३११९ पुरुष और ३४९स्त्रियाँ।

सन् १६९८ ई० में दिल्लीके वादशाहकी तरफसे ईष्ट इण्डियन कम्पनीको अपनी हिफाजतके लिये किले वनानेका हुक्म मिला। उस समयके इङ्गलेण्डके वादशाह 'विलियम' के नामसे पहला फोर्ट विलियम किला वनाया गया। कोयलाघाट स्ट्रीटसे उत्तर और फेरली प्लेससे दक्षिण वह किला था। उसके चारों तरफ खाई नहीं थी। उसका विस्तार पूर्वसे पश्चिम २१० गज, दक्षिण १३० गज और उत्तर १०० गज था। उसमें ४ वुर्ज थे, हर एक पर १० तोप रक्खी जाती थीं। उसी किलेके नामसे वर्तमान किलेका नाम फोर्ट विलियम पड़ा।

लार्ड नेपियरकी प्रतिमा—किलेसे पश्चिम-दक्षिण घास जमी हुई गोलाकार जमीनपर कमाण्डर इन्चीफ लार्ड नेपियरकी धातुकी प्रतिमा है, वह जङ्गी पोशाक पहने हुए प्रिंसेप्स घाटकी तरफ मुख किये हुए घोडेपर सवार है।

लार्ड डफरिनकी प्रतिमा–यह सन् १८८४ ई० से १८८८ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वाइसराय थे। किलेसे करीव २०० गज पूर्व चौमुहानी सडकके वीचमें, जहाँसे किलेमे २ रास्ते गये हैं, एक खूवसूरत पायसनूनपर इनकी उत्तम पत्थरकी प्रतिमा है, जो चन्देसे वनी है। इसके वनानेमें ४१ हजार रुपया खर्च पडा है।

लार्ड सर जेम्स उटरमकी प्रतिमा—यह लार्ड डफरिनकी प्रतिमासे पूर्व पार्कस्ट्रीटके फाटकके सामने धातुसे बनी हुई घोड़ेपर सवार है। यह लेफ्टिनेन्ट जनरल और बडा जवामर्द था, जो ६० वर्षका होकर सन् १८६३ ई० में मरा।

एशियाटिक सोसाइटी—यह नम्बर ५७ पार्क स्ट्रीटमें है, जो सन् १७८४ ई० मे एशियाखण्डके इतिहास, शिल्प, साहित्य, आदिके शोध करनेके लिये कलकत्तेमें कायम हुई। महीनेके पहिले बुधको इसकी बैठक होती है। इसमे करीब ३०० मेम्बर और एक बडी लाइब्रेरी (पुस्तकालय) है, जिसमे १५ हजार जिल्दसे अधिक पुस्तकें रक्खी हैं, जिनमे ५ हजारसे अधिक संस्कृत, अरबी, ब्राह्मी, नैपाली, पारसी, और हिन्दीकी पुस्तकें हाथकी लिखी हुई है। सोसाइटीमें सिक्के, ताम्बाकी सनदें, तस्वीरें, नकशे इत्यादि जो रक्खे हैं वे देखने लायक हैं। आनरेरी सेक्रेटारियोंके पास दरखास्त करनेपर लाइब्रेरी और सिक्कोंको आदमी देख सकते है।

अर्ल मेयोकी प्रतिमा—यह सन् १८६९ ई० से हिन्दुस्तानके गवर्नरजनरल और वाइसराय थे, जो सन् १८७२की तारीख १८ फरवरीको एण्डेमन टापूमे एक खूनीके हाथसे ५० वर्षकी उमरमे मारे गये। अर्ल मेयो बडे नेक और सर्व हितैषी थे। लार्ड डफरिनकी प्रतिमासे पूर्वोत्तरकी ओर मीनारसे तीन चार सौ गज दक्षिण चौमुहानी सड़क पर धातुसे बनी हुई घोडेपर सवार इनकी उत्तम प्रतिमा है।

किलेके मैदानका मीनार—गवर्नमेंटहौससे पूर्व-दाक्षिण और धर्मतल्ला बाजारसे दक्षिण १६५ फीट ऊँचा सर डेविड अकतरलोनीका मनुमन्ट अर्थात् समाधितम्भ है उसके सिरपर चढनेके लिये उसके भीतर २६३ सीढ़ियाँ बनी हे। ऊपर चढ़नेसे सारा शहर दिखाई देता है। पुलिस कमिश्नरके पास दरखास्त करनेपर उसकी कुञ्जी मिलती है अकतरलोनीने हैदर अलीके समयसे हिन्दुस्तानकी लडाइयोंमें काम किया था और सन् १८२३ ई० में मालवे और राजपूतानेमें रेजीडेंट था।

मसजिद—धर्मतल्ला स्ट्रीटके कोनेके पास श्रीरङ्गपट्टनके सुविख्यात टापू सुलतानके पुत्र प्रिन्स गुलमहम्मदने सन् १८४२ ई० में एक बड़ी मसजिद बनवाई,जिसमें नित्य सैकडों मुसलमान निमाज पढते हैं।

पारसियोंका अग्निमन्दिर—यह २६ न० एजरा स्ट्रीटमें है। प्रसिद्ध पारसी सौदागर मिष्टर रुस्तमजी कवासजीने सन् १८३७ में इसको बनवाया।

पारसी टावर—यह बेलियाघाट रोडमें है। इसको नौरोजी सोराबजी पारसी सौदागरने सन् १८२२ में तय्यार कराया था।

म्युनिसिपल बाजार—यह म्युनिसिपल आफिस स्ट्रीटके दक्षिण बडा भारी तीन रोखका चौखुण्ठा मकान है, जो सन् १८७४ ई० में ६ लाख ६५ हजार रुपयेके खर्चसे तय्यार हुआ इसमे यूरोपियन लोगोंके खर्चकी सामग्री विकनेके लिये सजी रहती है। इसके बाद अंग्रेज लोगोने धर्मतल्ला बाजारको ७ लाख रुपयेमें खरीद किया।

प्रेसीडेन्सी जेल—यह जनरल हस्पिटलके पास मैदानमें १८ फीट ऊँची दीवारसे घेरा हुआ है। इसमें एक तिमञ्जिला मकान है, जो खियाल किया जाता है कि सिराजुद्दौलाका रिहाती मकान था। इस जेलमें औसत १३०० कैदी रहते हैं, जिनमें ८० से १०० तक

यूरोपियन, यूरेसियन, आरमेनियन, और यहूदी है। इनमेंसे बडे मैयाद वाले लगभग ७०० कैदी वङ्गाल गवर्नमेन्टके लिये छापे और किताबकी जिल्द वन्दीके काम और छोटे मैयाद वाले कैदी तेल पेरने और गेहूँ पीसनेका काम करते हैं। जेलके छापेखानेसे हर महीनेमे औसत ७० लाखसे ८० लाख तक फार्म निकलते हैं। कैदियोंके वर्ष दिनके कामकी कीमत लगभग १२०००० रुपये है। सुपरिंटेन्डेंटके पास दरखास्त करने पर जेलखाने देखनेकी इजाजत मिलती है।

अलीपुरका जेल—यह जेल बेलवेडियर और भवानीपुरके पुलके बीचमे अत्युत्तम जेलखानेका नमूना है। इसमें १७३४ कैदी रह सकते हैं। लगभम ११०० कैदी दस्तकारीके काममे लाये गये हैं। खास करके बिनाईका काम होता है। सुतरी कल द्वारा काती जाती है। बिनाई हाथसे होती है। इसके अलावे इस जेलमे बङ्गालके छोटे जेलोंके कामके लिये खाने, पीने और पकानेके बरतन बनते है और लोहे और लकडीका काम होता है। बढ़ई और लोहारभी दूसरे जेलके कामके लिये यहां सिखलाये जाते हैं। जेल देखनेकी दरखास्त-२४ घण्टे पहले सुपरिंटेंडेंटके पास देना चाहिये। ऐतवारके दिन कोई जाने नही पाता है।

मुजरिम लड़कोंकी चाल सुधारनेका स्कूल—यह अलीपुरके जेलके सामने सन् १८८०-८१ ई० में कायम हुआ। नवजवान मोजरिमे तालीमके कैदमें रक्खे जाते हैं। उनको अच्छा और सेहतवर खोराक दिया जाता है और तरक्कीके लिये पेशा सिखलाया जाता है। वे डेस्क' अलमारी, कुरसी, पलंग, इत्यादि चीजे बनाते हैं। उनमे लोहे और टीनके काम करने वाले, जिल्द वान्धने वाले और छापने वाले भी हैं। सुपरिंटेंडेटसे दरखास्त करनेपर इसको देखनेका हुक्म मिलता है।

संटपाल्स कैथेड्रल—यह-गिरजाके मैदानके अखीर दक्षिणमे है। इस इमारतकी सबसे अधिक लम्बाई २४७ फीट, चौड़ाई, ८१ फोट और ऊंचाई २०१ फीट है। खास गिरजा १२७ फीट लम्बा और ६१ फीट चौडा है। इसमें ५० हजार पाउण्ड अर्थात् ५ लाख रुपया खर्च पड़ा, जो हिन्दुस्तान और इंगलेण्डके लोगोके चन्देसे आया था। गिरजा सन् १८४७ में खुला। इसके पास अङ्गरेजोके बहुत मनूमेंट अर्थात् समाधि चिह्न हैं, जिनमें १६ मशहूर हैं।

सेंट जान्स—चर्च—यह पुराने कबरगाहकी जमीनपर सन् १७८७ मे २ लाखके खर्चसे तैय्यार हुआ। सन् १८११ और १८६३ में इसकी तरक्की हुई। इसमे ७०० आदमी बैठ सकते हैं। यहां प्रसिद्ध अङ्गरेजोंकी बहुत कबरें है।

सेन्ट जेम्स चर्च—यह लोवर सर्कुलर रोडपर २४४ फीट लम्बा, १९४ फीट चौडा और ६५ फीट ऊँचा है, जिसमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं। यह सन १८६४ में तैय्यार हुआ। जमीनके कीमतके अतिरिक्त इसमें २ लाख रुपया खर्च पडा।

स्कूल और कालिज—कलकत्तेमें प्रेसीडेंसी कालिज, संस्कृत कालिज, मेडिकल कालिज इञ्जिनियरिंग कालिज, विशप्स कालिज, कलकत्ता मदरसा, डाक्टर डफका स्कूल इत्यादि है, जिनमें कई स्कूल लड़कियोके लिये भी हैं। किसीमें बिना फीसके लोग पढ़ाये जाते है, किसीमें यतीम यान बिना मा वापके लडके शिक्षा पाते है; किसीमे गाना बजाना और किसीमें हुनरके काम सिखलाये जाते है।

अस्पताल—कालिज-स्ट्रीटपर मेडिकल कालिजका अस्पताल दुनियाँके बडे अस्पतालोंमेसे एक है । इसमें ३०० मरीज रह सकते है । इसके पास तीन मञ्जिला एडिन हस्पिटल है ।

अस्पतालके पूर्वोत्तर आई इनफर्मरी याने आँखकी दवाका सफाखाना है। इसमे ५०० मरीज रह सकते हैं।

प्रेसीडेंसी हस्पिटलमे मरीजोंको प्रतिदिन डबल कमरोंके लिये ५ रुपये और १ कमरेका २ रुपये देना पडता है । इसमे १२१ मरदोंके लिये, १८ औरतोंके लिये और १२ लडकोंके लिये बिस्तर हैं ।

स्ट्रेण्ट रोडके उत्तर गेओ नेटिव हस्पिटल है । इसमे १२० रोगी रह सकते हैं । अस्पतालके सामने दरियाके किनारेके घाटपर शहरके मुर्दे जलाये जाते है ।

कोढ़ी खाना—यह एम्हर्ष्ट स्ट्रीटमे है ।

इण्डियन मिउजियम—(अजायबखाना)–यह किलेके मैदानके पूर्व चोरंगी रोड पर (नम्बर २७ और २८) है । यह ता० १ फरवरीसे ता० १ नवम्बर तक १० बजेसे ५ बजे तक और ता० १६ नवम्बरसे ३१ जनवरी तक १० बजेसे ४ बजे तक हर रोज आम लोगोंके लिये खुला रहता है, पर विद्यार्थियोंके सिवा दूसरे लोगोंके लिये बृहस्पति और शुक्रको बन्द रहता है । ता० १ मईसे १५ मई तक और ता० १ नवम्बरसे १५ नवम्बर तक सफाई और मरम्मतके लिये बन्द रहता है । बन्दके दिनोंमें अफिसरोंमेंसे एकके पास दरख्वास्त करने पर आदमी बरामदोंमें जासकता है ।

अजायबखानेका अगवास चौरंगी रोडपर ३०० फीट लम्बा है और इसकी चौडाई सदर स्ट्रीट की तरफ२७० फीट है । अगवासकी तरफका दो मञ्जिला मकान बहुत ऊँचा है। दो बाजुओमें, जो आगे निकले हुए हैं, और मध्यके पेशगाहमे उमदे खम्भे लगे हैं । एक चौडी सीढ़ी, जो दोनो ओर खुली हुई है, पेशगाहमें ऊपर तक चली गई है । एक कमरेमे जो ८० फीट लम्बा और ३० फीट चौडा है, मेहराबोंके ३ कतार डबल सीढीके घरमें चले गये है, जहाँसे दहिने और बायें ऊपरको सीढ़ी गई हैं ।

अजायबखानेका आंगन १८० फीट लम्बा और १०५ फीट चौडा है, जिसमे घास पेड और पौधे लगे है । आगनके चारों बगलोंपर मेहराबदार सायबान है, दो तलेपर भी चारो तरफ बरण्डा है । पूर्व और पश्चिम ग्यारह ग्यारह और उत्तर और दक्षिण सात सात मेहराबियाँ बनी है ।

इमारतके चारो कोनोंके प्रत्येक कमरा ४४ फीट लम्बा और ४० फीट चौडा है । अजायबखानेकी इमारत सन् १८७५ ई० के पीछे तय्यार हुई । इसके बनानेमें १ लाख ४० हजार पाउण्ड खर्च पडा ।

इसमें सम्पूर्ण एसियाकी अद्भुत और अनोखी चीजें भरी हैं । जल और थलके अद्भुत धातु, वनस्पति तथा जीव कृत्रिम और स्वाभाविक दोनों प्रकारके लाकरके इसमें रक्खे गये है । फल फूल, पेडोंकी टहनिया, मरे हुए जीव जन्तु और नए नए भाँतिके पक्षी, कीट, पतङ्ग इत्यादि शीशोंके भीतर ऐसे दवेके अर्क देकर रक्खे गये हैं कि सब ताजे और जीवित जान पडते हैं । इनके अलावे इसमें भाँति भाँतिके अन्न, वस्त्र, वर्तन,

पसारीकी चीजें इत्यादिके नमूने रक्खे गये है । इसके समान अजायबखाना भारतवर्षमें दूसरा नहीं है ।

पहले नीचेवाले कमरोंमे चारों तरफ देखकर तब प्रधान सीढ़ीसे चढकर ऊपरके मञ्जिलमें चारों तरफ देखना चाहिये ।

नीचेके दक्षिण-पश्चिम और दक्षिणके कमरोंमें अशोकके समयकी बौद्ध मूर्त्तियाँ जो २००० वर्षसे पहलेकी हैं; एक बहुत पुराना तोरन (फाटक) पटनेकी दो बडी मूर्त्तियाँ; बुद्ध गयासे लाये हुए अशोकके समयके कई खम्भेके नमूने और पत्थरके हिस्से और मथुराकी संगतराशी और लेख हैं । कमरेके दक्षिण खिडकीके आगे ६ फीट ऊँची बुद्धकी मूर्त्ति है । दरवाजेके बायें गुप्त बरामदेमें दीवारके आसपास बुद्ध सम्बन्धी सङ्गतराशीका उत्तम सिलसिला है । दूसरा गुप्त-बरामदा १६० फीट लम्बा और ४० फीट चौडा है । (गुप्त राजाओने चौथी और पाँचवीं शतकमें उत्तरी हिन्दुस्तानमें राज्य किया था) । बौद्ध सम्बन्धी सङ्गतराश दहिने और ब्राह्मण सम्बन्धी और जैन सम्बन्धी बायें तरफ है । उडीसेके हिन्दूके मन्दिरोंकी सङ्गतराशीके नमूनेका सिलसिला बायें की दीवारमें लगा है । दूसरा सिलसिला बम्बेका है । बनारसके पासके सारनाथसे जो चीजे आई है, वह अधिक मशहूर हैं । एक मार्बुलका टुकडा है, जिससे बुद्धका जन्म, शिक्षा और मौत जाहिर होता है । बरामदेके सामने ब्राह्मण सम्बन्धी सङ्गतराशी है, जिनमेंसे बहुतेरे कालिञ्जर, बिहार, गौड, कटक इत्यादिसे और चन्दजावा टापूसे आये हैं । बीचमे शीशे लगेहुए बाक्श हैं, जिनमेसे एकमें अनेक भाँतिके वेश कीमती पत्थर और दूसरे टुकडे हैं, जो सन् १८८१ मे बुद्धगयाके मन्दिरके पास उसको खोदते समय मिले थे । दूसरोंमे पुराने समयके कुम्हारके बरतन और धातु और पत्थरके औजार है । एक दूसरे बाक्समें पत्थरकी कुल्हाडी और (लडाई वाला) पत्थरका हथियार, जो पुराने समयमे हिन्दुस्तानमे बनते हैं । चौथे बरामदेमे पत्थरपर लेख, बहुतेरी किसिमकी इल्मी इमारतें और एफ्रिकाके इजिप्ट देशका एक मोमी भी है। मोमी मुर्देकी लाशको कहते है, जिसको इजिप्टके लोग मोम आदि मसाले देकर ऐसी तरकीबसे रखते थे कि वह सडती गलती नहीं ।

पूर्वके कमरेमें लम्बे बाक्सोमे समुद्रके जानवरोके नमूने हैं । उनमेंसे चन्द समुद्रके घास पातके समान मालूम होते हैं, पर वे सब मरेहुए जानवर हैं । बायें तरफ और बीचके टेबुल बाक्सोंमें सीप, घोंघा कौडी, बडा केकडा, हर किसिमकी तितलियाँ, उचुरुंग, कीडे, रेशमके, कीडे, बिच्छी इत्यादि मृत जानवर है ।

उत्तरके कमरेमें हर किसिमके धातु और पत्थरके टुकडे इत्यादि हैं और पश्चिमोत्तरके कोनेके कमरेमें बहुत नकशे टँगे हुए हैं ।

सीढाघरके सिरके पास बर्दवानके महाराज महताबचन्द बहादुरकी (सन् १८८७) दी हुई महारानी विक्टोरियाकी मार्बुलकी प्रतिमा है, जिसके पीछे पेशगाहके ऊपर ५९ फीट लम्बा, ५० फीट चौडा और ५० फीट ऊँचा लाइब्रेरीका बड़ा हाल है, जिसमे सन् १८८७ ई०में करीब १३००० जिल्द पुस्तके थीं । लाइब्रेरीके पास बरामदेमे कीडे, मकोड़के नमूने है ।

दक्षिणके बरामदेमे मरे हुए चिड़ियोंका झुण्ड है। इससे दक्षिण पूर्वके कमरेमें सूखे हुए कीडे मकोडे हैं। वहाँ चमड़े और मांस निकालकर जानवरोंकी समूचीदेहकी हड्डियाँ जैसीकी तैसी खडी की गई है, जिनमें एक बडी कच्छ्ककी हड्डी है।

पूर्वके कमरेमे बाघ, सिंह, गेंडा, हरिन, भैंसे, बिल्ली नेवल, खरगोश, गद्धे, आदि दूध पिलानेवाले जानवरोंकी देहके सिलसिले उत्तम तरहसे लगे है। समुद्रके एक महा मच्छकी तमाम हड्डी ४१ फीट लम्बी। एक बडा मच्छका जबरा है, जो मच्छ १०० फीट लम्बी होगी। ११ फीट ऊँचे एक हाथीकी समूची हड्डी है। दीवारोंमें बहुत किसिमके जानवरोंकी सींग लटकाये गये हैं वहाँ शिवालिक पहाडकी एक बिल्ली शेरके समान बड़ी है। कीडोंके दर्मियान एक मगर १८ फीट और एक सांप १८ फीट लम्बा है। पूर्वोत्तरके कमरेमें खास करके मछलियाँ है।

अजायब घरके पूर्वोत्तरके कोनेसे पूर्व उसमे लगा हुआ तीन मञ्जिला नया अजायब खाना बना है, जिसकी लम्बाई दीवारकी सदर स्ट्रीटके अगबास पर २५६ फीट और छतकी ऊचाई ८४ फीट है। इस इमारत और उसके असबाबमे ३ लाख रूपया खर्च पडा है। नीचेके मञ्जिलेमे हिंदुस्तानकी अनेक कौमोंकी जिन्देके समान मूर्तियाँ उनकी पूजाकी चीजे पोशाक, जेवर, हथियार, कामका औजार, बर्तन इत्यादि सामान है।

दूसरे मञ्जिलमे नफीस कारीगरीकी चीजे, असली और नकली जवहरियोंकी चीजें चांदी पीतल और ताम्बेकी चीजे, कारचोबी और फुलकारीका काम; कुम्हारकी बनाई चीजे, वार्निश किया हुवा काम लकडी हाथींदाँत और मार्बुल काटकर बने हुए असबाब, सींगके असबाब चमकीले हथियार; चटाई, दौरी इत्यादि सामान हैं।

इनके अलावे अजायबखानेमे अनेक भाँतिके कपडे, लैस, कारचोबीके काम, लकडी और हाथीदाँतकी बनी चीजे धातकी दस्तकारी, हिन्दुस्तानके मैदान और पहाड़के बसनेवाले खास कौमों अर्थात् कोल, सथाल, मुंडा, जाट, राजपूत, ब्रह्माके कैरेन, एंडमनके नेग्राइट इत्यादिकी प्रतिमूर्तियो रङ्ग, तेल,तेलके बीज दवा, सूत सीझने वाली चीजें इत्यादि है

गवर्नमेण्ट हौस (बडे लाटकी कोठी) यह टेलीग्राफ आफिससे दक्षिण पश्चिम है इसके दक्षिण २ मील तक किलेका मैदान है ६ एकडके बागके उत्तर भागमें यह खडा है। बाहरके घेरेमे उत्तर और दक्षिण दो दरवाजे बने हैं पूर्व और पश्चिम दो उमदे फाटकके रास्ते है। गवनर जनरल मार्किस आफ वेलस्लीके हुकुमसे सन् १७९९ ई० मे इसकी नेव पडी और सन १८०४ म १३ लाख रुपयेके खर्चसे यह तय्यार हुआ।

गवर्नमेन्टहौसके ४ बाजू है। इसका बड़ा दरवाजा उत्तर है। प्रवेश करनेपर देवढ़ीके भीतर दहिने मार्किस आफ वेलस्लीकी उजले मार्बुलकी प्रतिमा देख पडती है। खाना खानेके कमरेमें सफेद मार्बुलका फर्स लगा है। एक थ्रोनरूम याने शाहीतख्तका कमरा है। सुल्तान टीपूका शाहीतख्त इसमे रक्खा गया, इस लिये इसका नाम थ्रोनरूम पडा। इनके अतिरिक्त नास्ताका कमरा कौन्सिल-कमरा इत्यादि है। खाना खानेके कमरे और उसके पासके कमरोंके ऊपर नाचघर हैं कमरेमे हिन्दुस्तानके बहुतेरे गवर्नर जनरलोंकी और दूसरे बहुतेरे सरीफोंकी तस्वीरें है।

दक्षिणके दरवाजेके सामने सिक्ख-लडाईसे लाईहुई पीतलकी एक उत्तम तोप है, जिसके दोनों तरफ सेरङ्गापाटनकी लडाईमे लाईहुई २ पीतलकी तोपे है। जिनपर शेरोंके सिर और पञ्जे अजब तरहसे बने है और उत्तरके दरवाजेके सामने एक तरफ काबुलकी लड़ाईसे लाईहुई और दूसरी ओर हैदराबादसे लाईहुई पीतलकी तोपे हैं।

ट्रेजरी-यह गवर्नमेंट हौससे पश्चिम बहुत बडी तीन मञ्जिली इमारत है, जिसके कई बाजू बने है। इसका काम सन् १८८२ ई० मे आरम्भ होकर सन १८८४ मे समाप्त हुआ।

लार्ड हार्डिङ्गकी प्रतिमा-यह गवर्नमेन्ट हौसके पूर्व-दक्षिण तीन कोनी जमीनपर मिले हुए धातुसे बनीहुई घोडेपर सवार है प्रतिमा और घोड़ेकी बनावट उत्तम है, जो आम लोगोके चन्देसे बनी है। लार्ड हार्डिङ्ग सन १८४४ ई० से १८४८ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे।

लार्ड लारेन्सकी प्रतिमा—गवर्नमेन्ट हौसके दक्षिण दरवाजेके पास मिले हुए धातुसे बनी हुई पूरी लम्बी इनकी प्रतिमा खडी है। लार्ड लारेन्स सन् १८६४ ई० से १८६९ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वायसराय थे।

लार्ड केनिङ्गकी प्रतिमा–यह गवर्नमेन्ट हौसके पश्चिम-दक्षिण तीन कोनी जमीनपर मिले हुए धातुसे बनीहुई घोडेपर सवार है। लार्ड केनिङ्ग सन् १८५६ ई० से १८६२ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वायसराय थे।

सर इस्टुआर्ट कालिवनकी प्रतिमा–यह गवर्नमेन्ट हौसके पश्चिम सडकके पास तीन कोनी जमीनपर खडी है प्रतिमा मार्बुलकी बनी हुई पूरी लम्बी है सर इस्टुआर्ट कालिवन सन् १८८७ से १८९० ई० तक बङ्गालके लेफ्टिनेन्ट गवर्नर थे।

टाउनहाल–गवर्नमेन्ट हौससे पश्चिम और हाईकोटसे पूर्व टाउनहाल है जिसको सन् १८०८ ई० मे कलकत्तेके बासिन्दोने ७० हजार पाउण्डके खर्चसे बनवाया (इस समय १६ रु० का एक पाउण्ड होता है)। इसमे आम लोगोकी कमीटी होती है।

यह इमारत दो मञ्जिली है। गाड़ी खडी होनेका बरण्डा उत्तर तरफ बना है, जिसमे गोलेकार बहुत मोटे और ऊँचे ८ स्तम्भ लगेहैं। दक्षिणके कमरेमें कूचविहारकी वर्तमान महारानीके पिता केशवचन्द्रसेनकी बडी तस्वीर और अन्य लोगोकी मार्बुलकी ४ आधी मूर्तियाँ और पूर्व तथा पश्चिम दो मञ्जिलेपर जानेकी सीढ़ियाँ है दोनो सीढ़ियोपर मार्बुल की दो दो आधी प्रतिमा देखनेमे आती है। कमरेके दक्षिण १७२ फीट लम्बा और ६५ फीट चोडा बडा हाल (कमरा) है, जिसमे गोलेकार बीस बीस खम्भोके दो कत्तार है। हालके मध्यमे उत्तर तरफ महाराज रामनाथ टैगोर बहादुर सी. एस आईकी मार्बुलकी प्रतिमा मार्बुलकी कुर्सीपर बैठी है और पश्चिम किनारेपर हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (१७८६–१७९३) मार्किस आफ कार्नवालिसकी मार्बुलकी प्रतिमा खडी है। इस हालके दक्षिण एक दक्षिण रुखका दालान है, जिसमें हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (१७७४—१७८५) वारेन हेष्टिङ्गकी मार्बुलकी प्रतिमा खडी है जिसके दोनो बगलोपर दो छोटी प्रतिमा हैं।

ऊपरके उत्तरवाले कमरेमे जिसमे दोनो बगलोपर नीचेसे सीढ़ी गई है छोटी बडी २३ तस्वीरे और मार्बुलकी ४ आधी प्रतिमा है, जिनमें मार्किस आफ वेलस्ली, महारानी

विक्टोरिया, लार्ड मेटकाफ, लार्डलेक्, द्वारिकानाथ टैगोर इत्यादिकी तस्वीरें और राजासर राधाकान्त बहादुर, प्रसन्नो कुमार टैगोर इत्यादिकी प्रतिमा है। इस कमरेके दक्षिण नीचे वाले वडे हालके ठीक ऊपर नीचेहीके समान हाल है। इसमें मानिकजी रुस्तमजी, सर विलियमग्रे, क्लैव इत्यादिकी ६ तस्वीरें हैं। हालसे दक्षिण नीचेके दालानके ऊपर दोनो कोनोपर ४३ फीट लम्बे और २१ फीट चौडे दो कमरे है और मध्यमे ८२ फीट लम्बा और ३० फीट चौडा एक कमरा है, जिसमें २ तस्वीरें लगी है।

नीचेका मञ्जिल २३ फीट और ऊपरका २९½ फीट ऊँचा है। नीचेके मञ्जिलमें मार्बुलका और ऊपरके मञ्जिलमें टीककी लकडीके तख्तोंका फर्श है।

लार्ड विलियम वेंटिककी प्रतिमा–टाउन हालके सामने दक्षिण पूरी लम्बी, मिले हुए धातुसे बनी हुई, इनकी प्रतिमा खडी है। यह सन् १८२८ से १८३५ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे।

हाईकोर्ट—टाउनहालसे थोडा पश्चिम नई हाईकोर्ट है, जो सन् १८७२ ई० मे तैय्यार हुई। इस जगहपर पुराना सुप्रीमकोर्ट और ३ मकान थे।

वडा चौगान (अंगनई) के पूर्व और पश्चिम बगलोंपर दो मञ्जिली और उत्तर और दक्षिण तीन मञ्जिली इमारत हैं। चौगान पूर्वसे पश्चिमको लम्बा है। इसके उत्तर और दक्षिण सत्रह सत्रह और पूर्व और पश्चिम नव नव मेहराबियाँ बनी है, तीन तरफ एकहरा और दक्षिण तरफ दोहरा वरंडा है। बरंडोंके पीछे कमरे है। चौगानमें फुलवाडी और इसके मध्यमें कलके पानीका एक छोटा हौज है। प्रधान दरवाजा दक्षिण, आम लोगोंकी गाडीके (३) दरवाजे पूर्व और पीछेके (३) दरवाजे पश्चिम है।

उत्तरको छोडकर तीन तरफ ऊपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। प्रधान सीढ़ी दक्षिणके टावरमें है। उसी जगह सर एडवार्ड हाइड ईष्टकी प्रतिमा देखनेमें आती है।

दूसरे मञ्जिलमें ७ कचहरियाँ, जज लोगों और वारिष्टरोंके कमरे, जज लोगोकी लाइब्रेरी, और बार लाइब्रेरी, वकीलोंके कमरे, और एटार्नियोके कमरे इत्यादि हैं। दूसरे मञ्जिलमें चारोओर चौगानकी तरफ और वाहर दक्षिण तरफ तीनो मञ्जिलमे वरंडे हैं।

दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें चीफ जस्टिसकी कचहरीमें तीन चीफ जस्टिसोकी तस्वीरें हैं। दक्षिण-पूर्वके कोनेके पासके सेशन जजकी कचहरीमें तीन अङ्गरेजोकी वडी तस्वीरें हैं, जिनमे २ चीफ जस्टिस थे। अपीलके दूसरे दरजेकी कचहरीमें, जो प्रधान सीढ़ीवरसे पश्चिम हैं, हाईकोर्टके पहला देशी जज कश्मीरके रहनेवाले शम्भुनाथपण्डितकी वडी तस्वीर है। पूर्व वारिष्टरोकी लाइब्रेरी और पूर्वके कोनेमे एटर्नियोंकी लाइब्रेरी है। प्रायः सब कचहरियाँ दक्षिण तरफ है। उनमे और उनके आगेके वरण्डेमें वारिष्टर, वकील और साधारण लोगोंकी भीड रहती है। कचहरियोंमे सर्वसाधारण लोगोंके बैठनेके लिये बहुत सी बेञ्च और कुर्सियाँ रक्खी हुई है।

ऊपरवाले तीसरे मञ्जिलमें टैक्सिगञ्ज आफिसर, क्लार्क आफ दी क्राउन, कोर्ट रिसीवर, इनसालवेन्ट कचहरीका प्रधान क्लार्क, लीगल रिमेंब्रेंसर और ऐडवोकेट जनरलके चेम्बर आदिके आफिस हैं।

इस समय हाईकोर्टमें एक चीफ जस्टिस और १२ जज हैं, जिनमें २ हिन्दू, १ मुसलमान और बाकी सब अङ्गरेज हैं। इस हाईकोर्टके आधीन बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा, छोटा नागपुर और आसाम हैं, जो २००५४७ वर्गमीलमें फैले हैं और उनमें ७६८२३८२० आदमी रहते हैं।

हाईकोर्टमें इन्साफके काम इब्तदाई और अपील २ हिस्सोंमें तकसीम है। इब्तदाईमें केवल कलकत्ते शहरके मुकदमे होते हैं और अपीलमें फौजदारी और दीवानी मुकदमे; अपील और निगरानी होकर जिले और दूसरी मातहतकी कचहरियोंसे आते हैं; हाईकोर्टकी इब्तदाई कचहरीकी अपीलभी इसीमें होती है। कचहरी बेञ्चोंमें तकसीम है। हर एक बेञ्चमें एक, दो या इससे अधिक जज रहते हैं। जिस बेंचमें एक जज है, उसकी अपील अधिक जजोंकी बेंचमें होती है। सुप्रीमकोर्ट और सदर दीवानी अदालत दोनों मिलकर सन् १८६२ ई० में हाईकोर्ट बनी।

लार्ड नार्थब्रूककी प्रतिमा—यह सन् १८७२ से १८७६ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वाइसराय थे। हाईकोर्टके दक्षिणके खास दरवाजेके सामने पायसतूनपर इनकी पूरी लम्बी प्रतिमा है, जो आम लोगोंके चन्देसे बनी थी। पायसतूनपर अङ्गरेजी, बंगला, पारसी, और हिन्दी लेख हैं।

बङ्गाल बंक—हाईकोर्टसे पश्चिम हुगली गङ्गाके किनारेपर कलकत्तेकी उत्तम इमारतोंमेंसे बङ्गाल बंककी इमारत है। इसका अगवास गङ्गाकी ओर है। इसकी छत और दीवारोंमें सुनहरी मीनाकारीका काम बना है और इसके फर्शमें काले और सफेद मार्बुलके तख्ते जड़े हुए हैं। यह बंक सन् १८०९ ई– में कायम हुआ था। इसमें परामिसरी नोट इत्यादिका सरकारी काम होता है।

एडेनगार्डन—बङ्गाल बंकसे दक्षिण बाबूघाटके पास एडेनगार्डन है। इस बागमें हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (सन् १८३६ से ४२ तक) लार्ड आकलेण्डकी बहिन मिस एडेनकी प्रतिमा खड़ी थी, जो थोडे दिनोंसे हाईकोर्टके पासकी सड़कपर रक्खी गई है। यह स्थान सुबह और शामको टहलनेके लिये बहुत खुशनुमा है। इसमें लम्बी चौड़ी जमीनपर घास जमाई गई है, घुमावके रास्ते बने हैं, जगह २ फूल और झाड़ लगे हैं, रातमें रोशनी होती है और अच्छे मौसिममें शामको सैकड़ों आदमी टहलते हैं। बागके पश्चिम हिस्सेमें नियत दिनके शामको एक सुन्दर अठपहले बङ्गलेमें अङ्गरेजी बाजे बजते हैं। बागके पास कलकत्तेके क्रिकेटकी जमीन है। एक जगह पानीके बगलपर एक बरमिज पैगोडा (ब्रह्मा देशका मन्दिर) खूबसूरतीके साथ खड़ा है, जो सन् १८५४ की ब्रह्माकी लड़ाईके पीछे ब्रह्माके शहर प्रोमसे लाया गया और सन् १८५६ में यहाँ बनाया गया। इसके पाच खम्भाओंके चार कत्तारोंके ऊपर अजब तरहसे एकके ऊपर दूसरे; चारो तरफसे क्रमसे छोटे होते हुए ८ छप्पर हैं।

लार्ड आकलेंडकी प्रतिमा—यह सन् १८३६ से १८४२ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे। इनकी धातुकी प्रतिमा एडेनगार्डनके उत्तर फाटकके सामने खड़ी है।

सर विलियमकी प्रतिमा—यह जङ्गी जहाजकी फौजके कमाण्डर थे, इनकी सफेद मार्बुलकी प्रतिमा एडेनगार्डनके दक्षिण हुगली नदीके किनारे पर खड़ी है।

वालंटियरोंकी इमारत—हाईकोर्टसे दक्षिण स्वीमिंगवाथ (तैरनेका हम्माम) और एडन गार्डनके बीचमें गङ्गाकी तरफ मुख करके कलकत्तेके वालंटियरोंकी इमारत खडी है। हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वाइसराय लार्ड लैंसडौनने सन् १८८९ ई० की पहली अप्रेलको इसकी नेवका पत्थर रक्खा। सन् १८९० की फरवरीमें चन्देके खर्चसे इमारत तय्यार हुई। इमारत और इसके सामानमें करीब ८०००० रुपया लगा है। इसमें ५०००० हथियार आदि सामान रह सकते हैं और एक बहुत बड़ा कमरा है, जिसमें पांच छः सौ मेम्बर, जिनका नाम लिखा है, बैठते हैं।

तैरनेका हम्माम—इसका सन् १८८७ में लेफ्टिनेंट गवर्नरने खोला। रेजिष्टरमें ४०० से अधिक नहानेवाले आदमियोंका नाम लिखा है इमारतका काम बहुत अच्छा है। इसकी छत लोहेकी है। हम्माम १०० फीट लम्बा और ३४ फीट चौडा है इसके पानीकी गहड़ाई ६ फीटसे ९½ फीट तक बदला करती है। महीनेमें एक दफे पानी निकालकर हम्माम साफ कर दिया जाता है। असबाव पहननेके कमरे टीककी लकडीके बने है। हर दरजे और हर कौमके लोगोंको इस हम्माममें नहानेका समान अधिकार है।

छोटी अदालत—ह्येयर स्ट्रीटके उत्तर बगलपर पोष्ट-आफिससे दक्षिण पुराने पोष्ट-आफिसकी जगहपर छोटी अदालतकी तीन मञ्जिली इमारत है। सन् १८७२ ई० में इसका काम आरम्भ हुआ; १८७४ में यह खुली। यह ३३० फीट लम्बी और औसतमें ६० फीट चौडी है। इसके हर एक मञ्जिलमें उत्तर और दक्षिण वरण्डे है। नीचेके मञ्जिल १८ फीट और दूसरे और तीसरे मञ्जिल पचीस पचीस फीट ऊँचे हैं। आम लोगोंके जानेका दरवाजा वकहाल स्ट्रीटमें पूर्व तरफ है। ऊपरके मञ्जिलोंकी कचहरियोंमें जानेके लिये ३ चौडी सीढियाँ बनी हैं। इस समय छोटी अदालतमें ५ जज रहते हैं। देशी जजको छोड कर दूसरे सम्पूर्ण जज और रजिष्टार वारिष्टर है। इस अदालतमें २००० रुपये तक करजेके मुकद्दमे देखे जाते हैं।

मेटकाफ हाल—यह हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (सन १८३६ ई०) लार्ड मेटकाफके यादगारमें हेयर स्ट्रीट और स्ट्रेण्डरोडके मेलके पास छोटी अदालतसे पश्चिम दरियाके किनारे पर सन् १८४४ई० में चन्देके खर्चसे तय्यार हुआ। हालदो मञ्जिला है, जिसके चारो तरफ गोलेकार बडे बडे २८ खम्भे लगे हैं। प्रधान दरवाजा पूर्व है। नीचेके मञ्जिल खेती और बागवानीकी सोसाइटी (मजलिस) क दखलमें है और ऊपर वालेमें कलकत्ता पबलिक लाइब्रेरी (आम पुस्तकालय) है। दरवाजेके सामने लार्ड मेटकाफकी आधी प्रतिमा देखनेमें आती है।

डलहौसी स्क्येयर और लालदीगी—टेलीग्राफ आफिसके उत्तर और करेंसी वकके पश्चिम डलहौसी स्क्वेयर है। इसके मध्यमें एक बड़ा तालाव है, जिसके चारोतरफ सडक बनी है और उत्तम बाग लगा है। स्क्वेयरके चारोओर लोहेके जङ्गलेका घेरा, चारो कोनोंपर टीनके पायखाने और दक्षिण बगलपर मध्यमें इमारतके वरण्डेमें लार्ड हेष्टिङ्गकी मार्बुलकी प्रतिमा खडी है। यह सन १७७४ से १७८५ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे।

पोष्ट आफिस—डलहौसी स्क्वेयरके पश्चिम किनारेके निकट कोयलाघाट स्ट्रीटके कोनेके पास पुराने किलेकी जगहपर खूबसूरत बनावटका पोष्ट-आफिस है, जो ६३०५१०

रुपयेके खर्चसे तय्यार होकर सन् १८६८ ई० में खुला। इसमें ऊँचे ऊँचे २ मञ्जिल हैं। पूर्व और दक्षिण खूबसूरत खम्भे लगे हैं। दक्षिण-पूर्वका कोन अर्ध गोलाकार है। वहाँ उत्तम खम्भे लगे हैं और उससे होकर एक ऊँचे गोलाकार हालमें जाना होता है, जिसमें लेटर वक्स है।

टेलीग्राफ आफिस—इसका काम सन् १८७३ ई० मे आरम्भ हुआ। यह शहरके उत्तम और वडी इमारतोंमेंसे एक है। इसके प्रधान हिस्सेका चेहरा उत्तर ओर डलहौसी स्क्वेयरकी तरफ है। इसके तीन वाजू हैं। पूर्व ओर १२० फीट ऊँचा एक टावर वना है। पूर्वके वाजूका रोख पुराना कोर्टहौस स्ट्रीटकी तरफ है। दूसरा वाजू पश्चिम और तीसरा वीचमें है। इनमें इमारतका प्रधान हिस्सा और पूर्वका वाजू तीन मञ्जिला है और दूसरे दोनो वाजू दो मञ्जिले हैं। यह इमारत ईंटोंसे वनी हुई ७० फीट ऊँची है। इसमें उत्तर तरफ मध्यमें आमलोगोंके आमदरफ्तका दरवाजा वना है।

इस इमारतमें वङ्गाल डिविजनका सुपरिंटेंडेंट डाइरेक्टर जनरल, डिपोटी डाइरेक्टर जनरल, ऐसिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट, टेलीग्राफके माष्टर आदि वहुत अफसर रहते हैं और यह टेलीग्राफका प्रधान आफिस है।

करेंसी आफिस—यह डलहौसी स्क्वेयरके पूर्व. पश्चिम मुखकी ऊँची इमारत है। इसके नीचेके मञ्जिलमें करेंसीनोटकी खरीद विक्री और छोटे वड़े नोटोंकी परस्पर वदली होती है। कोई आदमी हो चोरी गये हुए नोटोंके नम्वरोंसे मिलाकर उसको नोटके वदलेमें रुपये या रुपयेके वदलेमें नोट मिलजाता है।

दरवाजेपर लोहेका खूबसूरत फाटक लगा है। मध्यका हाल वहुत वडा है। प्रवेश करनेवालेके वाँये नये नोटोंके फारमोंके सन्दूकोंका कत्तार है, जिनमें लाखों किरोडों रुपयेके नोट रहते है। चाँदी किलेके तहखानेमें रहती है, किन्तु जरूरी कामके लिये यहाँके तहखानेमें रक्खी जाती है। ऊपर वाले कमरे खवसूरत है, जिनमें इटालियन मार्बुलके फर्श लगे हैं।

यह इमारत पहले आगरा और माष्टरमैनके वंकके लिये वनी थी। उसके काम वन्द होजानेपर सरकारने इसको खरीद लिया।

आगरा वंक—करेंसी आफिसके पूर्व उसमें लगा हुआ आगरा वंककी तीन मञ्जिली खूबसूरत इमारत है। इसके नीचेके मञ्जिलमे दक्षिण-पूर्वके कोनेके पास वंकका आफिस है। तीन मञ्जिलेपर वंकका अफसर रहता है। मैं इसी वंकमें टिका था।

इस वंकका हेड आफिस लन्दनमें है, जिसकी शाखा मदरास, वम्वे, आगराई, करांची लाहौर, रंगून, सङ्घाई और एडिम्बरामें हैं।

पशु क्लेश निवारिनी सभा—इसका आफिस राधावाजार स्ट्रीट पर १११ नम्वरका है यह सभा सन् १८६२ में कायम हुई, तवसे सन् १८९० ई० तक इसके एजेण्टो द्वारा पशुओंको क्लेश देनेवाले ८३६९३ आदमीकी सजा हो चुकी है। पशु क्लेश निवारनके लिये पहले सन् १८६९ में एक्ट १ और सवसे पीछे सन् १८९० में एक्ट ११ पास हुए। इस समय इसका सभापति आनरेवल्लमिष्टर जष्टिस नरीश हैं। सभाका खर्च चन्दे और जुर्मा-नेसे चलता है। सभाकी तरफसे जानवरोंके पानी पीनेके लिये ३ तालाव और सड़कोंपर जगह जगह ४९ चरन वने हैं।

बङ्गाल सक्रटरीयट (कम्पनी वारक)—यह डलहौसी स्केयरके उत्तर सडकके वगल पर तीन मञ्जिली इमारतोंका सिलसिला है । जिसके दक्षिणका अगवास ६६० फीट लम्बा है । इमारतोंके वढ़ाव और तवदील करनेमें १० लाख रुपये खर्च पडे हैं । इसमे बङ्गाल सेक्रेटरीयट जुडिसियल, पोलिटिकल, रेवीन्यू एजूकेशनल, पवलिक वर्क, इरीगेशन आदि आफिसें वनी है।

कष्टम हौस—डलहौसी स्केयरके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास स्टेण्ड रोडपर सन्१८२०ई० का वना हुआ कष्टम हौस है, जिसमें आमदनी और रफतनी मालका महसूल लिया जाता है । इसमे लगे हुए वहुत गोदाम है ।

सन् १८९०-९१ ई० मे यहाँके वन्दरगाहमे ३३९६१३७२२ रुपयेका माल आया और वन्दरगाहसे ४३७०९०६६१ रुपयेका माल गया और हर किसिमकी रफतनीसे १८६८००६ रुपया और आमदनीसे २६३८९१६ रुपया और निमकसे २१९६८१५४ रुपया महसूल आया ।

पोर्ट ऐड शिपिङ्ग आफिस—गवर्नमेंटने सन् १८९० ई० में कष्टम हौस और पोर्ट कमिश्नरके आफिसके वीचमे इसको वनवाया । सन् १८९१ की पहली जनवरीसे इसमे पोर्ट अफसरका काम आरम्भ हुआ और शिपिङ्ग माष्टर और पोर्टका हेल्थ अफसर रहने लगे । वन्दरगाह सम्वन्धी कामके योग्य यह उत्तम आफिस है ।

वङ्गाल वराडेड वेयर हौस—यह केनिङ्ग-स्ट्रीटसे पश्चिम क्लैव स्ट्रीटमें है । जो सन् १८३८ ई० में कायम हुआ । यह आफिसोंका कत्तार है और कमर्सियल विल्डिङ्ग कहलाता है । जो चीजें वाहरसे आती हैं और जिन पर महसूल लगता है वे इसके जिन्सखाने और गोदामोंमें जमे होती हैं । वाहर जानेवाली चीजोके रहनेका यहाँ कम काम पडता है ।

निऊ सिनेगग—यह केनिङ्ग-स्ट्रीट पर यहूदी लोगोंकी मजहवी पूजाकी इमारत है, जो सन् १८८४ में खुली । यह १४० फीट लम्वी और ८२ फीट चौडी है । इसके खम्भे और दरवाजे इत्यादिमें मार्वुलके तख्ते लगे हैं और सोनहुले काम हैं । गुम्वजकी शकलकी छतमें नीले रङ्गपर सोनेकी सितारें वनी हैं । इसका खास हिस्सा ९२ फीट लम्वा, ३३फीट चौडा और ५२ फीट ऊँचा है । फर्श मार्वुलका लगा है । एक वुर्ज १४० फीट ऊँचा है, जिसके ऊपर चढनेके लिये भीतर सीढ़ियाँ हैं । इसमें एक घड़ी लगी है जिसके चारों तरफ ४ डायल हैं ।

ईष्ट इण्डियन रेलवे कम्पनीका आफिस—यह कष्टम हौससे उत्तर, फयर्ली प्लेसमें दक्षिण तरफ ४०० फीट लम्बा और १८० फीट चौडा है । इसके वनानेमें लगभग ३५०००० रुपया खर्च पडा था । इसमें पत्थरका काम वहुत है । प्रधान आफिसका फर्श मार्वुलसे वना है ।

टकसालघर—यह हवडाके पुलसे २०० गज उत्तर स्ट्रेण्डरोड पर सडकके पूर्व वगलमें वडी जमीन पर है । यहाँ चाँदी और ताँवेकी दो टकसाल हैं । चाँदीकी टकसालकी उत्तम इमारत सन् १८३१ ई० में खुली खास इमारतसे दक्षिण टकसालके अञ्जनके लिये पानीका तालाव वना है । ताँवेकी टकसाल सन् १८६५ ई० मे खुली । चाँदीकी टकसालके मध्यके चौगानमें सोना चाँदीके तहखाने हैं । ताँवेके और

चाँदीकी टकसालके बीचकी बड़ी जमीन पर लोहा और पीतल गलनेका घर और बढ़ई और लोहारोंका कारखाना है।

सिक्के बनानेके लिये, चान्दी और सोना जिसमें $\frac{११}{१२}$ या इससे अधिक निराला हो, बंक और सौदागरोंसे लिया जाता है। सोना एक महीनेमें १ हजार तोलेसे अधिक नहीं लिया जाता। सोना चान्दी आदि धातु ३ घंटे आगपर गलनेपर साँचेमें ढाले जाते हैं, पीछे जाँच होकर उसके सिक्के तय्यार होते है।

टकसालमे नीचे लिखे हुए सिक्के बनाये जाते हैं,—हिन्दुस्तान–गवर्नमेंटके लिये सोनेके मोहर, चान्दीके रुपये, अठनी, चौअनी, दोअनी और ताम्बेके पैसे, आधे पैसे और पाई।

अलवर–राज्यके लिये चान्दीके रुपये।

बीकानेर–राज्यके लिये चान्दीके रुपये।

धार–राज्यके लिये ताम्बेके पैसे, आधे पैसे और पाई।

देवास–राज्यके लिये ताम्बेके पैसे और पाई।

सिलोन–गवर्नमेंटके लिये ताम्बेके ५ सेण्ट, सेण्ट, आधा सेण्ट और चौथाई सेण्ट।

स्ट्रेट्स–गवर्नमेंटके लिये ताम्बेके सेण्ट, आधा सेण्ट और चौथाई सेण्ट।

इम्पीरियल ब्रिटिश ईष्ट एफ्रिकाके लिये ताम्बेके पैसे।

इनके अतिरिक्त फौजी अफसर और सिपाहियों तथा कालिज और स्कूलके विद्यार्थियोंको इनाम देनेके लिये तगमा भी यहाँ बनते है।

जान पड़ता है कि कलकत्तेकी टकसाल दुनियाँके सब टकसालोंमे बडी है। ताम्बे और चान्दीके करीब १० लाख सिक्के इसमे एक दिनमे तय्यार हुए है।

जो आदमी टकसाल देखना चाहे उसको गुरुवारको टकसाल देखनेके लिये पहिलेही मंगलके दिन मिन्टके माष्टरके पास दरखास्त करना चाहिये। ५ आदमीसे अधिकको एक साथ जानेकी इजाजत नहीं मिलती और १० पास तक मिलता है। बीफेके सिवा दूसरे दिनके लिये भी मिन्टके माष्टर खास पास देते है। मिन्ट देखनेका उत्तम समय ११ बजेसे १ बजे तक है। उस समय गली हुई चान्दी ढाली जाती है।

जैन मन्दिर—मानिकतल्लेके बागमें राय बद्रीदास मुकीम बहादुरका जैन मन्दिर है, यह कलकत्तेके सब मन्दिर और मसजिदोंसे बहुत सुन्दर है। मन्दिर एक सुन्दर बागमें बना है। बागमे तालाब, सड़क, चबूतरा और मकान बने हुए है। जैनोकी सालाना यात्रा बडे खर्च और धूमधामसे कलकत्तेकी सडकोंसे निकलती है।

मदनमोहनजीका मन्दिर—यह प्रसिद्ध मन्दिर बाग बाजारमें है। हजारहाँ आदमी इसमे दर्शनको आतेहैं। जन्माष्टमी और रथयात्राके दिनोमें यहाँ बडी भीड होती है।

सत्यनारायणजीका मन्दिर–बडी बाजारकी तूलापट्टीमें सत्यनारायणका विशाल मन्दिर है। यहाँ नित्य कलकत्तेके बहुत लोग दर्शनको आते हैं।

कलकत्तेकी शहर तलियाँ–चौबीसपरगने जिलेके मजिष्टर और कलक्टरके आधीन कलकत्तेकी शहरतलियाँ २३ वर्ग मीलमें फैलती हैं, जिनमें नीचे लिखी हुई प्रधान हैं—

काशीपुर—शहरसे उत्तर काशीपुर एक गाँव है, जहाँ सरकारी तोप बननेकी कल, चीनीके कारखाने और अमीरोंके कई विले (मुफासिलके-मकान) बने हैं। काशीपुरके पास

एक कृषिशाला है, जिसमें अमेरिका इत्यादि कई देशोंके हर तरहके फूल, कन्द फल, सागके बीज और पेड बिकते है और विद्यार्थियोंको कृषी विद्या सिखलाई जाती है।

साततालाव—काशीपुरसे उत्तर वाबू श्यामाचरण मलिकका प्रसिद्ध विला (मुफसिलका मकान) है, जिसमे अच्छी चित्रकारी हुई है और खोदकर मूर्तियॉ वनाई गई है। विलेके चारों तरफकी छोटी नहर तालावोंसे मिली है। नहरपर जगह जगह पुल बने है। साततालावके पास सील घराने वालेका एक उत्तम विला है।

चितपुर—काशीपुरसे दक्षिण चितपुर गॉव ३०० वर्षसे अधिकका पुराना है। यहॉ पूर्व समयमें चित्रकालीको आदमी बलि दिये जाते थे।

नर्कुलडङ्गा—चितपुरके पुल लांघने पर एक वस्तीसे आगे दक्षिण तरफ नर्कुलडङ्गा मिलता है, जहॉ गैस कम्पनीका बडा कारखाना है।

सियालदह—खास कलकत्ते शहरके पूर्व हेरिसन रोडके पूर्वी छोरके पास सियालदह है, जहॉसे 'कलकत्ता और सौथ ईष्टर्न रेलवे' ३८ मील दक्षिण-पूर्व डायमण्ड हारबर तक और 'ईष्टर्न बङ्गाल रेलवे' २०८ मील उत्तर सीलीगोडी तक गई है।

एंटाली—यह सियालदहसे दक्षिण एक बडी बस्ती, है, जहॉ यूरोपियन लोगोंके बहुत मकान है। और म्यूनिसिपेल्टीका कारखाना बना है।

बालीगञ्ज—यहॉ खुला हुआ मैदान है जिसके पास अनेक बारक अर्थात् सैनिक-गृह और गवर्नर जनरलके अङ्गरक्षक फौजकी कवायतकी जगह है। मैदानके चारो तरफ और सडकोंके पास फैली हुई जमीन पर यूरोपियन लोगोके रहनेके लिये उत्तम मकान बने है।

भवानीपुर—कलकत्तेसे दक्षिण भवानीपुरमें देशी लोगोंकी घनी वस्ती है। इसमें धातुके बरतन बनाने वाले बहुतसे हिन्दू कारीगर रहते हैं। और एक पागल खाना और जलकलके पम्पका नया स्टेशन है।

कालीजी—भवानीपुरसे दक्षिण हाईकोर्टसे लगभग ४ मील दूर भागीरथी गङ्गाकी छोडी हुई नालेके निकट कालीघाट नामक वस्तीमे कालीजीका मन्दिर है। वस्तीमें पण्डे लोगोहीके अधिक मकान देखनेमें आते हैं। यह नाला हेष्टिङ्गस पुलके निकट भागीरथीमें मिला है।

कालीके वर्तमान मन्दिरको सन् १८०९ ई० में वेहालाके चौधरियोंने बनवाया। मन्दिरसे नाले तक पत्थरकी सडक बनी है। मन्दिरके पास महादेवजीका मन्दिर है। दर्शक लोग नालेमे स्नान करके कालीजीकी पूजा करते है। दर्शकोंसे पैसे मॉगनेवाली बहुत गरीब लडकी और स्त्रियाँ मन्दिरके पास रहती हैं। चैत्र और आश्विनके नवरात्रोंमें दर्शन और पूजाकी अधिक भीड होती है।

कोई कोई कहता है कि जब शिवजी सतीके मृत शरीर लेकर फिरते थे तब सतीके चरणकी अँगुलियाँ यहॉ गिरी थी, तभीसे यह स्थान हुआ। यहॉ पहले भागीरथी गङ्गाकी प्रधान धारा थी, जिसके स्थान पर वर्तमान नाला है। इसी कालीके नामसे पूर्वकालमें कलकत्ताका नाम कालीकोटा था। पहले समयमें यहॉ देवीजीको मनुष्य वलि दिये जाते थे।

टालीगंज—कालीघाटसे दक्षिण टालीगंजमे चर्चमिशनरी सोसाइटीका स्टेशन है। जिसके पास रामनाथ मण्डलके (सन् १७९६ ई० के) वनवाये हुए वहुत देवमन्दिर स्थित है।

रसापुगला–यहाँ मैशूरके टीपूसुलतानके खान्दानके लोगोके मकान हैं।

अलीपुर–भवानीपुरसे दक्षिण-पश्चिम अलीपुर वस्ती है। यहाँ वङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरकी कोठी, देशी पल्टनके मकाम जिलेका जेलखाना, २४ परगना जिलेका, सदर मकाम, साधारण और लडाई सम्बन्धी आफिस, टेलीग्राफकी सामग्री तय्यार करनेका कारखाना और सरकारी चिडियाखाना है।

लेफ्टिनेट गवर्नरकी कोठी–अलीपुरकी फैली हुई भूमि पर वङ्गालके लेफ्टिनेण्ट गवर्नरकी उत्तम कोठी बनी है। इसके ऊपरके मंजिलमे लेफ्टिनेंट गवर्नरके रहनेका सलतनत और दरवार हाल इत्यादि हैं। कोठीके आसपास वहुत दरख्त लगे हैं और एक तालाव बना है। पश्चिमके फाटकके आगे अलीपुरकी सडक है।

चिड़ियाखाना–लेफ्टिनेण्ट गवर्नरकी कोठीके पास टोलीज नालाके दक्षिण किनारे पर अलीपुरका सरकारी चिडियाखाना अर्थात् पशुशाला है। यहाँ वडे घेरेके भीतर एक वड़ा वाग है, जिसमें जगह जगह पशु, पक्षी, कीडे और दरियाई जानवरोंके रहनेके लिये योग्य-स्थान वने हैं, जिनमें हालकी गिनतीके अनुसार ५०० मेमल (अर्थात् दूध पीनेवाले जानवर) ४०० चिडियें और १३४ कीडे हैं। मेमलोंमें वहुतेरे किस्मके वाघ, हरिन, बन्दर, कई एक गेंडे, भालू, भेड़िया, शृगाल, नीलगाय, साहिल खरगोस, मूसा, मुसूँडी और एक सिंह, एक जुराफ (जङ्गली ऊँट) पक्षियोंमे वहुतेरे तरहके सुतुरमुर्ग, विलायती मुर्गी, चील्ह, वतक, सूगे मोर, कवूतर और कीडों और जलजन्तुओंमे वहुतेरे किसिमके साँप, मछली और घड़ियाल शामिल है। जुराफ ऊँटके समान होता है, पर इसका मुख वैलके समान है, इसकी पीठपर कूवड नहीं होता यह दौडनेमे वहुत तेज होता है।

सन् १८७५ ई० में इसवागका काम आरम्भ हुआ। सन् १८७६ की पहली जनवरीको महारानी विक्टोरियाके पुत्र प्रिंस आफ वेलसने उसको जलूस किया। उसी सालकी मईमे सर्व साधारण लोगोके लिये यह खुल गया। तीन चार वर्षमे इसके सव काम पूरे हो गये। नुमायसके साल १८ लाख ८ हजार ५३२ आदमियोंने इसको देखा। देखनेवालेको एक आना महसूल लगता है।

अलीपुरका वाग–यह वाग हिन्दुस्तानकी खेती और वागवानीकी सोसाइटीका है, जिसके कमरे मेटकाफ हालमें हैं। यहाँ मेम्बरोंको वाँटनेके लिये दरख्त लगाये जाते हैं। और सालाना फूलकी नुमायश होती है। वागके एक हिस्सेमें गुलावोंकी वड़ी कियारियाँ और दरख्तोंके उत्तम नमूने हैं।

खिदिरपुर–अलीपुरसे पश्चिमोत्तर कलकत्ते शहरके दक्षिणकी सीमा पर खिदिरपुरमें देशी लोग फैलमे वसे है। वहाँ एक गिरजा मिलीटरी आर्फन स्कूल और सरकारी डकयार्ड्स हैं।

खिदिरपुरका डक इसका काम सन् १८८६ ई० मे आरम्भ होकर अब तय्यार हुआ है ४३ एकड जमीनपर डकका पानी है इसके वनानेमे २ करोड ५० लाख रुपया खर्च पडा है । इसमें सबसे बडे १४ ष्टीमर रह सकती है जहाज और ष्टीमरोंको इसमें रहनेसे तूफानका डर नहीं रहता ।

गार्डेनरीच–यह हेष्टिंग्स पुलके दक्षिण बहुत पुरानी और प्रसिद्ध जगह है हुगली नदीके किनारे २ मील तक खूबसूरत मकान बने हुए है, जो सन् १७६८ से १७८० ई० तक बने थे । यहाँ अवधके नवाब वाजिद अलीशाह सन् १८५७ से सरकारी पेन्सन पाकर रहते थे । सन् १८८७ ई० में उनके मरनेपर सरकारने उनकी जायदाद नीलाम करदी ।

कम्पनी वाग– इस शाही नबातीबागको सन् १७८६ मे ईष्ट इन्डिया कम्पनीने कायम किया । यह गार्डेनरीचके मटियाबुर्जके सामने गवर्नमेन्ट एनजिनियरीग कालेजके पास हवड़ा जिलेमे भागीरथीके पश्चिमी किनारे पर एक मील फैला है । वागका फाटक भागीरथीके पुलसे ३¼ मील दक्षिणहै । हवड़ा और शिवपुर गाँव होकर एक अच्छी सडक वहाँ गई है जिससे आदमी आसानीसे वागमें पहुँचते है और भागीरथीकी नावद्वाराभी आदमी वागमे जाते है । वाग दिन भर खुला रहता है ।

यह वाग २७२ एकड जमीनपर है वागमे बहुतेरी सडकें बनी है । गाँडी पर चढ़कर सब जगह आदमी जा सकता है । वागके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास हवडा फाटकसे प्रवेश करने पर पहिले एक वटके वृक्षके दोनों तरफ दो पीपलके वृक्ष मिलते है । फाटकके दोनो तरफ दो पतली सडक और सामने एक चौडी सडक गई है । देखनेवालोको चौडी सडकसे आगे जाना चाहिये ।

थोडे आगे जाने पर सडकके दोनो तरफ पानीकी दो चादर मिलती है । उससे आगे कजुआरिनके दरख्तोंके कुञ्जसे वाहर निकलकर एक भूमिके वड़े टुकडे़ पर सडक जाती है जहाँ सडकके दोनों तरफ खजूर लगे हैं । उससे आगे एक नहर पर ३ पुल है । नहर पार होने पर दहिने फूल-वाग मिलता है, जहाँ कियारियोंमे खजूर, फूल और फलोंके वृक्ष लगे है

फूल और पौधेका एक वँगला है, जिसके फूलोंकी शोभा गरमीकी ऋतुओंमे जाहिर होती है और दूसरे ऋतुओंमें उन पौधोकी डॉटी और पत्तियोकी खूवसूरती फूलोंसे भी अधिक देख पडती हैं । वँगलेके खम्भे और सस्तीर लोहेके हैं । वॅगलेके सामने वागके कायम करने वाले जनरल कीडका मनूमेन्ट है । उससे आगे जाने पर एक सडक मिलती है । जिससे चन्द सौ गज आगे जाने पर एक चौडी सीधी सडक दहिने देख पडती है, जो वटके वृक्षके पास गई है ।

यह वट वृक्ष करीव १२५ वर्षका है जमीनसे ५½ फीट ऊपर उसकी जडका घेरा ५१ फीट और इसके सिरका घेरा लगभग ९०० फीट है इसकी शाखोंसे करीब ३०० वरोह निकलकर नीचे जमीन पकड गये हैं । वहुतेरे लटके हुए वरोह गाँठ फोडे हुए वाँसोंके कटे करके उनके पोरोंमें कर दिये गये है । उससे वे वाँसोंके अन्दर होकर जल्दी जमीन पकड लेते है । वट वृक्षसे आगे जानेपर एक मनुमेंट मिलता है,जिससे आगे देवदारुके दोनो कतार होकर सडक दहिने झुकती है ।

बहुत आगे जाकर दहिने घूमने पर पौधोंसे पूर्ण अठपहले बनावटका एक बंगला मिलता है। उसका ढाँचा लोहेका है, जिसपर लोहेके जाल लगाये गये हैं, ऊपर घासका पतला छप्पर और मध्यमें गुम्बज है। बङ्गलेका व्यास २१० फीट है, उसका हर एक पहल ८५ फीट लम्बा है। उसके मध्यके गुम्बजकी ऊँचाई ५० फीट है। बङ्गलेमें बहुतेरे घुमावके रास्ते बने है और भूमिपर तथा बहुतेरे गमलोंमें अनेक भांतिके पौधे लगाये गये हैं। उसको अङ्गरेजीमें पामहौस कहते है।

पामहौसके पश्चिम तरफ आगे जानेपर झीलके किनारे आदमी पहुँचते है, जिसमें थोडे पानीके चिडियें हैं। झीलके पास फूल और पौधेका एक तीसरा बङ्गला है, जिसकी ऊँचाई पामहौस और अर्चिडहौसके बीच बीच है।

कम्पनीबागमे प्रायः सब देशोंके दरख्त लगाये गये है। लोहेके पत्तरोंपर बहुतेरे वृक्षोंका वृत्तान्त लिख करके उनके पास खड़ेकर दिये गये हैं।

हुगली गङ्गाके पासके कल कारखाने—शिवपुर और रामकृष्णपुरके पास जूट दबाने और इसकी दस्तकारीके लिये बहुत बडी इमारतें हैं।

हवडाके उत्तर गुसरी गॉवमें रुईका मिल (कारखाना) है।

हवड़ासे ६ मील उत्तर रेलवे-स्टेशनके पास वाली नामक बस्ती है, जिसमें सन् १८९१ में १६७०० मनुष्य थे। वह पवित्र स्थान समझा जाता है और उसमे हजारों घर ब्राह्मण रहते है। उसके पास गङ्गाके किनारे पर एक उत्तम मकानमे एक बडा पुस्तकालय और पढ़ने और लेक्चर देनेके कमरे हैं और वालीमें कागजका एक मिल है।

वालीके सामने 'बड़ानगर' बस्तीमे वोरा बनानेका एक मिल है। उससे थोडे उत्तर एक बस्तीमें सन् १८५२ के बने हुए बहुतेरे देव मन्दिर हैं।

रिसेरा नामक एक छोटे गॉवके पास जूटका मिल है। वहॉ रिसेरा हौस नामक एक उत्तम पुराना मकान है।

रिसेराके सामने नदीके बाये किनारे पर अगरपाडामें एक गिरजा और एक स्कूल है। उससे ½ मील आगे एकही जगह शिवके २४ मन्दिर हैं, जिससे १ मील आगे बारकपुर है।

सोदपुर—सियालदहके रेलवे स्टेशनसे १० मील उत्तर सोदपुरका रेलवे स्टेशन है। सोदपुरमें पिञ्जरापोल नामक प्रसिद्ध पशुशाला है। प्रति वर्ष गोपाष्टमी (कार्त्तिक शुक्ल अष्टमी) को पिञ्जरापोलका मेला होता है। आर्य्य–सन्तान वहॉ गौवोंकी पूजा करते हैं। मेलेके समय कलकत्तेसे स्पेशल गाडी खुलती हैं।

सात वर्ष हुए कलकत्ते–बडेबाजारके अनेक मारवाड़ी, खत्री, भाटिये और बंगाली इत्यादि धार्मिक पुरुषोंने गौवंशकी रक्षाके निमित्त पिञ्जरापोल स्थापित किया। उसमें सन् १८९० ई० में ७०९ गो, बैल और बछड़, १३० घोडे इत्यादि बीमार तथा लङ्गडे चार पाये और ३५५ चिड़ियें थीं।

इतिहास—कालीके नामसे कलकत्ता नामकी सृष्टि है। अठारहवीं सदीकी किताबोंमें कलकत्ताका नाम कालीकोटा लिखा है।

सन् १६३६ में मुगल बादशाह शाहजहाँने इष्टइंडियन कम्पनीको बंगालेके साथ तिजारत करनेकी आज्ञा दी। सन् १६४० में अङ्गरेजी कोठी हुगलीमें कायम हुई।

सन् १६८६ ई० में अङ्गरेजी एजेंट हुगलीकी कोठी छोडकर सतानतीको चले गये, जो हुगली अर्थात् भागीरथी नदीके किनारे पर एक गाँव था। अब वह जगह टकसालसे सोभा-बाजार तक कलकत्तेका हिस्सा बनी है। पीछे बादशाह औरङ्गजेबके फौजदारने अङ्गरेजी एजेंटपर हमला किया, जिससे अखीरमें एजेंटको सतानती छोडकर मद्रास जाना पडा। उसके पश्चात् बादशाहने अङ्गरेजी तिजारतसे अपना फायदा समझकर लूटी हुई चीजोंका ६० हजार रुपया हरजा देकर अङ्गरेजी एजेंट मिष्टर चार्नकको मदराससे बोला लिया। चार्नकने सन् १६९० ई० के २४ अगस्तको वर्तमान कलकत्ता शहरकी नेव दी।

सन् १६९८ में बादशाहकी तरफसे कम्पनीको अपनी हिफाजतके लिये किला बनाने का हुकुम मिला। जिस जगहपर अब कष्टमहौस और जनरल पोष्ट-आफिस है उसी जगह किला बना और उस समयके इङ्गलैंडके बादशाह विलियमके नामसे किलेका नाम फोर्ट विलियम पडा।

सन् १७०० ई० मे औरङ्गजेबके पुत्र प्रिंस आजीमने कीमती नजर लेकर कम्पनीको सतानती, कलकत्ता और गोविन्दपुर इन ३ गाँवोंको खरीदनेका हुकुम दिया, जो हुगली गङ्गाके किनारेपर चितपुरसे कूलीबाजार तक थे और कलकत्ता क्लाइव स्ट्रीटके उत्तर बाबूघाट तक करीब १०० गजकी लम्बाई मे था।

सन १७१६ में फर्रुखशियरकी तरफसे कम्पनीको कलकत्तेके दक्षिण हुगलीनदीके दोनो किनारे ३७ गाँव खरीदनेका हुकुम मिला, पर बङ्गालके नव्वाब मुर्शिदकुलीखांने जमीन खरीदनेसे उसको गुप्त भावसे रोका, परन्तु उस हुकुमसे कम्पनीको सौदागरीमें बहुत मदद मिली इससे कलकत्तेकी उन्नति होने लगी।

सन् १७२० में कलकत्तेमें जमीन्दारी आफिस कायम हुआ। वह कलकत्तेके लोगोंके दीवानी और फौजदारी मुकदमोंको देखता था। सन् १७२४ में यूरोपियन लोगोंके मुकदमें देखनेके लिये एक महकमा कायम हुआ। सन् १७२६ में मदरास, बम्बई और बङ्गाल जुदे जुदे ३ हाते बनाये गये।

सन् १७४२ में महाराष्ट्रोंने बङ्गालपर आक्रमण करके बालासोरसे राजमहलतक मुल्कको बरबाद करके अन्तमे हुगलीको दखल करलिया। वहाँके बासिन्दे कलकत्तेमें भाग गये। उस समय अङ्गरेजी प्रेसीडेंटको हुकुम मिला कि सतानतीके उत्तर हिस्सेसे गोविन्दपुरके दक्षिण हिस्से तक कम्पनीकी जगह खाईसे घेर दी जाय। ६ मासमे ३ मील खाई तय्यार हुई, जो मरहटोंकी खाई कही जाती थी वह पीछे भरदी गई। सन् १७४८ में महाराष्ट्रोके हमलेसे बचनेके लिये एक कमीटी नियत हुई।

सन् १७५६ ई० में बङ्गालके नव्वाब अलीवर्दीखांके मरनेपर उसका पोता सिराजुद्दौला नव्वाब बना। सन् १७५७ में उसने कलकत्तेपर आक्रमण करके अङ्गरेजोंको निकाल दिया; पर थोडेही दिन बाद अङ्गरेजोंने सिराजुद्दौलाको जीतकर कलकत्तेको दखल करके अलिवर्दीखांके दमाद मीरजाफरको बङ्गालका नव्वाब बनाया (मुर्शिदाबादके वृत्तान्तोंमे देखो)।

सन १७५७ में वर्तमान फोर्टविलियम किलेका काम आरम्भ हुआ। नया किला तय्यार होनेपर पुराना किला धीरे धीरे बरबाद होगया।

सन् १७७३ में पार्लियमेंटकी तरफसे कम्पनीको नया अहदनामा हुआ, जिसके अनुसार यह नियम बना कि कलकत्तेके गवर्नरको गवर्नर जनरल बनाया जाय, उनको २५ हजार पाउण्ड तनखाह मिले, मददके लिये कौंसल कायम हो और तमाम अङ्गरेजी हिन्दुस्तान इनके मातहत रहे और एक सुप्रिमकोर्ट (बड़ी कचहरी), जिसमें एक चीफ जस्टिस और ३ जज रहें कलकत्तेमें कायम हो। सन् १७७४ में २५०००० रुपये सालाने तनखाहपर वारेन हेष्टिंग पहले पहल हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल हुए।

हिन्दके गवर्नर और गवर्नर जनरलोंकी फिहरिस्त, जो 'ईष्ट इण्डिया कम्पनी' के राज्यमें हुए, नीचे हैं—

नम्बर नाम और हिन्दमें आनेका समय।

(१) पहला गवर्नर लार्डक्लैव सन् १७५८ ई०।
(२) हारीवरिलस्ट सन् १७६७।
(३) जानकारटियर सन् १७६९।
(१) पहला गवर्नर जनरल वारेन हेष्टिंग सन् १७७४।
(२) सरजान मेकफर्सन सन् १७८५
(३) मार्किस आफ कार्नवालिस—सन् १७८६।
(४) सरजान शोर (लार्ड टेनमथ) सन् १७९३।
(५) सर एल्लूरेड क्लार्क सन् १७९८।
(६) लार्ड मारिंगटन (मार्किस आफ वेलस्ली) सन् १७९८।
(७) मार्किसआफ कर्नवालिस दूसरी बार सन् १८०५।

नम्बर नाम और आनेका समय।

(८) सरजार्जबाली सन १८०५।
(९) अर्ल आफ मिन्टो सेन १८०६।
(१०) अर्ल आफ माइरा (मार्किस आफ हेष्टिंग) सन १८१५।
(११) जान एडम सन् १८२३।
(१२) अर्ल एम्हरेष्ट सन् १८२३।
(१३) लार्ड विलियम केवेंडिस वेंटिक सन् १८२८।
(१४) सर चार्ल्स मेटकाफ सन् १८३५,
(१५) लार्ड आलकेंड सन् १८३६।
(१६) अर्ल आफ एलेनवरा सन् १८४२।
(१७) वैकौन्ट हार्डिंग सन् १८४४।
(१८) अर्ल आफ डलहौसी (पीछेसे मार्किस) सन् १८४८।
(१९) अर्ल केनिंग सन् १८५६।

हिन्दके वाइसराय, जो बादशाही राज्यमें हुए, नीचे लिखे जाते हैं,—

नम्बर नाम और आनेका समय।

(१) अर्ल केनिङ्ग सन् १८५८।
(२) अर्ल आफ एलजिन सन् १८६२।
(३) सर जान लारेंस (लार्ड लारेंस) सन १८६४।
(४) अर्ल आफ मेओ सन् १८६९।
(५) अर्ल आफनार्थ ब्रूक सन् १८७२।

नम्बर नाम और आनेका समय।

(६) अर्ल आफ लिटन सन् १८७६।
(७) मार्किस आफ रिपन सन् १८८०।
(८) लार्ड डफरिन सन् १८८४।
(९) लार्ड लैसडौन १८८८।
(१०) लार्ड एलगिन सन् १८९२।

चौबीस परगना जिला—यह प्रेसीडेंसी विभागके दक्षिण-पश्चिमका जिला है इसके उत्तर नदिया जिला, पूर्वोत्तर जशर जिला, पूर्व खुलना जिला और सुन्दर वन, दक्षिण समुद्र तक फैला हुआ सुन्दर वन और पश्चिम हुगली नदी अर्थात् भागीरथी है। इस जिलेका

क्षेत्रफल (सुन्दर वनकी विना नापी हुई भूमि और कलकत्तेका ३१ वर्ग मील क्षेत्रफलको छोडकर) २०९७ वर्ग मील है। कलकत्तेको दक्षिणी शहरतली अलीपुर जिलेका सदर स्थान है। एक खास अफसर सुन्दरबनकी मालगुजारीका प्रबन्ध करता है। इस जिलेके उत्तरका भाग बड़ा उपजाऊ है और पूर्वोत्तरका भाग ऊँचा है। इसमें जगह जगह ताडके कुञ्ज लगे है। प्रत्येक बस्तियोंके आस पास वाग लगे हुए हैं। जिलेके दक्षिणके भागमे ३ जङ्गल हैं, इनके अतिरिक्त सुन्दरबनसे उत्तर इस जिलेमें परती जमीन नहीं है। जिलेमें हुगली, विद्याधरी पियाली, कालिंदी और इच्छामती ये ५ प्रधान नदियाँ और कई एक नहर हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय चौबीस परगना जिलेमें १६१८४२० मनुष्य थे, अर्थात् १००३११० हिन्दू, ६०४७२३ मुसलमान, ९९२८ कृस्तान, ४१४ पहाड़ी और जङ्गली, २३० बौद्ध, १० पारसी और ५ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें २१७१८७ मलाह मछुहा, इत्यादि, १४५४९६ कैवर्त, ७८६५४ बागडी, ६२६७० ब्राह्मण, ५६६८२ ग्वाला, ३७१७१ तियर, ३६५८६ चमार, ३००१३ कायस्थ, ६०५४ बनियाँ, ४०७२ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शहर कलकत्तेको छोड़कर चौबीस परगना जिलेके कसबोंमे इस भांति मनुष्य थे;–कलकत्तेकी दक्षिणी शहरतलीमें ६९६४२, दो शहर-तलियोंमें ५९५८४, दक्षिणी बारकपुरमें ३५६४७, बडानगर अर्थात् उत्तरी शहरतलीमें ३४२७८, नइहाटीमें २९७२४, उत्तरीय बारकपुरमें २०९८० बसीरहाटमें १५१०९, बदु-रियामें १२७४४, दक्षिणी दमदममें ११०३७, राजपुरमें १०९४०, उत्तरी दमदम और छावनीमें १०३९६ और बारासत, जयनगर,गोबरडङ्गा,इटण्डामें दश हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—मुगलोंके राज्यके समय चौबीसपरगना 'सातगाँव' सरकारका एक हिस्सा था। सातगाँव, जो अब हुगली जिलेमें हुगली नदीके पश्चिम किनारे पर एक साधारण वस्ती है, एक समय बङ्गालका प्रधान बन्दरगाह था।

सन् १७५७ ई० के २० सितम्बरकी संधिके अनुसार बङ्गालके नव्वाब मीरजाफरने इस जिलेकी जमीन्दारी हक इष्ट इन्डियन कम्पनीको दे दिया। उस समय यह कलकत्तेकी जमीन्दारी या चौबीसपरगनाकी जमीन्दारी करके प्रसिद्ध था और इसका क्षेत्रफल केवल ८८३ वर्ग मील था। सन् १७५९ में दिल्लीके बादशाहने लार्ड क्लाइवको चौबिसपरगनामें जागीरकी सनद दी, जिसके अनुसार पूरा मालिकाना हक जिन्दगीभरके लिये क्लाइवको और उसके बाद सर्वदाके लिये ईष्टइन्डियन कम्पनीको मिलगया। कलकत्ते शहर और बन्दरगाहपर पहिलेहीसे कम्पनीका अधिकार हो गया था।

चौबीसपरगना जिलेके हाकिमोको अखतियार कलकत्ते शहर पर नहीं है। सन्१८६१ मे चौबीसपरगना जिलेमे ८ सबडिवीजन नियत हुए,—डायमण्ड हारबर, अलीपुर, बरुईपुर, दमदम, बारकपुर, बारासत, बसरहाट और सतखीरा। सन् १८८२ में खुलना जिला बनने पर सतखीरा सबडिवीजन उसमें कर दिया गया।

बङ्गाल प्रदेश—इसमें ४ सूबे हैं,–बङ्गाल, विहार, उडीसा और छोटा नागपुर। बङ्गाल प्रदेशके पूर्व आसाम, दक्षिण बङ्गालकी खाडी, पश्चिम मदरास हाता, मध्यदेश, रीवाँका राज और पश्चिमोत्तर देश, और उत्तर नेपाल, सिक्कम और भूटानके राज्य हैं। यह

लेफ्टिनेंटी सन् १८५९ ई० में नियत हुई इसके लेफ्टिनेट गवर्नर कलकत्तेके पास अलीपुरमें रहते हैं। सन १८९१ के अनुसार इस प्रदेशके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल १५१५४३ वर्ग मील और देशी राज्योंका क्षेत्रफल ३५८३४ तथा दोनोंका १८७३७७ वर्ग मील है। यह देश भारतवर्षके सम्पूर्ण देशोंसे अधिक आवाद और उपजाऊ है । इसमें धान बहुत उत्पन्न होता है।

वङ्गाल प्रदेशमें ९ भाग और ४७ जिले इस भाँति हैं;-(सूबे वङ्गालमें) (१) वर्द्-वान विभागमें हुगली, हवडा, वर्द्धवान, वीरभूमि, वाँकुडा और मेदनीपुर, (२) प्रेसीडेंसी विभागमें चौबीस परगना (और कलकत्ता), नदिया, जशर, मुर्शिदावाद और खुलना, (३) राजशाही विभागमें पवना, राजशाही, बुगडा, रङ्गपुर, दीनाजपुर, दार्जिलिङ्ग, जलपाइगोडी और वाकरगंज (४) ढाका विभागमे फरीदपुर, ढाका और मैमनसिह; (५) चटगॉव विभागमें नोआखाली, चटगॉव, पहाड़ी चटगाँव और टिपरा, (सूबे विहा-रमे) (६) भागलपुर विभागमे मालदह, पुर्निया, भागलपुर, मुङ्गेर और सन्थाल पर-गना; (७) पटना विभागमें गया पटना, शाहावाद, सारन, चम्पारन, मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा; (सूबे उड़ीसेमें) (८) उड़ीसा विभागमे वालासोर, कटक, पुरी, वॉकी और अङ्गोल (सूवे छोटा नागपुरमें) (९) छोटा नागपुर विभागमें हजारीवाग, लोहारडागा मानभूमि और सिंहभूमि जिला ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वङ्गालके अङ्गरेजी राज्यमें ७१३४६९८७ मनुष्य थे, अर्थात् ३५५६३२९९ पुरुष और ३५७८३६८८ स्त्रियॉ । इनमे ४५२२०१२४ हिन्दू, २३४३७५९१ मुसलमान, २२९४५०६ जङ्गली जातियाँ इत्यादि. १९०८२९ कृस्तान १८९१२२ बौद्ध, ७०४२ जैन, १४४७ यहूदी, ४१२ सिक्ख, १७९ पारसी, ५७१८ जिनका कोइ मजहव नहीं लिखा गया और १७ छोटे छोटे मजहबवाले थे। इनमें सैकडे पीछे ५३ वङ्गला भाषा वाले, ३६½ हिन्दी भाषावाले ६½ उडिया भाषावाले, २संथाली भाषावाले और ३ अन्य भाषा वोलनेवाले मनुष्य थे ।

वङ्गाल प्रदेशमे अर्थात् बङ्गालके लेफ्टिनेण्ट गवर्नरके आधीनके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १० हजारसे अधिक मनुष्य थे,—

नं०	शहर या कसवा	जिला	जन-संख्या	नं०	शहर या कसवा	जिला	जन-संख्या
१	कलकत्ता	२४ परगना	६८१५६०	९	छपरा	सारन	५७३५२
	दो शहर तलियॉ	तथा	५९५८४	१०	मुङ्गेर	मुङ्गेर	५७०७७
२	पटना और बॉकीपुर	पटना	१६५१९२	११	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९
३	हवडा	हवडा	११६६०६	१२	टिहार	पटना	४७७२३
४	ढाका	ढाका	८२३२१	१३	कटक	कटक	४७१८६
५	गया	गया	८०३८३	१४	आरा	शाहावाद	४६९०५
६	दरभङ्गा	दरभङ्गा	७३५६१	१५	दानापुर	पटना	४४४१९
७	कलकत्तेकी दक्षिणी शहर-तली	२४परगना	६९६४२	१६	श्रीरामपुर	हुगली	३५९५२
				१७	दक्षिण वारकपुर	२४ परगना	३५६४७
८	भागलपुर	भागलपुर	६९१०६	१८	मुर्शिदावाद	मुर्शिदावाद	३५५७६

नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या
१९	वर्द्वान	वर्द्वान	३४४७७
२०	वड़ानगर	२४ परगना	३४२७८
२१	हुगली और चिंसुरा	हुगली	३३०६०
२२	मेदिनीपुर	मेदनीपुर	३२२६४
२३	सतीपुर	नादिया	३०४३७
२४	नइहाटी	२४ परगना	२९७२४
२५	पुरी	पुरी	२८७९४
२६	कृष्णगढ	नदिया	२५५००
२७	चटगॉव	चटगाँव	२४०६९
२८	वरहमपुर	मुर्शिदावाद	२३५१५
२९	सिराजगंज	पवना	२३२६७
३०	वेतिया	चम्पारन	२२७८०
३१	सहसराम	शाहावाद	२२७१३
३२	हाजीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
३३	रामपुर वौलिया	राजशाही	२१४०७
३४	उत्तरीय वारकपुर	२४ परगना	२०९८०
३५	वालसोर	वालासोर	२०७७५
३६	रांची	लोहारडागा	२०३०६
३७	वांकुण्डा	वांकुण्डा	१८७४३
३८	डुमरांव	शाहावाद	१८३८४
३९	वैद्यवटी	हुगली	१८३८०
४०	विष्णुपुर	वांकुण्डा	१८१९०
४१	जमालपुर	मुङ्गेर	१८०८९
४२	ब्राह्मण वेरिया	टिपरा	१८००६
४३	टङ्गैल	मैमनसिंह	१७९७६
४४	नारायणगञ्ज	ढाका	१७७१५
४५	सिवॉन	सारन	१७७०९
४६	केन्द्रपाडा	कटक	१७६४७
४७	मधुवनी	दरभगा	१७५४४
४८	वाली	हवडा	१६७००
४९	हजारीवाग	हजारीवाग	१६६७२
५०	पवना	पवना	१६४८६
५१	वक्सर	शाहावाद	१५५०६
५२	वरिसाल	वाकरगञ्ज	१५४८२
५३	जमालपुर	मैमनसिंह	१५३८८
५४	वसिरहाट	२४ परगना	१५१०९
५५	कुमिला	टिपरा	१४६८०
५६	पुर्निया	पुर्निया	१४५५५
५७	रंगपुर	रंगपुर	१४२१६
५८	दार्जिलिंग	दार्जिलिंग	१४१४५
५९	किशोरगञ्ज	मैमनसिंह	१३९८०
६०	घटाल	मेदनीपुर	१३९४२
६१	इंगलिसवाजार	मालदह	१३८१८
६२	रानीगञ्ज	वर्द्वान	१३७७२
६३	मदारीपुर	फरीदपुर	१३७७२
६४	रिविलगञ्ज	सारन	१३४७३
६५	सोनामुखी	वांकुण्डा	१३४६२
६६	नवद्वीप	नादिया	१३३३४
६७	मोतीहारी	चंपारन	१३१०८
६८	वदुरिया	२४ परगना	१२७४४
६९	लालगञ्ज	मुजफ्फरपुर	१२४९३
७०	जगदीशपुर	शाहावाद	१२४७५
७१	वाढ़	पटना	१२३६३
७२	फीरोजपुर	वाकरगञ्ज	१२२४६
७३	दीनाजपुर	दीनाजपुर	१२२०४
७४	पुरुलिया	मानभूमि	१२१२८
७५	जाजपुर	कटक	११९९२
७६	मैमनसिंह	मैमनसिंह	११५५५
७७	टेकारी	गया	११५३२
७८	चन्द्रकोना	मेदनीपुर	११३०९
७९	साहवगञ्ज	संथालपरगना	११२९७
८०	कुष्टिया	नदिया	१११९९
८१	कांदी	मुर्शिदावाद	११९३१
८२	दक्षिण दमदम	२४ परगना	११०३७
८३	राजपुर	२४ परगना	१०९४०
८४	रोसरा	दरभगा	१०८८७
८५	चत्तरा	हजारीवाग	१०७८३
८६	फरीदपुर	फरीदपुर	१०७७४
८७	शेरपुर	मैमनसिह	१०७४४
८८	उत्तरीयदमदम	२४ परगना	१०३९६
८९	भवुआ	शाहावाद	१०३१६
९०	खरार	मेदनीपुर	१००८३

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वङ्गालके देशी राज्योंके ३५८३४ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३२९६३७९ मनुष्य थे; अर्थात् १६७३१८६ पुरुष और १६२३१९३ स्त्रियाँ। इसमें २६०३८९० हिन्दू, ४५८५५५ जङ्गली जातियाँ, २२०७५६ मुसलमान, ५६७९ जिनका कोई मजहव नहीं लिखा गया, ५५९५ वौद्ध,१६५५क्रस्तान, २२८ जैन, १६ अन्य, और५ सिक्ख थे।इनमे सैकड़े पीछे ४५$_{८}$ उडिया भाषा वाले१९$\frac{३}{८}$ वङ्गला वोलने वाले, १५$\frac{१}{४}$ हिन्दी वाले, ८$\frac{१}{८}$ संथाली भाषावाले, ३$\frac{१}{४}$ टिपरा भाषाके, ३$_{४}$ मुण्डा आदि और ५ अन्य भाषा वाले मनुष्य थे। वङ्गालके देशी राज्योके केवल २ कसवेमे ५ हजारसे अधिक मनुष्य थे;—कूचबिहार राज्यके कूचविहारमे ११४९१ और उड़ीसा महालके खांडपाड़ामें ५०५१।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वङ्गाल प्रदेशकी जातियोंमेंसे नीचे लिखी हुइ जातियोके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे।

जाति	प्रति १००० में	
	पुरुष	स्त्री
वैद्य	७३४	१३९
करन	६०४	१६
कायस्थ ..	५५५	४१
ब्राह्मण. . ..	४७७	२३
वनियाँ... . .	२८०	४

सूवे वङ्गाल—सूवे वङ्गाल अर्थात् खास वङ्गालके, जिसके निवासी बङ्गाली कहे जाते हैं, पूर्व आसाम, दक्षिण वङ्गालेकी खाडी, दक्षिण-पश्चिम वङ्गाल प्रदेशमें उडीसा पश्चिमें वङ्गाल प्रदेशमें सूवे विहार और छोटा नागपुर; और उत्तर स्वतंत्र राज्य भूटान है। खास वङ्गालमें वर्द्वान, प्रेसीडेन्सी; राजशाही, ढाका और चटगांव इन ५ किस्मतोंमें २६ जिले हैं सूबे वङ्गालमें गङ्गा, ब्रह्मपुत्र, तिष्टा, दामोदर, रूपनारायण इत्यादि नदियाँ वहती है, वर्द्वान जिलेमे कोयलेकी प्रसिद्ध खाने हैं, कई एक जिलोंसे कपडे और रेशमकी दस्तकारी होती है और खजूरकी चीनी वनती है।

महाभारत और पुराणोमें वङ्गालका नाम वङ्ग लिखा है, किन्तु ठीक नहीं जान पडत है कि वङ्गदेशकी सीमा किस स्थानसे किस स्थान तक थी महाभारत आदिपर्वके १०४ त्रे अध्यामे लिखा है कि वली नामक एक राजाकी सुदेष्णा स्त्री थी उसने एक अन्धे ऋपिसे संभोग किया, जिससे अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग पुण्ड्र और सुह्म ५ पुत्र उत्पन्न हुए। उनके नामसे एक एक देश प्रख्यात हुआ, अर्थात् अङ्गके नामसे अङ्गदेश, वङ्गके नामसे बङ्गदेश, कलि के नामसे कलिङ्गदेश, पुण्ड्रके नामसे पुण्ड्रदेश और सुह्मके नामसे सुह्मदेश।

बंगलाबर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ ৠ ঌ এ ঐ ও ঔ অং অঃ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ
ক খ গ ঘ ঙ চ ছ জ ঝ ঞ ট ঠ ড ঢ ণ ত থ

द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह
দ ধ ন প ফ ব ভ ম য র ল ব শ ষ স হ

का कि की कु कू के कै को कौ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
কা কি কী কু কূ কে কৈ কো কৌ ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ ৮ ৯

सूबे बङ्गालके दिहाती मकानोंकी दीवारें टट्टियोंकी और छप्पर फूसके होती है। वस्तियोंके मकानोंके झूँड अलग अलग रहते है । बहुतेरे मकानोंके आस पास केले, खजूर, नारियल, इत्यादिके, वृक्ष लगाये जाते है। बहुतेरे हिन्दू अपने अपने गृहके पास देवताके अर्थ एक कोठरी रखते है ।

खास बङ्गालेमे अधिक धान उत्पन्न होता है और लाखों आदमी दूसरे देशोंसे आकर इस सूबेमें व्यापार या नौकरी करते है इसदेशके बहुतेरे लोग रेशमके कीडोंको पालते है और रेशम सम्बन्धी काम करते है। बङ्गालियोकी भाषा बङ्गला है, जिसमें संस्कृत शब्द बहुत मिले हुए है । इनके शरीर निर्बल है, किन्तु इनकी बुद्धि प्रबल होती है, वे इस समय अङ्गरेजी शिक्षामे निपुण होकर बडे बडे ओहदे पाते है । बङ्गालेकी अनेक स्त्रियाँ भी प्रतिवर्ष बी. ए. एम. ए. पास करती हैं ।

सर्वसाधारण बङ्गाली धोतीके ऊपर कुर्ता या कोट पहनकर कन्धेपर चादर रखते है । इनका शिर प्रायः सर्वदा उघार रहता है। भारतवर्षके अन्य हिन्दुओंके समान इनके शिखा रखनेकी रीति नहीं है। इनमें स्नान करनेकी चाल बहुत है । वे हिन्दू धर्ममे बडे दृढ होते है और अपने धर्मके लिये बड़ा आन्दोलन करते हैं। बङ्गालकी स्त्रियोमे परदेमे रहनेकी चाल बहुत कम है, वे प्रायः झीने कपडे पहनती है, कुर्ते या चोली पहननेकी रीति इनमे नहीं है।

बङ्गालियोका साधारण भोजन शाक भात और मछली है। बहुतेरे धनी लोग मछलीके वास्ते अपने मकानके पास दीग्गी बना रखते हैं।

आश्विनके नवरात्रमें बङ्गालेके स्थान स्थान पर कालीजीकी पूजाका उत्सव बडे धूम धामसे होता है । कालीजी और शिव आदि देवताओंकी मृणमय विचित्र प्रतिमा बनाई जाती हैं । बङ्गाली लोग बड़े उत्साहसे कालीजीकी पूजा करते है और अंतमें दशहरेके दिन प्रतिमाओको नदीके जलमे विसर्जन कर देते हैं।

बङ्गालेमें ब्राह्म समाज नामकी एक नई संप्रदाय नियत हुई है। सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय भारतवर्षमें इस संप्रदायके ३४०० मनुष्य थे जिनमें ७०८ कलकत्ते शहरमे थे। राजा राममोहनरायने इस समाजके मतकी नेव दी, जिनके उद्योगसे भारत–गवर्नमेन्ट ने सन् १८२९ ई० में आइन द्वारा सती होनेकी रीति बन्द करदी सन् १८३० मे कलकत्तेमें इस मतकी नेव पड़ी। उसी सनसे ब्राह्म सम्वत् आरम्भ हुआ। राजा राममोहन रायके दश वर्ष हिन्दुस्तान छोड देनेसे ब्राह्म समाज निर्बल होगया था। सन् १८४२ मे देवेन्द्रनाथ टैगोर इस समाजमें मिलकर लोगोंको धीरे धीरे एक ईश्वरकी पूजामे विश्वास दिलाने लगे। "एकमेवाद्वितीयंब्रह्मनेहनानास्तिकिञ्चन" इत्यादि श्रुति उन लोगोका मूल है । ब्रह्मैव एकमिदमग्र आसीन्नान्यत्किञ्चनासीत्तदिदंसर्वमसृजत् । तदेवनित्यंज्ञानमनन्तंशिवं स्वतंत्रनिरवयवमेकमेवाद्वितियंसर्वव्यापिसर्वनियन्तृसर्वाश्रयंसर्ववित् सर्वशक्तिमद्ध्रुवंपूर्णमप्रतिममिति । एकस्यतस्यैवोपासनयापारत्रिकमैहिकंचशुभम्भवति । तस्मिन्प्रीतिस्तस्यप्रियकार्यसाधनञ्चतदुपासनमेव ॥ अर्थात्–पूर्वमे एक ब्रह्मही था और कुछ न था उसने संपूर्ण पदार्थ उत्पन्न किये वही ब्रह्म नित्य, ज्ञानस्वरूप, अनन्त, कल्याणकारी, स्वतन्त्र, निरवयव, एकही, अद्वितीय, सर्वव्यापी, सर्वनियन्ता, सर्वाधार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, अचल, पूर्ण और अनुपम है । एकही

उसकी उपासनासे परलोक और इस लोकमे शुभ होता है। ब्रह्ममे प्रीति करना और उसके प्रिय काम करना उसकी उपासना ही है। यही ब्राह्म समाजियोंका मत है। वे लोग जाति-विभागकी रीतिको नहीं मानते है। सन् १८४५ में चारों वेदोंसे बाते निकालकर एक ग्रन्थ बनाया गया और इस मतके लोग उसको शिक्षाके कामोमें लाने लगे। सन् १८४७ तक इस समाजके मतमे ७६७ मनुष्य शामिल हुए। सन् १८५८ में २० वर्षकी अवस्थाके बाबू केशवचन्द्रसेन इस समाजमें आमिले, उस समय १० वर्षके बीच समाज बहुत उन्नतिकर चुका था, बङ्गालके भिन्न भिन्न देशोमे उसकी शाखा नियत हो चुकी थीं। देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशवचन्द्रसेनके मिले हुए असरसे चन्द इस्तमाली सुधार हो गये। केशवचन्द्रसेनकी वक्तृता बडी हृदय ग्राहक थी। वह ब्राह्म समाजमें बडे प्रसिद्ध हुए। उनकी पुत्रीका व्याह कूचबिहारके वर्तमान महाराजसे हुआ। वह सन् १८८४ ई० मे मर गये। कलकत्तेसे ब्राह्म-समाज वालोंकी "तत्त्ववोधिनी प्रतिका" नामक एक अखबार निकलता है।

सन् १८८१ को मनुष्य–गणनाके समय सुन्दरबन छोड करके सूबे बंगालका क्षेत्रफल ७०४३० वर्ग मील था। जातियोंके खानेमे २००६३४० कैबर्त, १५६४००० चण्डाल, १०७६८५४ ब्राह्मण, १०५६०९३ कायस्थ, ७२०३०२ बागडी, ६१३१३२ ग्वाला, ५४७७३२ सद्गोप, ५१५०४२ तेली और कालू, ४३८५४५ वैष्णव, ४०९६६२ चमार और मोची, ३८२५०६ सूण्डी, ३७४६५५ जालिया, ३२४५६८ पोड, ३१७७८९ वनियॉ, २८५६२० लोहार, २५२४१८ बाउरी, २५२२९६ कुम्हार, २२८६७५ तियर, ११०५३९ राजपूत. ८७५३६ वैदिया और बाकीमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

इतिहास—सन् ईस्वीकी बारहवीं सदीके अन्त तक बङ्गालमे गङ्गाके नीचेकी वाटीमे बहुतेरे छोटे छोटे राजा राज्य करते थे। सन् १२०० से बङ्गालमे मुसलमानोंका विजय आरम्भ हुआ लगभग सन् १२१० से १३३६ तक बगालकी हुकूमत करनेवाले गवर्नरोंको मुसलमान बादशाह लोग कायम करते थे। सन् १३३६ से १५३९ तक मुसलमान गवर्नर स्वाधीन रहे। सन् १५३९ में पठानोने बंगालको अपने अधिकारमे कर लिया। सन् १५७६ में दिल्लीके बादशाह अकबरने पठानोंका विनाश करके बंगालको मुगलोंके राज्यमें मिला लिया। स १७६५ मे ईष्टइन्डिया कम्पनीने बिहार और उडीसेके साथ बंगालको लेलिया। प्रथम मुसलमानोने समय समयपर हिन्दुओके तीर्थोंको नष्ट भ्रष्ट करते थे, मन्दिरोको तोडते थे, इनकी धर्म पुस्तकोंको जलाते थे और इनके धर्म कर्ममें अनेक भातिकी बाधा डालते थे, अङ्गरेजोंके राज्य होनेसे यह सब विपत्ति जाती रही; हिन्दू इत्यादि सब मतके लोग स्वतन्त्र भावसे अपने अपने मतका पालन करने लगे।

हवड़ा।

कलकत्तेके सामने पश्चिम भागीरथी गङ्गाके दूसरे पार अर्थात् दहिने किनारे पर सूबे बगालेके बर्दवान विभागमे जिलेका सदर स्थान हवडा एक शहर है, जिसको कलकत्तेकी शहरतली कहना चाहिये। जो लोग पश्चिमसे कलकत्ता जाते हैं, वे हवड़ेमें रेलगाडीसे उतर भागीरथीको पुल द्वारा पार होकर कलकत्तेमें पहुँचते है वहॉ भागीरथीपर नावोंका पुल बना है। मगल और शुक्रवारको पुलका एक भाग २ घण्टे तक खोल दिया जाता है, उस मार्गसे

सम्पूर्ण नाव और जहाज पुलसे निकल जाते हैं। पुलपर बिजुलीकी रोशनी होती है। पुलसे दक्षिण बहुतेरी नाव तैयार रहती है, जो एक पैसा लेकर आदमीको पार उतार देती हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हवड़ामें ११६६०६ मनुष्य थे, अर्थात् ७०४७७ पुरुष और ४६१२९ स्त्रियां। इनमे ८६२४७ हिन्दू, २८३६६ मुसलमान, १८६७ कृस्तान, ५६एनिमिष्टिक, २९ बौद्ध, १० यहूदी, ७ जैन और २४ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारत वर्षमें २४ वाँ और सूबे बंगालमे दूसरा शहर है।

रेलवे स्टेशनसे लगभग $\frac{3}{2}$ मील उत्तर चुरू वाले राजा शिवबक्स बागला बहादुरकी दुमंजिली धर्मशाला बनी हुई है जिसमें मुसाफिर लोग ३ दिन तक टिक सकते हैं। स्टेशनसे दक्षिण गङ्गाके किनारे पर बर्न कम्पनीका बड़ा कल कारखाना है, जिसमें रेल पुल, मकान इत्यादिके कामके लिये लोहे और पीतलके संरजाम तैयार होते है। इनके अतिरिक्त हवड़ेमें ईष्ट इण्डिया रेलवेका बडा स्टेशन, अनेक प्रकारके मिल अर्थात् कल कारखाने, बहुतेरे स्कूल और कलकत्तेके सौदागरोके दिहाती मकान बने हुए हैं और एक मजिष्टर रहता है। शिवपुरके दक्षिण प्रसिद्ध कम्पनीबाग और इंजिनियरिंग कालिज है।

हवड़ा जिला—यह जिला बर्दवान विभागमें हुगली जिलेके दक्षिण ४७३ वर्ग मीलमे त्रिभुजाकार फैला हुआ है। इसके उत्तर बालीखाल और हुगली जिलेकी दक्षिणी सीमा पूर्व भागीरथी नदी, दक्षिण भागीरथी और रूपनारायण नदी और पश्चिम रूपनारायण नदी है। जिलेमें बहुतेरी छोटी नदियाँ, उलबड़िया और मेदनीपुर नहर और अनेक झील हैं। इस जिलेमें हवड़ा और उलबाडिया २ सबडिवीजन हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हवड़ा जिलेमें ६३५३८१ मनुष्य थे, अर्थात् ५००८७० हिन्दू, १३२११८ मुसलमान, २०९१ कृस्तान, २४२ एनिमिष्टिक, ३७ बौद्ध, १३ यहूदी, ६ ब्राह्म, ३ जैन और १ पारसी। जातियोंके खानेमें १५५६५३ कैवर्त, ५४३४३ बागडी, ३९१४१ ब्राह्मण, १७३७० ग्वाला, १५८४९ कायस्थ, १५६२३ तियर, १४२५० तांती, १४१३८ पोड़ १२६९२ सदगोप और शेषमें दूसरी जातियोके लोग थे। राजपूत केवल १०३९ थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके हवडा कसबेमें ११६६०६ और बालीमें १६७०० मनुष्य थे जिलेमें शामपुर भी एक छोटा कसबा है।

चौदहवां अध्याय।

गंगासागर।

गंगासागर-स्नानका मेला मकरकी, संक्रान्तिको जो पौष या माघमें होती है, प्रति वर्ष होता है। मेलेके समय कलकत्तेमें साधुओंकी बहुत जमात आती हैं, जिनको वहाँके रईस लोग आगबोट और नावोंमें वहाँसे गंगासागर भेजते हैं और खाने पीनेकी सामग्री उनके साथ कर देते हैं दुकान्दार भी नावहीं पर जाते हैं। कलकत्तेसे ३८ मील दक्षिण 'डायमण्ड हारबर' तक रेल है, परन्तु उससे आगे विना नावके काम नहीं चलता, इस लिए

प्रायः सब लोग कलकत्तेसे नाव और आगबोटमें चढ़कर गंगासागर जाते हैं। नाव समुद्रके भाठा होनेपर दक्षिण जाती है और ज्वार होने पर दक्षिणसे उत्तरको चलती है।

मैं १६ रुपये पर आती जातीके लिये एक नाव भाडा करके उसपर सवार हो गंगासागर चला और खानेके सरजाम और दो मटुकेमें पानी अपने साथ लेलिया। नाव भागीरथीमें दक्षिण चली।

हवड़ेसे ७३⁄४ बजे नाव खुली और १३⁄४ घण्टे पर कम्पनी बाग ३३⁄४ घण्टेपर चण्डियलहाट और बावडीगाँवके सामने और ५ घण्टे पर उलबड़िया पहुँची। कलकत्तेसे चण्डियलहाट तक गंगाके दोनो किनारे जगह जगह कल कारखानोंके ऊँची ऊँची चिमिनी देख पडती हैं।

कलकत्तेसे १५ मील दक्षिण भागीरथी गंगाके बांये किनारेपर हवड़ा जिलेके सबडिवीजनका सदर स्थान उलबडिया एक छोटा कसबा है। ष्टीमर हर रोज कलकत्तेके आरमेनियन घाटसे खुलकर उलबडियासे नहर द्वारा मेदनीपुर जाता है। उलबड़ियासे एक अच्छी सडक मेदनीपुर बालासोर और कटक होकर जगन्नाथपुरी तक पहुँची है।

उलबडियासे आगे दामोदर नदीके मोहानेके सामने फुल्टा नामक एक बड़ी बस्ती है। उससे आगे कलकत्तेसे ३०मीलपर गङ्गाके दहिने मेदनीपुर जिलेमें लगभग ६००० मनुष्योंकी बस्ती तमलूक है। वह पूर्व समयमें बहुत मशहूर शहर और बौद्धोंका एक बन्दरगाह था, जहाँ चीनका मुसाफिर फाहियन पाँचवीं सदीके शुरूमे सिलोन जानेके लिये उतरा था। उससे लगभग २५० वर्ष पीछे चीनीयात्री ह्यनतशाङ्गने इसको बौद्धोका प्रसिद्ध बन्दरगाह लिखा था तमलूकमें एक मन्दिर है, जिसको वहाँके लोग 'दरगाह भामा' या भोना कहते हैं। वह स्थान एक अजीब तेहरी दीवारसे घेरा हुआ है। शुरूमे वह बौद्ध मन्दिर था।

तमलूकसे १५ मीलसे अधिक दक्षिण जानेपर भागीरथी गङ्गाका जल छितरा गया है। दहिने और बाये उस खाडीका जल फैला हुआ है, जिसको लोग ढोल समुद्र कहते है। गङ्गासागरके यात्री बायें किनारेसे जाते हैं। बायें तरफ एकके बाद दूसरे ३ बङ्गले देख पडते है।

बाये चलनेपर दो तीन घण्टेमें 'डायमण्डहारबर' में नाव पहुँच जाती है, जो कलकत्तेसे नदीकी राहसे ४८ मील और रेलवे द्वारा ३८ मील है।

डायमण्ड हारबर चौबीसपरगने जिलेमें एक सबडिवीजनका सदर स्थान है। उसके उत्तर हाजीपुर एक बडी बस्ती है। डायमण्ड हारबरमे एक कस्टमहौस, मुनसिफी आदि सबडिवीजनकी कचहरियाँ, और चिम्नीखाल फोर्ट नामक एक छोटा किला है। रेलको ५ ट्रेन कलकत्तेसे वहाँ जाती है। उससे २ मील उत्तर रूपनारायण नदी गङ्गामे गिरती है। डायमण्ड हारबरसे आगे जाकर जहाज और आगबोट दहिने घूमते हैं और कजरी होकर, जो डायमण्ड हारबरसे २० मील दूर भागीरथीके मुहानेके पास है, आगे समुद्रमे जाते हैं।

डायमण्ड हारबरसे चलनेपर ३⁄४ घण्टेके पीछे चौपहला बुर्ज, १३⁄४ घंटेपर तीन महला बुर्ज, २१⁄२ घण्टेपर लकड़ीका खम्भा और ३ घण्टे पीछे बायें तरफ टेंगराहाट गाँव मीला। वहा बाजार लगता है, वहाँसे कलकत्ते तक करीब ४८ मील एक सडक गई है। टेंगराहाटके पास काशीपुर एक बस्ती है। उससे आगे नदीके समान तंग खाडी मिलती है।

टेंगराहाटसे चलनेसे १० घण्टेपर एक दूसरी तङ्ग खाडीमें बायें किनारेके पास मेरी नाव लगी, जहाँसे १२ मील आगे गङ्गासागर लोग वतलाते है। वहाँ यात्रियोंकी सैकड़ों नाव लगी थी और जंगलसे सूखी लकड़ी लाकर वे लोग रसोई बनाते थे। वहाँ मट्टीके वरतन विकते थे।

वहाँसे चलनेपर ६ घण्टेमे गङ्गासागर नाव पहुँची। मार्गमें खाडीके दोनो तरफ सघन जङ्गल है और जगह जगह छोटी छोटी नालियाँ जंगलसे निकलकर खाडीमें मिली है।

कलकत्तेसे गङ्गासागर; अर्थात् सागर टापू जल मार्गसे लगभग ९० मील दक्षिण है। मेरी नाव पूरे ३ दिनमे वहाँ पहुँची, जो तीन दिनोंमे ३८ घण्टे चली। ज्वार होनेपर नाव बांध दी जाती थी। मैं गङ्गासागरसे लौटनेपर भी ३ दिनमें कलकत्ते पहुँचा।

गङ्गासागरमें एक खाडी उत्तरसे आकर समुद्रमें मिली है। मकरकी संक्रान्तिके समय उस सङ्गमसे उत्तर खाड़ीके पश्चिम किनारेपर करीब १ मील जगल काटकर मेला वसाया जाता है मेलेमे सड़के निकाली जाती हैं। कलकत्तेसे वहुत दुकाने और वगालसे वहुत चटाइयाँ विक्रीके लिये वहाँ जाती हैं। इस वर्ष १००० से अधिक नाव और सात आठ आगबोट उस खाडीमे लगे थे। मेलेमें लाखों आदमी जुटे थे। वहुतेरे लोग नावोमें रहते थे और वहुतेरे आदमी टापूपर तारपत्रकी चटाइयोंके घर वनाकर उनमे ठहरे थे। किनारेके पास दोहरी और तेहरी नाव लगी थीं। वहाँका जमीन्दार नाववालोसे फीडाण्ड ४ आना महसूल लेता है।

मेलेसे पश्चिम दूर तक जंगल है, जिसमें सूखी लकड़ी वहुत मिलती है और वाघ, हरिन, सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। कई साल वाघोंने कई यात्रियोको मारडाला था।

ऐसा लोग कहते है कि गङ्गासागरमें कपिलजीका स्थान गुप्त होगया था, उसको वैष्णव प्रधान रामानन्दजीने प्रकट किया। संगमके पास एक टट्टीके आसारेमें घिसी हुई वहुत पुरानी कपिलजीकी मूर्ति थी, जिनके दहिने राजा भागीरथ और वाये रामानन्दजीकी वैसीही वहुत पुरानी मूर्त्तियाँ खड़ी थी। यात्री लोग संगमपर स्नान करके समुद्रको नारियल फल या फूल और कोई कोई पंचरत्न (मोती, हीरा, जमूरद, पोखराज, मूँगा) चढाते हैं और कपिलजीका दर्शन और पूजन करते हैं। वहाँकी चढ़ी हुई पूजा अयोध्याके मठके साधुलेते हैं। कपिलजीके स्थानसे थोडा उत्तर मीठा जलका एक कच्चा पोखरा है, जिसमे मेलेके समय कोई स्नान नहीं करने पाता, पीनेके लिये घडेमें भरकर पानी लोग लेजाते है। पोखरेके भीण्डेपर फूस टट्टीकी बनी हुई छोटी छोटी ४ कुटियाँ हैं। उससे कुछ दूर उत्तर खारा जलका दूसरा पोखरा और उससेभी उत्तर खारा जलका एक छोटा तीसरा पोखरा है, जिसके भीण्डेपर फूस टट्टीसे वनी हुई साधुओकी ३ कुटियाँ वनी हैं।

समुद्र और खाड़ियोंका जल खाने पीनेके काममे नहीं आता और अन्धियारी रातमे उछालनेपर गोड़सारकी भोर आगके समान देख पडता है।

गङ्गासागर तीर्थमें कोई पण्डा नहीं रहता। मकरकी संक्रातिके समय वहाँ तीन दिन स्नान होता है; किन्तु मेला ५ दिन तक रहता है। मकरकी संक्रातिके अतिरिक्त कार्तिककी पूर्णिमाको भी कुछ लोग गङ्गासागर जाते हैं, पर उस समय वाजार तथा दूकानें नहीं जातीं।

इस समय वहाँ सागर और गङ्गाके सगमका चिह्न नही है। पहिले उस जगह संगम था। अब उस जगह समुद्रकी खाडी है; गङ्गाका मुहाना पीछे हट आया है। कुछ कालसे राजमहलसे कुछ आगे वढ़कर गङ्गा दो धाराओमे वंट गई है,–उनमेसे प्रधान धारा पूर्वमे ग्वालण्डोके पास ब्रह्मपुत्रसे मिलकर सहवाजपुर नामक टापूके सामने समुद्रमें गिरती है; इसको पदमा तथा पद्दा कहते हैं और दूसरी धारा भागिरथी और हुगलीके नामसे हुगली और कलकत्ते होकर दक्षिणको वहनेके उपरान्त सागर टापूके पास समुद्रमे मिली है। दोनो मुहानेके वीचमे डेढ़ दो सौ मीलके फासिलेमें गङ्गाकी सैकडो धारा समुद्रमें गिरती है, पानीकी वहुतायतसे उस जगह सघन जङ्गल रहता है, उसी जङ्गलका नाम सुन्दर वन है। आस पासके लोग गङ्गासागरको सागर तीर्थ और उस टापूको सागर टापू कहते है। पहिले वहुतेरे अशुभ समयके उत्पन्न लडके गङ्गासागरके समुद्रमें फेंक दिये जाते थे। अङ्गरेज महाराजने उस चालको रोक दिया।

एक आगवोट मकरकी सक्रातिके समय यात्रियोंको कलकत्तेसे गङ्गासागर पहुँचाता है और वहाँसे जगन्नाथ पुरीमे उनको जगन्नाथजीका दर्शन करा कर फिर कलकत्तेमे पहुँचा देता है।

सागर टापूमे अव वहुत कम लोग रहते है। लोग कहते है कि उसमे एक समय २००००० मनुष्य वसते थे, जो सन् १६८८ ई० की एक रातमे वाढ़से वह गये। हालमें टापूकी कुछ भूमि जोती जाती है। सन् १८१२ ई० की नापसे टापूकी सूखी भूमि १४३२६५ एकड हुई थी। कुछ दिनो तक टापूमे नमक वनाया जाता था। सागर टापूमें एक लाइट हाउस, जिसका काम सन् १८०८ में आरम्भ हुआ, टापूके उत्तर टेलीग्राफ आफिस और दक्षिण-पश्चिमके अन्तमे एक अवज़रवेटरी है। सन् १८६४ की तुफानसे सागर टापूके ५६२५ मनुष्योमेंसे केवल १४८८ वंचे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–अत्रिस्मृति—(६५ वॉ श्लोक) जिस मनुष्यको सॉपने काटा हो वह समुद्रके दर्शनसे शुद्ध होता है।

महाभारत—(वनपर्व्व–८४ वॉ अध्याय) गङ्गा और समुद्रके संगममें स्नान करनेसे दश अश्वमेधका फल होता है।

(१०७वॉ अध्याय) राजा सगरका यज्ञ-अश्व उनके ६० हजार पुत्रोंसे रक्षित होकर जलरहित समुद्रके तटपर आनेपर अन्तर्द्धान होगया। सगरकें पुत्रोंने एक स्थानपर पृथ्वीको फटी हुई देखा। तव वे उस विलको खोदने लगे। वह विल समुद्र था। वे खोदते खोदते पाताल तक चले गये। उन्होने वहाँ देखा कि कपिलजीके पास घोडा घूम रहा है। तव वे लोग कपिलजीको निरादर करके घोडा पकडनेको दौड़े किन्तु कपिलजीके तेजरूपी अग्निसे सव लोग जलकर भस्म होगये। (१०८ वॉ अध्याय) राजा सगरके पुत्र असमंजस, असमंजसके अंशुमान, अंशुमानके दिलीप और दिलीपके पुत्र राजा भागीरथ हुए। भागीरथने जव सुना कि हमारे पितरोको महात्मा कपिलने भस्मकर दिया था उस कारणसे उनको स्वर्ग नहीं मिला तव हिमाचलपर जाकर एक सहस्त्र वर्ष घोर तप किया तव गगाजी प्रकट होकर वोली कि हे राजन! तुम क्या चाहते हो? भगीरथ वोले कि कपिलके क्रोधसे जले हुए हमारे पुरुषोंको तुम अपने जलसे स्नान कराकर स्वर्गमें पहुँचावो। गगाने कहा कि हे राजन्! तुम शिवजीको

टेंगराहाटसे चलनेसे १० घण्टेपर एक दूसरी तङ्ग खाडीमें बायें किनारेके पास मेरी नाव लगी, जहाँसे १२ मील आगे गङ्गासागर लोग बतलाते हैं। वहाँ यात्रियोंकी सैकड़ों नाव लगी थी और जंगलसे सूखी लकड़ी लाकर वे लोग रसोई बनाते थे। वहाँ मट्टीके बरतन विकते थे।

वहाँसे चलनेपर ६ घण्टेमे गङ्गासागर नाव पहुँची। मार्गमें खाड़ीके दोनो तरफ सघन जङ्गल है और जगह जगह छोटी छोटी नालियाँ जंगलसे निकलकर खाडीमे मिली है।

कलकत्तेसे गङ्गासागर; अर्थात् सागर टापू जल मार्गसे लगभग ९० मील दक्षिण है। मेरी नाव पूरे ३ दिनमे वहाँ पहुँची, जो तीन दिनोंमे ३८ घण्टे चली। ज्वार होनेपर नाव बांध दी जाती थी। मै गङ्गासागरसे लौटनेपर भी ३ दिनमें कलकत्ते पहुँचा।

गङ्गासागरमें एक खाडी उत्तरसे आकर समुद्रमें मिली है। मकरकी संक्रान्तिके समय उस सङ्गमसे उत्तर खाडीके पश्चिम किनारेपर करीब १ मील जंगल काटकर मेला बसाया जाता है मेलेमें सड़कें निकाली जाती है। कलकत्तेमे बहुत दुकाने और बगालसे बहुत चटाइयाँ विक्रीके लिये वहाँ जाती हैं। इस वर्ष १००० से अधिक नाव और सात आठ आग-बोट उस खाडीमे लगे थे। मेलेमें लाखों आदमी जुटे थे। बहुतेरे लोग नावोमें रहते थे और बहुतेरे आदमी टापूपर तारपत्रकी चटाइयोंके घर बनाकर उनमें ठहरे थे। किनारेके पास दोहरी और तेहरी नाव लगी थी। वहाँका जमीन्दार नाववालोसे फीडाण्ड ४ आना महसूल लेता है।

मेलेसे पश्चिम दूर तक जंगल है, जिसमें सूखी लकड़ी बहुत मिलती है और बाघ, हरिन, सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। कई साल बाघोंने कई यात्रियोंको मारडाला था।

ऐसा लोग कहते है कि गङ्गासागरमें कपिलजीका स्थान गुप्त होगया था, उसको वैष्णव प्रधान रामानन्दजीने प्रकट किया। संगमके पास एक टट्टीके आसारेमें घिसी हुई बहुत पुरानी कपिलजीकी मूर्ति थी, जिनके दहिने राजा भागीरथ और बायें रामानन्दजीकी वैसीही बहुत पुरानी मूर्त्तियाँ खडी थीं। यात्री लोग संगमपर स्नान करके समुद्रको नारियल फल या फूल और कोई कोई पंचरत्न (मोती, हीरा, जमूरद, पोखराज, मूँगा) चढाते है और कपिलजीका दर्शन और पूजन करते हैं। वहाँकी चढ़ी हुई पूजा अयोध्याके मठके साधु लेते हैं। कपिलजीके स्थानसे थोडा उत्तर मीठा जलका एक कच्चा पोखरा है, जिसमें मेलेके समय कोई स्नान नहीं करने पाता, पीनेके लिये घडेमें भरकर पानी लोग लेजाते है। पोखरेके भीण्डेपर फूस टट्टीकी बनी हुई छोटी छोटी ४ कुटियाँ हैं। उससे कुछ दूर उत्तर खारा जलका दूसरा पोखरा और उससेभी उत्तर खारा जलका एक छोटा तीसरा पोखरा है, जिसके भीण्डेपर फूस टट्टीसे बनी हुई साधुओंकी ३ कुटियाँ बनी है।

समुद्र और खाडियोंका जल खाने पीनेके काममे नहीं आता और अन्धियारी रातमे उछालनेपर गोड़सारकी भोर आगके समान देख पडता है।

गङ्गासागर तीर्थमें कोई पण्डा नहीं रहता। मकरकी संक्रातिके समय वहाँ तीन दिन स्नान होता है; किन्तु मेला ५ दिन तक रहता है। मकरकी संक्रातिके अतिरिक्त कार्तिककी पूर्णिमाको भी कुछ लोग गङ्गासागर जाते हैं, पर उस समय बाजार तथा दूकानें नहीं जातीं।

इस समय वहाँ सागर और गङ्गाके संगमका चिह्न नहीं है। पहिले उस जगह संगम था। अब उस जगह समुद्रकी खाडी है; गङ्गाका मुहाना पीछे हट आया है। कुछ कालसे राजमहलसे कुछ आगे वढ़कर गङ्गा दो धाराओमे बंट गई है,—उनमेसे प्रधान धारा पूर्वमे ग्वालण्डोके पास ब्रह्मपुत्रसे मिलकर सहवाजपुर नामक टापूके सामने समुद्रमें गिरती है; इसको पद्मा तथा पद्दा कहते हैं और दूसरी धारा भागीरथी और हुगलीके नामसे हुगली और कलकत्ते होकर दक्षिणको वहनेके उपरान्त सागर टापूके पास समुद्रमें मिली है। दोनो मुहानेके बीचमे डेढ़ दो सौ मीलके फासिलेमे गङ्गाकी सैकडो धारा समुद्रमें गिरती हैं; पानीकी बहुतायतसे उस जगह सघन जङ्गल रहता है, उसी जङ्गलका नाम सुन्दर वन है। आस पासके लोग गङ्गासागरको सागर तीर्थ और उस टापूको सागर टापू कहते हैं। पहिले वहुतेरे अशुभ समयके उत्पन्न लडके गङ्गासागरके समुद्रमें फेंक दिये जाते थे। अङ्गरेज महाराजने उस चालको रोक दिया।

एक आगवोट मकरकी सक्रांतिके समय यात्रियोंको कलकत्तेसे गङ्गासागर पहुँचाता है और वहाँसे जगन्नाथ पुरीमे उनको जगन्नाथजीका दर्शन करा कर फिर कलकत्तेमे पहुँचा देता है।

सागर टापूमे अब बहुत कम लोग रहते हैं। लोग कहते है कि उसमे एक समय २००००० मनुष्य वसते थे, जो सन् १६८८ ई० की एक रातमे वाढ़से वह गये। हालमें टापूकी कुछ भूमि जोती जाती है। सन् १८१२ ई० की नापसे टापूकी सूखी भूमि १४३२६५ एकड हुई थी। कुछ दिनो तक टापूमें नमक बनाया जाता था। सागर टापूमें एक लाइट हाउस, जिसका काम सन् १८०८ में आरम्भ हुआ; टापूके उत्तर टेलीग्राफ आफिस और दक्षिण-पश्चिमके अन्तमे एक अवज़रवेटरी है। सन् १८६४ की तुफानसे सागर टापूके ५६२५ मनुष्योमेंसे केवल १४८८ वंचे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अत्रिस्मृति—(६५ वाँ श्लोक) जिस मनुष्यको साँपने काटा हो वह समुद्रके दर्शनसे शुद्ध होता है।

महाभारत—(वनपर्व्व–८४ वाँ अध्याय) गङ्गा और समुद्रके संगममें स्नान करनेसे दश अश्वमेधका फल होता है।

(१०७वाँ अध्याय) राजा सगरका यज्ञ-अश्व उनके ६० हजार पुत्रोसे रक्षित होकर जल रहित समुद्रके तटपर आनेपर अन्तर्द्धान होगया। सगरकें पुत्रोंने एक स्थानपर पृथ्वीको फटी हुई देखा। तब वे उस विलको खोदने लगे। वह विल समुद्र था। वे खोदते खोदते पाताल तक चले गये। उन्होने वहाँ देखा कि कपिलजीके पास घोडा घूम रहा है। तब वे लोग कपिलजीको निरादर करके घोड़ा पकडनेको दौड़े किन्तु कपिलजीके तेजरूपी अग्निसे सब लोग जलकर भस्म होगये। (१०८ वाँ अध्याय) राजा सगरके पुत्र असमंजस, असमंजसके अंशुमान, अंशुमानके दिलीप और दिलीपके पुत्र राजा भागीरथ हुए। भागीरथने जब सुना कि हमारे पितरोको महात्मा कपिलने भस्मकर दिया था उस कारणसे उनको स्वर्ग नहीं मिला तब हिमाचलपर जाकर एक सहस्र वर्ष घोर तप किया तब गंगाजी प्रकट होकर बोली कि हे राजन! तुम क्या चाहते हो? भगीरथ बोले कि कपिलके क्रोधसे जले हुए हमारे पुरुषोंको तुम अपने जलमे स्नान कराकर स्वर्गमें पहुँचावो। गंगाने कहा कि हे राजन्! तुम शिवजीको

प्रसन्न करो; स्वर्गसे गिरती हुई हमको वही अपने सिरपर धारण करेंगे। भगीरथने कैलासमें जाकर घोर तपस्या करके शिवजीको प्रसन्न किया और उनसे यही वरदान माँगा कि आप गंगाको अपने सिरपर धारण करें (१०९वां अध्याय) जब भगवान शिवने राजाके वचनको स्वीकार किया तब हिमाचलकी पुत्री गंगा बडी धारासे स्वर्गसे गिरी। गंगाको शिवजीने भूषणके समान अपने सिरपर धारण कर लिया। गंगा शिवके शिरपर मोतीकी मालाके समान शोभित होने लगी। उसने राजासे कहा कि कहो अब मैं किस मार्गसे चलूं। राजा भगीरथ जिधर राजा सगरके ६० हजार पुत्र मरे पडे थे उधर ही चले उन्होंने गंगाको समुद्र तक पहुँचा दिया। गंगाने समुद्रको (जिसको अगस्त्य मुनिने पीलिया था) अपने जलसे पूर्ण कर दिया। भगीरथने अपने पुरुषोंको जलदान दिया।

(११४ वाँ अध्याय) पाण्डव लोग गंगा और समुद्रके सङ्गम पर पहुँचे। उन्होंने ५०० नदियोंके सङ्गममे स्नान किया। अनन्तर वे लोग समुद्रके किनारे किनारे कलिङ्ग देशकी ओर चले, जहाँ वैतरनी नदी बहती है।

(सगरके पुत्रोंके भस्म होनेकी और गंगाके समुद्रमें आनेकी कथा वाल्मीकिरामायणमें वालकाण्डके ३८ वें अध्यायसे ४३ वें अध्याय तक; पद्मपुराणके स्वर्ग खण्डके ७८ वे अध्यायमें बृहन्नारदीय पुराणके ८ वें अध्यायमें, दूसरे शिवपुराणके ११ वे खण्डके २१ वें अध्यायसे २२ वें अध्याय तक और श्रीमद्भागवतके ९ वें स्कन्धके ८ वे और ९ वें अध्यायमें है)।

बाराहपुराण—(१७० वाँ अध्याय) गंगासागर सङ्गममे स्नान करनेसे मनुष्यकी ब्रह्महत्या दूर होती है।

कूर्म्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता–उत्तरार्द्ध–३६ वाँ अध्याय) सब समुद्र विशेष रूपमे पुण्य देने वाले हैं।

श्रीमद्भागवत—(तीसरा स्कन्ध, ३३ वाँ अध्याय) भगवान कपिलदेवजी अपने पिताके आश्रम (सिद्धपुर) से माताकी आज्ञा लेकर ईशान कोणकी ओर (गंगासागरमें) गये। वहाँ समुद्रने उनका पूजन कर उनके रहनेका स्थान दिया। अब तक कपिलदेवजी त्रिलोकको शान्तिके निमित्त योग धारण करके उसी स्थान पर विराजमान है।

पन्द्रहवां अध्याय।
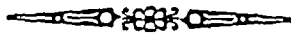
(सूबे उड़ीसेमें) कटक, ततकुण्ड, भुवनेश्वर, और खण्डगिरि।

कटक।

कलकत्तेके कोयलेघाटसे सप्ताहमें कई वार कई कम्पनीके आगबोट यात्रियोंको लेकरके खुलते हैं। एक आदमीका भाडा दो रुपया लगता है और आगबोटपर चढ़ानेवाली डोंगीका महसूल प्रति आदमीको दो आना अलग देना पडता है। चाँदबालीमें आगबोटसे उतरना होता है। वहाँसे छोटे छोटे आगबोट नदी और नहरके मार्गसे यात्रियोंको कटक

पहुचाते है। कटकसे ५२ मील जगन्नाथपुरी तक सुन्दर सडक बनी है। मकरकी संक्रान्तिके समय कलकत्तेसे एक कम्पनीका आगबोट समुद्रके मार्गसे पुरी तक जाता है। वह यात्रियोको मकरकी संक्रान्तिसे एक दिन पहले गंगासागरमे पहुँचाता है; संक्रान्तिके दूसरे दिन वहाँसे चलकर तीसरे दिन कलकत्तेसे २७७ मील दूर पुरीमे पहुँच जाता है। ३ रात पुरीमें रहकर वहाँसे लौटता है। और यात्रियोंको लेकर उसके दूसरे दिन कलकत्ता पहुँच जाता है। एक आदमीके जाने आनेका भाडा पहले दरजेका ५०) दूसरे दरजेका ३०) दरमियानी दरजेका १८) और तीसरे दरजेका १२) रुपया लगता है। समुद्र साधारण तरहसे कार्त्तिकसे फागुन तक हलकी हवेके साथ शान्त रहता है, इसके भीतरकी यात्रा अच्छी है।

मै एक बडे आगबोटमे, जिसपर रात्रिमें बिजलीकी रोशनी होती है, कोयलेघाट पर चढ़ा। आगबोट सवेरे ५ बजे खुला और १० बजे रातको चॉदबालीमे पहुँचकर बैतरनी नदीमें लग गया। वहाँ बाजार है और यात्रियोंके टिकनेके लिये मोदियोंके मकान बने हैं। कलकत्तेसे जलके मार्गसे ३ मील कम्पनी बाग, ६ मील रायगञ्ज, २९ मील फल्टाहौस, ३६ मील लोअर फल्टा, ४८ मील डायमंड हारबर, ६८ मील कजरी और लगभग २०० मील चॉदबाली है। चाँदबालीसे १२ कोस पश्चिम बैतरनी नदीके किनारे पर जाजपुर है, जिसका वृत्तान्त आगे मिलेगा। चॉदबालीसे छोटे छोटे आगबोट कटक जाते हैं। मैं दूसरे दिन दश बजे दिनमें आगबोट पर चढ़ा। आगबोट बैतरनी नदी; ब्राह्मणी नदी और एक नहरमें क्रम क्रमसे चलकर २३ घंटेमें कटकके जोबरा घाटपर (महानदीके दहिने तीर पर पहुँच गया। मार्गमे स्थान २ पर नहरके फाटकोंके पास मुसाफिर आगबोट पर चढ़ते उतरते थ।

कटक कसबेसे कई एक सडके निकली है,—एक सडक दक्षिण पुरीको, दूसरी पूर्वोत्तर जाजपुर, बालेश्वर, और मेदिनीपुरको तथा मेदिनीपुरसे पूर्व कलकत्तेको और उत्तर बांकुड़ा होकर रानीगञ्जको, तीसरी पश्चिमोत्तर अंगोल होकर सम्भलपुरको और चौथी सडक दक्षिण-पश्चिम रम्भा, गञ्जाम, ब्रह्मपुर, राजमहेन्द्री और वैलोर होकर बिजवाड़ेको गई है।

सूबे उडीसामें (२० अंश, २९ कला ४ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ५४ कला, ९ विकला, पूर्व देशान्तरमें) महानदीके दहिने किनारे पर महानदी और उसकी शाखा काठजूडीके मेलके निकट सूबे उडीसेकी राजधानी कटक जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान शहर कटक है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कटकमें ४७१८६ मनुष्य थे, अर्थात् २५२३५ पुरुष और २१९५१ स्त्रियाँ। इनमे ३६५०८ हिन्दू, ८३९२ मुसलमान २२४० क्रस्तान ४१ जैन ३ बौद्ध और २ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ८१ वां और सूबे उडीसेमें पहिला शहर है।

कटक शहरके उत्तर और पूर्व महानदी और पश्चिम काठजूडी नदी वहती है। बरसातमे महानदी बहुत बढजाती है। शहरको बाढसे बचानेके लिये काठजूडीके एक किनारे पर नीचेसे ऊपर तक पत्थरके ढोकोंसे बॉध बनाया गया है। नदियोंकी धाराओंको काबूमें लानेके लिये कटकके पास मशहूर बॉध बनाये गये हैं, जिनमेंसे बिरूपा नदीका बॉध लगभग दो

हजार फीट लम्बा और ९ फीट ऊँचा, जिससे उडीसेके खेतोंको पटानेके लिये २ नहर निकली हैं और महानदीका बाँध ६४०० फीट लम्बा और १२½ फीट ऊँचा है। महानदीका बाँध सन् १८६९—१८७० ई० मे तैयार हुआ, उसके बनानेमें लगभग १३ लाख रुपया खर्च पडा।

कटकके जोबरा नदीके पास जोबरा घाट पर महानदीमे आगबोट लगते है और उसी घाटके पास आगबोट बनानेका कारखाना है। जोबराघाटसे १ मील कटक शहरका लक्ष्मी बाजार और २ मील बालू बाजार और चौधरी बाजार है। बालू बाजारमें प्रधान दूकानें है। कटक शहर सोने और चाँदीके गहनेके लिये प्रसिद्ध है इसके समान साफ और सुन्दर चाँदी के गहने हिन्दुस्तानमे दूसरी किसी जगह भी नहीं बनते है। कटक सूबे उडीसेमें प्रधान तिजारती जगह है बीमारी फैलनेके डरसे सर्वसाधारण यात्री शहरके भीतर जाने नहीं पाते हैं।

छावनियोंके बीचमे और किलेको जाती हुई सड़कके दहिने डाक बँगला है उससे करीब ४०० गज बाद परेडकी जमीन है। शहरसे लगभग १ मील दूर काठजड़ी नदीके दक्षिण किनारेपर १४ वीं सदीके राजा अनङ्गभीमदेवका बनवाया हुआ "बारह बटी" नामक एक पुराना किला है, जो अब मट्टीके टीलोंका सिलसिला होगया है। उसकी खाईके पत्थर सन् १८७३ मे एक अस्पताल बनानेके लिये और किलेके पत्थर "फल्सपाइन्ट" के पास "लाइटहौस" बनानेके लिये ले लिये गये थे किलेके पूर्वकी दीवारमें एक फाटक और फतेहखाँकी मसजिद है नहरके पुलके आगे दहिने और कमिश्नरकी कचहरी एक बडी इमारत है इनके अलावे कटकमें दीवानी और फौजदारीकी कचहरियाँ, पुलिस-स्टेशन, अस्पताल और स्कूल हैं।

कटकसे बुधके दिन तीन कम्पनियोंके छोटे छोटे कई आगबोट खुलकर चाँदवाली जाते है जिनके यात्री बड़े आगबोटों पर चढकर चाँदवालीसे समुद्रकी राहसे कलकत्ते पहुँचते है। हर शनीचरको एक छोटा आगबोट कटकसे खुलकर आबाके पास समुद्रमें जानेवाले आगबोट पर मोसाफिरोंको चढ़ाता है; वह बडा आगबोट कलकत्ते जानेके लिये आबासे सोमवारको खुलता है। एक गवर्नमेंट आगबोट कटकसे नहर होकर सप्ताहमें दो बार भद्रकको जाता है। बी. आई एस एन. कम्पनीका आगबोट मदरास और दूसरे बन्दरगाहोंके लिये "फल्स पाइंटके पास मोसाफिरोंको चढ़ाता है। एक छोटा आगबोट कटक और फल्सपाइन्टके बीचमें आता जाता है और कलकत्ते और बम्बे और किनारोंके दूसरे बन्दरगाहोंके मोसाफिरोंको उतारता चढाता है। कटकसे ६४½ मील फल्सपाइंट है, इसमेंसे ५४ मील नहरकी राह है। आम तौरसे मार्गमें २५ घंटे लगते है। कटक छोडनेके आधे घण्टे बाद बोट फाटकसे निकलता है और केन्द्रपारा नहरमें प्रवेश करता है। नहरके दो हिस्सोंमे हो जानेकी जगहपर वह ६ घण्टेमें पहुँचता है। नहरकी दहिनी शाखा मरसूघाटको और बायें वाली चान्दवालीके लिये आबाको गई है।

महानदी मध्य देशके रामपुर जिलेमें नवगढ़के पाससे निकलकर सम्भलपुर होकर ५३० मील पूर्व-दक्षिण बहनेके उपरान्त कटकसे पचास साठ मील पूर्व "फल्सपाइट" के

पास समुद्रमे मिली है। फल्सपाइंट लाइट हाउससे एक तरफ कलकत्ता २१७ मील और दूसरी तरफ जगन्नाथपुरी ६० मील है।

रेलवे लाईन दक्षिण–पश्चिमसे बेजवाडा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटकके पास क तैयार हो चुकी है और पूर्वोत्तरसे मेदनीपुर तथा बालेश्वर होकर कटक तक कई एक वर्षोमें तैयार हो जायगी।

कटकसे दक्षिण-पश्चिम "सदर्न मरहठा रेलवे" के बेजवाड़के स्टेशन तक "ईष्ट कोष्ट रेलवे" की लाइन बनगई है, पर अभी गाडी नही चलती।

(१) कटकसे दक्षिण–पश्चिम "ईष्ट कोष्ट रेलवे," जिसका महसूल फी मील २ पाई होगा—

मील प्रसिद्ध स्टेशनोके फासिले, शहरसे ६ मील कटक रोडसे—

१२ भुवनेश्वर।
२२ खुरदा रोड (जटनी)।
८४ रम्भा।
११४ ब्रह्मपुर।
१२९ इच्छापुर।
२०५ चीकाकोल रोड।
२४८ विजयानगरम्।
२८४ विजगापट्टन।
३६९ कोकानद बन्दर।
३७८ समालकोट जंक्शन।
४१० राजमहेन्द्री।
५०८ बेजवाड़ा जंक्शन।

खुरदा रोड़से एक लाइन जगन्नाथपुरीको जायगी।

(२) बेजवाडेसे पश्चिम-दक्षिण "सदर्न मरहठा रेलवे," जिसके तीसरे दर्जेका महसूल फी मील २ पाई है—

मील प्रसिद्ध स्टेशन—

७ मंगलगिरि।
१९ गंतूर।
१८८ नादियाल।
२३६ कर्नूल रोड।
२७९ गुंटकल जंक्शन।

(३) कटकसे रामेश्वरका फासिला रेलवे द्वारा—

मील एक जगहसे दूसरी जगह—

५०८ कटकसे बेजवाडा जंक्शन।
२७९ बेजवाड़ासे गुंटकल जंक्शन।
१९२ गुंटकलसे रेनिगुंटा जंक्शन।
४१ रेनिगुंटासे आरकोनम् जंक्शन।
१८ आरकोनम्से काञ्चीवरम्।
२२ काञ्चीवरम्से चिङ्गलपटम्।
११६ चिङ्गलपटम्से चिदम्बरम्।
४२ चिदम्बरम्से कुम्भकोनम्।
२५ कुम्भकोनम्से तंजोर जंक्शन।
३४ तंजोरसे त्रिचनापली फोर्ट।
९३ त्रिचनापली फोर्टसे मदुरा।

१३७० जोड़।
१०१ सड़क द्वारा मदुरासे रामेश्वर।

१४७१ कटकसे रामेश्वर।

रेनिगुंटा जंक्शनसे ६ मील त्रिपती (बालाजी), आरकोनम् जंक्शनसे ४३ मील मदरास और त्रिचनापली फोर्टसे सडक द्वारा ३ मील श्रीरङ्गजी हैं।

जो आदमी एकही यात्रामें जगन्नाथजी, रामेश्वर, द्वारिका और वदरीनारायण जाना चाहे उनको नीचे लिखे हुए रास्तेसे जाना चाहिये।

मील	नाम स्थान—
१३७०	कटकसे मदुरा, वेजवाडा गुण्टकल जंक्शन, आरकोनम् जंक्शन, कांची और त्रिचनापल्ली होकर।
११०२	मदुरासे वम्बई, गुण्टकल और पूना होकर।
१००९	पोरवन्दरसे हरिद्वार, महसाना जंक्शन अजमेर गाजियावाद, और सहारनपुर होकर।
९१९	मील काठगोदामसे कलकत्ता, सीतापुर, लखनऊ, वनारस, मुगलसराय, पटना और वैद्यनाथ होकर।
४४००	मिजान रेलके रास्तेका कटकसे कलकत्ते तक।
१०६	कटकसे जगन्नाथपुरी और जगन्नाथपुरीसे कटकतक वैलगाड़ीकी सड़क।
३०२	मदुरासे रामेश्वर और रामेश्वरसे मदुरा तक, वैल गाडीकी सडक।
३७५	बम्बईसे द्वारिका, आगबोट द्वारा।
५६	द्वारिकासे पोरबन्दर, आगबोट द्वारा।
४१७	हरिद्वारसे काठगोदाम, केदारनाथ, वदरीनाथ और मील चौरी होकर पहाडी राह।
३६०	कलकत्तासे कटक आगबोट द्वारा।
१४१६	जोड खुसकी और जलके मार्गका।
५८१६	जोड़ रेलवे खुसकी और जलके मार्गसे, कटकसे, पुरी, रामेश्वर, द्वारिका और वदरीनाथ होकर कटक तक।

कुछ लोग रामेश्वर जानेके लिये कटकसे जल ओर थल (अर्थात् सडक) के मार्गसे प्रायः समुद्रके किनारे किनारे रम्भा, गञ्जाम, व्रह्मपुर, चिकाकोल, विजयानगरम्, सावलकोटा, राजमहेन्द्री, धवलेश्वर, वेलौर, वेजवाडा, नैलोर, व्यकटगिरि आदि प्रसिद्ध स्थानोको होकर रैनिगुण्टा जंक्शनमें जाकर रेलगाडीमें चढ़ते हैं। कोई कोई आदमी वेजवाडेके स्टेशन पर रेलगाड़ीमे सवार हो गुण्टकल जंक्शन होकर रैनिगुण्टा जाते हैं। राजमहेन्द्रीके समीप गोदावरी नदी और वेजवाडेके निकट कृष्णा नदी पार उतरना पड़ता है। वेजवाड़ेसे ३ कोस मङ्गलगिरि पर पन्नानृसिंह हैं। यह पैदलका मार्ग क्लेश दायक है, किन्तु अव इस मार्गमें रेल वन गई।

कटक जिला—यह उड़ीसा बिभागके मध्यका जिला ३५१७ वर्ग मीलमे फैलता है। इसके उत्तर वैतरनी नदी और ढमरा कोल, जो वालेश्वर जिलेसे इसको अलग करते है, पूर्व वङ्गालकी खाडी, दक्षिण पुरी जिला और पश्चिम उड़ीसाका मालगुजार राज्य है। जिलेका सदर स्थान कटक है। इस जिलेकी अनेक पहाडियोंपर देव स्थान और छोटे छोटे पुराने किले देखनेमें आते है। उदयगिरि पहाडी पर पवित्र तालाव और हीन दशामें पड़े हुए अनेक मन्दिर और गुफायें है। जिलेकी सवसे ऊँची पहाड़ी २५०० फीट ऊँची हैं। देशी राज्यमे एक पहाड़ीकी महाविद्या चोटी पर एक प्रसिद्ध शिव मदिर है। जिलेके उत्तरी सीमापर वैतरनी नदी, दक्षिण भागमे महानदी और मध्यमें व्राह्मणी नदी

वहती है । ये तीनों नदियाँ ढमरा, महानदी और देवी इन तीन समुद्रके कोलों द्वारा समुद्रमें मिली है। वालेश्वर जिलेमें ढमरा गाँवके निकट वन्दरगाह है । कटक जिलेमें ४ नहर भी बनी है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कटक जिलेमें १७३८१६५ मनुष्य थे; अर्थात् १६८७६०८ हिन्दू, ३७२५९ मुसलमान, २३३१ कृस्तान, ८५७ आदि निवासी इत्यादि १०४ सिक्ख, ३ बौद्ध और ३ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें ३३९४२५ खण्डाइत, १७७१९३ ब्राह्मण १४०८७० ग्वाला, १०३३१४ चासा, ७८९६७ पान, ७३८८२ कन्धारा, ५८५५९ तेली, ५६८१९ वाउरी, ५३४३६ शूद्र, ४६८९८ कैंवट, ४१७७७ तांती, ४१७६१ कान, ३२७०९ वनियाँ, २४७९२ गोड, १०७८२ राजपूत और शेषमें भुइयाँ खरवार, खांद सबर इत्यादि थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कटक जिलेके कसवे कटकमे ४७१८६ केन्द्रपाडामे १७६४७ और जाजपुरमें ११९९२ मनुष्य थे, उस जिलेमें खुर्दा एक प्रसिद्ध वस्ती है।

इतिहास—कटक जिलेका इतिहास उडीसेके इतिहासमे शामिल है। केशरी वंशके एक प्रतापी राजा नृपति केशरीने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहरको वसाया और केशरीवशकी राजधानी भुवनेश्वरको छोडकर कटकमें रहने लगा। अङ्गरेजोने सन् १८०३ ई० में उडीसा देशके विजय करनेके समय कटकके पुराने किलेको ले लिया । वह किला हीन दशामें अबतक विद्यमान है ।

सूवा उडीसा—वङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरके आधीन विहार, बङ्गाल, छोटानागपुर और उडीसा ये ४ सूवे है,—इनमेंसे सूवे उडीसेका प्रधान शहर और उसकी राजधानी कटक है। सूवे उडीसेके उत्तर और पूर्वोत्तर सूवे छोटा नागपुर और सूबे बङ्गाल पूर्व और दक्षिण पूर्व वङ्गालकी खाडी, दक्षिण मदरास हाता और पश्चिम मध्यदेश है। इस सूवेका क्षेत्रफल २४२४० वर्गमील है, जिनमेसे भीतरकी ओर १५१८७ वर्गमील उडीसेके मालगुजार राज्य और समुद्रके किनारेकी ओर ९०५३ वर्गमील अङ्गरेजी राज्य है। उड़ीसेकी नदियोंमें महानदी, ब्राह्मनी, वैतरनी, सुवर्णरेखा और सिलन्दी नदी और मन्दिरोमे भुवनेश्वर; जगन्नाथजी और कोनार्कके मन्दिर प्रधान है। उस सूवेकी पहाडियोमें कई बौद्ध गुफायें बनी हुई है ।

उडीसेके अङ्गरेजी राज्यमें कटक, पुरी, वालेश्वर, वाँकी और अंगोल ये ५ जिले हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अङ्गरेजी राज्यमें ३७३०७३५ मनुष्य थे; अर्थात् ३६३४०४९ हिन्दू, ८५६११ मुसलमान, ६९३० जङ्गली और पहाड़ी इत्यादि, ३९८२ कृस्तान, १५२ सिक्ख ७ बौद्ध, ३ ब्राह्म, और १ यहूदी। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कटक जिलेके कसवे कटकमें ४७७४६ केंद्रपाडामें १७६४७ और जाजपुरमें

११९९२, पुरी जिलेके पुरी कसबेमें २८७९४ और बालेश्वर जिलेके बालेश्वर कसबेमें २०७७५ मनुष्य थे।

सूबे उड़ीसेके अङ्गरेजी राज्यके ५ जिलोंमेसे बाँकी और अंगोल ये दोनों पहिले देशी मालगुजार राज्य थे। सन् १८४० में बाँकी और सन् १८४७ में अंगोलका राज्य अङ्गरेजी सरकारने छीन लिया। अब ये अङ्गरेजी मिलकियत हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकी जिलेके ११६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ५६९०० मनुष्य थे, अर्थात् ५६६१९ हिन्दू, २७० मुसलमान, और ११ क्रस्तान और अंगोल जिलेके ८८१ वर्गमील क्षेत्रफलमें १०१९०३ मनुष्य थे, अर्थात् १००३६६ हिन्दू, २७५ मुसलमान, ६ क्रस्तान और १२५६ आदिनिवासी इत्यादि।

सूबे उड़ीसेके प्रायः सब लोग काले और साँवले रंगके होते है। वे अपने सिरपर बडे घेरेका शिखा रखते हैं। प्राय सब हिन्दू सर्वदा अपनी दाढी और मूछ मुडवाते है। उड़ीसेमे बहुतेरे लोगोंको हाथीपाँवकी बीमारी होती है। बङ्गालकी अपेक्षा वहाँके लोग गँवार होते है। सूबे बंगालके समान वहाँके लोगोंका भी साधारण भोजन मछली और भात है। वे लोग पान बहुत खाते है।

उडीसेमें उड़िया अक्षर प्रचलित है। सरकारी कचहरियोंमें भी उड़िये अक्षरसे काम होता है। बहुतेरे ग्रन्थ ताडपत्रोंपर उडिये अक्षरोंमे लिखे हुए है और लिखे जाते हैं। ताडके पत्रोंपर एक तरहके कांटेसे विना स्याहीके अक्षरोंकी लकीरे लिखी जाती है।

वहाँके लोग २½ या ३ मीलको एक कोस कहते है। वहाँ आटा कम होता है, वर्तन काले रंगके होते हैं, परन्तु पुरीमें नहीं। समुद्रके निकट नमक बनता है। उड़ीसेमे १०५ रुपयेके वजनका सेर चलता है। चावल आदि कच्ची रसोईकी सामग्री सर्वत्र मिलती है। बहुतेरे तालावों और पोखरियोंके जल गन्दे होते हैं। उड़िये लोग उन्हींका जल पीते है और उसीके किनारे मल सूत्र त्याग करते हैं। उड़ीसेका जल वायु बड़ा रोगकारक है। सरकार बीमारी फैलनेके भयसे कटक आदि शहरोंमें सर्व साधारण परदेशी मुसाफिरोंको जाने नहीं देती है। शहर और वड़ी चोटियोंके मकानोमें आइनके नियमके मुताविक मुसाफिर टिक सकते हैं, अधिक मुसाफिरोको टिकानेसे मकानके मालिककी सजा होती है। वहाँके लोग चैतन्य महाप्रभुको विष्णुका अवतार मानकर उनकी पूजा करते हैं और अपने अपने मकानके पास उनकी पूजाके लिये एक छोटा गृह खाली रखते है। चैतन्यने वैष्णवके मतकी शिक्षा सम्पूर्ण बंगाल और उडीसेमें फैलाई। चैतन्य महाप्रभुका जीवनचरित्र भारत भ्रमणके इसी खण्डके नदियाके वृत्तान्तमें है।

उड़ीसेमें १७ मालगुजार राज्य हैं। उनके उत्तर सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला, पूर्व उडीसेका अङ्गरेजी राज्य, दक्षिण मदरास हातेका गञ्जाम जिला और पश्चिम मध्य देशमे पटना, सोनपुर, वामडा इत्यादि देशी राज्य और छोटे नागपुरमें कई छोटे देशी राज्य है।

उड़िया वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ

ଅ ଆ ଇ ଈ ଉ ଊ ଋ ୠ ଌ ୡ ଏ ଐ ଓ ଔ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ

କ ଖ ଗ ଘ ଙ ଚ ଛ ଜ ଝ ଞ ଟ ଠ ଡ ଢ ଣ ତ ଥ

द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

ଦ ଧ ନ ପ ଫ ବ ଭ ମ ଯ ର ଲ ଵ ଶ ଷ ସ ହ

का कि की कु कू के कै को कौ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

କା କି କୀ କୁ କୂ କେ କୈ କୋ କୌ ୧ ୨ ୩ ୪ ୫ ୬ ୭ ୮ ୯

उड़ीसेके मालगुजार राज्योंका त्रिज नीचे है—

नंबर	माल गुजार राज्य	क्षेत्रफल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	तसखोसी मालगुजारी रुपया	गवर्नमेन्ट का 'कर' रुपया
१	मोरभञ्ज.........	४२४३	३८५७३७	३३२०९०	१०६०
२	धंकेल............	१४६३	२०८३१६	१०९१००	५९००
३	बोड	२०६४	१३०१०३	१००००	८०
४	क्योंझोर..	३०९६	२१५६१२	९००००	१९७०
५	नयागढ	५८८	११४६२२	५००००	५५२०
६	बरवा..... . ..	१३४	२९७७२	२८३६०	१४००
७	खाण्डपाडा	२४४	६६२९६	२४४५०	४१२०
८	दसपला	५६८	४१६०८	२००००	६६०
९	नीलगिरि	२७८	५०९७२	१९४५०	३९००
१०	रानापुर	२०३	३६५३९	१५०००	१४००
११	अठगढ़	१६८	३१०७९	१४९४०	२८२०
१२	नरसिंहपुर	१९९	३२५८३	१२०००	१४५०
१३	तालचर	३९९	३५५९०	१२०००	१०३०
१४	अठमलिक . ..	७३०	२१७७४	११०००	४८०
१५	हिन्डोला.	३१२	३३८०२	१००००	५५०
१६	टिगारिया .	४६	१९८५०	८०००	८८०
१७	पलहरा	४५२	१४८८७	५०००	+
	जोड।	१५१८७	१४६९१४२	७७१३९०	३३२२०

इन राजाओंमे मोरभञ्ज, धंकेल, वोड, क्योंझोर, नयागढ़ इत्यादिके वहुतेरे राजा राजपूत हैं। पलहरा राज्यके गवर्नमेंटका कर क्योंझोरमें शामिल है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इन राज्योंमेंसे केवल खाण्डपाड़ा वस्तीमें ५ हजारसे अधिक याने ५०५१ मनुष्य थे।

उड़ीसेके मालगुजार राज्योंमे बहुत पहाड़ी सिलसिले है। भीतरकी ऊँची भूमिपर महानदी, ब्राह्मणी और वैतरनी ये ३ वडी नदियाँ वहती हैं। जंगलोंका दृश्य मनोरम है। समतल भूमिपर हिन्दू उडिया लोग, जो आवादीके तीन चौथाई हैं, वसते है और पहाडियोंपर आदि निवासी अर्थात् पहाडी और जंगली लोग निवास करते हैं। उनमें खान्द अधिक प्रसिद्ध है, जो केवल खेती और लडाईका काम करते हैं। उनके देवते वहुत है, जिनको वे लोग रुधिर चढ़ाते हैं। उनमें पृथ्वी देवी प्रधान हैं, जिसको वर्षमें दो वार खेत वोने और काटनेके

समय मनुष्य वलि दिये जाते थे, उस मनुष्यको खम्भेमें बान्धकर उसको टुकड़े टुकड़े करके प्रत्येक खेतमे एक टुकडा गाड़ा जाता था। जब सन् १८३५ ई० में वहाँ अङ्गरेजी राज्य हुआ, तव नर वलिदान रोका गया और उस कामके लिये अङ्गरेजी अफसर नियत किये गये।

एक जाति जुआङ्ग या पटुआ कहलाती है, उस जातिके लोग पहले नङ्गे रहते थे। उनकी स्त्रियाँ अपने आगे पीछे पत्तोंके गुच्छे लटकाती थीं। सन् १८७१ ई० मे वहाँके अङ्गरेजी अफसरने उनको पहननेके लिये कपड़ेके टुकडे दिये, तवसे वे कपड़े पहनने लगीं।

इतिहास—उड़ीसेके पूर्व कालका इतिहास तारके पत्तोंपर लोहेके कलमसे विना रोशनाईके लिखा हुआ है। उसमें महाभारतके समयसे वर्तमान समय तकके १०७ राजाओंके नाम हैं और लिखा है कि पहलेके १२ राजाओंने, ३ हजार वर्षसे अधिक राज्य किया था, जिनमेसे पहलेके ३ राजाओंने, जिनके नाम महाभारतमें हैं, लगभग १३००, वर्ष राज्य किया।

उड़ीसेका ठीक इतिहास सन् ईस्वी के पहिले १४०७ और १०३६ वर्षके वीचसे या राजा शकरदेवके उत्तराधिकारी गौतमदेवके समयसे आरम्भ होता है। उस वंशके छठवे राजा महेन्द्रदेवकी राज्यके समयमें राजमहेंद्री शहर वसाई गई और राजधानी वनी वह राजा सन ईस्वीके पहिले १०३७ और ८२२ के बीचमें था सन् ईस्वीके चार पाँच सौ वर्ष पहिलेसे उसके आरम्भ तक उड़ीसेमे वौद्ध लोगोंका राज्य था सन् ईस्वीके ५० वर्ष पहिलेसे ३१९ वर्ष पीछे तकका इतिहास ताडके पत्तोके लेखमें नहीं है। यह जान पड़ता है कि उसी समयमे उडीसेकी पहाडियों और चट्टानोंमें काटकर गुफा और मठ वनाये गये। उडीसेके चट्टानों परके राजा अशोकके समयके शिला लेखोंसे और वौद्ध गुफाओंसे निश्चय होता है कि ईशाके ४०० वर्ष पहिलेसे और लगभग ३०० वर्ष पीछे तक उड़ीसेमें खास करके वौद्धोंकी प्रधानता थी।

सन् ४७४ ई०में केशरी वंशके राज्यके नियत करनेवाला राजा ययातिकेशरी उडीसे पर आक्रमण करनेवाले यावानोंको खदेरकर उड़ीसेका राजा वना। उसकी राजधानी भुवनेश्वर कसवा था। उसी समय भुवनेश्वरका वडा मन्दिर वनाया गया। केशरी वंशके राजाओंके पहिलेके उसदेशके राजा वौद्ध मतके थे। केशरी वंशके एक प्रतापी राजाने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहरको वसाया। सन् ११३२में केशरी वंशके राज्यका अंत होगया गङ्गा वंशका एक राजा दक्षिणसे आकर उडीसेमें राज्य करने लगा। केशरी वंशके राजा शैव थे किन्तु गङ्गावंशके राजा वैष्णव हुए। इस वंशके पाँचवें राजा अनङ्गभीमदेवने जिसने सन् ११७५ से १२०२ तक राज्य किया था, जगन्नाथजीके वर्तमान मन्दिरको वनवाया। यह उडीसेके सवसे वडे राजाओंमेंसे एक था कवीरजीने सन् १३८० और १४२० के वीचमें उडीसेमे धर्म उपदेश किया था और चैतन्य महाप्रभुने, जो सन् १४८५ से १५२७ तक थे, उड़ीसेके लोगोंको शिक्षा दी थी। उसीमें घर घर चैतन्य महाप्रभुकी पूजा होती है। सन् १५३२ में गङ्गा वंशका अंतिम राजा मर गया उसके दीवानने सन् १५३४ मे उस वंशके सव लोगोंको मारकर उस राज्यको ले लिया।

उड़ीसेके मालगुजार राज्योंका त्रिज नीचे है—

नंबर	माल गुजार राज्य	क्षेत्रफल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	तसखोसी मालगुजारी रुपया	गवर्नमेन्ट का 'कर' रुपया
१	मोरभञ्ज...	४२४३	३८५७३७	३३२०९०	१०६०
२	धंकेल.......... ...	१४६३	२०८३१६	१०९१००	५९००
३	वोड	२०६४	१३०१०३	१००००	८०
४	क्योंझोर	३०९६	२१५६१२	९००००	१९७०
५	नयागढ	५८८	११४६२२	५००००	५५२०
६	बरवा..... .	१३४	२९७७२	२८३६०	१४००
७	खाण्डपाडा .	२४४	६६२९६	२४४५०	४१२०
८	दसपला	५६८	४१६०८	२००००	६६०
९	नीलगिरि	२७८	५०९७२	१९४५०	३९००
१०	रानापुर	२०३	३६५३९	१५०००	१४००
११	अठगढ़	१६८	३१०७९	१४९४०	२८२०
१२	नरसिंहपुर	१९९	३२५८३	१२०००	१४५०
१३	तालचर	३९९	३५५९०	१२०००	१०३०
१४	अठमलिक . ..	७३०	२१७७४	११०००	४८०
१५	हिन्डोला	३१२	३३८०२	१००००	५५०
१६	टिगरिया . .	४६	१९८५०	८०००	८८०
१७	पलहरा	४५२	१४८८७	५०००	+
	जोड ।	१५१८७	१४६९१४२	७७१३९०	३३२२०

इन राजाओंमे मोरभञ्ज, धंकेल, वोड़, क्योंझोर, नयागढ़ इत्यादिके वहुतेरे राजा राजपूत हैं। पलहरा राज्यके गवर्नमेंटका कर क्योंझोरमें शामिल है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इन राज्योंमेंसे केवल खाण्डपाड़ा वस्तीमें ५ हजारसे अधिक याने ५०५१ मनुष्य थे।

उड़ीसेके मालगुजार राज्योंमे बहुत पहाडी सिलसिले है। भीतरकी ऊँची भूमिपर महानदी, ब्राह्मणी और वैतरनी ये ३ वडी नदियाँ बहती हैं। जंगलोंका दृश्य मनोरम है। समतल भूमिपर हिन्दू उडिया लोग, जो आवादीके तीन चौथाई हैं, वसते है और पहाडियोंपर आदि निवासी अर्थात् पहाडी और जंगली लोग निवास करते हैं। उनमें खान्द अधिक प्रसिद्ध हैं, जो केवल खेती और लडाईका काम करते हैं। उनके देवते वहुत है, जिनको वे लोग रुधिर चढ़ाते है। उनमें पृथ्वी देवी प्रधान हैं, जिसको वर्षमें दो वार खेत बोने और काटनेके

समय मनुष्य वलि दिये जाते थे, उस मनुष्यको खम्भेमें वान्धकर उसको टुकड़े टुकड़े करके प्रत्येक खेतमे एक टुकडा गाड़ा जाता था। जब सन् १८३५ ई० में वहाँ अङ्गरेजी राज्य हुआ, तव नर वलिदान रोका गया और उस कामके लिये अङ्गरेजी अफसर नियत किये गये।

एक जाति जुआङ्ग या पटुआ कहलाती है, उस जातिके लोग पहले नङ्गे रहते थे। उनकी स्त्रियाँ अपने आगे पीछे पत्तोंके गुच्छे लटकाती थीं। सन् १८७१ ई० मे वहाँके अङ्गरेजी अफसरने उनको पहननेके लिये कपड़ेके टुकडे दिये, तवसे वे कपड़े पहनने लगीं।

इतिहास—उड़ीसेके पूर्व कालका इतिहास तारके पत्तोंपर लोहेके कलमसे विना रोशनाईके लिखा हुआ है। उसमें महाभारतके समयसे वर्तमान समय तकके १०७ राजाओंके नाम हैं और लिखा है कि पहलेके १२ राजाओंने, ३ हजार वर्षसे अधिक राज्य किया था, जिनमेसे पहलेके ३ राजाओंने, जिनके नाम महाभारतमें हैं, लगभग १३०० वर्ष राज्य किया।

उड़ीसेका ठीक इतिहास सन् ईस्वी के पहिले १४०७ और १०३६ वर्षके वीचसे या राजा शकरदेवके उत्तराधिकारी गौतमदेवके समयसे आरम्भ होता है। उस वंशके छठवे राजा महेन्द्रदेवकी राज्यके समयमें राजमहेंद्री शहर बसाई गई और राजधानी वनी वह राजा सन ईस्वीके पहिले १०३७ और ८२२ के बीचमे था सन् ईस्वीके चार पाँच सौ वर्ष पहिलेसे उसके आरम्भ तक उडीसेमे वौद्ध लोगोंका राज्य था सन् ईस्वीके ५० वर्ष पहिलेसे ३१९ वर्ष पीछें तकका इतिहास ताडके पत्तोके लेखमें नहीं है। यह जान पड़ता है कि उसी समयमे उडीसेकी पहाडियों और चट्टानोंमें काटकर गुफा और मठ वनाये गये। उडीसेके चट्टानों परके राजा अशोकके समयके शिला लेखोंसे और बौद्ध गुफाओंसे निश्चय होता है कि ईशाके ४०० वर्ष पहिलेसे और लगभग ३०० वर्ष पीछे तक उडीसेमें खास करके वौद्धोंकी प्रधानता थी।

सन् ४७४ ई०में केशरी वंशके राज्यके नियत करनवाला राजा ययातिकेशरी उडीसे पर आक्रमण करनेवाले यावानोंको खदेरकर उडीसेका राजा वना। उसकी राजधानी भुवनेश्वर कसवा था। उसी समय भुवनेश्वरका वडा मन्दिर वनाया गया। केशरी वंशके राजाओंके पहिलेके उसदेशके राजा वौद्ध मतके थे। केशरी वंशके एक प्रतापी राजाने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहरको वसाया। सन् ११३२में केशरी वंशके राज्यका अत होगया गङ्गा वंशका एक राजा दक्षिणसे आकर उडीसेमें राज्य करने लगा। केशरी वशके राजा शैव थे किन्तु गङ्गावंशके राजा वैष्णव हुए। इस वंशके पाँचवे राजा अनङ्गभीमदेवने जिसने सन् ११७५ से १२०२ तक राज्य किया था, जगन्नाथजीके वर्तमान मन्दिरको वनवाया। यह उडीसेके सवसे वड़े राजाओंमेंसे एक था कवीरजीने सन् १३८० और १४२० के वीचमें उडीसेमे धर्म उपदेश किया था और चैतन्य महाप्रभुने, जो सन् १४८५ से १५२७ तक थे, उडीसेके लोगोंको शिक्षा दी थी। उसीमें घर घर चैतन्य महाप्रभुकी पूजा होती है। सन् १५३२ में गङ्गा वंशका अंतिम राजा मर गया उसके दीवानने सन् १५३४ मे उस वशके सव लोगोंको मारकर उस राज्यको ले लिया।

सन् १५६७-६८मे वङ्गालके अफगान मुसलमान सुलेमानने उडीसेके स्वाधीन हिन्दू राजाको जाजपुरके दीवारके भीतर परास्त किया । उसने पुरीको भी ले लिया । हिन्दू राज्यका अंत होगया सुलेमानका पुत्र दाउदखाँ दिल्लीके बादशाहकी आधीनता छोडकर स्वाधीन वन गया, इस लिये मुगल और अफगानोंकी लडाई हुई । सन् १५७४ मे अफगान लोग परास्त हुए । सन् १५७८ में दूसरी बार अफगानोंके परास्त होनेपर उडीसा देश अकबरके राज्यका एक भाग बना । सन् १७५१ में महाराष्ट्रोंने मुगलोंसे उसको जीत लिया सन् १८०३ में अङ्गरेजोंने उडीसे पर आक्रमण करके उसको अपने अधिकारमे कर लिया ।

उडीसेके मालगुजार राजाओमेसे अङ्गोलके राजाने सन १८४७ मे बगावत किया, इसलिये उसका राज्य अङ्गरेजी सरकारने छीन लिया और बॉकीके राजापर सन् १८४० मे खूनका मुकदमा सावित हुआ. इस कारणसे उसका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-महाभारत-(आदिपर्व, १०४ वॉ अध्याय) वली नामक राजाकी सुदेष्णा स्त्रीसे अन्धे ऋषिने सम्भोग किया जिससे अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग पुंड्र और सुह्य ये ५ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके नामसे एक एक देश हो गए । उनमेसे कलिङ्गके नामसे कलिङ्ग देश हुआ । (वनपर्व ११४ वॉ अध्याय) युधिष्टिर आदि पाण्डवगण वनवासके सयम पर्य्यटन करते हुए गङ्गासागर तीर्थमें स्नान करके समुद्रके तीर तीर चले । उन्होने कलिङ्गदेशमें वैतरनी नदी पार उतर कर वहॉ पितरोका तर्पण किया । पीछे वे लोग उसस्थानसे दक्षिणको चलते चलते महेन्द्राचल पर्वत पर पहुँचे । कूर्मपुराण (ब्राह्मीसंहिता, उत्तरार्द्ध, ३८ वॉं अध्याय) कलिङ्गदेशके पश्चिमार्द्धमें अमरकण्टक पर्वतसे नर्मदा नदी निकली है (ऊपरके लेखोंसे ज्ञात होता है कि सूबे उड़ीसे और मध्यदेश दोनोमें कलिङ्ग देश है)

लिंगपुराण—(६५ वॉ अध्याय) सूर्य्यका पुत्र मनु और मनुका पुत्र सुद्युम्न सुद्युम्नके उत्कल, गय और विनताश्व ये ३ पुत्र जन्मे, जिनके नामसे एक एक देश हो गये । उनमेसे उत्कलके नामसे उत्कल देश हुआ । आदि ब्रह्मपुराण–(४१ वॉ अध्याय) समुद्रके उत्तर भागमें विराज क्षेत्र(जाजपुर)में वैतरनी नदी है, इस तीर्थके अतिरिक्त उत्कल देशमे अन्यभी अनेक पवित्र तीर्थ है और पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते है (ऊपरके लेखोंसे जान पडता है कि कलिङ्ग देशका एक भाग उत्कल देश है) ।

आदि ब्रह्मपुराण–(२७ वॉ अध्याय) दक्षिणके समुद्रके समीपमें ओड्र देश विख्यात है, जिसमें कोणादित्य सूर्य (अर्थात् कोणार्क) रहते है (ओड्र देशका अपभ्रंश उड़ीसा देश है, उडीसेका नाम उत्कल और ओड्र पुराणोसे सिद्ध होता है) ।

ततकुण्ड ।

कटक शहरसे २५ मील पश्चिम पुरी जिलेका एक सब डिवीजनका सदर स्थान खुरदा एक वडी वस्ती है, जिसमें जगन्नाथपुरीके राजाके पूर्वज लोग रहते थे । वहॉं पुराने किलेकी निशानी अवतक विद्यमान है, एक मजीष्टर रहता है और बाजार लगता है । सन् १८१८ ई० से १८२८ तक जिलेका सदर स्थान खुरदा था । एक सडक कटकसे खुरदा होकर गञ्जामको गई है ।

खुरदासे ६ मील पश्चिम बाघमारी गाँवके समीप तप्तकुण्ड नामक एक कूप है, जिसका उष्ण जल सर्वदा खौलता रहता है। कूपसे थोडी दूरपर एक पोखरेके निकट हाटकेश्वर महादेवका मन्दिर है। वहाँ मकरकी संक्रांतिके समय एक मेला होता है। मेला एक मास रहता है। उसमें कपडे, वर्तन आदिकी दूकानें जाती है।

भुवनेश्वर।

कटकसे दक्षिण जगन्नाथ-पुरी तक ५३ मील बैलगाडीकी सडक है। सडकके किनारों पर मीलके पत्थर लगे है। दो ढाई रुपयेके किरायेपर एक बैलगाडी कटकसे पुरी तक जाती है।

कटकसे१९मील दक्षिण भुवनेश्वर वस्ती है। कटकसे चलनेपर २ मील आगे एक चट्टी, (उससे आगे १ मील तक नदीका वालू) ३½, ४½, ७½, और १३½ मील पर एक चट्टी मिलती है। पिछली चट्टीसे आगे नदीके बालूका मैदान है, जिसमें आगे पुरीकी सडक और दहिने ओर भुवनेश्वरकी राह गई है। पिछली चट्टीसे लगभग ५½ मील भुवनेश्वर है।

सूबे उडीसेके पुरीमें (२० अंश, १४ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश, और ८५ अश. ५२ कला, २६ विकला पूर्व देशान्तरमे) भुवनेश्वर, रामेश्वर, कपिलेश्वर और भास्करेश्वरके मन्दिरोके मध्यमें भुवनेश्वर नामक वस्ती है, जिसमें लगभग ४००० आदमी वसते हैं, जिनमेसे आधे पण्डे तथा पुजारी है। भुवनेश्वर क्षेत्रका नाम पुराणोमे एकाम्र क्षेत्र लिखा है। यह एक समय उन्नति करता हुआ राज्यकी राजधानी था। इसके आस पास दूर दूर तक पथरीली भूमि और जङ्गल है, जिसमें पहिले ७००० शिव-मन्दिर थे, जिनमेसे पांच छ. सौ अवतक विद्यमान है। इन मन्दिरोंका सुधार कभी नहीं हुआ। सब मन्दिर प्रायः एकही प्रकारके है और सबमे एकही ढंगका पत्थर लगा है। पत्थरोपर फूल और वेलबूटोके अतिरिक्त पत्थर खोदकर असंख्य मूर्त्तियाँ वनाई गई है। इनमेसे अनेक मन्दिर वड़े वडे और सुन्दर हैं, किन्तु भुवनेश्वरका मन्दिर सबसे विशाल है। यहाँके मन्दिर जर्जर होगये है· इनके सुधारकी वडी आवश्यकता है।

मन्दिर–भुवनेश्वर वस्तीके पास पुरीके जगन्नाथजीके मन्दिरसे पहिलेका बना हुआ भुवनेश्वरका विशाल मन्दिर है। यह मन्दिर कारीगरी और वनावटमें जगन्नाथजीके मन्दिरसे भी अच्छा है। प्रधान मन्दिर १६० फीट ऊँचा है। इसके प्रत्येक इंच खास करके खड़े हिस्से नकाशीके काममें पूर्ण है। मन्दिरके शिखरपर त्रिशूल लगा है। इसके भीतर ८ फीट व्यासके अर्घेपर ½ हाथ ऊँचे भुवनेश्वर शिवलिङ्ग हैं, जिनको वहाँके पण्डे लोग हरिहरात्मक कहते है। मन्दिरमें अँधियारा रहता है इस लिये दिनमे भी भीतर दीप जलाया जाता है।

भुवनेश्वरका मन्दिर पूर्व मुखका है। मन्दिरके आगे जगमोहन, जगमोहनके आगे नृत्यमंडप और उसके आगे भोगमन्दिर (एक दूसरेसे लगा हुआ) है। मन्दिरके चारों तरफ वड़े वड़े पत्थरोंसे वनी हुई ७ फीट मोटी ऊँची दीवार है, जिसके भीतर देवताओके वहुतेरे छोटे मन्दिर बने हैं। भोग मन्दिरके पूर्व सिंह दरवाजे पर सिंहकी २ मूर्त्तियाँ हैं। घेरेके भीतर हिन्दुओंके सिवाय दूसरा कोई नहीं जाने पाता है।
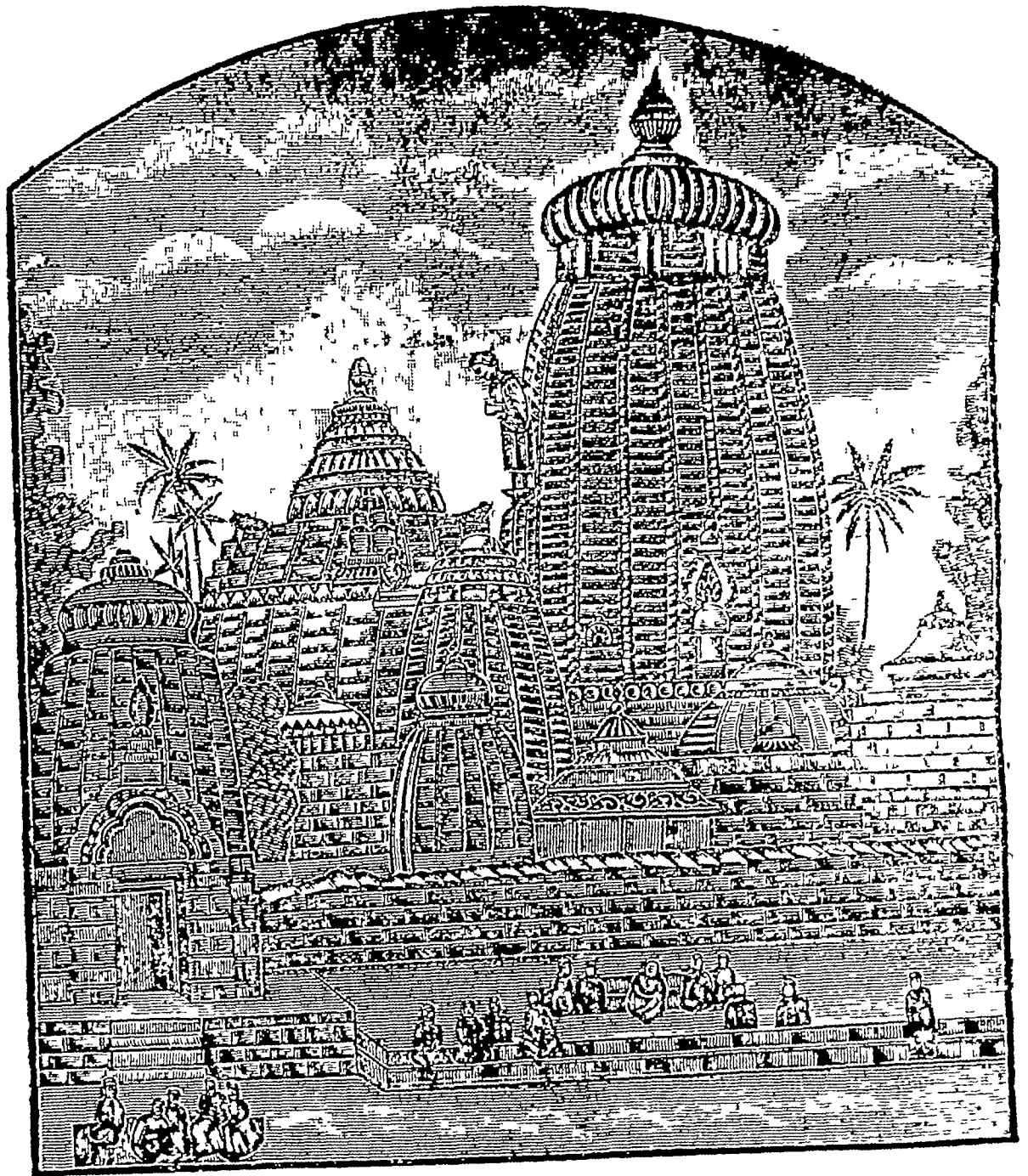
उडीसा देशका प्रसिद्ध भुवनेश्वर का मन्दिर।

भुवनेश्वर शिवकी पूजा नीचे लिखे हुए क्रमसे नित्य होती है,—

१ भोरको घण्टी बजाकर वह जगाये जाते हैं।
२ आरती की जाती है।
३ मुख धोलाया जाता है।
४ स्नान कराया जाता है।
५ कपडा पहनाया जाता है।
६ दाना, मिठाई, दही और नारियलका जलपान कराया जाता है।
७ पूरी आदिसे प्रधान भोग लगाया जाता है।
८ छोटा जलपान कराया जाता है।
९ मामूली जलपान कराया जाता है।
१० कच्ची और पक्कीका भोग लगाया जाता है।
११ दोपहरके बाद बाजा बजाकर शिव जगाये जाते हैं।
१२ मिठाईका भोग लगाया जाता है।
१३ दोपहरके बाद स्नान कराया जाता है।
१४ वस्त्र पहनाये जाते हैं।
१५ दूसरा भोग लगाया जाता है।
१६ दूसरा स्नान कराया जाता है।
१७ बहुमूल्य वस्त्र पहनाकर पुष्प और इतर चढाया जाता है।
१८ भोग लगाया जाता है।
१९ एक घण्टे बाद रातको भोग लगाया जाता है।
२० डमरू लिये और नृत्य करते हुए पञ्च-मुखी महादेवकी मूर्ति रक्खी जाती है।
२१ सोनेके समय आरती होती है।
२२ सोनेके लिये शय्या बिछाई जाती है।

बहुतेरे यात्री नृत्यमण्डपके भीतर जगन्नाथपुरीके समान सब वर्ण एकही पक्तीमें बैठकर भोग लगी हुई कच्ची रसोई खाते है, पर मण्डपसे बाहर कोई नहीं खाता और बहुतेरे लोग पक्कीका प्रसाद लेते हैं। पण्डे लोग कहते है कि जमीनकी आमदनीसे भोग रागमें नित्य ९५ रुपया खर्च होता है। पुरीके यात्री पुरी जानेके समय या पुरीसे लौटने पर भुवनेश्वरमें जाते हैं।

घेरेके बाहर बहुतेरे छोटे मन्दिर और पूर्वोत्तरके कोनेके पास चबूतरा है। उसके बाद पूर्व १०८ छोटे मन्दिरोंसे घेरा हुआ एक तालाब है। बड़े मन्दिरके दक्षिण २० एकडका जङ्गल है। लोग कहते हैं कि ललित इन्द्रकेशरीका महल इसी जगह था। प्रत्येक जगह नेव और पाटनोंकी निशानियाँ देख पडती हैं।

बडे मन्दिरके उत्तर बिन्दु सरोवर नामक बड़ा तालाब है। तालाबके जलके मध्यमें एक मन्दिर और स्थान बना है, जहाँ उत्सवोंके समयमें देवतोंकी चल मूर्त्तियाँ बैठाई जाती हैं। तालाबके किनारेके पास वासुदेव अर्थात् कृष्णजी और अनन्त अर्थात् बलदेवजीका मन्दिर है। मन्दिरके आगे जगमोहन, नृत्यमण्डप और भोगमन्दिर क्रमसे बने हैं। तालाबके पूर्व बगलसे भुवनेश्वरके मन्दिरकी शकलके (पर उससे छोटे) कई एक मन्दिर देख पडते है।

वासुदेवके मन्दिरसे ¼ मील पूर्वोत्तर ४० फीट ऊँचा कोटितीर्थेश्वरका मन्दिर है। कोटितीर्थेश्वरके मन्दिरसे ½ मील पूर्व एक टीले पर नवीं सदीके अन्तका बना हुआ ब्रह्मेश्वर शिवका मन्दिर है। इसमें भीतर और बाहर बहुत नकासीका काम है। मन्दिरके पश्चिम ब्रह्मकुण्ड नामक एक तालाब है।

बड़े मन्दिरके पूर्वोत्तर छठवीं सदीके आरम्भका बना हुआ हीन दशामें भास्करेश्वर शिवका मन्दिर है। भास्करेश्वरसे ½ मील पश्चिम राजरानीका मन्दिर है, जो एक समय

खूबसूरत था। मन्दिरके ताकोंमें ३ फीट ऊँची मूर्त्तियाँ हैं। राजरानीके मन्दिरसे ३०० गज पश्चिम आमके वृक्षोंका एक कुञ्ज है, जहाँ बहुतेरे मन्दिर बने हैं; जिनमें २० से अधिक अभी तक पूरे हैं; इनमें मुक्तेश्वर, केदारेश्वर, सिद्धेश्वर और परशुरामेश्वर प्रसिद्ध हैं। मुक्तेश्वरका मन्दिर ३५ फीट ऊँचा बहुत खूबसूरत है; इसमें बहुत कारीगरीकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। मन्दिरके पीछे एक तालाब और उससे ३० फीट दक्षिण मछलियोंसे भरा हुआ गौरीकुण्ड नामक छोटा तालाब है। पहिले तालाबका पानी इसमें आता है, परन्तु बहुत पानी बाहर निकलता है। गौरीकुण्डके पास ४१ फीट ऊँचा केदारेश्वरका मन्दिर है, जिसके पास एक कोठरीमें ८ फीट ऊँची हनुमानकी और सिंहासन पर खडी एक दुर्गाकी मूर्त्ति है। यह मन्दिर बहुत पुराना है। मुक्तेश्वरके पश्चिमोत्तर एक सुन्दर जगमोहनके साथ ४७ फीट ऊँचा सिद्धेश्वरका पुराना मन्दिर है। गौरी-तालाबके २०० गज पश्चिम सब मन्दिरोंसे अधिक पुराना परशुरामेश्वरका मन्दिर है। परशुरामेश्वरसे पूर्वोत्तर सुर्ख पत्थरसे बना हुआ अलम्बुकेश्वरका मन्दिर है, जिसको केशरी वंशके राजा अलम्बूकेशरीने सन् ६७७ ई० में बनवाया था।

बिन्दुसर तालाबके पश्चिम, सड़कके बगलपर नवीं सदीका बना हुआ वैताल-देवल है। वैताल-देवलके दक्षिण ३३ फीट ऊँचा और २७ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा उत्तम नकाशी किया हुआ सोमेश्वरका मन्दिर है।

इतिहास—एक समय भुवनेश्वर कसबा बहुत समय तक उड़ीसेकी राजधानी था। केशरी वंशको नियत करनेवाला राजा ययातिकेशरीने, जिसने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसेमे राज्य किया था, उड़ीसेपर आक्रमण करनेवालेको खदेरकर राजा बना। उसने भुवनेश्वर कसबेको बसाकर उसको राजधानी बनाया और लगभग सन् ५०० ई० मे भुवनेश्वरके वर्तमान बडे मन्दिर (और जगमोहन) का काम आरम्भ किया। उसके पीछेके २ राजा मन्दिरको बनवाते रहे; तीसरे राजा ललितकेशरीने सन् ६५६ ई० में उसको तैयार किया। सन् ६७७ ई० मे राजा अलंबुकेशरीने अलम्बुकेश्वरका मन्दिर बनवाया। केशरी-वंशके राजा नृपतिकेशरीने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहरको बसाया और भुवनेश्वरको छोड़कर कटकको अपनी राजधानी बनाया। केशरी वंशके एक राजाने सन् १०९० और ११०४ ई०के बीचमें मन्दिरके जगमोहनके आगेका नृत्यमण्डप और भोगमन्दिर बनवाया। सन् ११३२ ई० में केशरी वंशके शैवराजाके राज्यका अन्त होगया' गङ्गा वंशका एक राजा दक्षिणसे आकर उड़ीसेका राजा बन गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—आदि ब्रह्मपुराण—(४० वाँ अध्याय) सम्पूर्ण पापोंको हरने वाला कोटि लिङ्गसे युक्त काशीके समान शुभ एकाम्रक्षेत्र है। पूर्व कालमे वहाँ एक आम्रका वृक्ष था इस लिये वह तीर्थ एकाम्रक्षेत्रके नामसे विख्यात होगया। वह तीर्थ विद्वान् गणोंसे पूर्ण, धन धान्यसे समन्वित, अनेक प्रकारके बलियोंसे आकीर्ण, गृहोंके अटारियोंसे संकीर्ण, श्रेष्ठ राजाओंके गृहोंसे सुशोभित और शस्त्रोंसे पूरित है। श्रीमहादेवजी सब लोकोंके हितके लिये वहाँ विराजमान हैं उन्होने पृथ्वीके समस्त तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाब, बावली, कूप और समुद्रोंसे एक एक बून्द इकट्ठे करके लोकके हितके अर्थ सब देवताओं सहित उस क्षेत्रमें बिन्दुसर नामक तीर्थ रचा। जो मनुष्य अगहन मासके शुक्लपक्षकी अष्टमीको जितेन्द्रिय हो

उस क्षेत्रमें जाकर विन्दुसरमें स्नान करके भक्तिपूर्वक देवता, ऋषि, मनुष्य और पितरोंको तिल और जलसे विधान पूर्वक तर्पण करेगा उसको अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होगा। वहाँ ग्रहण और संक्रान्तिके दिन तथा समरात्रिंदिवकाल और युगादि तिथि अथवा अन्य शुभ तिथियोंमें ब्राह्मणोंको दान देनेसे अन्य तीर्थोंकी अपेक्षा सौगुना फल मिलता है। उस तीर्थमें पिण्डदान देनेसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है। वहाँ शिवजीके विधि पूर्वक पूजन और उनकी प्रदक्षिणा करनेसे मनुष्यको शिवलोक मिलता है और उसके २१ पुस्तका उद्धार होजाता है। वह क्षेत्र महादेवजीके चारो दिशाओंमें ढाई योजनमें विस्तृत है। उस क्षेत्रमें भास्करेश्वर महादेव है, जिनको पूर्व कालमें सूर्यने पूजा था। जो मनुष्य कुण्डमें स्नान करके शिवजीकी पूजा करता है वह शिवलोकमें जाता है।

जो पुरुष मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर, स्वर्णजालेश्वर, परमेश्वर विख्यातीश्वर, सूक्ष्मसृत्तिकेश्वर नामोंसे विख्यात इन शिवलिङ्गोंका दर्शन और विन्दुसर तीर्थमें स्नान करता है वह सब पापोंसे विमुक्त होकर विमानमें बैठे शिव लोकमें प्राप्त होता है। उस क्षेत्रमें जिस जिस स्थानोंमें शिवलिङ्ग स्थापित है सबकी पूजा करना उचित है। जो मनुष्य वैशाख आदिक महीनोंमें उस क्षेत्रके विन्दुसर तीर्थमें स्नान करके महादेव तथा पार्वती, कार्त्तिकेय, गणेशजी और सावित्रीका दर्शन करता है उसको शिवलोक मिलता है। कपिल तीर्थमें स्नान करनेवाला मनुष्य अपने सब मनोरथ प्राप्त करके शिवलोकमें निवास करता है। एकाम्रक नामक शिव-क्षेत्र काशीजीके तुल्य है। वहाँ शरीर त्यागने वालेको मोक्ष हो जाती है।

स्कन्दपुराण—(उत्तरखण्ड) नीलगिरि (अर्थात् पुरुषोत्तमपुरके (नीलाचल) से ३ योजन दूर श्रीमहादेवजीका क्षेत्र एकाम्रक वन है। पूर्वकालमें महादेवजी पार्वतीके सहित अपने ससुर हिमाचलके गृहमें निवास करते थे। एक दिन उस नगरकी कई एक स्त्रियोंने उपहासके साथ पार्वतीसे कहा कि हे देवि ! तुम्हारे पति अपने ससुरके गृहमें अनेक भाँतिके सुख भोग करते हैं, तुम कहो वह अपने घरको कब जायँगे ?। पार्वतीकी माताने पूछा कि पुत्री ! तुम्हारे पतिमें कौन ऐसा अपूर्व गुण है कि तुम उनको इतना प्रिय समझती हो। पार्वतीने लज्जित होकर महादेवजीके पास जाकर कहा कि हे स्वामिन् ! आपको ससुरालमें रहना उचित नहीं है, आप दूसरे स्थानमें चले। शिवजी पार्वतीकी बातका कारण समझकर उनके साथ बैलपर सवार हो ससुरालसे चल दिये और भागीरथीके उत्तर तटपर वाराणसी नगरी बसा कर उसमें रहने लगे। द्वापर युगमें वाराणसीके काशिराज नामक राजाने घोर तपस्या करके महादेवजीको प्रसन्न किया। महादेवजीने राजाको ऐसा वरदान दिया कि मैं आवश्यकता होनेपर युद्धमें तुम्हारी सहायता करूंगा। एक समय विष्णुभगवान्‌ने क्रोध करके काशिराजपर अपना सुदर्शन चक्र चलाया। महादेवजी राजाकी रक्षाके-लिये अपने गणोंके साथ रणभूमिमें उपस्थित हुए। उन्होंने क्रोध करके पाशुपत अस्त्र छोड़ा, पर विष्णुके प्रभावसे वह व्यर्थ हो गया। उस पाशुपत अस्त्रसे काशीपुरीही दग्ध होने लगी। तब महादेवजी घबड़ाकर विष्णु भगवान्‌की स्तुति करने लगे। उस समय भगवान्‌ने कहा कि हे धूर्जटे ! तुम्हारा पाशुपतास्त्र अजेय है, किन्तु मेरे चक्रके सामने उसकी शक्ति नहीं चलेगी। यदि वाराणसीको स्थिर रखनेकी तुम्हारी इच्छा है तो तुम पुरुषोत्तम क्षेत्रके नीलगिरिके उत्तर कोणमें जाकर पार्वतीके साथ निवास करो। ऐसा सुन महादेवजी नन्दी

भृङ्गी आदि अपने गणों और पार्वतीजीको सङ्गमें लेकर एकाम्रकाननमें चले गये तबसे वह स्थान मुक्ति देनेमें काशीके समान प्रसिद्ध हुआ।

कूर्मपुराण–(उपरिभाग, ३४ वाँ अध्याय) पूर्व देशमें एकाम्र नामक शिवतीर्थ है। जो मनुष्य उस तीर्थमें महादेवजीकी पूजा करता है वह गणोंका स्वामी होता है वहाँके शिवभक्त ब्राह्मणोको थोडीसी भूमिका दान देनेसे सार्वभौम राज्य मिलता है। मुक्ति चाहने वाले मनुष्यको वहाँ जानेसे मुक्ति मिलती है।

दूसरा शिवपुराण–(उर्दू अनुवाद, ८ वाँ खण्ड, पहिला अध्याय) पुरुषोत्तम क्षेत्रमें जगन्नाथजीके गुरुस्वरूप भुवनेश्वर महादेव विराजते हैं, जिनके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पाप विनष्ट हो जाता है।

उदयगिरि और खंडगिरिके गुफा मन्दिर।

भुवनेश्वरसे ५ मील पश्चिम पुरी जिलेमें उदयगिरि और खण्डगिरि दो पहाड़ी है। छोटे वृक्षोंके जङ्गल होकर भुवनेश्वरसे मार्ग गया है। दोनो पहाड़ियोंके वीचमे एक तङ्ग घाटी है। दोनो पर पत्थर काटकर अनेक भाँतिकी वहुतेरी वौद्ध गुफा और मन्दिर वनाये गये हैं, जो ईशासे लगभग ५० वर्ष पहलेसे ५०० वर्ष पीछे तकके बने हुए है। सवमे पहलेकी गुफायें उदयगिरिपर और उनसे पीछेकी खण्डगिरिपर हैं। वैशाखमे खण्डगिरिका मेला होता है।

उदयगिरि—यह पहाडी ११० फीट ऊँची है। इसके कटि स्थानमें भीतरसे पत्थर निकालकर जगह जगह गुफा मन्दिर बने हैं;–

रानीनूर (याने रानीका महल)—सव गुफाओसे नीचे एक दूसरेके ऊपर छोटी कोठरियोंके २ कतार हैं, जिनके आगे पायेदार वरण्डे और ४९ फीट लम्बी तथा ४३ फीट चौड़ी पहाडी काटकर वनी हुई ॲगनई है। ऊपरके मञ्जिलमें, जो पूर्व मुखका है, ८ दरवाजे हैं, जहाँ २ द्वारपाल खड़े हैं, वरण्डा होकर (जो ६३ फीट लम्बा है) ४ छोटी कोठरियोंमें जाना होता है। वरण्डेके दोनो वगलोंमें ३ सिंह हैं। वहाँ हाथी और मनुष्योंकी वहुतसी मूर्त्तियाँ देखनेमें आती हैं। निचले मञ्जिलेम भी ८ दरवाजे है। आगे जमीनके सतहपर ४४ फीट लम्बा सतूनदार वरण्डा है, जिससे ३ कोठरियोंमें जाना होता है।

गणेशगुफा—रानीनूर गुफाके प्राय: सीधा उत्तर उससे वहुत उँचाई पर २ कमरे है जिनके आगे ५¼ फीट ऊँचा १ वरण्डा है। वरण्डेकी सीढ़ीके दोनो तरफ २ हाथी है।

स्वर्गद्वारी गुफा—रानीनूर गुफासे ५० गज पश्चिम एक सीढ़ी स्वर्गद्वार नामक दो मञ्जिली गुफाको गई है। उसके दोनो मञ्जिलोमे दो कमरे और आगे एक वरण्डा है। वरण्डेके पाये अव टूट गये हैं।

जयविजय या हसपुरकी गुफा–यह ऊपर लिखे हुए गुफाओंके उत्तर है। इसमे छोटी वडी वहुतसी मूर्तियाँ देखनेमें आती है।

गोपालपुरा–पूर्वोत्तरमें गोपालपुरा और मञ्चपुरा नामक गुफाओंके २ झुण्ड हैं। कमरेके पायोंपर खोदकर वने हुए ललाट अक्षरोंमें २ लेख हैं जो अव पढे नहीं जाते।

वैकुण्ठ–यह गुफा और पाटलपुरा तथा जामपुरा दूसरी दो गुफायें जो थोडा पश्चिमोत्तर हैं, अव वहुत विगड़ गये है।

हाथीगुफा–७५ गज पश्चिमोत्तर हाथीगुफा है। वहाँ पत्थरके भीतर ५ फीट लम्बा और इतनाही चौडा खोखला है। उसके दरवाजेके ऊपर लाट अक्षरोंमें १ लम्बा शिलालेख है। जिसमें कलङ्गाके एरा राजाके यशका वर्णन हुआ है। वह राजा सन् ई० से करीब ४०० वर्ष पहले था। इसके अलावे उस गुफामें गुप्त अक्षर और कुटिला अक्षरोंमें कई छोटे शिलालेख हैं। हाथी गुफाके चन्द गज उत्तर पवनगुफा है।

सर्पगुफा–पवनगुफासे ७५ फीट दक्षिण-पश्चिम सर्पगुफा है। दरवाजेके सिर पर मोटी नकाशीका ३ सिरवाला एक साँप है जिसके नीचे बैठकर भीतर जाने योग्य द्वार है। उससे होकर ४ फीट लम्बी, इतनी ही चौडी और इतनीही ऊँची गुफामें आदमी प्रवेश करता है। वहाँ १ शिलालेख है, जिसका हिन्दी अनुवाद "चूलाकर्मकी कोठरी और कर्म ऋषिका मन्दिर" होता है। उसके समीप भजन गुफा और थोडा उत्तर अलकपुरा गुफा है। इन दोनोंमेंसे कोई मशहूर नहीं है।

व्याघ्रगुफा–वह ५० फीट उत्तर पहाडीसे बाहर निकली हुई नाक और आँखियोंके साथ बाघके सिरके शकल की है। उसके दरवाजे पर दाँत लटके हुए है और सिरके ऊपरका हिस्सा ८¾ फीट पहाडीसे लगा हुआ है। वह गुफा भीतरी ९ फीट चौड़ी है। जिसका छोटा दरवाजा बाघके हलककी जगह पर बना है। दरवाजेके दहिने लाट अक्षरोंमें ससेविनका गुफा लिखा है। वह गुफा ईशासे ३०० वर्ष पहले की होगी। बाघ-गुफाके उत्तर १२ फीट लम्बी और ६ फीट चौडी 'ऊर्धबांह' नामक कोठरी है, जिसके आगे एक बरण्डा बना है।

खण्डगिरि—यह पहाडी घने दरख्तोंसे छिपी हुई १३३ फीट ऊँची है। खड़ी राहसे ऊपर जाना होता है। करीब ५० फीट ऊपर २ रास्ते हो गये हैं; एक बायें पहाडीके पूर्व बगलमें काटे हुए गुफाओंका और दूसरा दाहिने 'अनन्ता गुफाको' गया है।

अनन्तागुफा—उस गुफाके आगे ४ द्वार और एक पायादार बरण्डा है। गुफामें पीछेकी दीवारके पास बुद्धकी मूर्त्ति है। दीवारमें मनुष्य, पशु और पक्षीकी बहुत सी मूर्त्तियाँ बनी है, जहाँ लाट अक्षरोंमें और कुटिला अक्षरोंमें २ शिलालेख हैं।

बायेंकी गुफायें–अनन्तागुफासे दो मुहानीं रास्तेके पास लौटकर बायेंके रास्तेसे जाना चाहिये। आगेकी गुफाओंके पास १२ वीं सदीका संस्कृत लेख है, जिसमें लिखा है कि आचार्य्य कलाचन्द्र और उसका विद्यार्थी बालाचन्द्रकी यह गुफा है। उससे आगे दो हिस्सोंमें पूर्व मुखकी गुफाओंका एक सिलसिला है। गुफाओंके भीतर पीछेकी दीवारमें अनेक बुद्धकी मूर्त्तियाँ और चन्द नई जैन देवताओंकी नई मूर्त्तियाँ है पूर्व छोरके पास एक चबूतरे पर बहुत जैनमूर्त्तियाँ है। दूसरी कोठरी भी ऐसी ही है। पीछेकी दीवारमें एक फीट ऊँची ध्यान करती हुई बुद्धकी मूर्त्तियोंका एक कतार है और नीचे बैठी हुई स्त्रियोंकी अनेक मूर्त्तियाँ हैं जिनमें चन्द चतुर्भुजी और दूसरी सब ८ बाँह वाली है।

वहाँसे पहाडीके सिरे तक कडा चढ़ाव है। सिरोभाग पर १८ वीं शदीका बना हुआ पारसनाथका एक मन्दिर है। मन्दिरके दक्षिण–पश्चिम १५० फीट व्यासका 'देवसभा' नामक एक स्थान है, जिसके १०० गज पूर्व पत्थर खोदके बनाया हुआ आकाश-गङ्गा नामक तालाव है। तालावके नीचे एक गुफा है। ऐसा प्रसिद्ध है कि यहाँ उडीसेके राजा ललित इन्द्र केशरीका रिमेन्स रक्खा है।

सोलहवाँ अध्याय।

(सूबे उड़ीसेमें) जगन्नाथपुरी और कोणार्क।

जगन्नाथपुरी।

कटक कसबेसे ५३ मील दक्षिण जगन्नाथपुरीकी सरकारी कचहरी है जगन्नाथजीकी सडक, जो कटकसे १३½ मील आगे भुवनेश्वरके यात्रीको छूट जाती है, भुवनेश्वरसे २ मील आगे छूटनेकी जगहसे ८ मीलपर फिर मिलजाती है। उस ८ मीलके भीतर २ चट्टी और एक सूखी नदी मिलती हैं। सडकसे ५ मील तक भुवनेश्वरके मन्दिर देख पडते है। कटकसे आगे २६¾, ३०½, ३१½, ३४. ३५½, ३८¼, और ४०¾ मीलपर एक एक चट्टी है । पिछली चट्टीसे करीब ½ मील दूर साक्षीगोपालका सुन्दर शिखरदार मन्दिर है । मन्दिरके आगे जगमोहन बना है। नियत समयपर मन्दिरका पट खुलता है । वहाँके पण्डे यात्राके साक्षीके लिये ताडके पत्रपर यात्रियोंके नाम लिखते हैं और पुआका प्रसाद देते है। मन्दिरके पास मोदियोकी कई दुकानें हैं। कटकसे ४२¼ मीलपर तालाव और वस्तीके पास चट्टी, ४५ मीलपर सूखी नदीके दोनों किनारोंपर बस्ती और चट्टी और ४८ मीलपर एक छोटी चट्टी है। उसके २½ मील पहलेसे जगन्नाथजीका मन्दिर देख पडता है। उस चट्टीसे आगे कोसों तक एक बडी झील है, इस लिये पुरीकी सडक वायें घूमकर गई है।

छोटीसे १ मील आगे कई मन्दिर, २¾ मीलपर 'अठारह नाला' का पुल और ३½ मील पर अर्थात् कटकसे ५१½ मील दूर चन्दनतालाव है, जहाँसे सब यात्री गाडी छोडकर पैदल जाते हैं। कितने यात्री तो उस स्थानसे कई मील पहिलेही अपने जूतेको रख देते हैं। "अठारहनाला" का पुल जिसको मरहटा पुल भी कहते हैं, २७८ फीट लम्बा और ३८ फीट चौडा है; उसके नीचे १९ मेहराबियां बनी है और ऊपरसे सडक निकली है। यह पुल बहुत पुराना है।

कटक और पुरीके बीचमें जगह जगह केलोंके वाग, केवडोंके जगल और घास, दीमकोंके टीले (वल्मीक),जिनमें कोई कोई दो गज ऊँचे और चार गज घेरेके है और खजूर तथा नारियलके वाग देख पडते हैं। चट्टियोंपर यात्रियोंके टिकनेके मकान और खाने पीनेका सामान तैय्यार रहता है।

जगन्नाथपुरी सूबे उडीसेमे भारतवर्षके पूर्वके समुद्रके किनारे पर (१९ अश, ४८ कला, १७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५१ कला ३९ विकला पूर्व देशान्तरमें) पुरी जिलेका प्रधान कसबा और सदर-स्थान, भारतवर्षके ४ धामोमेसे एक पवित्र तीर्थ-स्थान है। जगन्नाथजीके कुछ यात्री कलकत्तेसे कटक तक आगबोट द्वारा और कटकसे सडक द्वारा और कुछ लोग रानीगञ्जसे वांकुडा, मेदनीपुर और कटक होकर पैदल सडक द्वारा पुरीमे पहुँचते हैं। दक्षिण-पश्चिमके यात्री भी पैदलही आते हैं, किन्तु अब दक्षिण–पश्चिम बेजवाडा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटकके पास तक रेलवे लाइन तैयार होचुकी है और पूर्वोत्तर आसिनसोलसे मेदनीपुर, वालेश्वर और कटक होकर पुरी तक कई वरसोंमें रेलवे खुल

जायगी । पुरीकी सीमा समुद्रसे मधुपुर नदी तक १½ मील चौड़ी और वालिखण्डासे लोक-नाथके मन्दिर तक ३½ मील लम्बी है । पुरी यात्रियोंके टिकनेका शहर है । यहाँ दस्तकारी और तिजारत बहुत कम है । मन्दिरकी आमदनी और पूजासे यहाँके लोग परवरिश पाते है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पुरीमे २८७९४ मनुष्य थे, अर्थात् २८४७६ हिन्दू, २६९ मुसलमान, ४५ क्रस्तान और ४ दूसरे । इनमेसे १५९३० पुरुप और १२८६४ स्त्रियाँ थीं । लेकिन वडे तिहवारपर १ लाख यात्री बढ जाते है । हर महीनेमें दिन और रात यात्रियोंके झुन्ड पुरीमें पहुँचते है । सालाना करीब ५० हजारसे अधिक और कभी कभी सालमे तीन लाख यात्री पुरीमे आते हैं । केवल रथयात्राके समय कभी कभी लगभग १ लाख यात्री इकट्ठे होजाते है । पण्डे लोगोंके हजारो नौकर या हिस्सेदार हिन्दुस्तानके हर जिलेसे यात्रियोंको खोजकर पुरीमें ले आते है । पण्डे लोग उनके टिकनेको मकान देते है ।

जगन्नाथजीके मन्दिरसे जनकपुर तक चौड़ी सड़क गई है उसके सिवाय सब सड़कें तङ्ग और कच्ची है । कसवा नीची जमीनपर बसा है । बीचमें ऊँची बालूदार जमीन होनेके कारण कसबेका पानी समुद्रमें नही गिरता, इसलिये कसवेका जल वायु रोगकारक रहता है । यहाँके हर एक मकान करीब ४ फीट ऊँचे चबूतरे पर बना है । मकानोंकी दीवारे टट्टियोंकी हैं । टट्टियोंपर मट्टीका लेवार दिया हुआ है । प्रतिवर्ष सैकडों यात्री पुरीमे मरते हैं । उडीसेके जलवायू रोगवर्द्धक होनेके कारण यात्रियोमेंसे प्रति वर्ष हजारो मनुष्य पुरी और पैदलके रास्तेमें मरजाते हैं, परन्तु अङ्गरेजी बन्दोवरतसे तन्दुरस्तीमें अब तरक्की हुई है । टिकने वाले मकानोंके लिये मकानके मालिकको लेसन्स लेना पडता है और मकानोंमे टिकने वालोकी सख्या नियत की जाती है ।

पुरी जिलेका सदर स्थान है; पर यहाँकी दिवानी कटकके जजके आधीन है । पुरीकी सरकारी कचहरियाँ समुद्रके निकट बनी है । पण्डोके मकानोंके अतिरिक्त यहाँ बड़ा छत्ता-मठ, समाधिमठ, रामगोपालमठ, आचारीमठ, संन्यासीमठ, साधुवैष्णवमठ, गौड़ियामठ इत्यादि बहुतेरे मठ हैं, जिनमें कई बड़े धनवान है । पण्डे लोग यात्रियोंसे उनके नाम और पते अपनी स्याही कलससे वहीमें लिखवाते हैं, पर उड़ीसेके रीत्यनुसार वे लोग अपनी ताडपत्रकी वहीपर काटेके कलमसे उडिया अक्षरोंमें यात्रियोंके नाम और पते लिखलेते है । (आदि ब्रह्मपुराण—उत्तरार्द्धके प्रथम अध्यायमें ताल-पत्रपर देवाक्षरोंमे पुस्तक लिखनेकी कथा है) । पुरीमें बन्दर बहुत हैं ।

मार्कण्डेय तालाव, चन्दनतालाव, श्वेतगङ्गातालाव, पार्वतीसागर (लोकनाथके पास) और इन्द्रद्युम्नतालावको लोग पंचतीर्थ कहते हैं । पुरीमें ५ महादेव प्रख्यात है;- लोकनाथ, मार्कण्डेश्वर, कपालमोचन, यमेश्वर और नीलकण्ठ ।

जगन्नाथजीका मन्दिर—पुरीके बीचमें प्रधान सड़कके अखीर पश्चिम समुद्रसे लगभग १ मील उत्तर आस पासकी भूमिसे लगभग २० फीट ऊँची जमीनपर, जिसको 'नीलगिरि' कहते है, जगन्नाथजीका मन्दिर है (उसके भीतर, अन्य धर्मी और नीच जातिके मनुष्य तथा चमडेकी कोई चीजें नहीं जाने पाती है ।

मन्दिरके बाहरका घेरा ६६५ फीट लम्बा और ६४५ फीट चौडा है । इसकी कंगूरे-दार दीवार लगभग २२ फीट ऊँची है, जिसके प्रत्येक बगलके मध्यमे एक बड़ा फाटक

बना है। उनमेंसे पूर्वका फाटक सब फाटकोंसे उत्तम है। उसका चौखट नकाशीदार काले पत्थरका और किवाड़ सालकी लकड़ीका बना है, फाटकके ऊपरके चौकुण्ठे मकानमें संगतरासीका उत्तम काम है; प्रतिमाओंमें कई मूर्त्तियाँ आदमीके समान बड़ी हैं। दरवांजेके दोनों तरफ दो सिंहकी मूर्त्तियाँ हैं, इससे इसका नाम सिंह दरवाजा पड़ा है। उत्तरके फाटकपर पत्थरके २ हाथी और काठके ३ सारथी हैं; जो यात्राके समय रथोंपर बैठाये जाते हैं और दक्षिणके फाटकपर पत्थरके २ घोडे थे, जो अब नहीं हैं। दक्षिणका फाटक १५ फीट ऊँचा है, जिसके ऊपर बहुतसी मूर्त्तियाँ बनी है। मन्दिरके घेरेके बाहर चारों तरफ ४५ फीट चौड़ी सड़क है।

सिंहदरवाजेके आगे काले रंगके एकही पत्थरका ३५ फीट ऊँचा १६ पहलका सुन्दर अरुणस्तम्भ खडा है, जिसके सिरपर सूर्यके सारथी अरुणकी मूर्त्ति है। लोग कहते हैं कि १८ वीं सदीके आरम्भमे महाराष्ट्र लोग कोणार्कके सूर्यके मन्दिरसे इस स्तंभको यहाँ लाए थे।

सिंहदरवाजेके पूर्वके मैदानमे बाजार है, जिसमें सूखे भातका महाप्रसाद और जगन्नाथ आदिके पट यात्री लोग खरीदते हैं और कोई कोई यहाँसे बेंत तालपत्रका छाता और चन्दन भी प्रसाद लेजाते है।

बाहरके घेरेके भीतर ४५० फीट लम्बा और ३०० फीट चौडा दूसरा घेरा है, जिसके भीतर जगन्नाथजी और दूसरे देवताओंके बहुतसे मन्दिर खड़े हैं। इसकी दीवार बाहरकी दीवारसे बहुत कम ऊँची है। इसमेंभी चारों तरफ ४ फाटक है।

जगन्नाथजीके खास मन्दिरके आगे, अर्थात् पूर्व जगमोहन, जगमोहनके आगे नृत्यमन्दिर और इसके आगे भोगमन्दिर है; चारों परस्पर मिले हुए हैं। इतिहासोंसे जान पडता है कि जगन्नाथजीके वर्तमान मन्दिरको राजा अनङ्गभीमदेवने, जिसने हुगलीसे गोदावरी नदी तक राज्य किया था बनवाया। १४ वर्ष काम होनेके उपरान्त सन् ११९८ ई० में मन्दिर तैयार होगया। तबसे यह कई बार मरम्मत हुआ। इस समय भी मरम्मत हो रहा है, इसके लिये करीब १ लाख रुपया चन्दा हो चुका है। नृत्यमन्दिर पीछेका बना हुआ है। भोगमन्दिरको पिछले शतकमें महाराष्ट्रोंने बनवाया।

जगन्नाथजीका निज मन्दिर १९२ फीट ऊँचा, ८० फीट लम्बा और इतनाही चौडा है है। चारो ओर मन्दिर और जगमोहन पर स्त्रियों और पुरुषोंकी बहुतसी प्रतिमाए बनी हुई हैं और लिखित चित्रभी हैं। मन्दिरके ऊपर अर्थात् इसके कटि स्थान पर दक्षिणकी कोठरी में बलिराजा, पश्चिम वालीमें नृसिंहजी और उत्तरकी कोठरीमें कलियुगकी प्रतिमा है और शिखरके ऊपर नील चक्र और पताका लगी है।

मन्दिरके भीतर पश्चिम ओर ४ फीट ऊँची और १६ फीट लम्बी पत्थरकी वेदी है, जिसको रत्नवेदी कहते हैं रत्नवेदीके दहिने ओर बाएं ४ फीट और उसके पीछे अर्थात् पश्चिम ३ फीट चौडी गली है, जिससे होकर सब यात्री लोग जगन्नाथजी आदि मन्दिरके देवताओंकी परिक्रमा करते हैं रत्नवेदीके ऊपर उत्तर तरफ ६ फीट लम्बा सुदर्शनचक्र है, जिससे दक्षिण जगन्नाथजी, सुभद्रा और बलभद्रजी क्रमसे खड़े हैं। जगन्नाथजीके एक तरफ लक्ष्मीजी

और दूसरी ओर सत्यभामा और आगे राजा इन्द्रद्युम्नकी धातु-प्रतिमा हैं। बलभद्रजी ६ फीट ऊंचे गौरवरण जगन्नाथजी बलभद्रजीसे एक अंगुल छोटे श्याम रङ्ग और सुभद्राजी ४ फीट ऊँची पीत वरण हैं। तीना मूर्तियां काष्ठमय है; इनके हाथ और पांव ठूंठे और नासिका बड़ी है। देखने मे सुभद्राकी बांह नहीं हैं, पर वे कपड़ेके भीतर लटकी हैं। जगन्नाथजी और बलभद्रजीके ललाटपर एक एक हीरा लगा है। तीनों मूर्त्तियोंको नित्यही समय समयपर और उत्सवोंके समय भांति भांतिकी पोशाक और रङ्ग बिरङ्गकी पगाड़िया तथा सुनहले हाथ और दूसरी पोशाकें पहनाई जाती हैं और अनेक प्रकारके शृङ्गार होते हैं। बहुत सकाले जागरणके समय मंगला आरतीका सादा शृङ्गार होता है। तब अवकाश वेष, बाद प्रहर वेष और उसके बाद चन्दन लगा वेष बनाया जाता है। सबसे प्रसिद्ध बड़ा शृङ्गार वेष है, जो गोधूलीके बाद सन्ध्या धूपके तुरन्तही पीछे बनाया जाता है इनके अतिरिक्त समय समयपर जगन्नाथजीका दामोदर बेष, बामन बेष, बुद्ध बेष गणेश बेष आदि बनाये जाते है।

मूर्त्तियोंका पोशाक पहनाने और शृङ्गार होजानेके उपरान्त मन्दिरका फाटक खुलता है और यात्रीगण दर्शन करते है। मन्दिरमें अंधियारा रहनेके कारण दिनमें भी दीप जलाया जाता है, मंगला आरतीके समय पहर दिन चढ़नेपर प्रधान भोग लगजानेपर और गोधूलीके बादके बड़े शृङ्गारके समय नित्य ३ बार यात्रीगण खास मन्दिरमें जाकर रत्नवेदीकी परिक्रमा करते हैं और मूर्त्तियोंके चरणके पास अपना सिर नवाते है; बाकी समयोंमें जगमोहनसे दर्शन होता है।

मन्दिरके आगेका जगमोहन १२० फीट ऊँचा, ८० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। इसके मध्यमें चौखूटे ४ पाये और बगलमें दो बाजू हैं। जगमोहनमें ३ तरफ बड़े दरवाजे हैं। उत्तरके बाजूमें जगन्नाथजीका असबाब रहता है। यात्रीगण जगमोहनमें इकट्ठे होकर जगन्नाथ आदि देवताओंका दर्शन करते हैं, नियत समयोंमें वे लोग खास मन्दिरके भीतर जाते हैं।

जगमोहनसे पूर्व नृत्यमन्दिर है। इसके उत्तर और दक्षिणके बगलमें चार चार चौखूटे पाये और भीतर चार चार पायोंके ४ कत्तार है। पायोमें देवताओंके चित्र बनाये गये हैं। नृत्यमन्दिर भीतरसे ६९ फीट लम्बा और ६७ फीट चौडा है। इसके पश्चिमके द्वारपर, जो जगमोहनके पास है, जय और विजयकी मूर्त्तियाँ और पूर्वके हिस्सेमें एक स्तम्भपर गरुडकी मूर्त्ति है। इस मन्दिरमें समय समयपर स्त्रियाँ नाचती हैं और बाजा बजता है।

नृत्यमन्दिरके पूर्व १२० फीट ऊँचा, ६० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा भोगमन्दिर है, जिसपर नीचेसे ऊपर तक पत्थर खोदकर असंख्य मूर्त्तियाँ बनाई गई हैं। लोग कहते हैं कि पिछले शतकमें महाराष्ट्रोंने कोणार्कके काले मन्दिरके हिस्सेका पत्थर लाकर ४० लाख रुपयेके खर्चसे इसको बनवाया। पाकशालासे भोगमन्दिर तक एक पाटा हुआ रास्ता है। भोगकी सामग्री पाकशालासे तैय्यार करके इसमें लाई जाती हैं।

भीतरीवाले हातेमें जगन्नाथजीके मन्दिरसे दक्षिण एक पीपलका वृक्ष है। उसके पास ३८ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा, जिसमें पाये लगे हुए हैं, मुक्तिमण्डप है, जहाँ पण्डित लोग शास्त्रार्थ करते है। उसके बाद अक्षयवट है, जिसको यात्रीगण अङ्कमाल करते हैं। उसके पास प्रलयकालके विष्णुकी बालमूर्त्ति है, जिसको बालमुकुन्द कहते हैं। उसी तरफ रोहिनीकुण्ड नामक एक बहुत छोटा कुण्ड, जिसके पास पत्थरका चतुर्भुजी काकहै और बिमला देवी, नृसिंहजी, लक्ष्मीजी, एकादशी आदि बहुत देव देवियोंके मन्दिर हैं। बड़े

मन्दिरसे पश्चिम सरस्वती, कर्मायाई, कर्म लिखनेवाला विधाता, काली आदि देव मूर्तियाँ हैं। उत्तरके दरवाजेके पास शीतलाकी मूर्ति है। इनके अतिरिक्त घेरेके भीतर शिव, सूर्य्य, हनूमान, गणेश, मङ्गला आदि देव देवियोंके वहुतसे मन्दिर हैं। उस हातेमें लगभग ५० स्थान और मन्दिर वने हुए हैं।

वाहरके हातेमें सिंहदरवाजेपर घेरेके भीतर २१ सीढ़ियोंके ऊपर मन्दिरका फर्श है। दरवाजेसे प्रवेश करने वालोंके दहिने महाप्रसाद वेंचने वालोंकी दूकानें हैं, जहाँ वहुतेरे लोग महाप्रसाद खरीदते हैं। फाटककी मेहरावीके एक ताकमें जगन्नाथजीकी छोटी मूर्त्ति है, जिसको लोग; पतितपावन कहते हैं। चमार इत्यादि नीच जातिके लोग, जो मन्दिरके हाते में नहीं जाने पाते, इसी मूर्त्तिका दर्शन करते हैं। इसी जगह १½ हाथके ताकमें २२ भुजवाले ठाकुरजी हैं। सिंहदरवाजेसे उत्तर स्नानकी वेदी है, जहाँ ज्येष्ठमें जगन्नाथजी स्नानके लिये लाये जाते हैं। दरवाजेके पास एक इमारत है, जिसमें स्नान देखनेके लिये लक्ष्मीजी बैठती हैं, और दरवाजेके दक्षिण एक दूसरी इमारत है, जिसमें भगवान्के फिरने पर स्वागतके लिये लक्ष्मीजी जाती हैं। वाहरके हातेके पूर्व-दक्षिणके कोनेके पास जगन्नाथजीकी पाकशाला है, जिसमें सैकडों चूल्हे वने हुए हैं। एक एक चूल्हेपर कई एक भांडे चढ़ते हैं। उत्तरके हाथी फाटकसे पश्चिम-दक्षिण वैकुण्ठ नामक छोटा मकान है जहाँ वहुतेरे पण्डे अपने यात्रियोंसे अटका सकल्प कराते हैं।
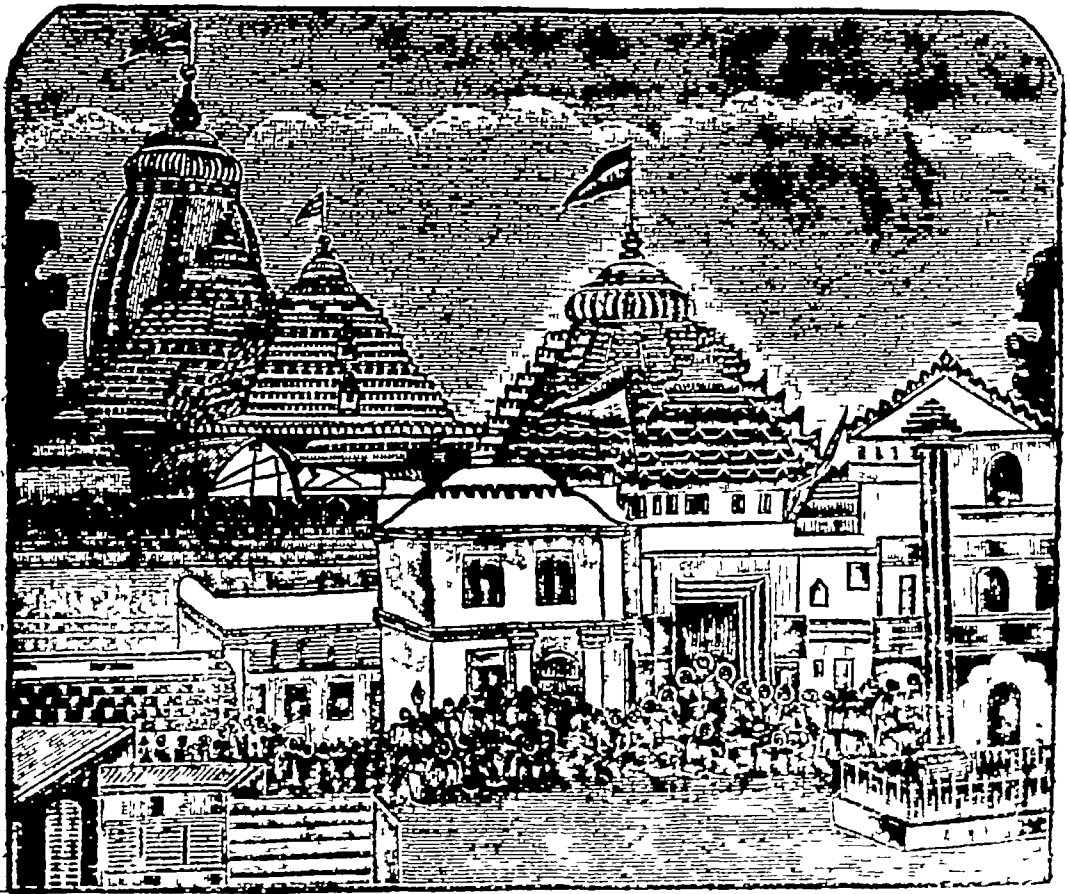
पुरीमें श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर।

जगन्नाथजीका मन्दिर।
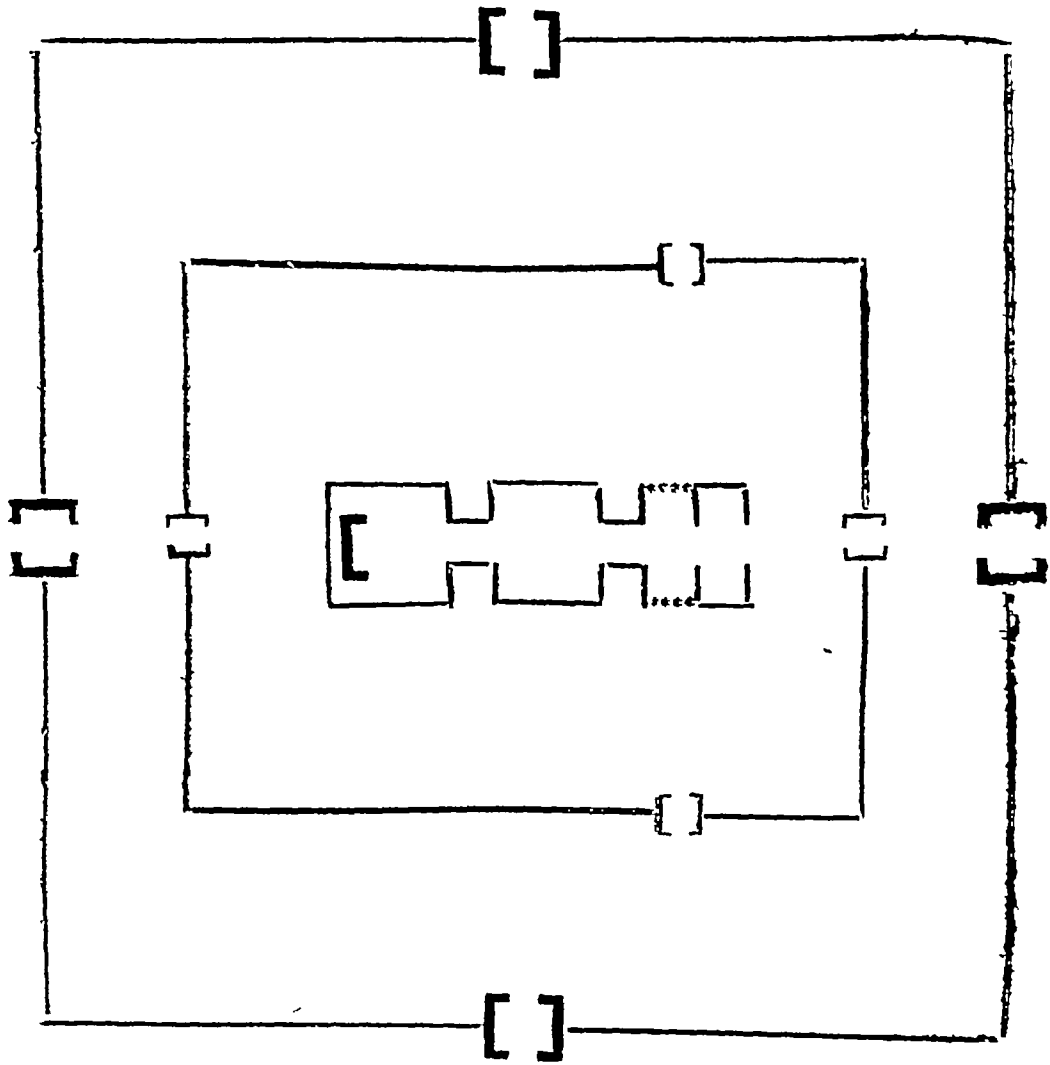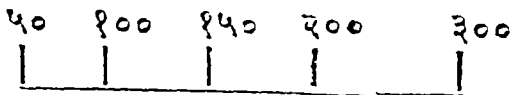
१ इञ्चका १५० फीट

कपालमोचन और यमेश्वर—जगदीशके मन्दिरके कोटके बाहर उसके पश्चिम-दक्षिण गहरी जमीनपर कई एक मन्दिरोंके साथ तीन मुख वाले कपालमोचन शिवका मन्दिर है। कपालमोचनसे ½ मील दक्षिण एक मन्दिरमें यमेश्वर शिवलिङ्ग है। यमेश्वरसे थोड़ा दक्षिण गोपीनाथका मन्दिर है।

श्वेतगङ्गा—जगन्नाथजीके मन्दिरसे पश्चिम-दक्षिण स्वर्गद्वारके रास्तेके पास श्वेतगङ्गा नामक एक पक्का तालाव है, जिसके पूर्व किनारे पर श्वेतकेशवका मन्दिर बना हुआ है।

श्वेतकेशवकी मूर्त्ति जगन्नाथजीके समान काष्ठमय है। जगन्नाथजीके कलेवर बदलनेके समय इनका भी कलेवर बदलता है।

स्वर्गद्वार—जगन्नाथजीके मन्दिरसे १ मील दक्षिण-पश्चिम समुद्रके किनारे पर एक चौथाई मीलकी लम्बाईमें स्वर्गद्वार है, जहां यात्री लोग समुद्रकी लहरमें स्नान करते हैं। बड़े तेहवारोंके समय लगभग ४० हजार आदमी समुद्रकी लहरमें गोता मारते हैं। समुद्रको नारियल और रत्नोंकी भेट दी जाती है। एक छोटे मन्दिरके पास ४ फीट ऊँचा एक स्तम्भ है जिसपर पूजा रक्खी जाती है। समुद्रके किनारेके पास बालू पर बहुतेरे छोटे छोटे मठ हैं। मलूकदासके मठमें उनकी मूर्तिका दर्शन होता है और टुकड़ा अर्थात् लीटी और साग प्रसाद मिलता है कबीरदासके मठमें कबीरदासके चौराका दर्शन होता है और तुरानी अर्थात् भातका पानी प्रसाद मिलता है। वहाँ नानकशाहियोंका भी एक मठ है। बहुतेरे लोग मरनेके समय स्वर्गद्वारमें जाते हैं। वहाँ समुद्रमें पानी बहुत कम है; किनारेसे १ मीलसे अधिक निकट आगबोट नहीं आ सकता है।

लोकनाथ महादेव—जगन्नाथजीके मन्दिरसे १ मील पश्चिम लोकनाथका मन्दिर है। सड़क कच्ची और बालूदार है। लोकनाथके मन्दिरमें जलकी भूरि फूटी है। मन्दिर सर्वदा अथाह जलसे पूर्ण रहता है। जलके भीतर शिवलिङ्ग है। वह जल एक नाला होकर पार्वती तालावमें गिरा करता है। पानीका नाला एक दूसरे मन्दिर तक है। फाल्गुण बदी ११ से उस दूसरे मन्दिरसे पानी बाहर निकाला जाता है, शिवरात्रीके दिन सम्पूर्ण जल निकल जाने पर लोकनाथका दर्शन होता है। पीछे मन्दिरमें फिर दश हाथ ऊँचा जल होजाता है। सैकड़ों यात्री शिवरात्रीकी रात्रीमें मन्दिरके आस पास अपने अपने आगे दीप जलाकर रात्री भर जागते हैं उस दिन करीब २० हजार मनुष्योंका वहाँ मेला होता है। मन्दिरसे थोडी दूर पर पार्वती तालाब पक्का बना हुआ है।

मार्कण्डेयतालाव—जगन्नाथके मन्दिरसे ½ मील उत्तर मार्कण्डेय तालाव है। पश्चिमके फाटकसे तालाब तक सड़क गई है तालावके चारों तरफ पक्की सिढ़ियाँ और दीवारें हैं, दक्षिण किनारे पर मार्कण्डेयेश्वर शिवका बडा मन्दिर और दूसरे कई देव मन्दिर बने है। सम्पूर्ण यात्री वहाँ स्नान करके जगन्नाथजीका दर्शन करते हैं।

चन्दनतालाव—मार्कण्डेय तालावसे पूर्व कटककी सडकके पास लगभग ३२५ गज चौड़ा और इससे अधिक लम्बा चन्दनतालाव नामका बडा पोखरा है उसके चारों तरफ पक्की सिढ़ियाँ बनी है और मध्यमें चबूतरेके साथ एक मन्दिर है। नाव द्वारा उस मन्दिरमें जाना होता है। वैशाखकी अक्षय तृतीयाको देवताओंकी चल मूर्तियोंको नाव पर चढ़ाकर उस तालावमें जलकेलि कराई जाती है और वे उस मन्दिरमें बैठाई जाती है।

जनकपुर—जगन्नाथजीके मन्दिरसे १½ मील दक्षिण-पूर्व जनकपुर है, जिसका नाम पुराणमें गुढ़िच क्षेत्र लिखा है। इसी जगह काष्ठमूर्तियाँ रची गई थीं इस लिये उसको जनकपुर (जन्मस्थान) कहते हैं। एक चौड़ी सड़क, मन्दिरसे जनकपुर तक गई है सड़क के दक्षिण बगल पर पुरीके राजा मुकुन्ददेवका मकान है।

जनकपुरके मन्दिरके चारों तरफ दोहरी कोट है। बाहरकी कँगूरेदार दीवार करीब २० फीट ऊँची है मन्दिरका प्रधान फाटक पश्चिम तरफ है जिसके पास पत्थरके २ सिंह खड़े हैं पुरीके मन्दिरोंके समान वहाँ भी खास मन्दिर, जगमोहन, नृत्यमन्दिर और भोगमन्दिर लगातार बने हुए हैं। पर वहाँके मन्दिर पुरीके मन्दिरोंसे दरजेमें बहुत कम हैं। खास मन्दिर में ४ फीट ऊँची और १९ फीट लम्बी पत्थरकी रत्नबेदी (सिंहासन) है जिसपर रथयात्राके समय पुरीके जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा बैठाई जाती हैं। घेरेके भीतर एक जगह पाकशाला और दूसरे कई स्थान और मकान बने हुए हैं जनकपुरके मन्दिर बहुत पुराने हैं।

इन्द्रद्युम्न तालाव—जनकपुरके मंदिरसे थोड़ा पूर्व मार्कण्डेय तालाबसे कुछ छोटा इन्द्रद्युम्न तालाव है। उसके चारो बगलोंमें पत्थरकी सीढ़ियाँ हैं, तालावमें कछुए बहुत रहते हैं। तालाबके पास एक मन्दिरमें नीलकण्ठ महादेव और इन्द्रद्युम्न और दूसरे मन्दिरमें पद्मनाभ भगवान हैं।

जगन्नाथजीके मन्दिरका प्रबंध— मन्दिरकी वार्षिक आमदनी जागीर आदिसे लगभग ५ लाख रुपये और यात्रियोंकी पूजासे करीब ६ लाख रुपये हैं। मन्दिरके पुजारी, पण्डे मठधारी नौकर और दूसरे देशोंसे यात्रियोंको ले जानेवाले गुमास्ते तथा नौकर सब मिलकर ६ हजारसे अधिक मनुष्य हैं। २० हजारसे अधिक पुरुष स्त्री और लड़के जगन्नाथजीसे पर्वरिश पाते हैं। जिनमेंसे लगभग ६५० आदमी मन्दिरके कामोंमें मोकर्रर हैं। इनमेंसे कोई जगन्नाथजीका बिस्तर लगाता है कोई उनको जगाता है, कोई पानी कोई भोजन कोई पान देता है कोई कपड़ा धोता है कोई पोशाक गिनता है इत्यादि। ४०० रसोईदारोंके घरके लोग, १२० नृत्य करनेवाली लड़कियाँ और कई एक हजार पुजारी और पण्डे हैं। उनमें बहुतेरे बड़े धनी हैं। मन्दिरके प्रधान प्रबंधकर्त्ता पुरीके राजा हैं।

जगन्नाथजीकी नित्यकी सेवा—सुबहको घन्टी बजाकर जगन्नाथ, बलभद्र आदि देवता जगाये जाते हैं। बाद कपाट खोला जाता है और उनको धूप दिखलाया जाता है। ११ बजे आरामके लिये उनकी प्रार्थना की जाती है और भोजनकी सम्पूर्ण सामग्री सिंहासनके आगे लाकर रक्खी जाती है। समय समयके भोगोंमें सकाल भोग, द्विपहर भोग, सन्ध्या भोग और (उसके पीछेका) शृंगार भोग प्रधान है। बहुतसी सामग्री तैयार करके भोग मन्दिरमें रक्खी जाती हैं और फाटक खोलकर भोग लगाई जाती हैं। साधुओंकी खास सामग्रीभी भोग मन्दिरमें रक्खी जाती है। राजाकी सामग्री खास मन्दिरमें भोग लगती है। राजाकी गोपाल वल्लभ नामक एक खास सामग्री और महलकी बनी हुई मिठाई नित्य भोग लगजानेके पीछे बेंच दी जाती हैं, उनका दाम राजाके खानगी हिसाबमें रक्खा जाता है चारो भोगोंके समय एक एक घंटे तक पट बन्द रहता है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि कर्माबाई नामक एक स्त्री वात्सल्य उपासक हुई वह नित्य प्रातःकाल उठकर विना प्रातःकालकी क्रिया किए हुए अङ्गारों पर एक छोटे पात्रमें खिचड़ी बनाकर अत्यन्त प्रीति और प्यारसे भगवानको भोग लगाती थी। जगन्नाथजी पुरुषोत्तमपुरी से आकर उस खिचड़ीको खाते थे। एक दिन एक साधु आकर आचार पूर्वक भोग लगानेके लिये कर्माबाईको शिक्षा देकर चला गया। जब कर्माबाई स्नानादिक क्रिया करके आचार पूर्वक भोग लगाने लगी, तब जगन्नाथजीके भोजनमें विलम्ब होने लगा।

भगवानकी आज्ञानुसार उनके पण्डेने उस साधुको ढूँढकर उससे कहा कि तुम कर्माबाईको उपदेश दे आओ कि वह प्रथमहीके समान बिना आचारका सबेरे भोग लगाया करे। साधु ऐसीही शिक्षा दे आया; तब कर्माबाई अति प्रसन्न होकर पहलेकी भाँति बिना स्नानानादि क्रिया किये हुए सबेरे खिचरी बनाकर भोग लगाने लगी। अबतक पुरुषोत्तमपुरीमें सब भोगोंसे पहिले कर्माबाईके नामसे जगन्नाथजीको खिचडीका भोग लगाया जाता है।

महाप्रसाद––भोजनकी सामग्रीमें भोग लगानेसे पहिले स्पर्शका भेद माना जाता है। सम्पूर्ण सामान पाकशालासे भोग लगानेके स्थान पर बडे नियमसे लाया जाता है, पर भोग लग जानेके उपरान्त कुली लोग मन्दिरसे महाप्रसाद निकालते हैं। भोग लग जाने पर वह बड़ा पवित्र हो जाता है। हिन्दुस्तानके सब प्रदेशोंके यात्री सूखाहुआ भातका महाप्रसाद अपने घर ले जाते हैं। सभी जातिके सभीको भात परोसते हैं उच्छिष्ट प्रसाद भोजन करनेमें भी लोग दोष नहीं मानते हैं। परोसनेवाले जूठे पत्तलको स्पर्श करके भात परोसते हैं और किसी किसी यात्रीके मुखमें एक ग्रास खिला देते हैं या उसमेंसे एक ग्रास आप खालेते हैं, परन्तु यवन आदि अन्य धर्मी और चमार आदि नीच जातियोंसे पंक्तिभेद और स्पर्शदोष माना जाता है। वे मन्दिरके हातेके भीतर नहीं जाने पाते हैं। वहाँके लोग कहते थे कि पुरीके राजाकी ओरसे २५०) रुपयेकी सामग्री नित्य भोग लगाई जाती है। पण्डे लोग अपने यात्रियोंके भोजनके लिये, दूकानदार लोग बेचनेके लिये और कोई २ यात्री ब्राह्मण भोजनके लिये पाकशालामें भोगकी सामग्री तैय्यार कराकरके भोग लगवाते हैं। और पाक बनानेवालोंको नियत हिस्सा देते हैं। पुरीके लोगोंके घर जो रसोई बनती है वह मन्दिरमें भोग नहीं लगती उसमे स्पर्श-भेद माना जाता है।

पुरीका उत्सव—(१) स्नान यात्रा—यह यात्रा रथयात्राको छोड़कर पुरीके सब उत्सवोंमें प्रधान है। ज्येष्ठकी पूर्णिमाको जगन्नाथजी, बलभद्रजी और सुभद्राजी बाहरी हातेमें पूर्वोत्तरके कोनके पास स्नान वेदीपर लाई जाती है। अक्षयवटके पासके पवित्र कूपसे जल लाकर दो पहर दिनके समय इनको स्नान कराया जाता है और सुन्दर पोशाक पहना कर मन्त्रोंको पढ़कर इनकी पूजा कीजाती है। इसके उपरान्त जगमोहनके बगलकी कोठरियोंमेंसे एकमें, जिसका नाम अन्दर घर है, जगन्नाथजी आदि देवता १५ दिन रहते हैं। इतने दिन भोग नहीं लगता; पाकशाला और बाहरका फाटक बन्द रहता है कहा जाता है कि बहुत स्नान करनेसे वे लोग बीमार हैं। ऐसे समयमें किसी दूजा आषाढ़में इनके कलेवर बदलते हैं। उस वर्षकी रथयात्राके समय यात्रियोंका बहुत भारी मेला होता है। (२) रथयात्रा पुरीका प्रधान उत्सव है। जगन्नाथजी, बलभद्रजी, और सुभद्राजी रथमें बैठ बडे सामान और तैय्यारीके साथ जनकपुरके अपने विश्राम वाटिकामें जाते हैं। जगन्नाथजीका रथ ४५ फीट ऊँचा और ६५ फीट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा है, जिसमें ७ फीट व्यासके १६ पहिये लगे हैं। बलभद्रजीका रथ ४४ फीट ऊँचा १४ पहियेवाला और सुभद्राजीका रथ ४३ फीट ऊँचा १२ पहियेका है। आषाढ़ सुदी २ के दिन तीनों मूर्त्तियाँ सिंहदरवाजेपर लाकर रथमें बैठाई जाती हैं। उस समय तीनों देवताओंको सुनहरे हाथ और पाँव लगाये जाते हैं। उसके बाद पुरीके राजा हाथी, घोड़े, पालकी, आदि असबाबोंके साथ वहाँ आते हैं। अगले रथके

लगभग १०० गज दूर आनेपर वह गाड़ीसे उतरकर पैदल चलते हैं और रथके आगेकी भूमिको रत्न लगे हुए झाड़से बहारते हैं और मूर्त्तियोंकी पूजा करते हैं। सबसे पहिले राजा क्रमसे तीनों रथकी डोरी पकड़कर छोड़ देते है; तब पडोसके जिलेके ४२०० कुली, जिनको इस कामके लिये विना लगानकी जमीन मिली है, रथको खींचते हैं और बहुतेरे यात्री भी बड़े प्रेम उत्साहसे इस काममें लगते हैं। रथोंके पहिये बालूमें गड़ जाते हैं, मार्गमें कई दिन लग जाते हैं। जगन्नाथजी जितने दिन मार्गमें रहते हैं, उतने दिन पक्की सामग्री भोग लगती है। जनकपुर पहुँचनेपर तीन दिन कच्ची भोगकी तैय्यारी होती है। चौथी रातको लक्ष्मीजी बहुत जलूसके साथ अपने स्वामीके दर्शनके लिये मन्दिरसे आती हैं। उस तिथीको लोग हरिपंचमी कहते हैं। जगन्नाथजी आदि देवता चार पाँच दिन तक जनकपुरमें रहकर दशमीको लौटते हैं और विजय द्वार होकर बाहर होते हैं। फिरनेके समय यात्रीलोगोंके कम हो जानेके कारण मार्गमें बिलम्ब होता है। सिंहदरवाजेपर रथ पहुँचनेपर लौट आनेका उत्सव होता है। मन्दिरके सिंहासनपर आनेके पीछे स्पर्शदोष मिटानेके लिये मूर्त्तियोंके संस्कार होते हैं।

(३) हरि शयनी एकादशी—आषाढ़ शुक्ल एकादशीको भगवान्के शयनका उत्सव होता है। (४) झूलनउत्सव—श्रावण शुक्ल एकादशीसे पूर्णिमा तक मदनमोहनजी झूलन पर रहते है। उस समय नाच गानसे आनन्द मनाया जाता है। (५) जन्माष्टमीका उत्सव—भादों कृष्ण-अष्टमीको जन्मका उत्सव होता है। (६) पार्श्वपरिवर्तन—भादों शुक्ल एकादशीको विष्णुके करवट फेरनेका उत्सव होता है। (७) कालियदमन—कृष्णने कालिय नागका दमन किया था, उसका उत्सव होता है। (८) वामन जन्म—भादों शुक्ल द्वादशीको बामनजीके जन्मके दिन जगन्नाथजीको पोशाक पहनाये जाते हैं और बामनजीके मानिन्द इनको एक छाता और कमण्डलु दिया जाता है (९) शरतपूनो—आश्विनकी पूर्णिमाको शरतपूनोंका उत्सव होता है। (१०) देवोत्थान—कार्तिक शुक्ल एकादशीको विष्णुके जागनेका उत्सव होता है। (११) गरम कपड़े पहनानेका उत्सव—मार्गशीर्षमें जिस दिन मूर्त्तियोंको जाड़ेके कपड़े पहनाये जाते हैं; उस दिन उत्सव होता है। (१२) पुष्याभिषेक—यह उत्सव पौषकी पूर्णिमाको होता है। (१३) मकरकी संक्रांति—मकरके सूर्य्य होनेके दिन उत्सव होता है। (१४) फूलडोल—रथयात्रा और स्नानयात्राको छोड कर होली पुरीमें सबसे अधिक प्रसिद्ध उत्सव है। धुलहडीके दिन मदनमोहनजी झूलते हैं। यात्रीगण अबीर गुलाल चढ़ाते हैं। उसी दिन जगन्नाथजीका राजभेंट उत्सव होता है। (१५) राम नवमी—रामचन्द्रके जन्मके दिन जगन्नाथजीको रामचन्द्रके समान पोशाक पहनाई जाती है। (१६) दमनभंजिका यात्रा—दमन नामक दैत्यके बधका उत्सव होता है। (१७) चन्दन यात्रा—वैशाखकी अक्षय तृतीयाको चन्दनतालाव पर यात्रा होती है उस समय देवताओंकी चल प्रतिमाओंको नावमें बैठाकर चन्दनतालावमें जलक्रीड़ा कराई जाती है और फूलोंका बडा शृंगार किया जाता है। लतावृक्षोंसे वृन्दावन बनाया जाता है। (१८) रुक्मिणीहरण। इनके अतिरिक्त बीचबीचमें कई बार पुरीमें महोत्सव होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(पाताल खण्ड; १७ वाँ अध्याय) शत्रुघ्नजीने अश्वकी रक्षा करते हुए जाते जाते एक पर्वताश्रम देखकर अपने मन्त्रीसे पूछा कि यह क्या

है। सुमति नामक मन्त्री बोला कि यह नील पर्वत पुरुषोत्तम जगन्नाथजीसे शोभित है। यहाँ पुरुषोत्तमजी सदा टिके रहते हैं। इस पर्वतपर चढ़कर पुरुषोत्तमजीको नमस्कार कर उनकी पूजा करके नैवेद्य भोजन करनेसे प्राणी चतुर्भुज हो जाता है। इस विषयमें पण्डित लोग यह पुराना इतिहास कहते हैं,—

लोकमें प्रसिद्ध काञ्ची नामक पुरी है। उसमें महाराजा रत्नग्रीव राज्य करता था। उसने अपने पुत्रको राज्य देकर तीर्थ यात्राका विचार किया। एक दिन राजाने अपनी सभामें एक तपस्वी ब्राह्मणको देखकर उससे तीर्थोंका वृत्तान्त पूँछा, ब्राह्मण बोला कि हम पर्य्यटन करते हुए एक समय गङ्गासागरके जलसे प्रक्षालित नील नामक पर्वतपर गये। वहाँ हमने चतुर्भुजी मूर्त्तिवाले और शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुए भीलोंको देखा, तब उनसे चतुर्भुज होनेका कारण पूँछा। (१८ वाँ अध्याय) किरातोंने कहा कि हम लोगोंका एक छोटा बालक अन्य बालकोंके साथ खेलता हुआ इस पर्वतके शृंगपर चढ़ गया। तब उसने वहाँ मणियोंसे खचित सुवर्णकी दीवारोंसे बना हुआ एक अद्भुत देवालय देखा। वह एक मन्दिरमें लक्ष्मी नारदादिकोंसे सेवित श्रीहरिको देखकर समीप चलागया। जब देवगण पूजा करके नैवेद्य लगाकर अपने अपने लोकोंको चले गये तब उस लड़केने नैवेद्यके एक भातका सीथ पड़ा हुआ पाया और श्रीहरिका दर्शन करके भातका सीथ खालिया, जिससे वह चतुर्भुज हो गया। उस बालकसे यह समाचार पाकर हमलोगोंनेभी इकट्ठे होकर देवदेवका दर्शन किया और स्वादुयुक्त वहाँका भात आदि नैवेद्य भोजन करके हम लोग चतुर्भुज रूप हो गये। (१९ वाँ अध्याय) ऐसा कह ब्राह्मणने रत्नग्रीवसे कहा कि हमभी गङ्गासागरके संगममें स्नान करके उस शृंगपर चढ़े। वहाँ देवदेवादिकोंसे वन्दित महाराजको देख मैंने नमस्कार किया और वहाँके भातके भोजनसे शंख चक्रादिकोंसे चिह्नित चतुर्भुजत्व पाया। (२१ वाँ अध्याय) ऐसा ब्राह्मणका वचन सुन राजा रत्नग्रीव ब्राह्मणकी आज्ञासे पुरुषोत्तमजीके दर्शनको चला और गङ्गासागरसङ्गममें पहुँचकर ब्राह्मणसे बोला कि नीलपर्वत कितनी दूर है। तब ब्राह्मणने विस्मित होकर कहा कि नीलपर्वतका स्थल तो यही है; यहाँही भील दिखाई दिये थे और इसी मार्ग होकर हम पर्वतपर चढ़े थे। हे राजन्! जब तक पुरुषोत्तमजीका दर्शन नहो तबतक आप यहीं ठहरे रहें। राजा श्रीहरिका ध्यान करने लगा। जब राजाको परमेश्वरके गुणगान करते पाँच दिन बीत गये तब भगवान् त्रिदण्डीका वेष धारण किये हुए राजाके समीप आकर बोले कि हे राजन्! कल्ह मध्याह्न समयमें श्रीहरि तुमको अपना दर्शन देंगे। तुम, तुम्हारा मन्त्री, तुम्हारी स्त्री, यह तपस्वी ब्राह्मण और तुम्हारे पुरका करम्ब नामक कोरी, जो बड़ा साधु है, ये सब नील पर्वतपर जायँगे और वहाँ श्रीहरिके धामको देखेंगे। (२२ वाँ अध्याय) दूसरे दिन मध्याह्नके समय नीलपर्वत राजाको दिखाई दिया, जो चाँदीके शृङ्गोंसे अति शोभित हो रहा था। तब पाँचों आदमी विजय मुहूर्तमें नीलपर्वतपर चढ़े। उसके एक शृङ्गके ऊपर सुवर्णसे बने हुए देवमन्दिरमें, सुवर्णके सिंहासनपर विराजमान, चतुर्भुजी मूर्त्ति धारण किये हुए श्रीहरिको देखकर सबोंने प्रणाम किया। उसके अनन्तर सब लोग चतुर्भुजरूप हो शंख, चक्र, गदा, पद्म हाथोंमें लिये हुए विमानोंपर चढ़कर विष्णुलोकको चले गये।

(८० वाँ अध्याय) महादेवजीने पार्वतीजीसे कहा कि ज्येष्ठ मासमें विष्णु भगवान्को यत्नसे स्नान करानेसे ब्रह्महत्यादि सहस्रों पाप नष्ट होते हैं। आषाढ़में रथयात्रा और आषाढ़के शुक्र पक्षकी एकादशीको विष्णुशयनका महोत्सव करना उचित है। श्रावणमें श्रवण नक्षत्र अर्थात् पूर्णिमासे श्रावणमें श्रवण नक्षत्रके दिन तक श्रावणी उत्सव अर्थात् झूलनोत्सव होना चाहिये। भादों मासमें जन्माष्टमी और वामन द्वादशीको उपवासमें तत्पर होना उचित है। भाद्रपदकी शुक्लाद्वादशीको शयन किये हुए भगवान्का परिवर्तन कराना चाहिये। आश्विनके शुक्र पक्षमे महामायाकी पूजा, कार्त्तिकमें दामोदरजीके लिये दीपदान, मार्गशीर्षके शुक्र पक्षकी षष्ठीको श्वेत वस्त्रोंसे जगदीशकी पूजा; पौष मासमें पुष्य जलसे भगवान्को स्नान, माघ मासमे संक्रान्तिके दिन गुड़ मिश्रित तण्डुल और तिलसे भगवान्की पूजा और माघ शुक्लापञ्चमीको केशवजीको स्नान कराना उचित है। मनुष्यको चाहिये कि फाल्गुन मासकी चतुर्दशीको आठवें पहरमे अथवा पौर्णमासीमे जब प्रतिपदाका संयोग होजाय तब विविध प्रकारके कुंकुमादि चूर्णोंसे परमेश्वरको तृप्त करें; एकादशीसे इस दोलोत्सवका आरम्भ करके फिर पंचमीको समाप्त करे अथवा ५ दिन वा ३ दिन दोलोत्सव करे। दोला पर चढे हुए कृष्णचन्द्रको एक बार भी देखकर मनुष्य अपराध समूहोंसे छूट जाते हैं। वैशाख मासमें दमनारोपण करके सब पदार्थ कृष्णचन्द्रको समर्पण करना चाहिये वैशाख मासकी शुक्र तृतीयाको जलके मध्यमें बैठा कर अथवा दमनारोपणमण्डलमें श्रीहरिकी विशेष पूजा करनी चाहिये। गन्धाष्टकको अन्य सुगंधित वस्तुओंसे युक्त करके विष्णुके अङ्गोंमें लगावे, वहाँ पर वृन्दावन बनावे और उसमें सब प्रकारके फलित वृक्ष लगावे इत्यादि।

(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, ८३ वाँ अध्याय) चैत्र मासकी शुक्ला एकादशीको उत्सवके साथ दोलारूढ श्रीकृष्ण भगवान्की पूजा करनी चाहिये। दोलापर चढे हुए भगवान्के दर्शन करनेसे मनुष्य हजारो पापोंसे विमुक्त होजाते हैं और उनको झुलानेसे करोड़ों जन्मके पाप छूट जाते हैं। चैत्र और वैशाखमें दोलोत्सवके समय सम्पूर्ण देवता और पृथ्वीके सब प्राणी भगवान्के दोलोत्सवमें आते हैं। उस समय दोलामें स्थित विष्णु भगवान्के दर्शन करनेवाला मनुष्य अन्त कालमे विष्णुके साथ आनन्द करता है। दोलामें भगवान्के पास श्रीलक्ष्मीजीको और उनके आगे नारद आदि सुरर्षि और विष्वक्सेन आदिक भक्तोंको स्थापित करके प्रत्येक प्रहर पर यत्नसे उनका पूजन करना चाहिये।

(८४ वाँ अध्याय) चैत्र मासकी शुक्ला द्वादशीको अच्छी विधिसे दमनोत्सव करना उचित है। देवताओंके आनन्दसे उत्पन्न दिव्य दमनमञ्जरी है। उत्सव करनेवाले मनुष्यको उचित है कि बागीचेमें जाकर रति समेत मदनमञ्जरीका पूजन करे और गीत और बाजेके शब्दके सहित उसको अपने घर लावे; एकादशीकी रात्रिमें सर्वतोभद्र बनाकर रतिके सहित दमन अर्थात् कामदेवको स्थापित करके उसको पूजे, उसके पश्चात् दमनक मुष्टिको ग्रहण कर लक्ष्मीजी और विष्णु आदि देवताओंको अर्पण करे और फिर चन्दन आदि पदार्थोंसे महती पूजा और गीत, बाजा तथा नाचोंसे भारी उत्सव करे। ब्रह्मघाती आदि बड़े पापी मनुष्य भी दमनकोत्सवके दर्शन करनेसे निःपाप हो जाते हैं। जो मनुष्य मञ्जरीसे दमनककी पूजा करता है उसका सब तीर्थोंके करनेका फल लाभ हो जाता है। चैत्र और वैशाखमें दमनकके उत्सव करनेवाले मनुष्यको हजार गोदानका फल मिलता है। (भविष्यपुराण—

उत्तरार्द्धके १२१ वें अध्यायमें दमनकोत्सव और दोलोत्सवका और १२२ वें अध्यायमें रथयात्राका विधान है)।

(८५ वाँ अध्याय) वैष्णवोंको उचित है कि वैशाखकी पूर्णिमाको जलमे स्थित भगवान्‌की पूजा, एकादशीमें बड़े उत्साहसे भगवान्‌का दर्शन करे। वह सोना चाँदी, तांबे या मट्टीके वर्तनमें ठण्ढे सुगन्ध युक्त जलमें विशेष करके गोपालजी अथवा शालिग्राम-शिलाको स्थापन करे। मनुष्य ज्येष्ठ मासमें जलमें स्थित भगवान्‌के दर्शन करनेसे प्रलय पर्यन्त ताप रहित हो जाता है। मिथुन और कर्क राशिके सूर्यमें अर्थात् चान्द्र मासके आषाढ़ और श्रावणमें विशेष करके द्वादशी तिथिमे जलमें स्थित भगवान्‌की पूजा करनेसे सौ किरोड़ यज्ञ करनेका फल लाभ होता है।

(८६ वाँ अध्याय) सावन मासमें पवित्रारोपण विधि करना चाहिये। विष्णुजीके पवित्रारोपण करनेसे आत्माको सुख होता है; इत्यादि।

अग्निपुराण—(८० वाँ अध्याय) दमनकारोहण विधि इस भाँति जगतमे प्रचलित हुई,—पूर्व कालमें शंकरजीके क्रोधसे भैरवकी उत्पत्ति हुई। जब वह देवताओंका दमन करने लगे तब महादेवजीने उनको शाप दिया कि तुम वृक्ष हो जाओ। पीछे भैरवजीकी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर शिवजीने कहा कि हे भैरव ! जो मनुष्य सप्तमी और त्रयोदशीको दमनक वृक्षका पूजन करेगा, उसको सम्पूर्ण फल प्राप्त होगा। पूजाके अन्तमे प्रार्थना करनी चाहिये कि हे हरप्रसादसम्भूत ! तुम इस स्थानपर सन्निहित हो। अपने गृहपरभी दमनकको आह्वान करके पूजनके उपरान्त सायंकालमें विसर्जनकर देना उचित है।

आदि ब्रह्मपुराण—(४१ वाँ अध्याय) उत्कल देशमें पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते हैं। उस देशमें बसनेवाले मनुष्य धन्य हैं। पुरुषोत्तम पुरीमे निवास करनेवालेका जन्म सुफल हो जाता है। जो पुरुष तीर्थराजके जलमें स्नान करके पुरुषोत्तम भगवान्‌का दर्शन करता है, उसका सदा स्वर्गमें निवास होता है। जो उस क्षेत्रमें शरीर छोड़ता है, उसका जीवन सफल है।

(४२ वाँ और ४३ वाँ अध्याय) पृथ्वीमे सब नगरियोंमे उत्तम अवन्ती नामक नगरी है। कृतयुगमें उस नगरीका राजा इन्द्रद्युम्न था। वह एक समय विष्णुकी आराधनाकी इच्छासे वहुतसी सेना, भृत्य और पुरोहितोंको संगले अवन्तीपुरीसे चलकर लवणोदक समुद्रके तीरपर पहुँचा। राजाने दश योजन लम्बा और ५ योजन चौड़ा बहुत आश्चर्योंसे युक्त तीन लोकसे पूजित उस दुर्लभ क्षेत्रको देखकर वहाँ निवास किया।

(४४ वाँ अध्याय) पुरुषोत्तमके दहिने एक बटका वृक्ष है, जो कल्पान्तरमेंभी विनाश नहीं होता। वटको देखने और उसकी छायामें प्राप्त होनेसे ब्रह्महत्या भी दूर होजाती है। उस वृक्षकी प्रदक्षिणा और उसको नमस्कार करनेसे सम्पूर्ण पाप छूट जाते हैं। बटके उत्तर दिशामें केशवके प्रासाद अर्थात् धर्ममय स्थानमें भगवान्‌की रची हुई मूर्त्ति है। एक समय सूर्य्यके पुत्र धर्मराजने वटके समीप विष्णु भगवान्‌की स्तुति की और प्रणाम करके उनसे कहा कि हे नाथ ! इस विख्यात और पवित्र पुरुषोत्तम स्थानमें सब कामना देनेवाली एक मूर्त्ति है। उसके दर्शन और उसमें श्रद्धा करनेवाले सम्पूर्ण मनुष्य श्वेतभुवनको चले जाते हैं, इस कारणसे यमपुरी शून्य हुई जाती है; हे देव ! तुम मुझ पर प्रसन्न होकर इस प्रतिमाको

हर लो। धर्मराजका ऐसा वचन सुन विष्णुने उस इन्द्रनीलकी मूर्त्तिको पुरुषोत्तम क्षेत्रके बालूमें गुप्त कर दिया। उसके पश्चात् इन्द्रद्युम्नका आगमन हुआ।

(४५ वाँ अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न पुरुषोत्तम क्षेत्रमे जाकर विचार करने लगा कि विष्णु भगवान्का मनरूपी पुरुषोत्तम क्षेत्र है। कल्पवृक्षके समान यहाँ वटवृक्ष स्थित है। इन्द्रनील प्रतिमाको भगवान्ने गुप्त कर दिया है; विष्णु भगवान्की अन्य कोई सुन्दर मूर्त्ति यहाँ नहीं देख पडती, इस लिये जिससे भगवान् प्रत्यक्ष मुझको दर्शन दें मै प्रयत्न करता हूँ। (४६ वाँ अध्याय) ऐसा कह राजाने उत्तम शास्त्रके जानने वाले गणकोको बुलाकर यत्नसे भूमिका शोधन करवाया ओर उस पर सोने और रत्नोंसे सुशोभित और सुन्दर भीतों तथा सोनेके स्तम्भोंसे युक्त भगवान्का मन्दिर बनवाया। (४७ वाँ अध्याय) उसके उपरान्त राजा इन्द्रद्युम्नने भगवान्की प्राप्तिके लिये बडे विधानसे अश्वमेध यज्ञ समाप्त किया।

(४८ वाँ अध्याय) राजाकी स्तुतिसे प्रसन्न हो वासुदेव भगवान्ने उन्हें स्वप्नमें दर्शन दिया और उसने कहा कि हे राजन्! जो तू सनातनी राज पूज्य प्रतिमाको यहाँ स्थापित करनेकी इच्छा करता है तो मैं उसका उपाय तुझसे कहता हूं, जब रात्रि व्यतीत होजावेगी और निर्मल सूर्य्योदय होगा, तब अनेक प्रकारके वृक्षोंसे सुशोभित समुद्रके तटके समीप लवणोदधि समुद्रसे जल बहेगा। उस समय कोलालंघी नामक महावृक्ष समुद्रकी वेलासे हन्यमान होनेपर भी न काँपेगा; उस समय जब तू हाथमे कुल्हाड़ा लेकर वहां अकेले गमन करेगा तब उस वृक्षको देखेगा, निदान तुम इन चिह्नोंको देखकर अशंकित हो उस वृक्षसे दिव्य प्रतिमा बनाना। राजा इन्द्रद्युम्न प्रभात होनेपर समुद्रमे स्नानकर ब्राह्मणोंको दान दे अकेला समुद्रके तटपर गया और अति तेजमान महान शाखोंवाला करड़ा मंजीठके वरणके समान कातिवाला विष्णुके उस पुण्यवृक्षको जलमें स्थित देखकर प्रसन्न हुआ। जब वह कुल्हाड़ेसे उसे छेदन करने लगा और उसने बीचसे छेदन करनेकी इच्छा की तब उस निरीक्ष्यमान काष्ठमे उसको अद्भुत दर्शन हुए। उस समय प्रकाशमान हो महात्मा लोग राजाके पास आकर उससे बोले कि तू किसलिये इस वृक्षको काटता है। राजाने कहा कि हे ब्राह्मणो! मैं जगत्के पति देवदेवके आराधनाके लिये इससे मूर्ति बनाऊंगा। यह सुनकर उनमेंसे एक बोला कि, हे महाभाग! तू इस वृक्षकी छायामें हमारे संग स्थित हो; शिल्प कर्मवालोमे श्रेष्ठ यह दूसरा ब्राह्मण, जो सब कर्म्मोंमें विश्वकर्माके समान है. तेरे उद्देशके अनुसार प्रतिमा बना देगा। यह सुन राजाने वृक्षकी छायामे बैठकर उस ब्राह्मणसे कहा कि तुम कृष्ण, बलदेव और सुभद्रा इन तीनोकी तीन प्रतिमा बनाओ। शिल्प कर्म्मोंमें निपुण ब्राह्मण वेषधारी विश्वकर्माने शुभ लक्षणोंसे युक्त दिव्य वस्त्रोको पहिनी हुई अनेक रत्नोसे अलंकृत मनोहर प्रतिमाओंको बनाया। यह देखकर राजा परम विस्मयको प्राप्त हो बोला कि तुम दोनों देवताओंके समान आचरण करनेवाले कौन हो। (४९ वां अध्याय) ब्राह्मणोमेंसे एक पुरुष बोला कि तुम मुझको पुरुषोत्तम भगवान् जानो, जब तक समुद्र, पर्व्वत और स्वर्गमें देवता रहेंगे, तबतक इन्द्रद्युम्न नामवाला और यज्ञांगसे संभव यह तीर्थ रहेगा। मनुष्य एक बार यहां स्नान करनेसे इन्द्रलोकमे प्राप्त होजावेंगे। जो मनुष्य इस सरोवरके तटपर पिंडदान करेगा उसके २१ कुलोंका उद्धार होजावेगा। इस सरोवरके दक्षिण भागके नैर्ऋत्य कोनमें एक वटवा वृक्ष है, उसके समीप एक सुन्दर मण्डप बना है। ऐसा कह विश्वकर्मा समेत

हरि भगवान अन्तर्द्धान होगये। राजा श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्राको विमानके समान रथमे बैठाकर लाया और शुभ तिथि तथा सुन्दर मुहूर्तमें ब्राह्मणोंके सहित अपने उत्तम मन्दिरमें इनकी प्रतिष्ठा की। (५० वां अध्याय) मार्कण्डेय मुनि महाप्रलयके समय महावह्निको देखकर भयसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें भ्रमता फिरा। जब उसे कहीं विश्राम न मिला तब वह पुरुषेशके पास सनातन वटराजके समीप जाकर उसके मूलमें स्थित हुआ, जहां न कालाग्निकाही भय था और न शरीरको खेद होता था। (५१ वां अध्याय) जब पृथ्वी जलार्णव होगई तब डूबते हुए मार्कण्डेय मुनिने उस वटकी शाखापर पलंगके ऊपर बालरूप कृष्ण भगवानको देखा। उस बालकके कहने पर मुनि उसके मुखमें प्रवेश कर गया। (५२ वां अध्याय) और बालकके मुखमें सम्पूर्ण ब्रह्मांडको देखकर अन्तमें बाहर निकला। (५३ वां अध्याय) उसने बाहर निकल वटवृक्षके ऊपर पलंगपर स्थित उस बालकको फिर देखा। बालक बोला कि हे मुने! सुखसे यहां विश्राम कर; जब ब्रह्मा उत्पन्न होंगे, तब मै पृथ्वी, आकाश और सब जीवोंको रचूंगा। मार्कण्डेय बोले कि हे भगवन्! मैं परमात्मा शंकरको स्थापन करूंगा; तुम कहो मैं किस स्थानमें उनको स्थित करूं। जगन्नाथजी बोले कि हे मुने! तुम शीघ्रही शिवालय बनाकर शिवकी स्थापना करो। शिवके स्थापनासे मेराही स्थापन होजावेगा; क्योंकि हमारे और शिवमें कुछ अन्तर नहीं है। हे विप्र! पुरुषोत्तम देवके उत्तर दिशामें अपने नामसे चिह्नित शिवालय बनाओ। यह मार्कण्डेश नामक तीर्थ करके लोकमें विख्यात होगा।

(५५ वां अध्याय) मनुष्योंको उचित है कि मार्कण्डेय ह्रदमें स्नान कर शिवालयमें जाकर तीन बार शिवकी प्रदक्षिणा करे और मार्कण्डेय तथा केशव भगवान्के पूजन करके उनकी स्तुति और उनको प्रणाम करें और कल्पवृक्षके समीप जाकर तीन प्रदक्षिणा करके उस वटवृक्षका पूजन करैं। जो मनुष्य कृष्णके आगे स्थित गरुडका दर्शन करता है वह विष्णुलोकमें प्राप्त होता है और जो बट, गरुड़, पुरुषोत्तम, बलदेव, और सुभद्राका दर्शन करता है; उसको परम गति लाभ होती है। (५६ वाँ अध्याय) जहाँ इन्द्रनील मय विष्णु भगवान् रेतसे आवृत होकर छिपे हैं, उस स्थानके दर्शन करनेसे मनुष्य विष्णुपुरमें जाता है। जिस भगवान्ने नृसिंह रूप धर हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा था वही वहाँ स्थित हैं।

(५७ वाँ अध्याय) सतयुगमें श्वेत नामसे विख्यात एक राजा था। वह कई हजार वर्षोंतक राज्य करके अन्त कालमे इस लोककी कामनाओंसे विरत हो दक्षिण दिशाके समुद्रके तटपर गया। वहाँ उसने एक अति उत्तम देवमन्दिर बनवाकर उसमे चन्द्रमाके समान कान्तिवाली माधवकी मूर्त्तिको स्थापित किया। राजाकी स्तुतिसे प्रसन्न हो विष्णु भगवान् प्रगट होकर बोले कि हे राजन्! तेरी यह कीर्ति तीनों लोकोंमे प्रकाशित होगी और श्वेत गङ्गाका यश सम्पूर्ण नर तथा देवता गान करेंगे। जो मनुष्य श्वेतगङ्गाके जलको कुशाके अग्रभागसे स्पर्श करेगा उसका निवास स्वर्गमे होगा। जो कोई माधवकी प्रतिमाका दर्शन करेगा, वह मेरे लोकमें जायगा।

(५८ वाँ अध्याय) चतुर्दशीको मार्कण्डेय ह्रदमें और पूर्णिमाको समुद्रमे स्नानका बड़ा पुण्य है। मार्कण्डेय बट, रोहिण्याह्रद, कृष्ण, महोदधि और इन्द्रद्युम्न सरोवर ये पांच पञ्चतीर्थ हैं। ज्येष्ठ मासकी पूर्णिमाको जो ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो तीर्थराजमें स्नान करनेसे महान

फल लाभ होता है। मनुष्योंको उचित है कि बटको नमस्कार करके उससे ३०० धनुष दक्षिण और समुद्रके निकट, जहाँ मनको रमण करनेवाला स्वर्गके द्वारका चिह्न देख पड़ता है, गमन करे। वह पहले उग्रसेनको देखकर स्वर्ग द्वारसे समुद्रपर जाय और (६१ वाँ अध्याय) पश्चात् यज्ञाङ्ग सम्भव तीर्थमें जाकर इन्द्रद्युम्न नामक पवित्र सरोवरमें आचमन कर मन्त्रका उच्चारण करे। जो एकादशीके दिन व्रतकर ज्येष्ठकी पूर्णिमाके दिन पुरुषोत्तमको देखता है वह भगवान्के लोकमें जाता है। पृथ्वीपर जितने तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाव, बावली, कुंये और ह्रद हैं, वे सब ज्येष्ठके महीनेमें पुरुषोत्तम तीर्थमें शयन करते है और ज्येष्ठ शुक्ला दशमीके दिन प्रत्यक्ष होते हैं। यह दशमी दश पापोंका नाश करती है, इस लिये इसका नाम दशहरा पडा है। वैशाख शुक्ला तृतीयाके दिन जो मनुष्य चन्दनसे विभूषित श्रीकृष्णका दर्शन करता है वह भगवान्के स्थानम प्राप्त होता है। (६३ वाँ अध्याय) ज्येष्ठके महीनेमें ज्येष्ठा नक्षत्र सहित पूर्णिमासीके दिन सदा हरिको स्नान कराया जाता है। (६४ वाँ अध्याय) जो मनुष्य "गुड़िच क्षेत्र" में जाते हुए रथमे स्थित श्रीकृष्ण, बलदेव, सुभद्राके दर्शन करते है, वे हरिके भवनमे प्राप्त होते हैं। जो पुरुष वहाँ ७ दिन तक मण्डपमें स्थित श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्राका दर्शन करते है, वे विष्णुलोकमें जाते है। पूर्व कालमें राजा इन्द्रद्युम्नने हरिकी प्रार्थना करके उनसे कहा कि हे प्रभो! मेरी इच्छा है कि सरोवरके तीर आपकी यात्रा हो। तब पुरुषोत्तम भगवान्ने उसको वरदिया कि "गुड़िच क्षेत्र" में सरोवरके तीर ७ दिन तक मेरी यात्रा रहेगी। आषाढ़ शुक्लमे गुड़िचा नामवाली यात्राके समय श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्राके दर्शन करनेसे अश्वमेध यज्ञसे भी अधिक फल होता है (आगे ७० वाँ अध्याय तक पुरुषोत्तमक्षेत्रकी कथा है)।

पुरुषोत्तम माहात्म्य—(चौरासी हजार वाला स्कन्दपुराण, उत्तर खण्ड, पहिला अध्याय) समुद्रके किनारे पर पुरुषोत्तमक्षेत्र १० योजनमें विस्तृत है। उसके मध्यमें नीलाचल नामक बड़ा पर्वत सुशोभित है। सृष्टिके आदिमें ब्रह्माने विष्णु भगवान्की स्तुति की, तब भगवान्ने प्रगट होकर ब्रह्माजीसे कहा कि समुद्रके उत्तर और महानदीके दक्षिणका प्रदेश सब तीर्थोंके फलको देनेवाला है। उस देशमें बड़े पुण्यवान् मनुष्य जन्म लेते हैं और निवास करते है। एकाम्रक बनसे दक्षिण समुद्रके तीर तककी भूमि पद पदमे श्रेष्ठ और पवित्र है। समुद्रके तीरपर पृथ्वीमें अत्यन्त गुप्त नील पर्वत विराजमान है। मैं वहाँ सर्वदा निवास करता हूँ। उस स्थानकी कभी सृष्टि अथवा लय नहीं होता है। नीलगिरिपर बटवृक्षके मूलमें पश्चिम सुप्रसिद्ध रोहिणीकुण्डके तीरपर मैं स्थित रहता हूँ। जो मनुष्य उस कुण्डमें स्नान करके मेरा दर्शन करता है, उसको मुक्ति मिलती है। तुम वहाँही जाकर मेरा ध्यान करो। हमारी प्रसन्नतासे गुप्त और प्रकट सम्पूर्ण विषय तुमको ज्ञात हो जायगा।

(दूसरा अध्याय) ब्रह्माने पुरुषोत्तम क्षेत्रमें जाकर भगवान्का दर्शन किया। उसी समय एक काकने रोहिणीकुण्डमें गोता मारा और नीलमाधव अर्थात् नीलमणिकी भगवान्की मूर्त्तिका दर्शन कर अपने शरीरको छोड चतुर्भुज होकर भगवान्के पास चला गया। काककी ऐसी गति देखकर ब्रह्मा विस्मित हो गये। उसी समय यमराजने श्वास लेते हुये वहाँ आकर माधव और लक्ष्मीकी स्तुति की और उसने कहा कि मैं अपने अधिकारसे रहित हुआ जाता हूँ, अर्थात सबलोग तुम्हारे दर्शन करनेसे स्वर्गको चले जाते हैं। लक्ष्मीने

कहा कि जिस लिये तुम मेरी स्तुति करते हो वह नहीं हो सकेगा। हम दोनों पुरुषोत्तम क्षेत्रको नहीं छोड़ सकते हैं। यहाँके बसे हुए मनुष्य तुम्हारे वशमें कभी नहीं हो सकेंगे। नीलेंद्रमणिके नारायणकी मूर्त्तिके दर्शन-करनेवाले बन्धनसे छूट जाते हैं।

(तीसरा अध्याय)—लक्ष्मीजी कहने लगीं कि जिस समय प्रलयसे सब चराचर लीन हो रहा था, यह क्षेत्र और भगवान्‌के वक्षस्थलमें मैं शेष रह गई थी। उस समय सप्त-कल्प जीनेवाला मार्कण्डेय मुनि प्रलयके समुद्रमें बहता हुआ पुरुषोत्तम क्षेत्रमें आया। उसने यहाँ एक बट वृक्ष और उसके ऊपर पत्रके दोनेमें मेरे सहित बालरूप चतुर्भुज भगवान्‌को देखा। बालकने कहा कि हे मुने! तुम हमारे मुखमें पैठकर बैठ जावो। मार्कण्डेयने बालकके मुखद्वारा उसके उदरमें जाकर भीतर ब्रह्मादिक देवता और नदी पर्वत समुद्र इत्यादि वस्तुओंको देखा। पीछे वह बाहर आकर भगवान्‌की बडी स्तुति करके उनसे बोला कि आप ऐसा उपाय करें जिससे मैं मृत्युको न प्राप्त होऊँ। भगवान्‌ने मुनिके मनोरथ सिद्ध करनेके लिये वटवृक्षके वायुकोणमें अपने चक्रसे एक तालाब खोदा। मार्कण्डेय मुनिने उस तालाबके समीप महादेवजीकी आराधना करके मृत्युको जीत लिया। उसी मुनिके नामसे सरोवरका नाम मार्कण्डेय तालाब हुआ, जिसमें स्नान करके मार्कण्डेयश्वर शिवके दर्शन करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है। पुरुषोत्तम क्षेत्र समुद्रके तटपर पाँच कोसमें विस्तृत है। समुद्रके निकट यमेश्वर शिव स्थित हैं, जिनके दर्शन और पूजन करनेसे कोटि लिङ्गके दर्शन और पूजनका फल मिलता है।

(चौथा और पाँचवाँ अध्याय) पुरुषोत्तम क्षेत्र शंखके आकारका है। इसकी पश्चिम सीमा अर्थात् मस्तक स्थानपर वृषभध्वज महादेव और अग्रभागमे (अर्थात् पूर्व) नीलकण्ठ महादेव हैं। समुद्रसे लेकरके बटके मूल तक शंखका उदर भाग है। शंखके दूसरे भागमें कपालमोचन शिव हैं। जब महादेवजीने ब्रह्माका पाँचवाँ सिर काट लिया था, उस समय वह सिर उनके हाथमें लपट गया। तब शिवजी पृथ्वीपर भ्रमण करते हुए पुरुषोत्तम क्षेत्रमें आये। यहाँ आनेपर वह सिर इनके हाथसे छूट गया, तबसे इस स्थानका नाम कपालमोचन पडा। कपालमोचन शिवके दर्शन करनेसे ब्रह्महत्यादिक पाप छूट जाते हैं। शंखके तीसरे चक्रमें विमला देवीकी मूर्त्तिकी पूजा करनेसे मुक्ति हो जाती है। कपालमोचनसे अर्द्धाशनी देवी तक शंखका मध्य भाग है। यह देवी महाप्रलयके समय समुद्रके आधे जलको पी जाती है। समुद्रके किनारेसे वटवृक्ष तककी भूमिमें जितने कीट पर्यन्त जीव मरते हैं, सबकी मुक्ति होजाती है। इस अन्तर्वेदीको देवतालोगभी इच्छा करते हैं। रोहिणीकुण्डके जल स्पर्श करनेसे प्राणीमात्रकी मुक्ति होजाती है। जगन्नाथजीके दक्षिण ब्रह्मस्वरूप नरसिंह भगवान् विराजते हैं, जिनके दर्शन करनेसे मुक्ति मिलती है। समुद्रमें स्नान करने और कल्पवृक्ष अर्थात् वटकी छायामें जानेवाला मनुष्य किसी स्थानमें मरे; उसकी मुक्ति होजाती है। गौरीकी आठ मूर्त्तियाँ इस क्षेत्रकी रक्षा करती हैं,—वटके मूलमें मङ्गला, पश्चिममें विमला, शंखके पृष्ठभागमें सर्वमङ्गला, उत्तर दिशामें अर्द्धाशिनी और लम्बा, दक्षिणमें कालरात्रि, पूर्वमें मरीचिका और कालरात्रिके पीछे चण्डरूपा। शिवजीभी रुद्राणीके आठ रूप देखकर आठरूप धारण कर यहाँ स्थित हुए;—कपालमोचन क्षेत्रपाल, यमेश्वर, मार्कण्डेयेश्वर, ईशान, बिल्वेश, नीलकण्ठ, और वटके मूलमें वटेश।

(६ वाँ अध्याय)—दक्षिणके समुद्रके तीरपर ऋषिकुल्यासे लेकरके दक्षिणके समुद्रमे जाने वाली स्वर्णरेखा अर्थात सुवर्णरेखा नदी तक परम पवित्र उत्कल देश है, जिसमें बहुतसे तीर्थ विद्यमान हैं ।

(७ वा अध्याय) सतयुगमे ब्रह्माके पाँचवीं पीढ़ीमें इन्द्रद्युम्न नामक सूर्यवंशी राजा मालवदेशके अवन्ती नगरीमें निवास करता था एक समय उसने अपनी सभामे लोगों से पूँछा कि ऐसा कौन उत्तम क्षेत्र है, जिसमें हम साक्षात् भगवान्का दर्शन कर सकेंगे। एक ब्राह्मण, जिसने बहुतेरे तीर्थोंमें भ्रमण किया था राजासे बोला कि महाराज ! भारत वर्षमें विख्यात ओढ्र देशमे दक्षिण समुद्रके निकट पुरुषोत्तम क्षेत्र है । वहाँ नीलगिरि पर्वतके ऊपर चारों ओरसे १ कोसमें विस्तृत कल्पवृक्ष है, जिसके पश्चिम दिशामें रोहिणी कुण्ड है उसके पूर्व तट पर नीलेन्द्रमणिकी वासुदेवकी प्रतिमा है। जो मनुष्य उस कुण्डमे स्नान करके पुरुषोत्तमका दर्शन करता है उसको १००० अश्वमेधका फल मिलता है और मुक्ति मिलजाती है। तुम विष्णुके भक्त हो इसलिए यह बात कहनेको मैं तुम्हारे पास आया हूँ ऐसा सुन राजा इन्द्रद्युम्नने अपने पुरोहितको वहाँ भेजा। वह अपने भाईके साथ महानदीको पार करके एकाम्रक वनमे पहुँचा और आगे जाकर नीलाचल पर चढ़कर भगवान्को ढूँढने लगा जब उसको मार्ग नहीं मिला, तब वह कुशोंको बिछाकर वहाँही सो गया, किन्तु उस्का छोटा भाई विद्यापति ऊपर चढ़कर एक स्थानमें चुप चाप बैठ गया। उस समय विश्वावसु नामक एक शवर पुरुषोत्तमकी पूजा करके उस स्थान पर आया। उसने ब्राह्मणसे पूँछा कि तुम कहाँसे आये हो। ब्राह्मणने अपने आनेका सब वृत्तान्त सुनाकर उससे कहा कि तुम मुझको भगवान्का दर्शन करावो ।

(८ वां अध्याय)—शवर ब्राह्मणका हाथ पकड़कर विषम अन्धकार मार्गसे ऊपर जाकर रोहिणीकुण्ड और कल्पवृक्षके वीचके कुञ्जमें पुरुषोत्तम भगवान्के पास पहुँचा और ब्राह्मणके साथ भगवान्का दर्शन करके सायंकाल अपने घर लौट आया। उसने अपने घरमें ब्राह्मणको राजदुर्लभ भोग भोजन करवाया और ब्राह्मणके विस्मित होने पर उसने कहा कि इन्द्रादि देवता नित्यही दिव्य पदार्थ लाकर जगन्नाथजीको अर्पण करते हैं, इसीको हम ले आते हैं। विष्णुके निर्माल्य भोजन करनेसे हम लोगोंकी जरा और रोग नष्ट होगया है हमने सुना है कि राजा इन्द्रद्युम्न यहां आवेगा; किन्तु उसको भगवान्का दर्शन नहीं होगा। भगवान्की मूर्ति सुवर्णकी बालुकामे ढपकर अन्तर्द्धान होजायगी। यह वृत्तान्त तुम राजासे मत कहना। भोर होने पर शवर और ब्राह्मणने समुद्रमें स्नान और भगवान्का दर्शन करके इन्द्रद्युम्नके रहनेका स्थान निर्णय किया । ब्राह्मण रथ पर चढ़ अवन्तिका पुरीमें लौट आया ।

(९ वां अध्याय)—ब्राह्मणके चले जाने पर सायंकालमे जिस समय देवता लोग पूजा करने आये थे वडी आँधी चली, जिससे भगवान्की मूर्ति और रोहिणीकुण्ड बालूके राशिमे ढप गया ।

विद्यापति ब्राह्मणने अवन्तीपुरीमें आकर राजासे वहाँका सब वृत्तान्त कह सुनाया ।

(१० वां अध्याय) उसने कहा कि पुरुषोत्तमक्षेत्रका विस्तार ५ कोस का है। वहाँ १ कोसका लम्बा चौडा एकवट वृक्ष सुशोभित है, जिसमें फल फूल कुछ नहीं लगता

पूर्वकी वेदीके मध्यमें वटवृक्षके नीचे पीत वस्त्र पहने हुए बहु मूल्य भूषणोंसे भूषित ८१ अंगुल परिमित इन्द्रनील पत्थरकी भगवानकी प्रतिमा है उनके वाम पार्श्वमें लक्ष्मीजी पीछे छत्राकार शेषजी और आगे सुदर्शन चक्र है और पीछे हाथ जोड़े हुए गरुड़ खड़े हैं। उसी समय महर्षि नारद राजाके पास आ गये।

(११ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्नने नारद और सब पुर जनों तथा चतुरङ्गिनी सेनाके सहित ज्येष्ठ शुक्ला पञ्चमी बुधवारक पुष्य नक्षत्रमें पुरुषोत्तम क्षेत्रको प्रस्थान किया। अवन्तिकापुरी जनोंसे शून्य होगई। राजाने उत्कल देशको सीमा पर चर्चिका देवीको देख कर रथसे उतर उसको स्तुति की और वहाँसे चल चित्रोत्पला नदीके तीर पहुँचकर धातु कन्दरमें अपनी सेनाको विश्राम कराया उत्कल देशका राजा, जिसको ओढ्रदेशपति कहते हैं, वहाँ आकर इन्द्रद्युम्नसे मिला इन्द्रद्युम्नने ओढ्रपतिसे क्षेत्रका वृत्तान्त पूँछा। ओढ्रपतिने कहा कि दक्षिण समुद्रके पासका नीलाद्रि पर्वत और उसपरके देवता नहीं देख पडते हैं। मैंने सुना है कि पवनके चलनेसे वे वालूमें ढप गये हैं। इसी कारणसे हमारे राज्यमें दुर्भिक्ष पड़ गया है। यह वृत्तांत सुनकर इन्द्रद्युम्न बहुत दुःखी हुए नारदने कहा कि हे राजन! भगवान् तुम्हारे लिये पृथ्वीमें फिर अवतार लेंगे। ब्रह्माजीने इसी कामके लिये मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

(१२ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न प्रातःकाल होनेपर आगे चले। ओढ्र देशका राजा आगे २ मार्ग बताने लगा। इन्द्रद्युम्नने वेगवती शीततोया नदीके पार हो एकाम्रक क्षेत्रमें पहुँचकर नारदसे पूँछा कि यह कौन सा क्षेत्र है। नारदने कहा कि यहाँसे ३ योजन आगे नीलगिरी है। यह गौरीपतिका एकाम्रक नामक क्षेत्र है।

राजाके पूँछनेपर मुनि कहने लगे कि पूर्व कालमें महादेवजी गौरीसे विवाह करके अपने श्वशुर हिमालयके गृह रहने लगे। एक समय गौरीकी माताने परिहाससे उससे कहा कि हे पुत्रि! तुमने महत् तपस्या करके ऐसा निष्कुल और निर्गुण वृद्ध वरको प्राप्त किया, तुमने कौनसा गुण अपने पतिमें देखा था; वह तो हमारे ही यहाँ रहते है। पार्वतीने शिवके पास जाकर उनसे कहा कि श्वसुरके घरमें रहना उचित नहीं है; तुम किसी दूसरे स्थानमें चलकर निवास करो। ऐसा सुन महादेवजी पार्वतीके साथ बैलपर सवार हो वहाँसे चल दिये और गङ्गाके उत्तर तटपर बाराणसीपुरी बसाकर उसमें रहने लगे। बहुत काल बीतनेपर वह कैलासपर चले गये। द्वापर युगमें काशीके राजाने महादेवको प्रसन्न किया। शिवजीने कहा कि समय आनेपर मैं युद्धमें तुम्हारी सहायता करूंगा। विष्णुकी आज्ञासे सुदर्शनचक्रने काशिराजका सिर काट डाला। महादेवजीने अपने गणों सहित वहाँ आकर अपना पाशुपत अस्त्र चलाया। जब उनका अस्त्र विफल होगया और काशी जलने लगी तब शिवजी विष्णुकी स्तुति करने लगे। विष्णु भगवान् प्रगट होकर बोले कि हे महादेव! तुम काशीको बचाने चाहते हो तो दक्षिण समुद्रके पास नीलाचलसे उत्तर एकाम्रक वनमें जाकर कोटि लिङ्गोंके राजा बनो, ब्रह्मा तुमको स्थापित करेंगे। ऐसा सुन पार्वतीके साथ शिवजी वहाँ चले गये। राजा इन्द्रद्युम्नने एकाम्रक क्षेत्रके विन्दु तीर्थमें स्नान करके उसके तीरपर स्थित पुरुषोत्तमका पूजन किया और कोटिलिङ्गेश्वरके द्वारपर ब्राह्मणोंको बहुतसा धन दिया।

राजा इन्द्रद्युम्नने वहाँसे दूसरे दिन कपोतस्थलीमे आकर समुद्रको पूर्व सीमापर बिल्वेश और कपोतेशका पूजन किया।

(१४ वाँ अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न विद्यापति पुरोहितके साथ नीलकण्ठ क्षेत्रके समीप आये। (१५ वाँ अध्याय) उन्होने वहाँ नीलकण्ठ और दुर्गाका पूजन किया और नीलपर्वतपर चढकर नीलचन्दनके वृक्षके नीचे नृसिंहजीकी दिव्य मूर्त्तिको देखा। उस समय राजाने भगवान्को दण्डवत करके बड़ी स्तुतिकी। तब आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! तुम चिन्ता मत करो, हम तुमको दर्शन देंगे, तुम नारदके उपदेशसे चलो।

(१६ वाँ अध्याय) नारदकी आज्ञासे विश्वकर्माके पुत्र सुवटकने चन्दनके वृक्षके नीचे ४ दिनोंमें नृसिंहजीके लिये पत्थरका मन्दिर तैयारकर दिया। ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशीको स्वाति नक्षत्रमें पृथ्वी और लक्ष्मीकी मूर्त्तिके साथ नृसिंहकी दूसरी मूर्त्ति स्थापित कीगई।

(१७ वाँ अध्याय) राजाने यज्ञकर्मके लिये अनेक देवता, ऋषि, ब्राह्मण, राजा और अन्य मनुष्योंको बुलाया। विश्वकर्माने यज्ञशाला बनाई। राजाने यज्ञ आरम्भ करके अश्वको छोडा। इन्द्रद्युम्नपुर स्वर्गसे भी अधिक मनोहर हो गया। ९९९ यज्ञ समाप्त हो जानेपर सहस्रवें यज्ञके समय राजाकी दिव्य गति हो गई। उसने सात दिनके पीछे रात्रिके चतुर्थ प्रहरके स्वप्नमें स्फाटिकका बना हुआ श्वेतद्वीप देखा, जिसको चारोंओरसे क्षीरसागर घेरे हुए था। उसने वहाँ भगवान्को देखकर उनकी स्तुतिकी।

(१८ वाँ अध्याय) राजाके सेवकोंने आकर उनसे कहा कि मंजिष्ठ वर्णका एक बडा वृक्ष समुद्रके तीरमें पडा है। उसका मूल जलमे तैरता है नारदने कहा कि हे राजन्! तुमने श्वेतद्वीपमे विष्णुकी जिस मूर्त्तिको देखा था उसीके अङ्गका गिरा हुआ १ रोमसे यह वृक्ष हुआ है। तुम यज्ञान्त स्नान करके वडी वेदीके ऊपर वृक्षरूपी यज्ञ भगवान्का स्थापन करो। राजाने समुद्रके किनारे आकर ४ शाखाओंसे युक्त उस वृक्षको देखा, तब ब्राह्मणोंको बुलाकर मंगल पूर्वक उसको बाहर निकलवाया और माला, गन्ध, तथा चन्दनसे भूषितकर उसको महावेदीपर रक्खा। उस समय आकाशवाणी हुई कि वेदीमें भगवान् आप उतर आवेंगे, तुम पन्द्रह दिनों तक वेदीको ढाँककर गुप्त रक्खो। इस वृद्ध बढईको भीतर रखकर द्वार बन्दकर दो। बाहर बाजा बजवावो जिसमें कोई मूर्त्ति बननेका शब्द न सुने। कोई मनुष्य घेरेके भीतर न जावें। जब भगवान् बन जायँगे तब अपने आप सम्पूर्ण कामकी आज्ञा देंगे। उसी समय एक बढ़ईने आकर राजासे कहा कि तुमने जिनको स्वप्नमे देखा था हम उन्हींको दिव्य रूपी काष्ठसे बनावेंगे। ऐसा कह वह वेदीपर अन्तर्द्धान हो गया। (१९ वाँ अध्याय) राजा आकाशवाणीके आज्ञानुसार सब कार्य करने लगा। दिन २ दिव्य गन्धका अनुभव होने लगा। १५ दिन बीत जानेपर बलदेव सुभद्रा और सुदर्शन-चक्रके साथ दिव्य सिंहासन पर बैठी हुई भगवान्की मूर्त्ति प्रगट हुई। भगवान्के हाथमें शंख चक्र, गदा और पद्म और बलभद्रके हाथमे गदा, मूसल, चक्र और कमल और ऊपर ५ फन फैलाये हुए सर्पका मुकुट था सुभद्राके हाथोंमें वर, अभय और कमल था। इनके पास सुदर्शनचक्र बना हुआ था। इस भाँति वृद्ध बढई द्वारा चार मूर्त्तियाँ प्रकाशित हुईं। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! नीलपर्वतपर कल्प वृक्षके वायव्य दिशामें १०० हाथ आगे और नृसिंहजीसे १००० हाथ उत्तर ऊँचे स्थानपर एक दृढ़ मन्दिर बनवाकर उसमें

इन मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा करो। तुम्हारे पुरोहित और विश्वावसु शवरकी सन्तान सर्वदा इनके लेप सस्कार कर्म करैगी।

(२० वाँ अध्याय)–राजा इन्द्रद्युम्नके दान देनेके जलसे जो स्थान भर गया वही इन्द्रद्युम्नसरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। मनुष्य उसमें पितरोंको पिण्डदान देते हैं। उसकी महिमा गङ्गाके समान है।

(२१ वाँ अध्याय)—इन्द्रद्युम्नने असंख्य धन लगाकर अद्वितीय वृहत् मन्दिर वनवाया और मन्दिरके काम पूर्ण होनेके पहलेही नारदके साथ विमानपर चढकर वह ब्रह्मलोकमें गये। (२३ वाँ अध्याय) राजाने ब्रह्मासे कहा कि काष्टकी देह धारणकर भगवान् प्रकट हुए हैं, तुम चलकर उनकी प्रतिष्टा करो। ब्रह्माने कहा कि ७१ मन्वन्तर वीत गये, तुम्हारे करोडों वंशका नाश होगया, किन्तु तुम्हारा वनवाया हुआ मन्दिर विद्यमान है, चलो मै तुम्हारे पीछे आऊँगा। (२४ वाँ अध्याय) राजा ब्रह्मलोकसे पुरुषोत्तम पुरीमे आये। उनके पीछे देवता लोगभी आकर उपस्थित हुए। राजाने मन्दिरका काम पूरा हुआ देखकर विचार किया। मेरे स्वर्गके जानेके समय मन्दिर आधा वना था, किन्तु भगवान्के प्रसादसे अब पूरा होगया है। (२५ वाँ अध्याय) विश्वकर्माने एकही दिनमें ३ रथोंको वनाया,–जिनमेंसे भगवान्का रथ १६ पहिये का, सुभद्राका बारह पहियेका औ वलभद्रका १४ पहियेका था। जिस रथमें जितने पहिये थे उसका विस्तार उतनेही हाथका था। (२६ वाँ अध्याय) विश्वकर्माने राजाकी आज्ञासे एक वडी सभा वनाई। प्रतिष्टाकी सम्पूर्ण सामग्री एकत्र की गई। ब्राह्मण लोग प्रतिष्टाकार्यमें नियुक्त हुए। राजाके ब्रह्मलोकमे जाने पर गाल नामक एक राजाने माधवकी पाषाणमयी प्रतिमाको वनाकर उसी वडे मन्दिरमे स्थापितकर दिया था। पीछे इन्द्रद्युम्नने एक छोटा मन्दिर वनवाकर उस मूर्तिको मन्दिरसे निकालकर उसमें स्थापित कर दिया। (२७ वाँ अध्याय) ब्रह्माजी ब्रह्मलोकसे आकर तीनों मूर्त्तियों और सुदर्शनचक्रको देखकर नीलाचल पर्वतपर मन्दिर और यज्ञशालाके पास चले गये। प्रतिष्टाका काम प्रारंभ हुआ। वैशाखके शुक्ल पक्षकी अष्टमीको पुष्य नक्षत्रमें ब्रह्माने मूर्त्तियोंको मन्दिरमें स्थापित किया। जो मनुष्य उस तिथिमे जगन्नाथजीकी पूजा करता है उसके कोटि जन्मका पाप छूट जाता है।

(२९ वाँ अध्याय) भगवान्की काष्ठ प्रतिमा राजासे वोली कि तुम्हारी भक्तिसे मैं प्रसन्न हूं। मन्दिरके भङ्ग होजाने परभी मै इस स्थानको नही त्याग करूंगा। कालान्तरमें दूसरा मन्दिर वन जानेपरभी उसमें तुम्हाराही नाम चलैगा। वटके उत्तरका कूप मट्टीसे ढप गया है, उसको तुम प्रकट करो। जो मनुष्य ज्येष्ठकी पूर्णिमाको उस कूपके जलसे हम लोगोंको स्नान करावैगा, उसको हमारा लोक मिलैगा। ईशान दिशामें एक मण्डप वनाकर वहाँ हम लोगोंको स्नान कराकर ले चलो। उसके वाद १५ दिनो तक मुझको कोई न देखे। गुडिच नामक महायात्राको करो। माघ शुक्ला पञ्चमी और चैत्र शुक्ला अष्टमीको गुड़िच यात्राका उत्तम समय है; किन्तु पुष्य नक्षत्रसे युक्त आषाढ शुक्ला द्वितीया इस यात्राका सर्व प्रधान दिन है। उस दिन हम लोगोंको रथमें वैठाकर गुडिच क्षेत्रमें, जहां हम लोगोंकी उत्पत्ति हुई है, लेजाना चाहिये। वह स्थान मुझको अत्यन्त प्रिय है। उत्थान परिवर्तन, मार्गप्रावरण, पुष्पाभिषेक, और फाल्गुनमें दोलोत्सवका उत्सव करना उचित है। चैत्र शुक्ला १४ को दमनोमें मेरी

पूजा करनी चाहिये। वैशाखकी अक्षय ३ को जो मनुष्य गन्धसे मेरा लेपन करैगा उसको चारो वर्ग मिलैगा । ऐसा कह जगन्नाथजी मौन होगये । ब्रह्मादिक देवता अपने २ लोकको चले गये ।

(३० वा अध्याय) मनुष्योंको उचित है कि ज्येष्ठ शुक्ला १० को पञ्चतीर्थीका विधान करें । मार्कण्डेय स्थानमें शिवकी पूजाकर नारायणके पास जावें । उससे दक्षिणके वटका दर्शन और प्रदक्षिणा करके भगवान्के आगेके गरुड़को प्रणाम करें । उसके पश्चात् मन्दिरमे जाकर भगवान्की तीन प्रदक्षिणा और पूजा करें । उससे पीछे समुद्रमे स्नानकरके स्वर्गद्वारपर जावें, जिस स्थानसे देवता लोग भगवान्के दर्शनके लिये नित्य आते है। वहां समुद्रमे पितरोंको तिलोदक देवें । (३१ वां अध्याय) उसके अनन्तर नृसिंह तीर्थ और इन्द्रद्युम्न तीर्थमे क्रमसे जाकर पितरोका तर्पण करे । (३२ वां अध्याय) एकादशीको कमलकी माला और खीरके नैवेद्यसे चतुर्भुज भगवान्का पूजन करे । १२ को यज्ञवाराहकी, १३ को मधु-घ्नकी और १४ को नृसिंह भगवान्की पूजा करके पांच दिनका ज्येष्ठपञ्चकव्रत समाप्त करें ।

(३७ वा अध्याय) भगवान्के नैवेद्य खानेसे मद्य पानादिक महापातक नष्ट होजाते है। नैवेद्यसे पितरोके कर्म करनेसे पितर तृप्त होकर विष्णुलोकमे चले जाते है । प्रसादसे बढकर कोई वस्तु पवित्र नहीं है ।

त्रेतायुगमें श्वेत नामक राजाने पुरुषोत्तमपुरीमें १०० वर्ष पर्य्यन्त घोर तप किया । नृसिंह भगवान्ने प्रगट होकर राजासे कहा कि तुम वर मांगो । राजा बोले कि हे भगवन् ! मैं आपके सायुज्यको प्राप्त होऊं और मेरे राज्यमें अकाल मृत्यु न हो । भगवान् बोले कि तुम सहस्र वर्ष पर्यन्त राज्य करके दक्षिण भागमें मेरे रूपको प्राप्त होगे और वटवृक्ष और समुद्रके मध्यमे मत्स्यावतारके सम्मुख तुम स्फटिक प्रतिमा रूपसे श्वेतमाधवके नामसे विख्यात होगे । तुम्हारे उत्तरके तालाबमें स्नान और तुम्हारा दर्शन करनेसे मनु-ष्योंकी मुक्ति होगी ।

(३८ वा अध्याय) भगवान्का उच्छिष्ट सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला है । विष्णुके मन्दिरमे भोग लगे हुए निर्माल्यको पतित लोग भी स्पर्श करें तो वह अशुद्ध नहीं होता । व्रती लोग भी प्रसादको भोजन कर सकते है । किसी यात्रीको विष्णुके निर्माल्यके खानेमें अभिमान नहीं करना चाहिये । किसी प्रकारसे निर्माल्य भोजन करनेसे पातक छूट जाते है । जो मनुष्य उसकी निन्दा करता है उसको भगवान स्वयं दण्ड देते है । बहुत कालका सूखा हुआ, बहुत दूर लेगया हुआ, सब निर्माल्य उपकारी है । कुत्तेके मुखसे गिरा हुआ भी प्रसादको यदि ब्राह्मणभी भोजन करले तो दोष नहीं है ।

(४५ वां अध्याय) बारह यात्रावोंमें एक दमनभञ्जिका यात्रा है मनुष्योंको उचित है कि चैत्र शुक्ला १३ को मूल सहित दमनक तृणको लाकर मण्डपमें रखकर उसकी पूजा करें और अर्द्ध रात्रिमें लक्ष्मी और सत्यभामाको पूजें । पूर्वकालमे भगवान्ने इसी तिथिकी अर्द्धरात्रिमें दमनासुरको मारा था और उसके अङ्गसे निकला हुआ दमनक तृणको खाकर वह प्रसन्न हुए थे । इस तिथिमें इस तृणको दैत्य समझना चाहिये और उसके वध करनेके लिये भगवानके हाथमे इसको देना चाहिये ।

(४८ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न नारदके साथ ब्रह्मलोकमें चले गये ।

कूर्मपुराण–(उपरिभाग, ३४ वॉ अध्याय) पूर्वदिशामें, जहॉ महानदी और विरजा नदी है, पुरुषोत्तम तीर्थमें पुरुषोत्तम भगवान निवास करते है। वहॉ तीर्थमें स्नान करके पुरुषोत्तमजीकी पूजा करनेसे मनुष्य विष्णुलोकको प्राप्त करता है।

भविष्यपुराण––(१२५ वॉ अध्याय सब देवताओंकी प्रतिमा ७ प्रकारकी होती है,–सुवर्णकी, चादीकी, ताम्रकी, पाषाणकी, मृत्तिकाकी, काष्ठकी और चित्रमें लिखी हुई।

ब्रह्मवैवर्तपुराण––(कृष्णजन्म खण्ड, ३७ वॉ अध्याय) विष्णु निवेदित समस्त वस्तु शुद्ध रहती हैं। पंडितगणोंको उचित है कि विष्णुनिवेदित अन्नसे समस्त देव और पितरोंकी पूजा तथा अतिथियोंका सत्कार करें। (७५ वॉ अध्याय) जो पुरुष विष्णुका प्रसाद भोजन करता है उसके १०० पूर्व पुरुषे पवित्र हो जाते है। जो मनुष्य रथमें स्थित जगन्नाथजीका दर्शन और पूजन करता है वह भवबन्धनसे विमुक्त हो जाता है।

नरसिंहपुराण––(१० वॉ अध्याय) मार्कण्डेय मुनिने पुरुषोत्तमपुरीमें जाकर स्नान करनेके उपरान्त गन्ध पुष्पादिकोंसे पुरुषोत्तमजीकी पूजा करके उनकी बडी स्तुतिकी। विष्णु भगवान् प्रकट हो कर बोले कि हे मुनीश्वर! तुम चिरजीवी हो, यह तीर्थ आजसे तुम्हारे ही नामसे (मार्कण्डेयक्षेत्र) प्रसिद्ध होगा।

इतिहास—इतिहासोंमें लिखा है कि सन् ३१८ ई० मे जगन्नाथजीकी मूर्त्ति प्रगट हुई। उडीसेके राजा ययाति केसरीने, जो सन् ४७४ में उडीसेका राजा बना, जगन्नाथजीकी मूर्त्तिको जंगलसे ढूँढकर पुरीमे स्थापित किया। धार्मिक हिन्दुओंने कई बार विधर्मियोंसे उस मूर्त्तिको बॅचाया। उडीसेके गङ्गावंशके पॉचवें राजा अनङ्गभीमदेवने, जिसका राज्य सन् ११७४ से १२०२ ई० तक था, जगन्नाथजीके वर्तमान मन्दिरको बनवाया। मन्दिरका काम सन् ११८४ से आरम्भ होकर सन् ११९८ ई० में समाप्त हुआ। उस राजाका राज्य उत्तरमे हुगली नदीसे दक्षिणमें गोदावरी तक और पश्चिममें मध्य देशके सोनपुरके जंगलसे पूर्व और बंगालकी खाडी तक फैला हुआ था। राजासे प्रारब्धवश एक ब्रह्महत्या हो गई, अर्थात् उसने एक ब्राह्मणको मारडाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि उसने जगन्नाथजीके मन्दिरके अलावे बहुतेरे देवमन्दिर, १० चौडी नदियोंपर पुल और १५२ घाटोंको बनवाया था। सन् १५३२ ई० में गङ्गावंशके राजाकी मृत्यु हो जानेपर उसका दीवान गङ्गावंशके लोगोंको मारकर उडीसेका राजा बन गया। बाद उडीसा कई आदमियोंके आधीन हुआ। सन् १८०३मे पुरी जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार हुआ। सन् १८०४ ई० में जब खुरदाका स्वाधीन राजा बागी हुआ, तब अङ्गरेजी सरकारने उसका राज्य छीन लिया; किन्तु मन्दिरका प्रबन्ध अब तक खुरदाके राजाके, जिनका महल अब पुरी कसबेमें है, आधीन है। वर्तमान राजाके पिता निर्दयतासे खून करनेके अपराधमे दण्डित होकर सन् १८७८ ई० मे कालापानी भेजे गये। हिन्दूलोग पुरीके राजाओंको मन्दिरका प्रबन्धकर्त्ता समझकर उनका बडा मान करते है। बहुतेरे यात्री राजाका दर्शन करते हैं और उनके निकट भेंट रखते हैं।

पुरी जिला—उसके उत्तर बॉकी सरकारी मिलकियत और अठगढ़का मालगुजार राज्य, पूर्व और पूर्वोत्तर कटक जिला, पूर्व–दक्षिण और दक्षिण बङ्गालकी खाडी और पश्चिम मदरासहातेमें गञ्जाम जिला और उड़ीसेके रानापुरका मालगुजार राज्य है। जिलेका सदर-स्थान सन् १८२८ से पुरी कसबा है पुरी जिलेमे भार्गवी, दया और नून ये तीन नदियॉ

प्रधान है, जो चिलका झीलमे मिल गई है। ये बरसातमे भयंकर प्रवाहको धारण करती है; किन्तु सूखी ऋतुओंमें स्थान स्थानपर सूखकर पानीके कुण्ड बन जाती है। गवर्नमेन्टने बाढ़से देशको बचानेके लिये बहुत रुपये खर्च करके अनेक बाँध बनवाये है।

पुरी कसबेसे पंद्रह बीस मील दक्षिण पश्चिम सूबे उडीसेके दक्षिण पश्चिमके कोनेमे समुद्रके निकट प्रसिद्ध चिलका झील है, जो तङ्ग ऊँची जमीन द्वारा समुद्रसे अलग हुई है। झीलके पश्चिम ऊँची पहाडियाँ है। झीलकी लम्बाई ४४ मील और इसके उत्तरी भागकी औसत चौडाई २० मील और दक्षिणीय भागकी औसत चौडाई ५ मील है। इसका क्षेत्रफल सूखी ऋतुओंमें ३४४ वर्गमील और वर्षा कालमे लगभग ४५० वर्गमील रहता है। इसकी औसत गहराई ३ फीटसे ५ फीट तक रहती है। प्रतिवर्ष झीलसे लगभग २००००० मन नमक बनता है।

पुरी जिलेमे सरकारको मालगुजारी मिलने योग्य कोई जङ्गल नहीं है, किन्तु मधू, मोम, गूण्डी नामक रङ्ग, रेशम और अनेक भाँतिकी दवा बूटी बहुत होती है। पुरी और कटक कसबेके बीचमे खण्डगिरि और उदयगिरि पहाडीपर बहुत बौद्ध गुफाये और पुरी कसबेसे पूर्वोत्तर ओर समुद्रके किनारेपर कोणार्कका पुराना मन्दिर है। जिलेके पश्चिमोत्तर भागमें भुवनेश्वरके मन्दिरोके झुण्ड और उससे सीधे दक्षिण जगन्नाथपुरी है। पुरी जिलेके साधारण निवासी गरीब हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय पुरी जिलेके २४७३ वर्गमील क्षेत्रफलमे ८८८४८७ मनुष्य थे, अर्थात् ८७३६६४ हिन्दू, १४००३ मुसलमान, ८१९ कृस्तान और १ सिक्ख। हिन्दुओंमे २१७४०६ चासा, ८८६९२ ब्राह्मण, ६९३०७ बाउरी, ६६६६२ ग्वाला, ३८९१६ तेली, २९३५७ शूद्र, २८७३८ कान, २८४७६ केवट, २००९४ नापित, १८७४२ खण्डाइत, १६७३९ खण्डारा, १४०५४ बनियाँ, ३८९८ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे। पुरी जिलेमे पुरी कसबेको छोड करके किसी कसबेमे ५००० से अधिक मनुष्य नहीं थे।

कोणार्क।

पुरी कसबेसे १८ मील पूर्वोत्तर पुरी जिलेमें समुद्रसे २ मील दूर सूर्यनारायणका तीर्थ कोणार्क है, जिसको सर्वसाधारण लोग कनारक कहते हैं। कोणार्कका अर्थ (उडीसेके) कोनेका सूर्य्य है। यह १९ अंश, ५३ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, ८ कला, १६ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है। बैलगाडी, पालकी और टट्टू वहाँ जा सक्ते है। रास्ता पहले दो मील उत्तर तब दहिने फिर कर घासके मैदान हो कर सीधा पूर्व जाता है। मार्गमे पुरीसे १३½ मील पर कुशभद्रा नामक छोटी नदीके पास केवल एक झोपड़ा मिलता है। खानेकी सामग्री साथले जाना चाहिये। माघ शुक्लासप्तमीको कोणार्कका मेला होता है। वह सप्तमी रविवारको पडे तब यात्रियोंकी अधिक भीड़ होती है। चन्द्रभागा नदी, जिसको चनाब कहते है, काश्मीर और पञ्जाबमें बहती है, किन्तु कोणार्कका एक खाल चन्द्रभागा करके प्रसिद्ध है। यात्री लोग प्राची सरस्वती और खालमें स्नान करते है।

कोणार्कमे सूर्य्यका विचित्र और प्रसिद्ध एक पुराना मन्दिर है। उडीसेके लेखसे जान पडता है कि राजा नृसिंहदेव लांगोरने उडीसेकी १२ वर्षकी आमदनी खर्च करके सन् १२३७

और सन १२८२ ई०के बीचमें वर्तमान मन्दिरको बनवाया था। मन्दिरका शिखर गिरगया है। जो बाकी है। वह बाहरसे ९० फीट लम्बा और इतानाही चौडा तथा १२४ फीट ऊँचा है। याने उसकी खडी दीवार ६० फीट और उसका शिखर ६४ फीट है। उसकी दीवारे सुन्दर स्त्रियो, हाथी, घोडसवारो और दूसरी मूर्त्तियोंसे पूर्ण है और उसका शिखर भी हाथी, घोडे, घोडसवार, और पैदल सेनासे छिपा हुआ है। यह मन्दिर भीतरी ४० फीट लम्बा तथा चौडा है। मन्दिरका जगमोहन ६० फीट लम्बा और इतनाही चौडा है। इसकी दीवारे बीस बीस फीट तक मोटी है। मन्दिर खाली पत्थरसे बना है। पत्थरके टुकडे लोहेसे एक दूसरेमें जड दिये गये है। यह इस समय अतिशय हीन दशामें पडा हुआ है। मन्दिरके उजाड स्थानोपर जङ्गल लग गया है। मन्दिरके पीछे ४५ फीट ऊँचा और करीब ७० फीट लम्बा मन्दिरके तबाहियोंका ढेर है। मन्दिरके बाहरके हातेकी दीवार अब नही है। उसके पत्थरोको महाराष्ट्रोंके अफसर लोग पुरीमे ले गये।

जगमोहनके दक्षिण एक बहुत बडा वृक्ष, जिसके पास बहुतेरे छोटे दरख्त और खजूर का कुञ्ज है और एक बागमें एक मठ और विना मूर्त्तिका एक मन्दिर है।

कोणार्कके पासके समुद्रमें पानी बहुत कम है। वहा बहुतेरे जहाज डूब गये है, परन्तु गॅवईके लोग इसका कारण ऐसा कहते हैं कि मन्दिरके शिखरके ऊपर बडे चुम्बककी एक तह थी, जो जहाजोको बालूपर खैंच लेती थी। जब एक मुसलमान मल्लाहने मन्दिर पर चढ़कर चुम्बकको उतार लिया तब पुजारी लोग अपने देवताके सङ्ग पुरीमे चले गये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–आदिब्रह्मपुराण–(२७ वॉ अध्याय) दक्षिणके समुद्रके समीपमें ओढ्र देश विख्यात है, जिसमें कोणादित्य नामसे विख्यात सूर्य्य निवास करते है। वह क्षेत्र समुद्रके तटपर ७ योजन विस्तारमे है। मनुष्योंको उचित है कि प्रति मासके शुक्लपक्षकी सप्तमीमे वहॉ समुद्रमें स्नानकर सूर्य्यका स्मरण और पितर आदिका तर्पण करे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और स्त्रियॉ सबलोग सूर्य्यको अर्घ देकर परम गतिको प्राप्त होवेंगे। जब तक सूर्य्यको अर्घ निवेदन न करे तब तक विष्णु और महादेवका पूजन न करना चाहिये। सूर्य्यगङ्गाके जलमे स्नान करनेमे मनुष्यको स्वर्ग मिलता है। परम भक्तिसे कोणार्ककी पूजा करनी चाहिये। चैत्र मासके शुक्लपक्षमे, सूर्य्यके शयनमे, स्थापनमे, सक्रान्तिमे, अयनमे, रविवारमे और सप्तमी तिथिमें सूर्य्यकी यात्राका विशेष दिन है समुद्रके तीरपर वामदेव नामसे विख्यात महादेव स्थित है।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—(कृष्णजन्म खण्ड, ७६ वॉ अध्याय) जो व्यक्ति उत्तरायण सूर्य्यके समय सूर्य्यका दर्शन और पूजन करेगा, उसका जन्म संसारमे फिर नही होगा।

भविष्य पुराण—(पूर्वार्द्ध ६८ वॉ अध्याय) जम्बूद्वीपमे सूर्य्यनारायणके ३ स्थान मुख्य है,—इन्द्रवन, मुण्डार और कालप्रिय। इस द्वीपमे और भी एक स्थान चन्द्रभागा नदीके तटपर साम्बपुर है,जहाँ साम्बकी भक्तिसे लोकानुग्रहके लिये सूर्य्यनारायण मित्ररूपमे निवास करते हैं। जो भक्तिसे उनका पूजन करता है, उसको वह ग्रहण करते है।

राजा शतानीकके प्रश्न करनेपर सुमंतु मुनि कहने लगे कि श्रीकृष्णकी जाम्बवती नाम भार्य्यासे साम्ब नामक पुत्र हुआ। वह पिताके शापसे जब कुष्ठी होगया तब सूर्य्यनारायणके

आराधन करके रोगसे मुक्त हुआ उसीने अपने नामसे नगर बसाकर उसमे सूर्यनारायणको स्थापन किया है ।

(१२१ वॉ अध्याय) साम्ब चन्द्रभागा नदीके तटपर मित्रवन नासक सूर्य्यके क्षेत्रमे जाकर तप करने लगा । सूर्य्यने प्रकट होकर साम्बका रोग दूर किया और चन्द्रभागाके तट-पर अपनी प्रतिमा स्थापन करनेके लिये उसको आज्ञा दी । (१२३ वॉ अध्याय) साम्बने नदीमे बही जाती हुई सूर्य्यकी प्रतिमाको पाया, जिसको विश्वकर्म्माने कल्पवृक्षके काष्ठसे बनाकर नदीमे बहाया था साम्बने मित्रवनमे मन्दिर बनाकर विधिपूर्वक प्रतिमाको स्थापन किया । (१३३ वॉ अध्याय) उसने शाकद्वीपसे मग ब्राह्मणोंके कुमारोको लाकर सूर्य्यका पूजक (पुजारी) बना दिया ।

(६९) राजाके प्रश्न करनेपर सुमन्तु मुनि पूर्वका वृत्तान्त कहने लगे कि एक समय नारदजीने श्रीकृष्णचन्द्रके पासजाकर कहा कि आपका पुत्र साम्ब अति रूपवान है, इस लिये आपकी सोलहो हजार रानी इसपर मोहित है । कृष्णचन्द्रकी स्त्रियोंके समीप जब साम्ब बुलाया गया तब उसका रूप देख स्त्रियोंका चित्त चलायमान होगया । उस समय श्रीकृष्णभगवान्ने स्त्रियोंको शाप दिया कि तुमको पतिलोक और स्वर्गकी प्राप्ति न होगी और अन्तमे तुम लोग चोरोंके वशमे पडोगी । इसी शापसे श्रीकृष्णके वैकुण्ठ जानेके पीछे अर्जुनके देखते देखते सब स्त्रियोंको चोर हर लेगये । इसके पीछे श्रीकृष्णचन्द्रने साम्बको भी शाप दिया कि तू कुष्ठी होजा । वाराहपुराणके १७१ वें अध्याय, पद्मपुराण, सृष्टि-खण्डके २३ वें अध्याय और मत्स्यपुराणके ६९ वें अध्यायमें भी शापकी कथा है) ।

(७० वॉ अध्याय) चन्द्रभागा नदीके तटपर सूर्य्यनारायणका सनातन स्थान है । साम्बने पीछे वहॉ सूर्य्यको स्थापित किया । उस स्थानमें परब्रह्म स्वरूप जगत्के स्वामी सूर्य्यनारायणने मित्र रूपमे तप किया था । वह सब देवता तथा मनुष्योंकी सृष्टिकर आप १२ रूप धर अदितीके गर्भसे उत्पन्न हुए, जिनमेसे मित्र नासक बारहवे सूर्य्यकी मूर्ति चन्द्र-भागा नदीके तटपर विराजमान है । साम्बपुर और साम्बके शापकी कथा साम्बपुराणके तीसरे अध्यायमें है ।

(११८ वॉ अध्याय) प्रलयके समय जब सब जीव नष्ट होगये और सर्वत्र अन्धकार व्याप्त होरहा था उस समय पहिले बुद्धि उत्पन्न हुई, बुद्धिसे अहंकार, अहंकारसे महाभूत और महाभूतोंसे अण्ड उत्पन्न हुआ, जिसमें सातों समुद्रों सहित सात लोक स्थित हैं । उसी अण्डेमे ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्थित थे, परन्तु वे सब अन्धकारसे व्याकुल होरहे थे । उस समय जब वे परमेश्वरका ध्यान करने लगे तब अन्धकारको हरनेवाला एक तेज उत्पन्न हुआ जिसको देख वे सब स्तुति करके कहने लगे कि आपके इस प्रचण्डरूपको कोई देख नहीं सकता इस लिए आप सौम्यरूप धारण करे । ऐसा सुन सूर्य्यनारायणने सब लोकोंको सुखदेनेवाला उत्तम रूप धारण किया ।

(वाराहपुराण २६ वें अध्याय), मत्स्यपुराण (२ रे अध्याय) और मार्कण्डेय पुराण (१०२रे अध्याय) में भी सृष्टिके आदिमें सूर्य्यकी उत्पत्तिकी कथा है भविष्यपुराणके ४२ वें अध्याय और वाराहपुराणमे लिखा है कि सूर्य्यभगवान सप्तमी तिथिमे प्रगट हुए इस

लिए जो पुरुष वा स्त्रियां सप्तमी व्रत करके सूर्य्यकी पूजा करती है वे अन्तमें सूर्य्य लोकको जाती हैं।

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध.४६ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमीको अचला सप्तमीका व्रत होता है।

पद्मपुराण—(स्वर्गखण्ड, ४५ वां अध्याय) ब्रह्माकी आज्ञासे सूर्य्यके कहने पर विश्वकर्माने सूर्य्यके किरणोंका बहुतसा भाग काटडाला (यह कथा भविष्यपुराणके ४२ वें अध्यायमे भी है)।

आदित्रब्रह्मपुराण—(३१ वां अध्याय) अदितीने दैत्योंसे देवताओंका पराजय देख कर सूर्य्य भगवानकी स्तुतिकी जिससे सूर्य्यनारायण अदितीको वरदान देनेके उपरांत उसके गर्भमें स्थित हुए। सूर्य्यके जन्म होने पर इन्द्रने युद्धके लिए दैत्य और दानवोंको बुलाया असुर और देवताओंका घोर युद्ध हुआ। उस समय सूर्य्यने अपने तेजसे दैत्योंको भस्म करदिया। सब देवता अपने अधिकारको प्राप्त हुए। मार्तण्डने भी अपने अधिकारको पाया (सूर्य्यके कश्यप मुनिसे उत्पन्न होनेकी कथा मत्स्यपुराणके ६ वे अध्यायमे, मार्कण्डेय पुराणके १०५ वे अध्यायमें और पद्मपुराण—स्वर्गखण्डके ४५ वे अध्यायमें भी लिखी हुई है।

(पद्मपुराणमें लिखा है कि सूर्य्य बारहों मासमें बारह राशियों पर जाते है, इसीसे इनका द्वादशात्मा नाम है; क्योंकि बारहों पर बारह नामसे सूर्य्य रहते है)

मत्स्यपुराण—(१७ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमी मन्वन्तरादि तिथि है. उसमे सूर्य्य रथमे बैठते है। इसीसे वह रथसप्तमी कहलाती है।

महाभारत—(वन पर्व, ३ रा अध्याय) युधिष्ठिरने कहा कि हे सूर्य्य! जो मनुष्य सप्तमी वा छठको तुम्हारी पूजा करता है उसकी सेवा लक्ष्मी करती हैं।

(शांति पर्व्व २०८ वॉ अध्याय) द्वादशादित्य कश्यपके पुत्र है, उनके नाम ये हैं,—भग, अंशु, अर्य्यमा, मित्र, वरुण, सविता, धाता, विवस्वान्, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र और विष्णु। (अनुशासन पर्व्व १५० वॉ अध्याय) द्वादशादित्यके नाम ये है,—अंशु, भग, मित्र, जलेश्वर, वरुण, धाता, अर्य्यमा, वैजयंत, भास्कर, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र और विष्णु

सूतसंहिता—(पुरुषोत्तम माहात्म्य, प्रथम अध्याय) जो मनुष्य कोणार्क तीर्थमे चन्द्रभागा नदीके जलसे स्नान करके सूर्य्यका दर्शन करता है उसका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है।

सत्रहवां अध्याय।

(सूबे उड़ीसेमें) जाजपुर, बालेश्वर, और (सूबे बङ्गालमें) मेदनीपुर।

जाजपुर।

एक सडक कटक शहरसे पूर्वोत्तर जाजपुर, भद्रक और बालेश्वर होकर मेदनीपुरको और मेदनीपुरसे उत्तर बॉकुडा कसबा होकर रानीगञ्जको और दक्षिण कलकत्तेको गई है। उस सडकसे जगन्नाथजीके बहुतसे यात्री आते जाते हैं। स्थान स्थान पर सडकके निकट

यात्रियोंके टिकनेके लिये मोदियोंकी दूकानें बनी हुई है । सम्वत् १९२० में मेरे बड़े भाई बावू मेवालालजी उसी मार्गसे बॉकुडा, मेदिनीपुर, बालेश्वर, जाजपुर, और कटक होकर जगन्नाथपुरीमें गए थे । मैं कटकसे पूर्वोत्तर कलकत्तेकी ओर चला ।

कटक शहरसे ४४ मील पूर्वोत्तर (२० अंश ५० कला ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश २२ कला ५६ विकला पूर्व देशान्तरमें) वैतरनी नदीके दहिने किनारे पर कटक जिलेमें एक तीर्थ स्नान और उस जिलेके सबडिवीजनका सदर स्थान जाजपुर एक छोटा कसवा है। जो एक समय वडा प्रसिद्ध शहर था। कटक और जाजपुरके बीचमें ब्राह्मणी नदीके पार उतरना होता है। जाजपुरसे १२ कोश पूर्व चॉदवाली है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय जाजपुरमें ११९९२ मनुष्य थे, अर्थात् ११३१२ हिन्दू, ६६९ मुसलमान, १ क्रस्तान और १० अन्य ।

जाजपुरमें मामूली सरकारी इमारतें, एक खैराती अस्पताल, वहुतेरे शैवमन्दिर, जिनमे अधिकाश हीनदशामें पडे है, और वहुतसे शैव ब्राह्मण है। जाजपुर पार्वतीजीका स्थान है। पुराणोमे इस स्थानका नाम विरज क्षेत्र लिखा है। उडीसेक ४ पवित्र स्थानोंमेसे वह एक है, उसके अतिरिक्त उडीसेमें पुरी, भुवनेश्वर और कोणार्क ये ३ तीर्थस्थान है।

जाजपुरके पास वैतरनी नदीके सुप्रसिद्ध घाटपर पादगया तीर्थमे यात्री लोग स्नान और पिंडदान करते है। वहाँ बहुत पण्डे रहते है। घाटपर सीढ़ियॉ बनी है। विष्णुस्वामी और वाराहजीका मन्दिर है। फाटकोंपर सूर्यकी प्रतिमा बनी हुई है। नदीके निकट एक दालानमें ६ फीट ऊंची ७ पुरानी मूर्तियॉ है, जिनमेंसे एक नृसिंहजी और ६ चतुर्भुजी देवियोंकी मूर्तियॉ हैं। उसके पास एक मन्दिरमें गणपतिजीकी बडी मूर्ति है। उसके सामने जंगल लगा हुआ नदीके टापूमे वाराहजीका बडा और अन्य बहुतेरे छोटे मन्दिर हैं। मजिस्टरकी कोटीके हातेमें हाथीपर चढी हुई चतुर्भुजी इन्द्राणी, वाराही और चामुण्डाकी नक्कासीदार सुन्दर ३ मूर्तियॉ हैं। घाटसे १¾ मील दक्षिण एकही पत्थरका ३२ फीट ऊँचा गरुडस्तम्भ है। ब्रह्मकुण्ड तालावके समीप विरजादेवीका शिखरदार मन्दिर बना है। उस तालावका घाट पत्थरसे बना हुआ है। जाजपुरमें वर्षमें एक मेला होता है, उस समय वैतरनीमे स्नान करनेके लिये बहुतसे यात्री वहाँ एकत्रित होते हैं।

इतिहास—राजा ययातिकेशरीने- जिसने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसेमे राज्य किया था, विहारसे आते समय जाजपुरको प्रसिद्ध स्थान पाया और कुछ समयके लिये उसको अपनी राजधानी बनाया। वह ११ वीं सदी तक केशरी वंशके राजाओंके आधीन उडीसेका प्रधान कसवा था। १६ वीं सदीमें हिन्दू और मुसलमानोके परस्पर झगडेके कारण जाजपुरकी दशा हीन होगई।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ११४ वॉ अध्याय) युधिष्ठिर आदि पाण्डवगण महर्षि लोमशके सहित पर्यटन करते हुए गङ्गासागरमें स्नान करके समुद्रके तीर तीर चले। इन्होने कलिङ्ग देशमें वैतरनी नदीके पार उतरकर वहॉ पितरोका तर्पण किया।

आदिब्रह्मपुराण—(४१ वॉ अध्याय) विरजक्षेत्रमें ब्रह्माकी प्रतिष्ठा की हुई विरजा माता है, जिसके दर्शन करनेसे दर्शकजनोंके ७ पुश्त पवित्र होजाते हैं। एक वार उनके दर्शन, पूजन तथा प्रणाम करनेसे मनुष्य अपने कुलका उद्धार करके ब्रह्मलोकमें निवास

करता है । उस क्षेत्रमें सब पापोंके हरनेवाली और वरको देनेवाली अन्य भी अनेक देवी स्थित हैं और सम्पूर्ण पापोंको विनाश करनेवाली वैतरणी नदी वहती है । वहाँ क्रोडरूपी हरि है, जिनके दर्शन और प्रणाम करनेसे विष्णुपद प्राप्त होता है । कपिल, गोगृह, सोम, क्रोड, वासुक और सिद्धेश्वर इन तीर्थोंमें जितेन्द्रिय होकर स्नान करके वहाँके देवताओंको नमस्कार करनेसे मनुष्य सब पापोंसे विमुक्त होकर ब्रह्मलोकमें जाता है । विरजक्षेत्रमें पिण्डदान करनेसे पितरोंकी उत्तम तृप्ति होती है । ब्रह्माके विरजक्षेत्रमें शरीर त्याग करनेसे मोक्ष मिलती है । समुद्रमें स्नान करके कपिल हरि भगवान और वाराही देवीके दर्शन करनेसे देवलोकमें निवास होता है । वह गुह्य क्षेत्र समुद्रके उत्तर भागमें १० योजन विस्तारका है, जिसमें जानेमे पापोंका नाश होजाता है और मुक्ति मिलती है । उस पवित्र उत्कल देशमे पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते हैं और अन्य भी अनेक तीर्थ हैं। उत्कल देशमे निवास करनेवाले मनुष्य धन्य है ।

वालेश्वर ।

जाजपुरसे ५६ मील (कटक शहरसे १०० मील) पूर्वोत्तर (२१ अंश, ३० कला, ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, ५८ कला, ११ विकला पूर्व देशान्तरमे) बूढ़ीवलंग नदीके दहिने किनारे पर समुद्रसे सीधा ७ मील और नदीके मार्गसे लगभग १६ मील पश्चिम सूबे उड़ीसेमे जिलेका सदरस्थान और प्रधान वदरगाह वालेश्वर कसवा है, जिसको वालासोरभी कहते है । जाजपुरसे लगभग २० मील पूर्वोत्तर भद्रक नामक वडी वस्ती मिलती है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वालेश्वर कसवेमें २०७७५ मनुष्य थे, अर्थात् १६९१२ हिन्दू, ३३६२ मुसलमान और ५०१ कृस्तान ।

वालेश्वरमें मामूली सरकारी इमारतें हैं । जेवर और पीतल आदि धातुके वर्तन अच्छे वनते है । तम्बाकू, तेल, चीनी, गल्ले इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोसे वालेश्वरमे आते है और चावल इत्यादि रकम वालेश्वरसे दूसरे स्थानोमे भेजे जाते है । वंदरगाहकी आमदनी, रफतनी वढती जाती है। वालेश्वरमें प्रतिवर्ष चडक पूजा होती है।

वालेश्वर जिला—इसके उत्तर मेदनीपुर जिला और मोरभजका देशी राज्य पूर्व वङ्गालकी खाडी, दक्षिण वैतरनी नदी, वाद कटक जिला और पश्चिम क्योंझोर, नीलगिरि और मोरभंजका राज्य। जिलेका सदर स्थान वालेश्वर कसवा है। समुद्रके किनारेकी नमकदार भूमिपर वहुत नमक तैयार किया जाता है। सुवर्णरेखा, पंचपाड़ा, बूढावलङ्ग, कॉस वॉस और वैतरनी जिलेकी प्रधान नदियॉ हैं। और वालेश्वर, चुरामन, ढमरा इत्यादि उस जिलेमें ७ प्रधान वदरगाह है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वालेश्वर जिलेका क्षेत्रफल २०६६ वर्गमील था, जिसमें ९४५२८० मनुष्य थे, अर्थात् ९१५७९२ हिन्दू, २३८०४ मुसलमान, ८१५ कृस्तान, ४७ सिक्ख, ४ वौद्ध, १ यहूदी और ४८१७ अन्य। जातियोंके खानेमें १८२९४८ खण्डाइत, ११९३७३ ब्राह्मण, ४८१९२ पान, २४४५५ कण्डारा, ८४४४ चमार, ६२९० गोंड, २७६७ भूमिज और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

इतिहास—बालेश्वर एक समय प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। सन् १६४२ ई० में वहाँ अङ्गरेजी कोठी स्थित हुई। डचकी कोठीभी यहाँ थी। फरांसीसी लोग अब तक बालेश्वरके पास १०० एकड भूमि अपने कब्जेमे रक्खे हुए है।

सन् १८०३ मे उडीसेके दूसरे जिलोके साथ अङ्गरेजोने बालेश्वरको अपने अधिकारमे किया। सन् १८०५ से १८२१ तक कटकसे बालेश्वरका प्रबन्ध होता था। सन् १८२७ मे यह स्वाधीन कलक्टरके आधीन हुआ।

मेदनीपुर।

बालेश्वरसे लगभग ८० मील (कटकसे १८० मील) पूर्वोत्तर (२२ अंश, २४ कला, ४८ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, २१ कला १२ विकला पूर्व देशान्तरमे) कसाई नदीके बाँये अर्थात् उत्तर किनारेपर सूबे बङ्गालके वर्द्धवान विभागमे जिलेका सदर स्थान और जिलेमे प्रधान कसबा मेदनीपुर है। बालेश्वर और मेदनीपुरके मार्गमें सुवर्ण-रेखा नदीको लाघना पडता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मेदनीपुर कसबेमें ३२२६४ मनुष्य थे, अर्थात् १६२५३ पुरुष और १६०११ स्त्रियाँ। इनमे २४७१५ हिन्दू, ६७६५ मुसलमान, ३९३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाडी जङ्गली लोग, ३६९ क्रस्तान और २२ बौद्ध थे।

मेदनीपुर कसबेमें सरकारी कचहरियाँ और यूरोपियन लोगोंके रहनेके लिये सुन्दर मकान बने हुए हैं। एक सरकारी और दूसरा एडेड स्कूल, सन् १८५१ का बना हुआ एक गिरजा, सन् १८३५ का बना एक अस्पताल, बडा बाजार और यात्रियोंके टिकनेके लिये मकान है। वहा पीतल तथा लोहेके बर्तन इत्यादि चीजें तैयार होती है।

मेदनीपुर सडकोका केन्द्र है। वहाँसे दक्षिण पश्चिम बालेश्वर और जाजपुर होकर कटकको, पश्चिम कुछ दक्षिण क्योंझोर, सम्भलपुर, रायपुर, राजनन्दगाँव, और भण्डाराको और भण्डाराके आगेसे पूर्वोत्तर जबलपुर, कटनी, रींवा और मिर्जापुर तक और दक्षिण-पश्चिम पैठन, अहमदनगर और बम्बई तक, मेदनीपुरसे पूर्व ६८ मीलका मार्ग उलबडिया होकर कलकत्तेको, और उत्तर अप्रसिद्ध सडक बाँकुडा होकर रानीगञ्जको गई है। आगबोट मेदनीपुरसे उलबडिया तक नहरमें और उलबडियासे १५ मील कलकत्तेके आर्सेनियन घाट तक भागीरथी गङ्गामें नित्य आते जाते है। रेलवेका काम आरम्भ होगया है, मेदनीपुरसे रेलवेकी लाइन कई तरफ निकलेगी,—एक लाइन पूर्व और उलबडिया होकर हवडेको, दूसरी दक्षिण पश्चिम बालेश्वर, भद्रक कटक भुवनेश्वर इत्यादि होकर पुरीको और तीसरी लाईन पश्चिम और आसनसोल और नागपुरकी लैनके सीनी स्टेशनको जायगी।

मेदिनीपुर जिला—यह वर्द्धवान विभागके दक्षिणका जिला है। इसके उत्तर बाँकुडा और वर्द्धवान जिला, पूर्व हुगली और हवडा जिला और भागीरथी नदी, दक्षिण बङ्गालकी खाडी, दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर जिला; पश्चिम मोरभञ्जका राज्य और सिंहभूमि जिला और पश्चिमोत्तर मानभूमि जिला है। जिलेकी प्रधान नदी भागीरथी है, जिसकी सहायक रूपनारायण, रसूलपुर और हलदी नदी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मेदिनीपुर जिलेके ५०८२ वर्गमील क्षेत्रफलमें २५१७८०२ मनुष्य थे; अर्थात् २२३५५३५ हिन्दू, १६४००३ मुसलमान, ११७४३६ पहाड़ी और जङ्गली; जिनमे ११२०६२ संथाल थे, ७४० क्रुस्तान ४४ सिक्ख ३६ वाद्ध ६ ब्राह्मो और २ पारसी। हिन्दुओंमें ७५३४३५ कैवर्त, ११७४१४ ब्राह्मण, १२६२६० सद्गोप, ९२१७८ कायस्थ, ७४४९७ वागडी, ६८२२९ तेली, ५७५६२ ताँती, ५३९९४ ग्वाला, ४६०७२ नापित, ४५१९० कुर्मी, ४१६०७ धोबी, २३५०७ वनियाँ १९५७३ राजपूत, १२७४६ बाउरी, और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मेदनीपुर जिलेके कसबे मेदनीपुरमें ३२२६४, घटालमें १३९४२, चन्द्रकोनामें ११३०९ और खरवारमें १००८३ मनुष्य और सन् १८८१ में रामजीवनपुरमें १०९०९ और तमलूकमें ६०४४ मनुष्य थे।

अठारहवां अध्याय।

(सूबे बंगालमें) श्रीरामपुर, तारकेश्वर, चन्दरनगर, हुगली, बर्द्दवान, खानाजंक्शन, सिउड़ी, रानीगञ्ज, (सूबे छोटानागपुरमें) पुरुलिया (सूबे बंगालमें) बाँकुडा, (छोटानागपुरमें) राँची हजारीबाग, पारसनाथ और (सूबे विहारमें) वैद्यनाथ।

श्रीरामपुर।

मै नहर और भागीरथीके मार्गसे आगबोट द्वारा मेदनीपुरसे लगभग ७० मील पूर्व कलकत्तेमें आया और हवडेसे इष्टइन्डियन रेलवेकी गाड़ीमें सवार हो आगे चला। कलकत्तेके पासके हवडेसे १२ मील उत्तर श्रीरामपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे वङ्गालके हुगली जिलेमे हुगली नदीके पश्चिम किनारे पर वारकपुरके सामने (२२ अंश, ४५ कला, २६ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २३ कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमे) सब डिवीजनका सदर स्थान श्रीरामपुर कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय श्रीरामपुरकी म्युनिसिपल्टीमें ३५९५२ मनुष्य थे, अर्थात् २०२०० पुरुष और १५७५२ स्त्रियाँ। इनमे ३०१८१ हिन्दू, ५४५५ मुसलमान, ३०४ कृस्तान ११ एनिमिष्टिक और १ बौद्ध थे।

श्रीरामपुरमें डेनमार्कवालोंका एक चर्च है, जो सन् १८०५ ई० में १८ हजार रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ था। हुगली अर्थात् भागीरथीके किनारेपर सुन्दर कालिज बना हुआ है, जिसकी डेवढ़ीमे ६० फीट ऊँचे ६ स्तम्भ लगे हैं उसके ऊपर प्रधान कमरा १०३ फीट लम्बा और ६६ फीट चौडा है। इनके अतिरिक्त श्रीरामपुरमे स्कूल, अस्पताल, वाग, एक जूटका पेच और उसके पास जूट आदिके कई कल कारखाने हैं और कागज बहुत तैयार होता है। कसबे होकर वहुतेरी सडक गई हैं।

इतिहास—श्रीरामपुर सन् १७५५ ई० से डेनमार्कवालोंके अधिकारमें था। सन् १७९९ ई० में श्रीरामपुरके पादडियोंने पहले पहल महाभारत और रामायण छपवाकर एक बंगला अखबार भी निकाला; पीछे बंगला पुस्तकें भी छपने लगीं। सन् १८४५ ई० में ईष्ट इण्डियन कम्पनी और डेनमार्कके बादशाहकी एक सन्धि हुई। उसके अनुसार डेनमार्कके बादशाहने हिन्दुस्तानके अपने आधीनकी सम्पूर्ण भूमि अर्थात् ट्राकूवार फ्रेडारिक्स नगर और बालासोरके पासके छोटे टुकडेके साथ श्रीरामपुरको १२५००० पाउण्ड लेकर ईष्ट इण्डियन कम्पनीके हाथ बेच दिया।

तारकेश्वर।

श्रीरामपुरसे २ मील (हूवडेसे १४ मील) उत्तर सेवड़ाफुलीका रेलवे स्टेशन है। वहाँसे २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर एक रेलवे शाखा तारकेश्वरको गई है।

तारकेश्वर हुगली जिलेमें टट्टी और फूसके मकानोकी वस्ती है, किन्तु तारकेश्वर शिवके मन्दिरके अधिकारी महन्त माधवचन्द्र गिरिका मकान दो मञ्जिला पक्का बना हुआ है। यात्री लोग पण्डे या मोदियोंके मकानोंमे टिकते है। बहुतेरे मोदी रेलवे स्टेशनसे यात्रियोंको लेजाते है, पूजाकी सामग्री भी वही लोग देते है। पूजाके समय ब्राह्मण जाकर यात्रियोंको पूजा करवाते हैं। सब लोग पोखरेका जल पीते है तारकेश्वरमे कई एक कच्चे पोखरे है जिनमेसे तारकेश्वरके मन्दिरके निकटका दूधगङ्गा नामक पोखरा प्रधान है। मन्दिरसे दक्षिण पश्चिम छोटा बाजार, दूधगङ्गासे दक्षिण और पश्चिम बाग और दक्षिण-पश्चिमके कोनेके समीप महन्तका मकान है।

दूधगङ्गाके पूर्व किनारेपर घेरेके भीतर तारकेश्वर शिवका शिखरदार मन्दिर दक्षिण मुखसे स्थित है। मन्दिरके जगमोहनसे दक्षिण एक सुन्दर मण्डप बना है, जिसके दो ओर पाँच पाँच और दो ओर तीन तीन मेहराबियाँ बनी हुई हैं। मण्डपमे सङ्गमर्मरका फर्श लगा है और दक्षिण भागमें नन्दीश्वरकी सुन्दर मूर्ति है। मन्दिर और मण्डपसे पूर्व महन्तोके आठ दश समाधि मन्दिर, पूर्वोत्तर कालीजीका मन्दिर और पश्चिमोत्तर पाकशाला है, जिसमें तारकेश्वरजीके भोगकी सामग्री तैयार होती है। बहुतेरे रोगग्रस्त लोग, जिनमे मुसलमान भी होते हैं, अपना दुःख छूटनेके लिये तारकेश्वरके मन्दिरके आस पास धरना बैठते है।

मन्दिरका प्रबंध तारकेश्वरके महन्तके आधीन है। जमीन्दारीकी आमदनीसे मन्दिरका खर्च चलता है और यात्री लोग भी बहुत पूजा चढाते हैं। वहाँ सालमें दो बडे मेले होते है। फाल्गुनकी शिवरात्रीके मेलेका जमाव तीन दिनोंतक रहता है उस समय लगभग बीस पचीस हजार आदमी वहाँ आते है और मेषकी संक्रान्तिका मेला, जो चडक पूजाका मेला कहलाता है, छ सात दिनोतक रहता है, उस मेलेमें लगभग १५ हजार मनुष्य आते है।

चन्दरनगर।

सेवडाफुली जंक्शनसे ७ मील (हवडासे २१ मील) उत्तर चन्दरनगरका रेलवे स्टेशन है। फ्रासीसियोंके राज्यमें (२२ अंश, ५१ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २४ कला, ५० विकला, पूर्व देशान्तरमे) हुगलीनदीके दहिने किनारेपर चन्दर-

नगर एक सुन्दर छोटा शहर है। वहाँ फ्रांसीसी गवर्नरकी उत्तम कोठी बनी है। गङ्गाके किनारेपर सन् १७२६ ई० का बना हुआ इटलीके मिशनरीका चर्च अर्थात् गिर्जा है। फ्रांसीसी राज्यकी सोमाके पासही बाहर हुगली जिलेमें रेलवे स्टेशन बना है।

फ्रांसीसियोंका गवर्नर जनरल मदरास हातेके पाण्डीचरीमें रहता है उसीके आधीन चन्दरनगरका सब गवर्नर है (फ्रांसीसियोंके हिन्दुस्तानके राज्यका विवरण भारत-भ्रमणके चौथे खण्डमे पांडीचरीके वृत्तान्तमे देखो)। अङ्गरेजी गवर्नमेंट इस शरतपर चन्दर-नगरके गवर्नरको प्रतिवर्ष ३०० सन्दूक अफियून देती है कि फ्रांसीसियोंकी प्रजा पोस्तेका काम न करें।

इतिहास—फ्राँसीसी लोग सन् १६७३ ई० में चन्दरनगर आये और सन् १६८८ मे उन्होंने इसको पाया। फ्राँसीसियोंके गवर्नर डुप्लेके समय (१७३१—१७४१) चन्दरनगरमें २००० से अधिक ईंटोंके मकान बनाये गये। उस समय वहाँ भारी सौदागरी होती थी। सन् १७४० में चन्दरनगर उस समयके कलकत्तेसे अधिक मालदार और रवनकदार था। सन् १७५७ मे अङ्गरेजोंने चन्दरनगरको जीतकर किले बन्दीको तोड दिया, किन्तु सन् १७६३ की सन्धिके अनुसार वह फिर फ्राँसीसियोंको मिला। सन् १७९४ मे फिर इष्ट इंडियन कम्पनीने चन्दरनगरको फ्राँसीसियोंसे छीन लिया, परन्तु सन्धि होजानेपर सन १८१६ मे यह फिर फ्राँसीसियोंको मिल गया, तबसे अब तक वह उनके अधिकारमें है।

हुगली।

चन्दरनगरके रेलवे स्टेशनसे ३ मील (हवडेसे २४ मील) उत्तर हुगलीका रेलवे जंक्शन है। सूबे बंगालके वर्दवान विभागमे रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर हुगलीनदीके दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर जिलेका सदर स्थान हुगली एक कसबा है उसके दक्षिण चिंसुरा बस्ती है। दोनों मिलकर एक म्युनिसिपल्टी बनती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हुगली और चिंसुरामें ३३०६० मनुष्य थे, अर्थात् १७०१८ पुरुष और १६०४२ स्त्रियाँ। इनमे २६९३६ हिन्दू, ५९०३ मुसलमान, १९८ कृस्तान, १८ एनिमिष्टिक, ३ जैन और २ बौद्ध थे।

हुगली कसबेमें देखनेकी प्रधान वस्तु इमामबाडा है, जिसको करामत अलीने महम्मद मुशिनके धनसे, जो सन् १८१४ ई० में मरा, ३ लाख रुपये खर्च करके बनवाया था। इमामबाडेका अगवास २७७ फीट लम्बा और ३६ फीट चौडा है। बीचमें फाटक लगा है। ऊपर ११४ फीट ऊँचे दो मीनार खडे हैं। इमामबाडेका आङ्गन १५० फीट लम्बा और ८० फीट चौडा है, फर्श मार्बुलका लगा है, प्रधान कमरा बहुत सुन्दर है और चारोओर कोठरियाँ बनी हुई हैं। इमामबाडेके पास सडकके दूसरे बगलपर सन् १७७६—१७७७ ई०का बना हुआ एक पुराना इमामबाडा है।

चिन्सुरामें ईंटोंका एक पुराना गिर्जा है, जिसको सन् १७६८ मे डचके गवर्नरने बनवाया था। गिर्जासे दक्षिण सन् १८३६ ई० का बना हुआ हुगली-कालिज है, जिसके बनानेमें ८ लाख रुपयेसे अधिक खर्च पडे थे। यह हिन्दुस्तानके अधिक प्रसिद्ध कालिजोंमेसे एक है, इसमें लगभग ६०० विद्यार्थी पढ़ते है।

हुगलीका पुल—५ मीलकी रेलवे शाखा हुगली नदीके पुलको लाँघकर हुगलीसे नइहाटीमे जाकर "ईष्टर्न बङ्गाल स्टेट रेलवे" से मिली है, जहाँसे दक्षिण २४ मील कलकत्ताका सियालदह स्टेशन और उत्तर ओर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५५ मील दार्जिलिङ्ग है। हुगली गङ्गा, जिसको भागीरथी भी कहते है, गङ्गाजीकी पश्चिमी शाखा है। हुगली कसबे और नइहाटीके बीचमे हुगली नदीपर १२१३ फीट लम्बा और (पायाओके नीचेके छोरोंसे) ९८½ फीट ऊँचा जुबली पुल है। उसपर २ लाइन बनी है। पुलके दूसरे भागकी लम्बाई ३२७८ फीट है। इस पुलको सन् १८८७ ई०में जुबलीके समय भारतवर्षके गवर्नर-जनरल लार्ड डफरिनने खोला, इसके बनानेमें ५२ लाख रुपये खर्च पडे थे।

हुगली जिला—इसके उत्तर बर्दवान् जिला, पूर्व हुगली नदी, जो नदियाँ और चौबीस परगना जिलेसे इसको अलग करती है, दक्षिण हवड़ा जिला और पश्चिम बर्दवान जिला है। जिलेका सदर-स्थान हुगली कसबा है। इस जिलेमें हुगली, दामोदर इत्यादि नदियाँ और राजापुर, डांकनी सामती इत्यादि झीलें है। इनमेंसे सामती झीलका क्षेत्रफल ३० वर्गमीलमें है। इस जिलेसे होकर उलबड़िया और मेदनीपुर नहर गई है और जिलेमे दूसरी कई एक छोटी नहर है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हुगली जिलेका क्षेत्रफल १२२३ वर्गमील था, जिसमें १०१२७६८ मनुष्य बसते थे, अर्थात् ८२२९७२ हिन्दू, १८८७९८ मुसलमान, ६५५ क्रस्तान, २९० बौद्ध, १६ ब्राह्म और ३७ दूसरे। जातियोंके खानेमें १४२५२६ कैवर्त, १३५१३५ बागडी, ७६२७१ ब्राह्मण, ६१०२१ सद्गोप, ४६१३४ ग्वाला, ३८७५७ तेली, ३५४८४ कायस्थ, १७३५२ बनियाँ, ५५३० राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके कसबे श्रीरामपुरमें ३५९९२, हुगली और चिनसुरामें ३३०६०, और बैद्यबटीमें १८३८० मनुष्य थे। इनके अलावे हुगली जिलेमें कई छोटे कसबे हैं। इसी जिलेके भीतर फ्रांसीसियोंके चन्दरनगरका राज्य है।

हुगली कसबेमे १ मील उत्तर बुन्देल गाँवमें पोर्चुगीजोंका १ पुराना मठ सन् १५९९ का बना हुआ, एक गिर्जा और हिन्दुओका पवित्र स्थान त्रिवेणी है।

हुगली कसबेसे ३ मील उत्तर बाँसबड़िया वस्तीमें एक जमीदारकी स्त्री रानी शंकरीदासीका बनवाया हुआ देवी हुँसेश्वरीका एक प्रसिद्ध मन्दिर है, जिसमें १३ कलश और १३ शिव स्थापित है। मन्दिरकी रक्षाके लिये एक किला और खाँई बनी थी, जिसमें वहाँके लोगोंने महाराष्ट्रोंकी चढ़ाईके समय शरण लिया था।

इतिहास—पोर्चुगीजोंने सन् १५३७ ई० में हुगली कसबेको बसाया और पीछे हुगली के वर्त्तमान जेलखानेके निकट एक किला बनवाया, जिसके चिह्न अब तक विद्यमान है। सन् १६३२ ई० में दिल्लीके बादशाह शाहजहाँने पोर्चुगीजोंकी शिकायत सुनकर हुगलीमें एक बड़ी सेना भेजी। किला तोपोंसे उड़ादिया गया, १००० से अधिक पोर्चुगीज मारे गये और लगभग ४००० पुरुष, स्त्री, और लड़के पकड कर आगरा भेजे गये, जो बरजोरीसे बड़ा मुसलमान बनाये गये। "सातगाँव से, जो हुगलीसे ६ मील दूर है, आफिस और दफ्तर हुगलीमे लाये गये। हुगली बङ्गालका शाही बन्दरगाह हुई।

सन् १६४० ई० में ईष्टइंडियन कम्पनीने शाहजहाँके पुत्र सुलतान शुजासे, जो बङ्गालका गवर्नर था, फरमान हासिल करके हुगलीमें एक कोठी कायम की । सन् १६६९में कम्पनीको हुगलीमें जहाज बोझनेकी आज्ञा मिली । सन् १६८५ में बङ्गालके नव्वाब शाइस्ताखाँ और कम्पनीके कर्मचारियोंमें झगडा खडा हुआ । उस समय अङ्गरेजोंने इङ्गलैंड और मदरासमे हुगलीमें अपनी फौज भेजी, किन्तु मोगलोंके वलके सामने उनसे क्या होसकता था, सन् १६८६ में अङ्गरेजोंको हुगली छोडकर वहाँसे २६ मील दूर सतानतीको, जो नीची जगहमें एक गाँव था, चला जाना पडा । वह जगह अब कलकत्तेके उत्तरीय विभागमें शामिल है । सन् १७४२ में महाराष्ट्रोंने हुगली कसबेको लूटा ।

लगभग सन् १६४६ ई० में चिन्सुरा डचके आधीन हुआ । सन् १८२६ ई० मे अङ्गरेजी सरकारने चिन्सुराके बदलेमें उसको जावाका टापू देकर उससे चिन्सुराको लेलिया ।

बर्दवान ।

हुगली कसबेसे ४३ मील (कलकत्तेसे ६७ मील) पश्चिमोत्तर और खाना जंक्शनसे ८ मील दक्षिण बर्दवानका रेलवे स्टेशन है । सूबे बङ्गालमें दामोदर नदीसे २ मील उत्तर बाँका नदीके निकट किस्मत और जिलेका सदर-स्थान बर्दवान एक सुन्दर कसबा है, जिसका शुद्ध नाम वर्द्धमान है ।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय बर्दवान कसबेमें ३४४७७ मनुष्य थे, अर्थात् १८५२७ पुरुष और १५९५० स्त्रियाँ । इनमें २४१७९ हिन्दू, १००८१ मुसलमान, २०७ कृस्तान, ६ बौद्ध और ४ जैन थे ।

बर्दवानमें महाराजका महल, गुलाबबाग, अष्टोत्तर शत शिवालय और पीर बहरामका दरगाह इत्यादि बहुतेरी दर्शनीय वस्तु है । महाराजके महलके दक्षिण वाले फाटकसे पश्चिम नवतूनगञ्च नामक सुन्दर चौक बना हुआ है । उसके चारो बगलोंपर पक्की कोठरियाँ, जिनके आगे ओसारे हैं, बनी है और मध्य भागमें ४ कोठरी और टीनसे छाई हुई ८ चाँदनी और चारों बगलोंपर ४ फाटक है । महाराजकी कचहरीसे पूर्व बडा बाजार है, जिसमें कपड़े और चाँदी, सोने आदिकी बडी बडी दूकाने रहती है । बर्दवानमें कई सदावर्त लगे हैं और जलकल बनी हुई है । कसबेसे २ मील दक्षिण-पश्चिम कचननगरसे कलका पानी आता है । कसबेके निकट कृष्णसागर नामक तालाब और एक शिवमन्दिर और जेलखानेके पास रानीसागर नामक एक बड़ा तालाब है । रेलवे स्टेशनसे लगभग १ मील दक्षिण कमिश्नर, जज, मजिष्टर आदिकी कचहरियाँ बनी हुई हैं ।

राजाका महल—रेलवे स्टेशनसे १ मीलसे अधिक पश्चिम-दक्षिण बर्दवानमें राजाका उत्तम महल है । दरखास्त करनेपर महल देखनेका हुक्म मिलता है । राजबाड़ीके बडे घेरेके अन्दर पश्चिम तरफ महलके दरवाजेके पास पूर्व और पश्चिम दो कमरे हैं, जिनमें मार्बुलका फर्श लगा है और मार्बुलकी बहुतेरी मूर्त्तियाँ रक्खी है । पूर्व वाले कमरेसे पूर्व एक बड़े कमरेमें मार्बुलका फर्श लगा है, बड़े बडे झाड लटके हैं और उत्तम कुर्सियाँ रक्खी हुई है । बड़े कमरेसे पूर्व एक बारहदरीके मध्यमें बालरूम अर्थात् अङ्गरेजी नाचघर है, जिसके ऊपरके मञ्जिलपर लाइब्रेरी है और कई एक उत्तम कमरे तस्वीर इत्यादि उत्तम असबाबोंसे सजे है ।

वारहदरीके पूर्व महताव मञ्जिलके दक्षिण दिलाराम और दिलारामके पूर्व आईनामहल है। वारहदरीसे थोडेही दूरपर एसमञ्जिलमें अनेक भॉतिके वहुतेरे हथियार रक्खे हुए है और वहुतेरी तस्वीरे टङ्गी हैं। आईनामहलसे पूर्व राजाकी कचहरी है ऑगनके चारों वगलोंपर दो मञ्जिले दालान और दो मञ्जिले कमरे वने हुए है।

लक्ष्मीनारायणका मन्दिर—राजमहलके पास लक्ष्मीनारायणका सुन्दर मन्दिर है, जिसको लाग लक्खीनारायणका मन्दिर कहते है। मन्दिरके आगेके दालानमे मार्वुलका फर्श लगा है और चॉदी जडे हुए ३ सिंहासन रक्खे हुए है, जिनपर समय समयमें मन्दिरकी देवमूर्त्तियॉ वैठाई जाती है।

मन्दिरसे थोडी दूरपर एक सुन्दर पूजावाडी है, जिसमें खम्भाओकी पांच छः पंक्तियॉं है और सफेद तथा काले मार्वुलके तख्तोसे फर्श वना है।

वडे वाजारसे दक्षिण-पूर्व मंगला महारानीका मन्दिर और एक शिवाला है।

गुलावबाग—रेलवे स्टेशनसे करीव २ मील और राजवाडीसे १ मील दूर वर्द्वानके महाराजका गुलाववाग है। राजवाडी और गुलाववागके वीचमें सडकके पास श्यामसागर नामक एक वडा तालाव है। गुलाववागमे भॉति भॉंतिके फल फूलोके वृक्ष लगे है, जगह जगह सडके वनी हैं और स्थान स्थानपर जंगली जानवरो, जलचरो और पक्षियोंके रहनेके लिये अनेक मकान, हौज, कुण्ड और घेरे वनाए गये हैं। यद्यपि यह चिडियाखाना पहलेके समान नहीं है, तिसपर भी यहॉ देखने योग्य वहुतेरे जीव जन्तु है। इसमें थोडे थोड़े सर्व प्रकारके पशुपक्षी और वहुतेरे वाघ तथा हरिन देखनेमें आते हैं। वागके घेरेके भीतर कई तालाव हैं। वागके मध्यमें एक उत्तम तालावके चारो तरफ पत्थरकी सीढ़ियॉ और उसके चारो कोनोंके पास मार्वुलकी ४ प्रतिमा है। तालावके उत्तर और दक्षिण गुलावकी फूलवाडी है, जिनमें क्यारियोंके वगलोंपर गचके रास्ते वने हैं। तालावके पश्चिम किनारे पर रसोईघर, जनाना, अंटाघर, वैठकखाना आदि कई सुन्दर इमारतें वनी है। गुलाववागके वगलोमें नहर वनाई गई है।

अष्टोत्तरशत शिवालय—राजवाडीसे ३ मील पश्चिमोत्तर एक चौगानके चारों वगलोंपर एकही प्रकारके १०८ शिखरदार शिवमन्दिर हैं, अर्थात् ३८ पूर्व, ३८ पश्चिम, १४ उत्तर, १४ दक्षिण और ४ चारो कोनोपर। प्रत्येक मन्दिर वाहरसे ३ गज लम्बा और इतनाहीं चौडा है। चौगानके पूर्व और पश्चिम वगलमे दो फाटक और उसके भीतर २ कच्ची दिग्गी है।

वर्द्वान जिला—इसका क्षेत्रफल २६९७ वर्ग मील है। इसके उत्तर संथालपरगना, वीरभूमि और मुर्शिदावाद जिले, पूर्व नदियॉ जिला, दक्षिण हुगली, मेदनीपुर और वाकुड़ा जिले और पश्चिम मानभूमि जिला है। वर्द्वान जिला भारतवर्षके सवसे अधिक उपज होनेवाले जिलोमेंसे एक है। इस जिलेमें केवल पश्चिमोत्तर कोनेमें संथाल परगने जिलेस लगी हुई नीची ऊँची भूमि है, जहॉ जङ्गलोंमें कुछ भालू, तेंदुये, भेडिया इत्यादि वनजन्तु रहते है, नहीं तो सर्वत्र समथल भूमिपर धानकी वडी खेती होती है। जगह जगह ताड़, केला और आमके वागोंमें झोपडियोंकी वस्तियॉ देखनेमें आती हैं। जिलेमें कोई पहाड़ी नहीं

है। दामोदर, खारी, बाँका इत्यादि बहुतेरी नदियाँ जो भागीरथीमें मिल गई हैं, बहती है। उस जिलेमें तशर बहुत होता है और जहरीले सर्प बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वर्दवान जिलेमें १३९१८२३ मनुष्य थे, अर्थात् ११२०६७६ हिन्दू, २६६८१६ मुसलमान, ६४१८ सथाल, ९१० कृस्तान और ३ यहूदी। जातियोके खानेमें १४८७८८ भङ्गी, ११२१११ सद्गोप, १०७६८४ ब्राह्मण, ८२२५४ बाग्दी, ७०२६३ ग्वाला, ४९२२९ चमार, ३९०३० डोम, ३५३०५ वनियाँ, ३३०६९ कायस्थ, ३१५९२ कैवर्त, २८९७८ तेली, ७२१८ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके मनुष्य थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उस जिलेके कसबे वर्द्धवानमें ३४४७७ और रानीगञ्जमे १३३७२ और सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कलनामें १०४६३ और कतवामे ६८२० मनुष्य थे। वर्द्धवान जिलेमें भागीरथीके किनारेपर जिलेमे सौदागरीका प्रधान स्थान कलना है, जो मुसलमानोके राज्यके समय एक प्रसिद्ध स्थान था। वहाँ मुसलमानोके एक बड़े किलेका चिह्न अवतक विद्यमान है और वर्द्धवानके महाराजका एक महल बना हुआ है। रानीगञ्ज सबडिवीजनमें कोयलेकी बहुतसी खानियाँ हैं। भागीरथी और अजयनदीके संगमके निकट कतवा एक तिजारती स्थान है, उसी स्थानपर चैतन्य महाप्रभुने तप किया था; इस लिये वैष्णव लोग उसको पवित्र समझते हैं।

इतिहास—राजमहलमें दाउदखाँके परास्त होनेके पीछे सन् १५७४ ई० में बादशाह अकबरकी सेनाने उसके वंशधरोंको वर्दवानमें पकडा। सन् १६२४ में शाहजादे खुर्रमने जो पीछे शाहजहाँके नामसे बादशाह बना, वर्दवान कसबे और उसके किलेको लेलिया। उसके थोड़ेही पीछे वर्दवान राजवंशके नियत करने वाले आबूराय खत्री पञ्जाबसे बङ्गालमें आकर वर्दवानमें बस गये। वह सन् १६५७ मे चौधरी हुए और उसके पीछे मुसलमानी गवर्नमेन्टके आधीन फौजके कमाण्डर होगये। उनकी मिलकियत बहुत शीघ्र बढ गई। आबूरायके पोते कृष्णरामरायने बादशाह औरंगजेबसे एक फरमान हासिल किया। सन् १६९५ में वर्दवानके एक तालुकदार सूबासिंहने अफगान प्रधान रहीमखांकी सहायतासे वर्दवानके राजाको रण-भूमिमें मारडाला और राजाके पुत्र जगतरामरायको छोडकर राजवंशके सब लोगोंको पकड लिया। उसके थोडेही दिनोंके पश्चात् राजाकी पुत्रीने सूबासिंहको मारडाला। जगतरामराय उत्तराधिकारी हुए, जिन्होने अठारहवीं सदीके आरम्भमे महाराष्ट्रो के आक्रमणके समय नवाबकी सहायता की थी। उनके पीछे उनके पुत्र कीर्तिचन्द्रराय वर्द्धवानके राजसिंहासनपर बैठे। उन्होंने चन्द्रकोना, बरदा और बेलगछाके राजाओंको परास्त करके उनकी मिलकियतोंको अपनी जमीदारीमें मिला लिया। कीर्तिचन्द्ररायके पश्चात् महाराज तिलकचन्द्ररायने सन् १७४४ से सन् १७७० तक राज्य किया। उनके समयमें आक्रमण करनेवालोने वर्दवानको लूटा और उस देशको नष्टभ्रष्ट कर दिया सन् १७७० के बडे अकालके समय महाराज तिलकचन्द्र मरगये। उस समय उनके घर वालोंको श्राद्धके खर्चके लिये घरका जेवर बेचना और सरकारसे कर्ज लेना पडा। उनके उत्तराधिकारी महाराज तेजचन्द्र सन् १७९३ के दायमी बन्दोबस्तके पीछे कुछ अच्छी हालतमे हुए। वर्तमान सदीमें वर्दवान राज्यकी उन्नति हुई है। सन् १८३३ ई० मे महाराज महताबचन्द्र राजसिंहासनपर

वैठे, जिन्होने सन् १८५५ में संथालोकी बगावतके समय और सन् १८५७ के बलवेमें भारत गवर्नमेन्टकी बडी सहायता की। सन् १८७९ में महाराज महतावचन्द्रका देहान्त हो गया। उनके गोद लिया हुआ लडका महारानीका भतीजा महाराज आफतावचन्द्र माहताव बहादुरने सन् १८८१ में बालिग होनेपर राज्यका सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त किया। इस समय वर्द्वानके महाराजकी मिलकियतकी वार्षिक आमदनी ३० लाख रुपयेसे अधिक है।

खाना जंक्शन।

खाना जक्शनसे "ईष्टइण्डियन रेलवे" की लाईन ३ तरफ गई है। तीसरे दरजेका महसूल फी मील २½ पाई लगता है।

(१) खाना जंक्शनसे पश्चिमोत्तर कार्ड लाईन पर।

मील प्रसिद्ध स्टेशन—
४१ अण्डाल जंक्शन।
४६ रानीगञ्ज।
५७ आसनसोल जंक्शन।
६३ सीतारामपुर जंक्शन।
१०८ मधुपुर जंक्शन।
१२६ वैद्यनाथ जंक्शन।
१६० गिद्धौर।
१६९ जमुई।
१८७ लक्षीसराय जंक्शन।

अण्डाल जक्शनसे २४ मील पश्चिमोत्तर गौरागद्दी।

आसनसोल जंक्शनसे पश्चिम दक्षिण बंगाल नागपुर रेलवे पर ४७ मील पुरुलिया, २२१ मील वामरा और २४४ मील झारसूगढ जंक्शन।

सीतारामपुर जंक्शनसे पश्चिम ५ मील वराकर और ३९ मील कटरसगढ़।

मधुपुर जक्शनसे २३ मील पश्चिम थोडा दक्षिण गिरिडी।

वैद्यनाथ जंक्शनसे ४ मील पूर्व-दक्षिण देवघर।

(२) लूपलाईनपर खाना जंक्शनसे उत्तर साहबगञ्ज और साहबगञ्जसे पश्चिम लक्षीसराय—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—
४४ सॉईथिया।
६१ रामपुरहाट सबडिवीजन।
७० नलहाटी जंक्शन।
८० मुराडोई।
९४ पकडड।
१२० तीनपहाड़ जंक्शन।
१४४ साहवगंज।
१७० कहलगाँव।
१९० भागलपुर।
२०५ सुलतानगञ्ज।
२२३ जमालपुर जंक्शन।
२४१ कजरा।
२४८ लक्षीसराय जंक्शन।

नलहाटी जंक्शनसे २७ मील पूर्व मुर्शिदाबादके पास अजीमगञ्ज।

तीनपहाड़ जंक्शनसे ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल।

साहवगञ्जके उसपारके मनिहारीघाटसे उत्तर ओर प श्चि

मोत्तरको झुकता हुआ 'ईष्टर्न वङ्गाल स्टेट रेलवे' पर ७ मील मनिहारी, २३ मील कठिहर जंक्शन, ४० मील पूर्निया, ८२ मील फार्विसगञ्ज और ९६ मील कोशीनदीके बायें किनारे पर अञ्चराघाट।

जमालपुर जक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर मुंगेर।

(१) खाना जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

८ वर्द्वान।
४६ मगरा।
५१ हुगली जंक्शन।।
५४ चन्दरनगर।
६१ सेवडाफूली जंक्शन।
६३ श्रीरामपुर।
७५ हवडा।

हुगली जंक्शनसे ५ मील पूर्व-दक्षिण हुगली अर्थात् भागीरथी नदीके बायें नइहाटी जंक्शन।

नइहाटीसे दक्षिण २४ मील सियालदह और उत्तर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५५ मील दार्जिलिङ्ग।

सेवडाफूली जंक्शनसे २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर तारकेश्वर।

सिउडी।

खाना जंक्शनसे ४४ मील उत्तर लूपलाइन पर सॉइथियाका रेलवे स्टेशन है। सॉइथियासे बारह चौदह मील पश्चिम सूबे बङ्गालके वर्द्वान विभागमें मोर नदीसे लगभग ३ मील दाक्षिण एक सड़कके पास (२३ अंश, ५४ कला, २३ विकला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, ३४ कला, १४ विकला, पूर्व देशान्तरमें) वीरभूमि जिलेका सदर-स्थान सिउडी एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिउडीमे ७८४८ मनुष्य थे, अर्थात् ५८३८ हिन्दू, १९९१ मुसलमान और १९ दूसरे।

वीरभूमि जिला—जिलेका क्षेत्रफल १७५६ वर्गमील है। इसके पश्चिमोत्तर सथाल परगना जिला, पूर्व-मुर्शिदाबाद और वर्द्वान जिला और दाक्षिण अजयनदी, जिसके बाद बर्द्वान जिला है। वीरभूमिका अर्थ जंगली भूमि है, सथाली भाषामें जङ्गलको वीर कहते हैं। इस जिलेका सदर-स्थान सिउडी कसबा है। इस जिलेमे कोई झील अथवा नहर या सर्वदा नाव चलने योग्य कोई नदी नहीं है। जिलेमे कोयले और लोहेकी खान है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वीरभूमि जिलेमे ७९४४२८ मनुष्य थे, अर्थात् ६१७३१० हिन्दू, १६२६२१ मुसलमान, १४४४९ पहाडी और जङ्गली इत्यादि और ४८ कृस्तान। जातियोंके खानेमें ७९६३१ सदगोप, ४००३२ बागड़ी, ३९७२४ ब्राह्मण, ३५३१६ डोम, ३०९७५ चमार, २७२५८ बाउरी, २३२८६ हाड़ी, २०७८३ काल्, १८१०३ बनियॉ, ८९०२ कायस्थ, ८३४४ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

वीरभूमि जिलेमें सिउड़ी, रामपुरहाट, नागोर, एलमबाजार और महमूदवाजार प्रसिद्ध गॉव है।

वाकेश्वर स्थान—वीरभूमि जिलेमें तॉतीपाडा गॉवसे लगभग १ मील दक्षिण वाकेश्वर नामक नालेके किनारे वाकेश्वर स्थानपर तप्त जलके कई एक झरने है। झरनोंके पास बहुतेरे शिवमन्दिर बनाए गए है, वहाँ बहुतसे यात्री जाते है।

जयदेवजीका जन्म स्थान—उपरोक्त सिउडी कसबेसे १८ मील दूर अजयनदीके उत्तर जयदेवजीका जन्म-स्थान केन्दुली गॉव है। पूर्व समय उस गॉवमें भोजदेव ब्राह्मण वसता था। उसकी पत्नी रामादेवीके गर्भसे जयदेवजीने जन्म लिया। किस सम्वत्में उनका जन्म हुआ यह निश्चय नहीं है। किसी किसी प्रमाणसे सन् ईस्वीकी ग्यारहवीं सदीके आदिमें और किसीके मतसे वारहवीं सदीके मध्य भागमे उनका जन्म हुआ था। एक ब्राह्मणकी पद्मावती नामक पुत्रीसे जयदेवजीका विवाह हुआ। उन्होंने अपने जीवनका अर्द्धभाग उपासना और धर्मोपदेशमें विताया। जयदेवजीके रचे हुए गीतगोविन्दके सरस पदोंको देखकर बडे बड़े कवि मोहित और विस्मित होते है। वास्तवमे उन्होंने इस काव्यमे अपनी रस शालिनी रचना शक्तिका एक अद्वितीयत्व प्रदर्शन किया है।

केंदुली गॉवमे जयदेवजीका सुन्दर समाधि मन्दिर वना हुआ है। उस स्थान पर अव तक जयदेवजीके स्मरणार्थ प्रतिवर्ष मकरकी संक्रांतिको एक बड़ा मेला होता है। उसमे लगभग ७५ हजार वैष्णव एकत्रित होते है और समाधि-मन्दिरके चारो ओर संकीर्तन करते है।

लगभग ३०० वर्ष हुए नाभाजीने पद्य भाषामे भक्तमाल ग्रन्थ वनाकर भक्तोका यश वर्णन किया था। उसका ४४ वा छप्पै यह है,—जयदेव कवि नृप चक्कवै खण्डमण्डलेश्वर आनि कवि॥ प्रचुर भयो तिहुलोक गीतगोविन्द उजागर। कोक काव्य नवरस सरस शृङ्गारको आगर॥ अष्टपदी अभ्यास करे तिहि बुद्धि वढावे। राधारमण प्रसन्न सुन तहँ निश्चय आवे। सन्तसरोरुह खण्डकोपदमावतिसुखजनकनरवि। जयदेवकवि नृपचक्कवै खण्डमण्डलेश्वर आनि कवि॥ ४४॥ अर्थात् जयदेवजी कवियोंके महाराजा थे। उनका वनाया हुआ गीतगोविन्द तीनों लोकमें प्रसिद्ध हुआ, जो कोकशास्त्र काव्य और नवरसोंमें सरस शृङ्गारका भण्डार है। उसकी अष्टपदीमें अभ्यास करनेसे बुद्धिकी वृद्धि होती है और उसका गान सुनकर निश्चयकरके श्रीकृष्णभगवान् प्रसन्न होकर उस स्थान पर चले आते हैं। सन्त-रूपी कमलो और (अपनी पत्नी) पद्मावतीको सुखदेनेमें जयदेवजी सूर्यके तुल्य थे। भक्तमालके टीकामे (जो भाषापद्यमें वना है) लिखा है कि किन्दु विल्वग्राममें जयदेवजीका जन्म हुआ। वह वृक्षके नीचे प्रतिदिन नये नये स्थानोंमें रहते थे। उनके पास एक गुदरी और एक कमण्डलु था। एक दिन एक ब्राह्मणने अपनी कन्याके सहित जाकर जयदेवजीसे कहा कि जगन्नाथजीकी आज्ञासे मैं आया हूँ, तुम इस कन्यासे अपना व्याह करो, यदि उनकी आज्ञाका प्रतिपालन तुम नहीं करोगे तो तुमको दोष लगेगा। अनेक वाते करनेके पश्चात् जयदेवजीने जगन्नाथजीकी आज्ञासे विवश होकर उस कन्याको स्वीकार किया और

अपने रहनेको एक झोपडी बनाई। उसके पश्चात् उन्होंने सुप्रसिद्ध गीतगोविन्द बनाया। जयदेवजी अपने स्थानसे १८ कोस दूर गङ्गाजीकी धारामे नित्य जाकर स्नान करते थे। वृद्ध होनेपर भी उन्होने अपना नित्यनेम नही छोडा, तब गङ्गाजीने उनसे स्वप्नमे कहा कि अब तुम यहॉ मत आवो, मैहीं तुम्हारे लिये वहॉ चली आऊँगी। उसके उपरान्त गङ्गाजी जयदेवजीके आश्रममे चली आई, जो अब तक (अजयनदीके नामसे) वहॉ विद्यमान है।

रानीगञ्ज।

खाना जंक्शनसे४६ मील पश्चिमोत्तर (हवडासे१२१ मील) कार्डलाइनपर रानीगंजका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके बर्दवान जिलेमे दामोदर नदीके उत्तर किनारेपर सबडिवीजनका सदर–स्थान रानीगञ्ज एक कसबा है। प्रथम यह स्थान बर्दवानकी रानीका था, इस लिये कसबेका नाम रानीगञ्ज पड़ा।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रानीगञ्जमें १३७७२ मनुष्य थे,अर्थात्११३६४ हिन्दू, २१४७ मुसलमान, १८३ कृस्तान, ६४ एनिमिष्टिक, १३ जैन और १ यहूदी।

रानीगञ्ज अब बर्दवान जिलेकी सौदागरीके प्रधान स्थानोंमेंसे एक हुआ है वहॉ 'बर्नकम्पनी' का कारखाना,बङ्गाल पेपर मिल्स, एक अस्पताल और सरकारी कचहरियाँहै।

कोयलेकी खान—रानीगञ्ज कोयलेकी खानोंके लिये प्रसिद्ध है। वहॉके कोयलेका मैदान भारतवर्षके सम्पूर्ण कोयलेके मैदानोसे बडा और सबसे अधिक प्रसिद्ध है। सन् १८२०ई० में मिष्टर जोन्सने अकस्मात् वहॉ कोयलेके खानोंको पाया, तबसे सरगर्मीसे खानोंसे कोयला निकाला जाता है। रानगिञ्ज सबडिवीजनमे रानीगञ्ज, माधवपुर, शस्रतरिया, धौसाल, नियामतपुर, देसागढ़, धदका, बेलरोई, बरिया, आसनसोल, चॉदपुर, लक्खीपुर, शिवपुर इत्यादिके पास कोयलेकी खान है। कोयलेके मैदान रानीगञ्जके चन्दमील पूर्वसे बराकर नदीके कई एक मील पश्चिम तक नीचे ऊँचे सतहपर फैलते है। बर्दवान जिलेमें कोयलेके मैदानोंका क्षेत्रफल लगभग ५०० वर्गमील है। उसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग ३९ मील और सबसे अधिक चौडाई उत्तरसे दक्षिणको लगभग १८ मील है। भूमिके सतहसे नीचे कोयला है। कूपके समान सुण्ड बनाकर भूगर्भसे काटकर कोयला निकाला जाता है। नीचे स्थानें स्थानपर स्तम्भोंके तुल्य मोटे मोटे पाये छोड दिये जाते हैं। ऊपर खेती होती है। सन् १८८३ ई० में वहाँके कोयलेकी ५० खानोमे लगभग १२००० पुरुष, स्त्रियॉ और लडके काम करते थे। कोयला दामोदर नदी तथा रेलवे द्वारा कलकत्ता तथा दूसरे स्थानोमे भेजा जाता है।

पिञ्जरापोल—कलकत्तेके मारवाडियोने सोदपुरके समान रानीगञ्जके निकटके बारिया बस्तीमे भी पिञ्जरापोल स्थापित किया है, जिसमें सन् १८९० ई० में ९११ गौ, बैल और बछड़े, और १० घोड़े रक्षित थे।

जगन्नाथजीका मार्ग—जगन्नाथपुरीमे पैदल जानेवाले यात्रियोंकी प्रधान सड़क रानीगञ्जसे दक्षिण बॉकुडा, और मेदनीपुर और मेदनीपुरसे दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर, जाजपुर. बैतरनी और कटक होकर पुरीको गई है। सडकके पासस्थान स्थानपर चट्टियाँ बनी हुई ह

पुरुलिया।

रानीगञ्जसे ११ मील (खाना जंक्शनसे ५७ मील) पश्चिमोत्तर और लक्षीसराय जक्शनसे १३० मील दक्षिण-पूर्व बर्दवान जिलेके रानीगञ्ज सबडिवीजनमे कार्डलाइनपर आसनसोल रेलवेका जक्शन है। वहाँ "बङ्गाल नागपुर रेलवे" आकर "ईष्टइंडियन रेलवे" मे मिली है और कोयलेकी बडी खान तथा एंजिनका बडा कारखाना है।

बङ्गाल नागपुर रेलवके निकट आसनसोलसे ५ मील पश्चिम दामोदर स्टेशनके समीप दामोदर नदीपर रेलवेका पुल और ४७ मील पश्चिम-दक्षिण पुरुलियाका रेलवे स्टेशन है। छोटा नागपुर विभागमे (२३ अंश, १९ कला, ३८ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, २४ कला, ३५ विकला पूर्व देशान्तरमे) मानभूमि जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा पुरुलिया है। वहाँ रेलगाडी देरतक ठहरती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पुरुलियामे १२१२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९८८२ हिन्दू, १६२५ मुसलमान, ५०८ क्रस्तान और ११३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी जातियाँ।

पुरुलियामे डिपोटीकमिश्नरका आफिस, कचहरियोंके मकान, थाना, जेलखाना, गिरजा, अस्पताल आर स्कूल है। वहाँके बाजारमें गल्ले, नमक इत्यादि वस्तुओंकी सौदागरी होती है। पुरुलियासे पश्चिम एक अच्छी सडक राँचीको गई है।

मानभूमि जिला—यह छोटा नागपुर विभागके पूर्व भागमे ४१४७ वर्गमीलमें फैला हुआ है। इसके पूर्व बर्दवान और बांकुडा जिला, दक्षिण सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला; पश्चिम लोहारडागा और हजारीबाग जिला और उत्तर हजारीबाग और संथाल परगना जिला है। जिलेके पश्चिम और दक्षिण लोहारडागा और सिंहभूमिकी सीमापर सुवर्णरेख नदी और उत्तर तथा पूर्वोत्तरकी सीमाके बडे हिस्सेपर बराकर और दामोदर नदी बहती है। इस जिलेका सदर-स्थान पुरुलिया है। जिलेमें बहुतेरी पहाडियाँ है, जिनमेंसे प्रधान पहाडियाँ लगभग ३४००, २२०० और १६०० फीट ऊंची हैं। कसाई नदी जिके होकर बहती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मानभूमि जिलेमें १०५८२२८ मनुष्य थे, अर्थात् ९४६२४७ हिन्दू, ६५९४८ पहाडी और जङ्गली जातियाँ, ४५४५३ मुसलमान ५५२ क्रस्तान, २३ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी। इस जिलेमें सम्पूर्ण आदि निवासी अर्थात पहाडी और जङ्गली कौमे ३०७५९२ थीं, जिनमेंसे बहुत लोग हिन्दुओमे लिखे गये थे। उनमे १२९१०३ सथाल, ६९२०७ बाउरी, ५७६९५ कोल, २६१६४ भुइया, ९०१७ खरवार थे। हिन्दुओंमें ४९१९० ब्राह्मण, ३९०८१ ग्वाला, ३१५६९ कुम्भार, २६९१५ लोहार, २६८३८ बनियाँ, २४१६४ काल्ह, १९१२५ राजवाड, १८९३३ डोम, १८४५० मदक, १७७३७ सूण्डी, १५९४२ राजपूत और बाकीमें दूसरी जातियोंके लोग थे। इस जिलेके रघुनाथपुर कसवेमे ५६१५ मनुष्य थे।

बॉकुड़ा।

पुरुलियाके रेलवे स्टेशनसे ५० मीलसे अधिक पूर्व कुछ दक्षिण (२३ अंश, १४ कला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, ६ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें) दलकिशोर नदीके बॉये

अर्थात् उत्तर सूबे बङ्गालके बर्दवान विभागमें जिलेका सदर स्थान बाँकुडा एक कसबा है। पुरुलियासे बाँकुडा कसबेको एक सडक गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकुडा कसबेमें १८७४३ मनुष्य थे, अर्थात् १७९३१ हिन्दू, ६९२ मुसलमान, ७७ कृस्तान, और ४३ एनिमिष्टिक।

बाँकुड़ामे एक सराय और मामूली सरकारी इमारतें हैं। सौदागरी बहुत हाती है। रेशमी कपड़े अच्छे बुने जाते हैं। रेशमके कपडे लोह, चावल, अनेक भाँतिके तेलके बीज इत्यादि वस्तु बाँकुड़ासे अन्य स्थानोंमें भेजी जाती है और नमक, तम्बाकू, मसाले, अङ्गरेजी चीजे दूसरी जगहोंसे वहाँ आती हैं।

जगन्नाथजीके पैदल जानेवाले यात्री रानीगञ्जसे बाँकुडा, विष्णुपुर, मेदनीपुर, बालेश्वर, जाजपुर और कटक होकर पुरीमे जाते हैं।

बाँकुड़ा जिला—यह जिला त्रिभुजाकार है। इसके उत्तर और पूर्व बर्दवान जिला और दामोदर नदी, दक्षिण मेदनीपुर जिला और पश्चिम मानभूमि जिला है। जिलेमें दामोदर और दलकिशोर इत्यादि नदियाँ बहती हैं। कोई झील या नहर नहीं है। पहाडियोंसे लोहेका और और मकान बनानेके लिये पत्थर निकाले जाते हैं। पश्चिमकी सीमाके पास बाघ, तेंदुये भालू, भेड़िये इत्यादि वनैले जन्तु होते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकुड़ा जिलेका क्षेत्रफल २६२१ वर्गमील था, जिसमें १०४१७५२ मनुष्योकी गिनती हुई थी, जिनमें ९१०८६५ हिन्दू, ८४५५७ आदि निवासी इत्यादि, ४६२७४ मुसलमान, और ५६ कृस्तान, थे। जातियोंके खानेमे ११७५४८ बाउरी, ८४३२३ ब्राह्मण, ७४१३७ तेली, ५९६५२ ग्वाला, ४७१४६ बागडी, ४५२१६ सदगोप, ३७८३५ लोहार, ३१३३७ बनियाँ, २९३२० तांती, २५२५० कैवर्त, २१३०८ काल्ह, २१३५० सूण्डी, २०५७५ कायस्थ, २०३२५ वैष्णव, १३९८७ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकुडा जिलेके बाँकुड़ा कसबेमें १८७४३ विष्णुपुरमें १८१९० और सोनामुखीमें १३४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—पहले बाँकुडाके चारोओरका देश विष्णुपुर कहलाता था। बाँकुडा कसबेसे लगभग २५ मील पूर्व दक्षिण पुराने समय की राजधानी विष्णुपुर है। विष्णुपुरके एक राजाने कई तालाब और दूसरेने कई मन्दिर बनवाये। ग्यारहवी सदीके आरम्भमे विष्णुपुर प्रसिद्ध शहर था। १८ वीं सदीमे विष्णुपुरके राजघरानेका ऐश्वर्य घट गया। राजा इतना निर्धन हो गया कि उसने अपने घरके इष्टदेव मदनमोहनजीकी प्रतिमाको कलकत्तेके गोकुलचन्द्र मित्रके पास बंधक रक्खा। कुछ दिनोंके पश्चात् राजाने रुपये इकट्ठे करके गोकुलचन्द्रके पास भेजा गोकुलचन्द्रने रुपया लेकर मूर्तिको देनेसे इन्कार किया। मुकदमा दायर होनेपर राजाकी डिगरी हुई, तब गोकुलचन्द्रने उसी भांतिकी एक मूर्ति बनवाकर राजाको देदी। विष्णुपुरका राजमहल अब नहीं है। पुराने किलेके भीतर जंगल लग गया है। बीचमें एक तोप पडी है। सन् १८३५—१८३६ में बांकुडा एक जिला बनाया गया।

रांची।

पुरुलियासे लगभग ८० मील पश्चिम रांचीको एक अच्छी सडक गई है "छोटा नागपुर" विभाग और लोहारडागा जिलेका सदर-स्थान और इस जिलेमें प्रधान कसबा

रांची है। (यह २३ अंश, २२ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २२ कला ६ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे २१०० फीट ऊपर स्थित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रांचीमे २०३०६ मनुष्य थे, अर्थात् ९९९१ हिन्दू, ५०४२ मुसलमान, २८९५ कृस्तान, और २३७८ एनिमिष्टिक।

रांचीकी प्रधान इमारतें कमिश्नर साहब और डिपुटीकमिश्नरकी आफिसें, कचहरीके अनेक मकान, स्कूल, एक खैराती अस्पताल और २ गिरजे हैं। कसवेकी छोटी छोटी वस्ती अलग अलग वसी है। वहाँ थोडी तिजारत होती है, कृस्तान लोग बहुत रहते है। रांचीसे कई एक देहाती मार्ग कई तरफ गये है।

रांचीसे ६ मील दूर जगन्नाथपुर वस्तीके निकट एक पहाडी पर जगन्नाथजीका मन्दिर है। प्रतिवर्ष आषाढसुदी २ को वहाँ मेला होता है।

लोहारडागा—रांचीसे ४५ मील पश्चिम लोहारडागाको एक सड़क गई है। लोहारडागा एक छोटा म्यूनिस्पल कसवा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३४६१ मनुष्य थे। वह सन् १८४० ई० तक लोहारडागा जिलेका सदर स्थान था। लोहारडागासे लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर पालामऊ है, जिसको पलामू भी कहते हैं।

लोहारडागा जिला—इसका क्षेत्रफल १२४५ वर्ग मील है। इसके उत्तर सोन नदी जो हजारीवाग, गया और शाहावाद जिलेसे इसको अलग करती है, पश्चिमोत्तर और पश्चिम मिर्जापुर जिला और सरगुजा, जशपुर, और गाङ्गपुरके देशी राज्य और दक्षिण-पूर्व और पूर्व सिंहभूमि और मानभूमि जिला है। जिलेका सदर-स्थान रांची है। उस जिलेकी पहाडियोंमे सबसे ऊँची पहाड़ी रांचीसे पश्चिम ३६५० फीट ऊँची है। जिलेकी नदियोंमे सुवर्णरेखा और कोयल नदी प्रधान हैं। खानोंसे लोहेके ओर और कुछ कुछ ताँवा निकलता है। जिलेके दक्षिण भागमें दरिद्र लोग नदियोंके वालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं। जिलेमें एक प्रसिद्ध कोयलेका मैदान २०० वर्ग मीलमे फैला है और २ सुन्दर जलप्रपात अर्थात् झरने है—एक राचीसे लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर जशपुर परगनेमें, जिसकी ऊँचाइ ३२० फीट है और दूसरा रांचीसे लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व। जिलेके जंगल और पहाडियोंमें वाघ, तेंदुये, वनैले, सूअर, भालू इत्यादि वनजंतू रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय लोहारडागा जिलेमें १६०९२४४ मनुष्य थे, अर्थात् ८६८८४२ हिन्दू, ६२६६६१ आदि निवासी (जिनमे ५९१८५८ कोल थे), ७७४०३ मुसलमान, ३६३८१ कृस्तान, ५६ जैन और १ वौद्ध। जातियोंके खानेमें ५९१८५८ कोल, ७८६७७ अहीर, ७७३४१ खरवार, ५८४१९ भुँइया, ४७४७१ राजपूत, ४३७६६ कुर्मी ४२४३९ ब्राह्मण, ३७०३४ दुसाध, ३४७०० कहार, ३४३४१ लोहार, ३२८३५ तेली, और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे। लोहारडागा जिलेके कसवे रांचीमें १८४४३, पालामऊ सबडिवीजनके सदर-स्थान डलटोनगञ्जमें ७४४०, गरवामें ६०४३ और लोहारडागामे ३४६१ मनुष्य थे।

सूबे छोटानागपुर—इसको लोग चटियानागपुर भी कहते है। बङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरके आधीन विहार, बंगाल, उडीसा और छोटा नागपुर ये ४ सूबे हैं। इनमेसे सूबे छोटा नागपुरका सदर-स्थान रांची है। सूबे छोटेनागपुरके उत्तर मिर्जापुर, शाहाबाद और गया

जिला, पूर्व मुंगेर, संथालपरगना, बॉकुडा और मेदनीपुर जिला दक्षिण उडीसाके मालगुजार राज्य और पश्चिम सम्भलपुर जिला और रीवांका राज्य है। इस सूबेमें हजारीवाग, लोहारडागा, सिंहभूमि और मानभूमि ये चार अङ्गरेजी जिले और ९ छोटे देशी राज्य हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस सूबेके अङ्गरेजी जिलों और देशी राज्योंका क्षेत्रफल ४३०२० वर्गमील था, जिसमें ४९०३९९१ मनुष्य थे, अर्थात् २४३८८०७ पुरुष और २४६५१८४ स्त्रियाँ। इनमें ३८५८८३६ हिन्दू, ७६८८०६ पहाडी आर जङ्गली, (जिनमें ६०१६८८ कोल और १००२५७ सथाल थे), २२५७८६ मुसलमान, ४०८७८ कृस्तान, ५६ जैन, २४ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस सूबेके नीचे लिखे हुए कसबोंमें १०००० से अधिक मनुष्य थे,—लोहारडागा जिलेके रांचीमें २०३०६, हजारीवाग जिलके हजारीवाग कसबेमें १६६७२ और चतरामें १०७८३ और मानभूमि जिलेके पुरुलिय म १२१२८।

इस सूबेके पश्चिमी भागमें छोटे छोटे ९ देशी राज्य है। इनक उत्तर रीवॉका राज्य और मिर्जापुर जिला; पूर्व लोहारडागा और सिंहभूमि जिला, दक्षिण उडीसेके देशी राज्य और मध्यदेशका सम्भलपुर जिला और पश्चिम विलासपुर जिला और रीवॉका राज्य है। इस देशमें ऊँची भूमि है और पहाडियाँ वहुत है। पश्चिममें गोंड और पूर्वमें कोल अधिक वसते है। इनके अलावे भुंइया और संथाल आदि पहाडी जातियाँ भी हैं।

छोटेनागपुरके देशी राज्योंका त्रिज,—

नंबर	देशीराज्य,	क्षेत्रफल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	मालगुजारी रुपया
१	सरगुजा	६१०३	३७०३३६	६११४७
२	गाङ्गपुर .	२४८४	१०७९६५	२००००
३	यशपुर . .	१९६३	९०२४०	१२०००
४	कोरिया . .	१६२५	२९८४६	
५	वोनाई .. .	१३४९	२४०३०	
६	छोटाउदयपुर	१०५५	३३९५५	
७	चंगभकर .	९०६	१३४६६	
८	सरायकाला	४३८	७७०६२	
९	खरसवान	१४५	३११२७	
	जोड . ..	१६०६८	६७८०२७	

हजारीबाग।

राँचीसे लगभग ५० मील उत्तर हजारीबागको अच्छी सड़क गई है। छोटानागपुर विभागमें (१३ अंश, ५९ कला, २१ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २४ कला, ३२ विकला पूर्व देशान्तरसे) समुद्रके जलसे लगभग २००० फीट ऊपर जिलेका सदर–स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा हजारीबाग है। कई एक छोटे गाँव मिलकर यह एक कसवा बना है।

सन १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय हजारीबाग कसवेमे १६६७२ मनुष्य थे; अर्थात् १२१२९ हिन्दू, ४०९९ मुसलमान, २२९ क्रस्तान, १६२ एनिमिष्टिक, ४३ जैन और ९ बौद्ध।

हजारीबागमे सरकारी कचहरियाँ, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, और स्कूल है। वहाँ सन् १७८० में फौजी छावनी और सन् १८३४ में दीवानी कचहरी नियत हुई। कसवेके दक्षिण-पूर्व फौजी छावनीमे थोडीसी अङ्गरेजी सेना रहती है। पहिले उसमे वहुत फौज रहती थी, किन्तु सन् १८७४ मे बोखारसे वहुत लोगोके मरनेके कारण वहाँसे फौज हटा दी गई।

हजारीबाग जिला—इसका क्षेत्रफल ७०२१ वर्गमील है। इसके पूर्व संथालपरगना और मानभूमि जिला, दक्षिण लोहारडागा जिला, पश्चिम लोहारडागा और गया और उत्तर गया और मुङ्गेर जिला है। जिलेमें वहुतेरी पहाडियाँ हैं। सबसे ऊँची पहाडी समुद्रके जलसे ४५०० फीटसे अधिक ऊँची नहीं है। इस जिलेमें कई एक अवरककी खानियाँ है, डिवौर, कोदमा, चीरकुण्डी इत्यादि वस्तियोंके पास खानोसे अवरक निकाला जाता है; प्रतिवर्ष हजारीवागसे आठ दस लाख रुपयेका अवरक वाहर जाता है। सूवे छोटा नागपुरमें हजारीवागका जल वायु अच्छा है। जिलेकी प्रधान नदी दामोदर है। इस जिलेके पाँच सात स्थानोंमें पवित्र झरने है, जहाँ कुछ कुछ यात्री जाते हैं। जङ्गलोंमें वाघ, तेंदुये, भालू इत्यादि वनजन्तु पाये जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हजारीवाग जिलेमें ११०४७४२ मनुष्य थे, अर्थात् ९२४८११ हिन्दू, १०६०९७ मुसलमान, ७३२८२ आदिनिवासी और ५५२ क्रस्तान। इनमेसे लगभग ५००० जैन हिन्दुओमें लिखे गये थे। जातियोंके खानेमें १२९४४५ ग्वाला, ९२८४९ भुइयां, ६२७६१ कुर्मी, ५६५९८ संथाल, ४२६०२ कोइरी, ४२५७४ चमार, ४२३१९ तेली, ३८४४१ घाटवाल और भोगता, ३७४०४ राजपूत आर वण्डावत, ३६८९३ खरवार, ३३४१९ कहार, २९५४० भूमिहार, २८४२२ ब्राह्मण, २७२७७ वनिया २४८२७ दुसाध, २३६७१ नापित, ९२३२ कायस्थ, ८८१५ कोल और शेषमें दूसरी जातियोके लोग थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके हजारीवाग कसवेमें १६६७२, चतरामे १०७८३, और इचाकमें दस हजारसे कम मनुष्य थे।

पारसनाथ।

हजारीवाग कसबेसे लगभग ७० मील पूर्व कुछ उत्तर गिरिडीका रेलवे स्टेशन है। इष्टइण्डियन रेलवेके मधुपुर जङ्क्शनसे दक्षिण-पश्चिम २३ मील की रेलवे लाइन गिरिडीको

गई है। आसनसोल जंक्शनसे ५१ मील पश्चिमोत्तर मधुपुर जंक्शन है। गिरिडीसे पश्चिम दक्षिण पारसनाथ पहाडीके पादमूलके पास तक १८ मीलकी पक्की सडक बनी है।

छोटे नागपुर विभागके हजारीबाग जिलेके पूर्वीभागमें (२३ अंश, ५७ कला, ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, १० कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) जैन लोगोंका पवित्र तीर्थ-स्थान पारसनाथ नामक पहाडीहै पहाड़ीके सिरोभाग तक एक अच्छी पगडण्डी गईहै। पहाडी जङ्गलसे हरीभरी है। वहाँका जल वायु ठण्ढा और साफ है। स्लेटके चट्टानोपर बाँसके जङ्गल होकर मार्ग निकला है। ऊपर साल इत्यादि वृक्षोके सघन वन होकर पगडण्डी निकली है। राहमें जलके कई एक झरने देखनेमें आते है।

पारसनाथ पहाडीकी ऊपर वाली चोटी, जिसको जैन लोग "असिमद शिखर" कहते हैं; समुद्रके जलसे ४४८८ फीट ऊँची है। उसके ऊपर छोटे छोटे २० जैन मन्दिर बने हैं, जिनमें कई एक बहुत सुन्दर हैं। खास करके उजले मार्बुलका एक छोटा स्थान है' जिसके बनानेमें ८०००० रुपया खर्च पड़ा था।

जैन लोगोके २४ सन्त हैं, जिनमेंसे १० सन्तोंने इसी पहाडीपर निर्वाणपद पाया और १९ सन्तोकी इसीपर समाधि दी गई, २३ वें सन्त पारसनाथकी भी समाधि इसीपर दी गई थी। उन्हीके नामसे इस पहाडीका नाम पारसनाथ पडा। पारसनाथका जन्म काशी-जीमें हुआ था। वह १०० वर्ष तक रहे। प्रति वर्ष लगभग १० हजार जैन यात्री पारसनाथ पहाडी पर जाते हैं।

भारतवर्षमें जैन लोगोकी ५ पवित्र पहाडी है,–काठियावारमे शत्रुंजय और गिरनार राजपूतानेमें आबू, मध्य भारतमें ग्वालियर और छोटा नागपुरके हजारीबाग जिलेमे पारसनाथकी पहाडी। इन पाँचोमे शत्रुंजय पहाड़ी सबसे अधिक पवित्र समझी जाती है। जैन लोगोके मत और उन लोगोकी रीतिका बयान भारत-भ्रमणके चौथे खण्डके शत्रुंजयके वृत्तान्तमें मिलेगा।

जैन मत बहुत पुराना है; क्योंकि पुराणोंमें इस मतके बहुत वृत्तान्त मिलते है। मत्स्य-पुराणके २४ वें अध्यायमे लिखा है कि वृहस्पतिजीने रजिके पुत्रोंके पास जाकर उनको मोहा और उनको आज्ञा दी कि तुम सब जैनधर्मके आश्रय हो जाओ और पद्मपुराणके सृष्टिखण्डके १३ वें अध्यायमें भी सरावगियोंका वृत्तान्त है।

वैद्यनाथ।

मधुपुर जंक्शनसे १८ मील (खाना जंक्शनसे १२६ मील) पश्चिमोत्तर और लक्खी-सराय जंक्शनसे ६१ मील (पटनासे १३१ मील) पूर्व-दक्षिण कार्ड लाइनपर वैद्यनाथ जंक्शन है। जंक्शनसे ४ मील पूर्व कुछ दक्षिण एक रेलवे शाखा देवगढ़को गई है। रेलवे स्टेशनसे लगभग १ मील दूर सूबे विहारके भागलपुर विभागके संथाल परगना नामक जिलेमे सब-डिवीजनका सदर-स्थान और पवित्र तीर्थ स्थान देवगढ़ कसबा है, जिसको देवघर और बैद्यनाथ भी कहते हैं। पण्डे लोग स्टेशनसे यात्रियोंको ले जाते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वैद्यनाथमें ८००५ मनुष्य थे, अर्थात् ७७०४ हिन्दू, २९७ मुसलमान और ४ दूसरे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह उस जिलेमें सबसे बडा कसबा है।

कसबेसे पश्चिम सडकके निकट वैजूका मन्दिर, कसबेसे बाहर सबडिवीजनकी कचहरियाँ और कसबेके आस पास जगह २ जङ्गल और कई छोटी पहाडियाँ हैं। कसबेके पास राजा मदनपाल शिविरके उजडे पुजडे अनेक मीनार और मूर्त्तियाँ देखनेमें आती हैं। वैद्यनाथमें कोढियोका बडा जमाव रहता है वे लोग रोगसे मुक्ति होनेकी आशा करके वहाँ पडे रहते हैं। वहाँ गिद्धोरके महाराज रावणेश्वरप्रसादसिंहकी जमीन्दारी है।

कसबेमें एक बडे घेरेके भीतर पत्थरसे पाटा हुआ बड़ा आङ्गन है। लोग कहते है कि इसको पाटनेमे मिर्जापुरके एक धनी महाजनका एक लाख रुपया खर्च पड़ा था। आङ्गनके बीचमे वैद्यनाथ शिवका शिखरदार पूर्व मुखका बडा मन्दिर और बगलोंमें छोटे बडे २१ मन्दिर है। मन्दिरोंमेंसे सन्ध्या, गौरी, गायत्री, सूर्य लक्ष्मीनारायण, गणेश, और भैरव आदि, के मन्दिर है, बाकी बहुतेरे मन्दिरोमे शिवलिङ्ग स्थापित हैं।

वैद्यनाथ शिवलिङ्ग शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक है। लगभग ३०० वर्ष हुए इनके वर्तमान मन्दिरको पूर्णमलने बनवाया था। वैद्यनाथ शिव लिङ्ग ११ अँगुल ऊँचा है; लिङ्गके सिरपर थोडा गहडा है। नित्य समय समयपर वैद्यनाथजीके शृङ्गार और पूजन होते है। बहुतेरे यात्री लोग गङ्गोत्तरी हरिद्वार, प्रयाग, बक्सर, जहाँगिरा इत्यादि स्थानोंसे गङ्गाजल लाकर वैद्यनाथजीपर चढ़ाते है, और बहुतेरे लोग शिवपर चढ़ानेके लिये वहाँके पण्डाओंसे गङ्गाजल मोल लेते हैं। माघ और फागुनमें सैकडो कोससे हजारों यात्री काँवरोंमें गङ्गाजल लाकर वैद्यनाथजीपर चढाते हैं। श्रीपंचमी और फाल्गुनकी शिवरात्रिको वैद्यनाथजीपर जल चढ़नेकी बडी भीड होती है। मन्दिरसे उत्तर कसबेसे बाहर शिवगङ्गा नामक एक बडा सरोवर है; उसके किनारोपर पत्थरके घाट बने हैं, और एक मन्दिर है। सरोवरमें यात्री-गण स्नान करते है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वाँ अध्याय) शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्ग हैं—(१) सौराष्ट्रदेशमे सोमनाथ, (२) श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैनमें महाकालेश्वर, (४) ओंकारमे अमरेश्वर, (५) हिमालयमे केदार, (६) डॉकिनामे भीमशंकर (७) वाराणसीमें विश्वेश, (८) गोदावरीके तटमे त्र्यम्बक, (९) चिताभूमिमें वैद्यनाथ (१०) दारुकावनमें नागेश, (११) सेतुबन्धमे रामेश्वर, और (१२) शिवालयमे घुश्मेश्वर स्थित है। इन लिङ्गोंके दर्शन करनेसे शिवलोक प्राप्त होता है। इनकी पूजा करनेका अधिकार चारों वर्णोंको है। इनके नैवेद्य भोजन करनेसे सम्पूर्ण पापका नाश होता है, इस लिये इनका नैवेद्य अवश्य खाना चाहिये। नीच जातियोंमें उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन करनेसे दूसरे जन्ममे शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होताहै और उस जन्मके पश्चात् मुक्ति लाभ करता है।

(५५ वाँ अध्याय) एक समय लंकापति रावण कैलास पर्वतपर जाकर शिवजीकी आराधना करने लगा। उसके पश्चात् शिवजीके प्रसन्न होनेपर वह हिमालय पर्वतके दक्षिण भागके वृक्षखण्ड नामक देशमें पृथ्वीमें गढ़ा करके उसमें अग्निस्थापन कर और उसके निकट शिवजीको स्थापित करके हवन करने लगा। जब हवनसे शिवजी प्रसन्न न हुए तब उसने अपने सिरोंको काटकर उससे हवन करना प्रारम्भ किया जब वह अपने नव सिर हवन कर चुका तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे राक्षसोंमें श्रेष्ठ! तुम अपना मनोवाञ्छित वरदान माँगो। रावण बोला हे कि भगवन्! मेरा अतुल पराक्रम होवे और मेरे सिर पूर्ववत होजावे शिवजीने एवमस्तु कहा और रावणके सम्पूर्ण शिर पूर्ववत् होगये। तब वह अपने गृहको जाने लगा। देवताओंको दुःखी देखकर महर्षि नारदने मार्गमे रावणसे पूछा कि तुम किस कार्य्यके लिये कहाँ गये थे। रावणने कहा कि मेरे तपसे प्रसन्न होकर शिवजीने मुझको अतुल बलवान होनेका वरदान दिया है और हमारे प्रार्थनासे हिमवानसे दक्षिण वृक्षखण्डमें वह वैद्यनाथ नामसे प्रसिद्ध हुए हैं मै उनको नमस्कार कर भुवनके जय करनेके लिये जाता हूं। (५६वाँ अध्याय) नारदजी हँसकर बोले कि हे रावण! शिवजी भङ्ग आदि खाकर कुछका कुछ कह देते हैं, उनके वचनका प्रमाण नहीं है। तुम जाकर कैलाश पर्वतको उठावो यदि उनके वरदानसे तुम महाबली हुए होगे तो पर्वत तुमसे उठ जायगा। नारदके ऐसे वचन सुनकर बलदर्पित रावणने जाकर कैलासगिरिको उठाया जिससे पर्वत पर रहने वाले सब जीव जन्तु व्याकुल होगये। तब शिवजीने रावणको शाप दिया कि अब शीघ्रही तुम्हारे बलका ह्रास हो जावेगा। उसके उपरान्त रावण पर्वतको रखकर लौट आया। रावणका शाप सुनकर नारद और देव गण हर्षित हुए। इस भाँति रावण वैद्यनाथ महादेवसे वर लाभ कर बलवान हुआ। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक वैद्यनाथ शिवका पूजन करते है, उनको सम्पूर्ण मनोवाञ्छित फल मिलता है।

दूसरा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ८ वाँ खण्ड, ४३ वाँ अध्याय) एक समय रावणने हिमालय पर्वत पर शिवलिङ्ग स्थापित करके शिवका बडा तप किया जब शिव प्रसन्न न हुए तब अपने ९ सिर काटकर शिवलिङ्ग पर चढादिया, जब वह अपना १० वाँ सिर चढानेको उद्यत हुआ तब शिवजीने प्रगट होकर उसके सिरोंको उसके धडोमे जोड दिया और उससे कहा कि हे रावण! वरदान माँगो। रावणने कहा कि मै बडा बलवान होऊँ और तुमको अपने नगरमे ले जाकर स्थापित करूं। शिवजी बोले कि तुम मेरे लिङ्गोको लेजाव, किन्तु मार्गमें किसी स्थान पर तुम रक्खोगे तो लिङ्ग वहीं रह जावेगे। ऐसा कह वह दो लिङ्ग रूप हो गए। रावण दोनो लिङ्गोंको मंजूषमें करके कॉवर पर ले चला। शिवकी मायासे रावणको मार्गमें बड़े बेगसे लघुशंका लगी। वह एक मुहूर्तके लिये एक गोपको कॉवर थँभाकर मूत्र करने लगा और दोघडीतक मूत्र करता रहा। (४४ वाँ अध्याय) जब उसका मूत्र न रुका तब अहीरने थककर कौँवरको धरती पर रख दिया। तब दोनो लिङ्ग पृथ्वीमे स्थितहोगये। रावणके बहुत बल करने पर जब लिङ्ग न उठे तब वह अपने अँगूठेसे दोनो लिङ्गोंको दबाकर अपने घर चला गया। जो लिङ्ग कॉवरमे रावणके आगे था, वह गोकर्णमे चन्द्रभालके नामसे विख्यात हुआ और जो पीछे था वह वैद्यनाथके नामसे प्रसिद्धहोकर चिताभूमिमें विराजमान

हुआ। तब विष्णु आदि देवताओंने वहाँ जाकर वैद्यनाथका पूजन किया और ऐसा कहा कि तुम वैद्यके समान मनुष्योंको आनन्द देने वाले हो इससे तुम्हारा नाम वैद्यनाथ होगा। जो तुम पर गङ्गाजल लाकर चढ़ावेगा, वह परम पद लाभ करेगा।

काँवर थाँभनेवाला ग्वालाका नाम बैजू था। उसका यह नियम था कि बिना शिव-लिङ्गके पूजन किये भोजन नहीं करता। एक दिन एक उत्सवमें उसको शिवपूजाकी सुधि बिसरगई। जब वह अपने बन्धुवर्गोंके सहित भोजन करने बैठा तब उसको शिवपूजा याद पडी। उसने शीघ्र भोजन छोडकर वैद्यनाथके पास जाकर उनकी पूजा की। शिवजी बैजूकी ऐसी भक्ति और नियम देखकर गिरजा सहित उस स्थानमे प्रकट हुए और बैजूसे बोले कि तुम अपना इच्छित बर माँगो। बैजूने कहा कि हे महादेव! तुम बैजनाथ नामसे प्रसिद्ध हो जाओ। शिवजी एवमस्तु कहकर उसी लिङ्गमें प्रवेश कर गये और बैजनाथ नामसे प्रसिद्ध हुए।

संथाल परगना जिला—यह जिला भागलपुर विभागके दक्षिण भागमें ५४५६ वर्ग मील क्षेत्रफलमे फैला है। इसके उत्तर भागलपुर और पुर्निया जिला; पूर्व मालदह, मुर्शिदाबाद और वीरभूमि जिला, दक्षिण वर्दवान और मानभूमि जिला और पश्चिम हजारी बाग, मुंगेर और भागलपुर जिले हे। इस जिलेका सदर स्थान दुमका है, किन्तु आबादीमें जिलेमें सबसे बडा देवगढ अर्थात वैद्यनाथ कसबा है। राजमहलकी पहाडियाँ जो गङ्गाकी घाटीसे आरम्भ होती हे, २००० वर्गमील फैली है, उनमेंसे १३६६ वर्गमील धामनीकोहके गवर्नमेण्ट मिलकियतमें हैं। वे किसी जगह २००० फीटसे अधिक ऊँची नहीं हैं। उनकी औसत ऊँचाई बहुत कम हे। धामनीकोहके बाहर राजमहल पहाडियोंके सिलसिलेमें बहुतेरी पहाडियोंके ऊपर सघन वन लगे है और उनपर चढ़ना कठिन है।

जिलेके उत्तर और कुछ दूर पूर्वकी सीमापर गङ्गा है। जिलेमें ब्राह्मणी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियाँ बहती हे। नीचा ऊँचा देशके बहुतेरे भागोंमें जङ्गल लगा है। किन्तु उसमें कीमती लकडियाँ नहीं होती हैं। गवर्नमेन्ट दामिनीकोहमे जलानेके लिये लकडी काटनेका ठीका देकर थोडी मालगुजारी प्राप्त करती है। जिलेके जङ्गलोमें खासकर शालके वृक्ष हे। इस जिलेका प्रधान जङ्गली पैदावार लाही है, जो पलाश, बेर और पीपलके वृक्षोंसे निकाली जाती हे और महाराजपुरके रेलवे स्टेशनसे दूसरी जगह भेजी जाती है। संथाल और पहाडी लोग बहुत रेशमके कीडोंको पालते हैं। इस परगनेमे कोयले और लोहेकी खानियाँ हे। जिलेमें कई एक पहाडी झरने हैं और बाघ, तेंदुये, भालू, हरिन, जङ्गली सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते है। पहले हाथी और गेडे थे किन्तु अब प्रायः सब मर गये।

इस जिलेमें सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १७४३७६३ और सन् १८८१ मे १५६८०९३ मनुष्य थे अर्थात् ८४७५९० हिन्दू, ६०८३५३ आदिनिवासी, १०८८९९ मुसलमान, ३०५७ कृस्तान, १३२ बौद्ध ५४ सिक्ख, ६ यहूदी, और २ जैन, जातियोंके खानेमें ८८२४४ ग्वाला, ३८०३२ घाटवाल ३६०७५ ब्राह्मण, ३५७२३ डोम, ३३५४६ चमार, २८१२४ राजपूत, २८१२४ बनियाँ २६४३३ लोहार, शेषमें बाउरी, धानुक, काल्ह, कैवर्त, हाडी तेली इत्यादि जातियोंके लोग थे। आदि निवासियोंमें ५५९६०२ संथाल ११९९५

कोल और शेषमे दूसरे थे । जिलेके कसबे देवगढमे ८००५, साहबगञ्जमें ६५१२, राज महलमे ३८३९, और दुमकामें २०७५ मनुष्य थे साहबगञ्ज उन्नति करता हुआ तिजारती कसवा है, उसमे बढ़ते बढ़ते सन् १८९१ में ११२९७ मनुष्य होगये ।

वैद्यनाथ जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ६१ मील लक्षीसराय जंक्शन और लक्षीसरायसे पश्चिम २० मील मोकामा जंक्शन, ७० मील पटना, ७६ मील बॉकी जंक्शन, १०६ मील आरा और १२० मील बिहियाका रेलवे स्टेशन है । मै बिहियामें रेलगाड़ीसे उतर कर उससे १२ मील उत्तर गङ्गाके दूसरे पार अपने जन्म स्थान चरजपुरा चला आया ।

साधुचरणप्रसाद ।

॥ भारत भ्रमण, तीसरा खण्ड समाप्त ॥
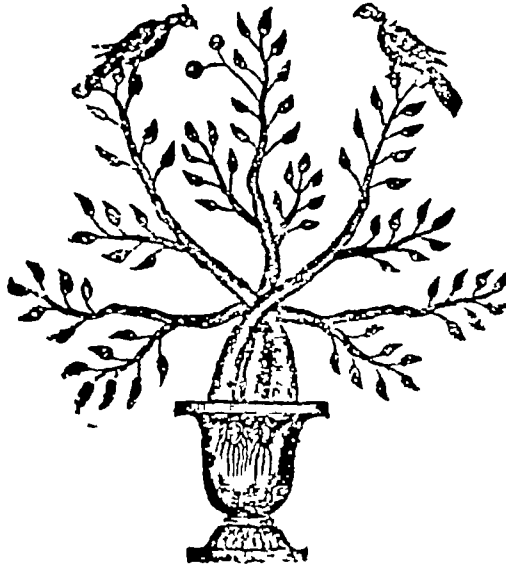
पुस्तक मिलनेका पता—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बम्बई.